

**MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC &
MANAGEMENT SCIENCE**



A
Project Report
On

"JYOTISH ACHARYA"

Submitted for the degree of Jyotish Acharya

Under the Supervision of
ACHARYA RAM BHAN SHUKL

Submitted by:
SANJAY DULHANI

M.A. (Acharya) 2nd Year

Affiliated to
MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA
2013

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
JUNE Exam 2013

M.M.Y.V.V.

Exam. Centre
No. - 75

10/9/13
Centre Bupdt

10/9/2013

10/09/2013

10/9/2013

10/9/13

CENTRE INCHARGE/PRINCIPAL
MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC AND
MANAGEMENT SCIENCE
MIVMS, MAHARISHI COLLEGE
871, NAIPER TOWN, JABALPUR
PHONE NO.- 0761- 4040751, 9981993691





MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC & MANAGEMENT SCIENCE



A
Project Report
On

"JYOTISH ACHARYA"

Submitted for the degree of Jyotish Acharya

Under the Supervision of
ACHARYA RAM BHAN SHUKL

Submitted by:
SANJAY DULHANI
M.A. (Acharya) 2nd Year

Affiliated to



MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA
2013

CENTRE INCHARGE/PRINCIPAL
Anjali Graphics, Sadar, Jabalpur
MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC AND
MANAGEMENT SCIENCE
MIVMS, MAHARISHI COLLEGE
871, NAPIER TOWN, JABALPUR
PHONE NO.- 0761- 4040761, 9981993691



MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC & MANAGEMENT SCIENCE



Affiliated to

MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA

Established by

*Maharishi Mahesh Yogi
Vedic Vishwavidyalaya*



Established by Madhya Pradesh Act No.37 of 1995. Recognised under UGC Act Section 2 (F)

Certificate

This is to certify that this project report entitled

"JYOTISH ACHARYA"

**which is being submitted by the Students as partial
fulfilment for the M.A. (Jyotish Acharya) II Year of
Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya for the
academic year 2013, ensure the bonafide work of the
candidate and was carried out under supervision in this
centre .**

**This report is upto standard both in respect of its contents
and its literary presentation for being referred to the
examiner.**

ACHARYA RAM BHAN SHUKL

Guide

Submitted by:

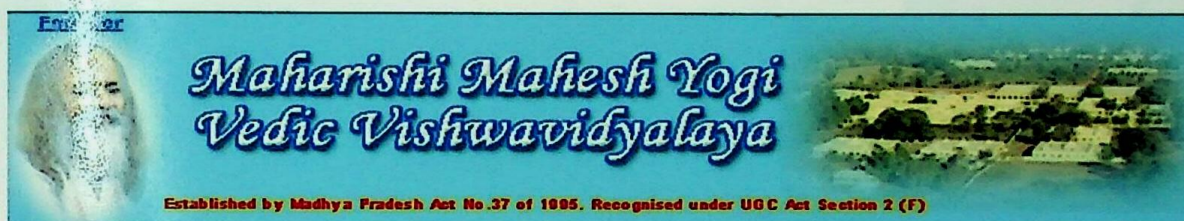
SANJAY DULHANI

M.A. (Acharya) 2nd Year

MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC & MANAGEMENT SCIENCE



Affiliated to
MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA



Certificate

This is to certify that this project report entitled

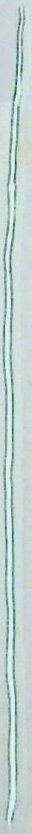
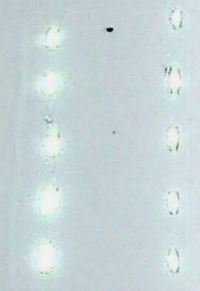
"JYOTISH ACHARYA"

which is being submitted by the Students as partial fulfilment for the M.A. (Jyotish Acharya) II Year of Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya for the academic year 2013, ensure the bonafide work of the candidate and was carried out under supervision in this centre .

This report is upto standard both in respect of its contents and its literary presentation for being referred to the examiner.

ACHARYA RAM BHAN SHUKL
Guide

Submitted by:
SANJAY DULHANI
M.A. (Acharya) 2nd Year

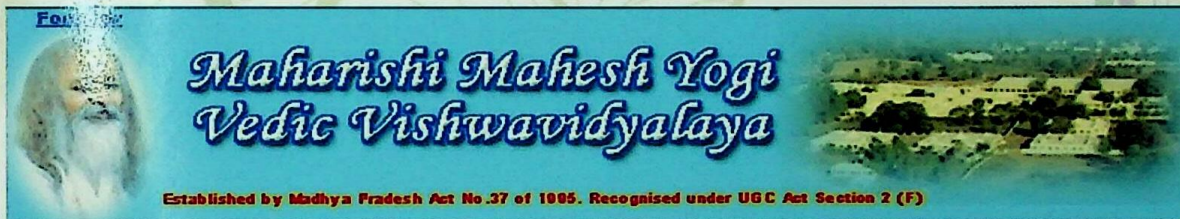


MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC & MANAGEMENT SCIENCE



Affiliated to

MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA



Certificate

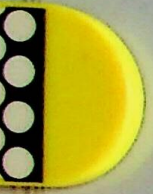
This is to certify that this project report entitled
"JYOTISH ACHARYA"
which is being submitted by the Students as partial
fulfilment for the M.A. (Jyotish Acharya) II Year of
Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya for the
academic year 2013, ensure the bonafide work of the
candidate and was carried out under supervision in this
centre .

This report is upto standard both in respect of its contents
and its literary presentation for being referred to the
examiner.

Internal Examiner

External Examiner

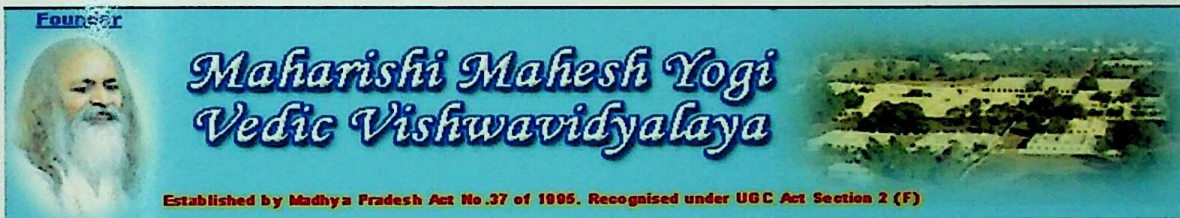
CENTRE INCHARGE/PRINCIPAL
MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC AND
MANAGEMENT SCIENCE
MUNDA, MAHARISHI COLLEGE
871, NAPIER TOWN, JABALPUR
PHONE NO.- 0761- 4940751, 9881893891



MAHARISHI INSTITUTE OF VEDIC & MANAGEMENT SCIENCE



Affiliated to
MAHARISHI MAHESH YOGI VEDIC VISHWAVIDYALAYA



Self Certificate

***We the student of M.A. declared that this project has
been designed by us under the guidance of Acharya Ram
Bhan Shukl. It is our original work. It has been created
as project work for M.A. - II Year***

Submitted by:
SANJAY DULHANI



Acknowledgement

I would like to thank Mr. Acharya Ram Bhan Shukl of the Institution of Jyotish Acharya from the depth of my hearts for constant guidance and support.

I would like to thanks Mrs. Sunita Singh Rajput (Principal) under whose able guidance and support I am able to complete my work successfully without any obstacle.

I would like to thanks Maharishi Institute of Vedic and Management Science for all kinds of help and support for the completion of this work.

Submitted by:
SANJAY DULHANI



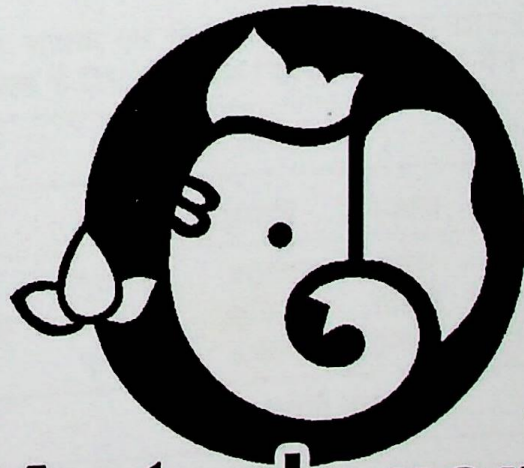
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

AMIT

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण			
जन्म दिनांक	: 2 - 03/01/1981	विक्रमी संवत्	: 2037
जन्म दिन	: शुक्रवार - शनिवार	शक संवत्	: 1902
जन्म समय	: 03:01:27 घण्टे	ऋतु	: शिशिर
इष्टकाल	: 49:02:48 घटी	मास	: पौष
जन्म स्थान	: RAIPUR	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: एकादशी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 08:35:31 घण्टे
अक्षांश	: 26:6:00 उत्तर		: 02:57:59 घटी
रेखांश	: 74:6:00 पूर्व	जन्म तिथि	: द्वादशी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:33:36 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: विशाखा
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 15:06:28 घण्टे
स्थानिक समय	: 02:27:51 घण्टे		: 19:15:20 घटी
साम्पातिक काल	: 09:17:34 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: अनुराधा
वेलान्तर	: 00:03:59 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: शूल
सूर्योदय	: 07:24:20 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 06:17:09 घण्टे
सूर्यास्त	: 17:50:50 घण्टे		: 57:12:04 घटी
दिनमान	: 10:26:31 घण्टे	जन्म योग	: शूल
रात्रिमान	: 13:33:29 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: बालव
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 08:35:31 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: दक्षिण		: 02:57:59 घण्टे
अयनांश	: 23:35:18	जन्म करण	: तैत्ति



Astrologer
08818881888
www.eeshay.com



1111

AMIT

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	आश्विन	लग्न-लग्नाधिपति	:	तुला-शुक्र
दिनांक	:	1,6,11	राशि-राशि स्वामी	:	वृश्चिक-मंगल
दिन	:	शुक्रवार	नक्षत्र-चरण	:	अनुराधा-2
नक्षत्र	:	रेवती	नक्षत्र स्वामी	:	शनि
योग	:	व्यतीपात	योग	:	शूल
करण	:	गर	करण	:	तैत्तिल
प्रहर	:	1	गण	:	देव
वर्ग	:	गरुड	योनि	:	मृग
लग्न	:	मिथुन	नाडि	:	मध्या
सूर्य	:	मकर	वर्ण	:	ब्राह्मण
चन्द्र	:	वृष	वश्य	:	कीटक
मंगल	:	कुम्भ	वर्ग	:	सर्प
बुध	:	वृश्चिक	युंजा	:	मध्य
गुरु	:	मीन	हंसक (तत्व)	:	जल
शुक्र	:	मेष	जन्म नामाक्षर	:	नी
शनि	:	कर्क	पाया-राशी	:	लौह
राहु	:	वृष	पाया-नक्षत्र	:	रजत
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	मकर	भयात	:	29:51:11 घटी
सूर्य के अंश	:	धनु 18:50:00	भभोग	:	65:55:39 घटी
लग्न के अंश	:	तुला 20:11:46	भोग्य दशा काल	:	शनि 10 व 4 म 22 दिन

॥ जन्म संपद्धिपक्षे प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रं च जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं।
अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद
उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु
शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु
शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु

ॐ श्री गणेशाय नमः**AMIT**

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

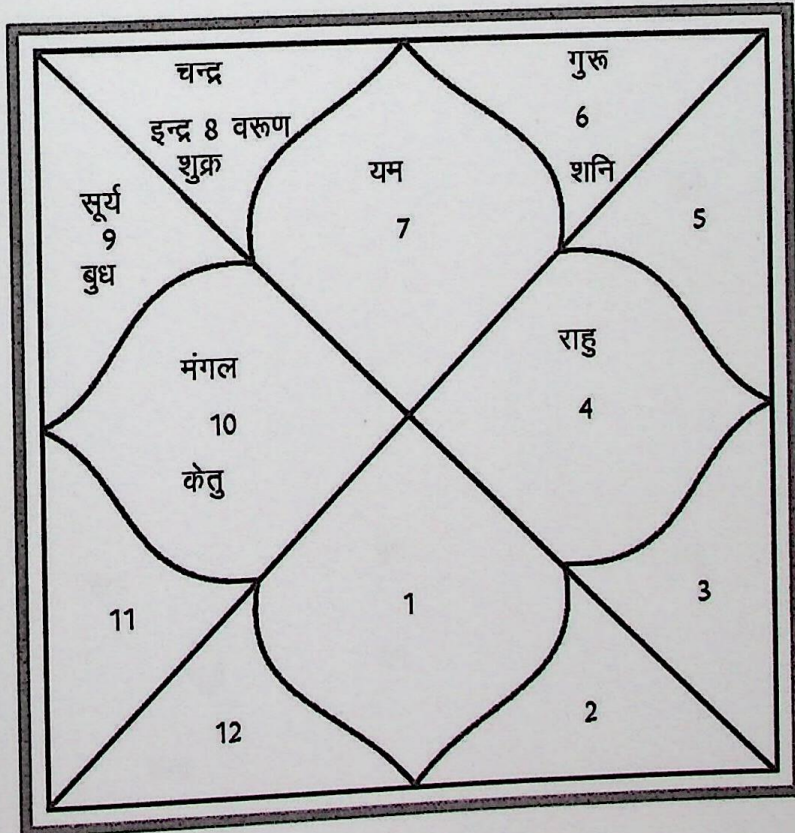
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

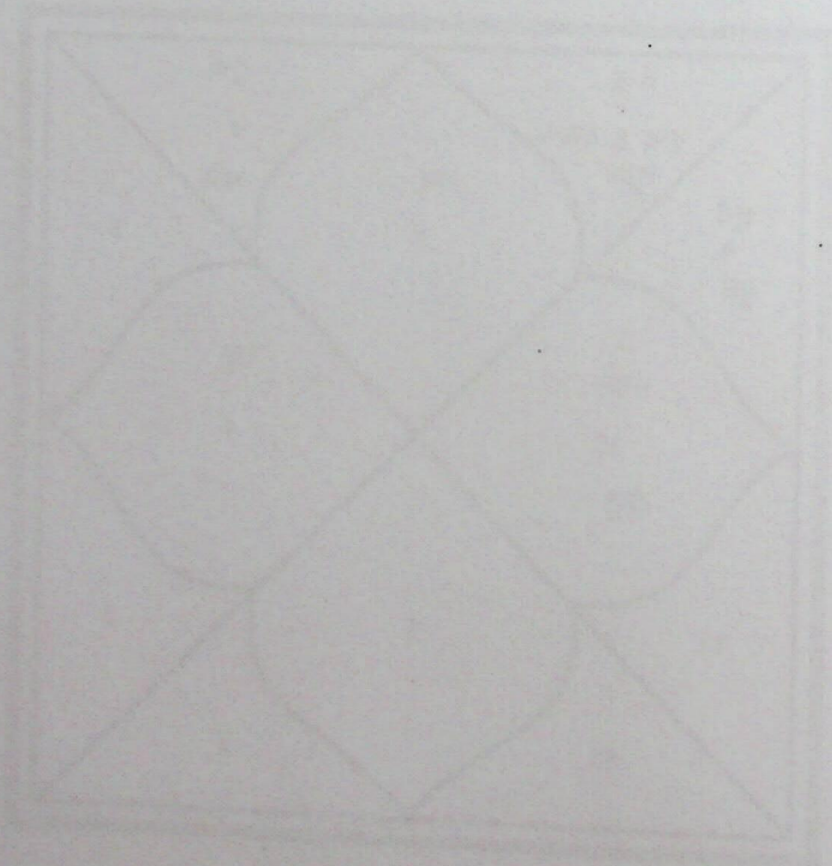
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	तुला	20:11:46	—	विशाखा	1	गुरु	—	—	—
सूर्य	धनु	18:50:00	01:01:10	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	मित्र स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	वृश्चिक	09:22:15	12:12:26	अनुराधा	2	शनि	नीच स्थान	—	मार्गी
मंगल	मकर	08:44:01	00:47:07	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	उच्च स्थान	—	मार्गी
बुध	धनु	20:18:18	01:37:14	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	सम स्थान	अस्त	मार्गी
गुरु	कन्या	16:03:05	00:04:02	हस्त	2	चन्द्र	शत्रु स्थान	—	मार्गी
शुक्र	वृश्चिक	25:55:20	01:15:01	ज्येष्ठा	3	बुध	सम स्थान	—	मार्गी
शनि	कन्या	15:58:16	00:01:42	हस्त	2	चन्द्र	मित्र स्थान	—	मार्गी
राहु	कर्क	17:37:05	00:05:15	अश्लेषा	1	बुध	मूल त्रिकोण	—	वक्री
केतु	मकर	17:37:05	00:05:15	श्रवण	3	चन्द्र	मूल त्रिकोण	—	वक्री
इन्द्र	वृश्चिक	04:55:01	00:02:56	अनुराधा	1	शनि	—	—	मार्गी
वरुण	वृश्चिक	29:31:59	00:02:10	ज्येष्ठा	4	बुध	—	—	मार्गी
यम	तुला	00:35:21	00:00:51	चित्रा	3	मंगल	—	—	मार्गी
दशम भाव	कर्क	23:20:59	—	अश्लेषा	3	बुध	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:35:18

लग्न कुण्डली

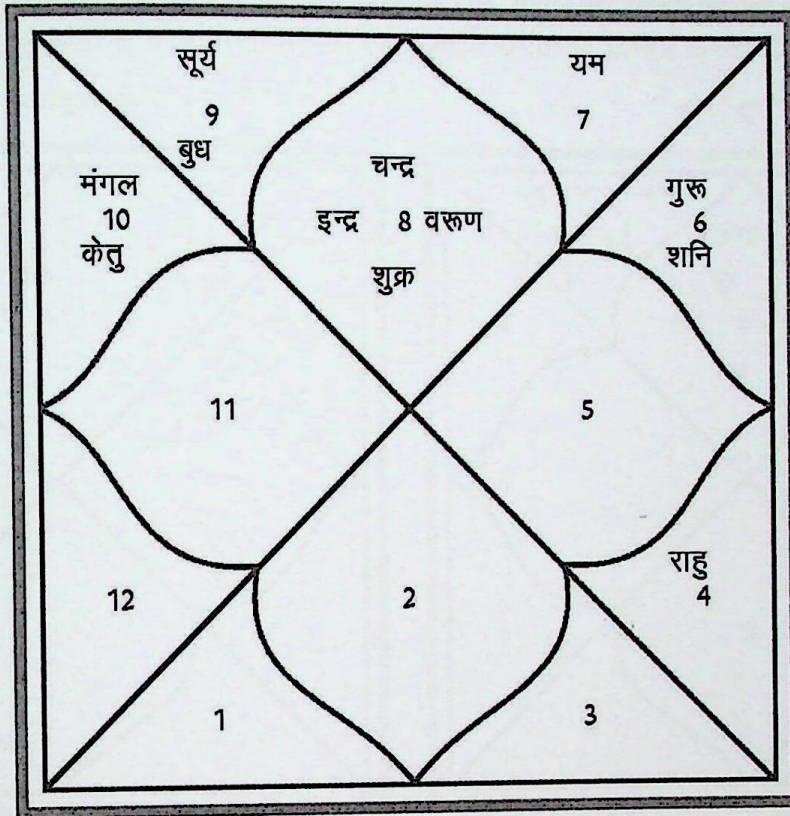




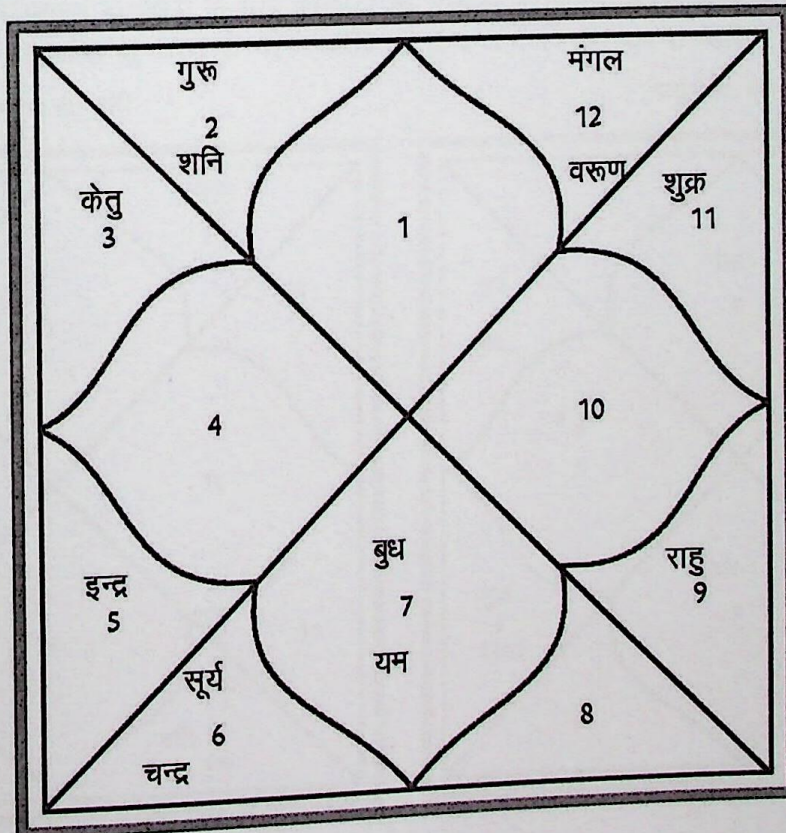
ॐ श्री गणेशाय नमः

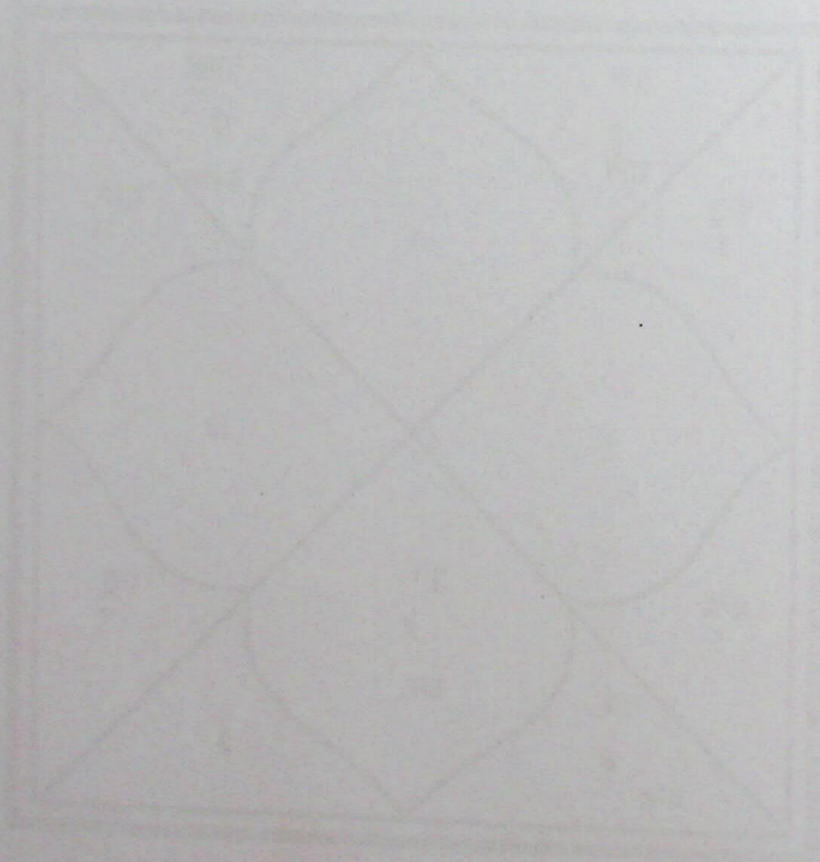
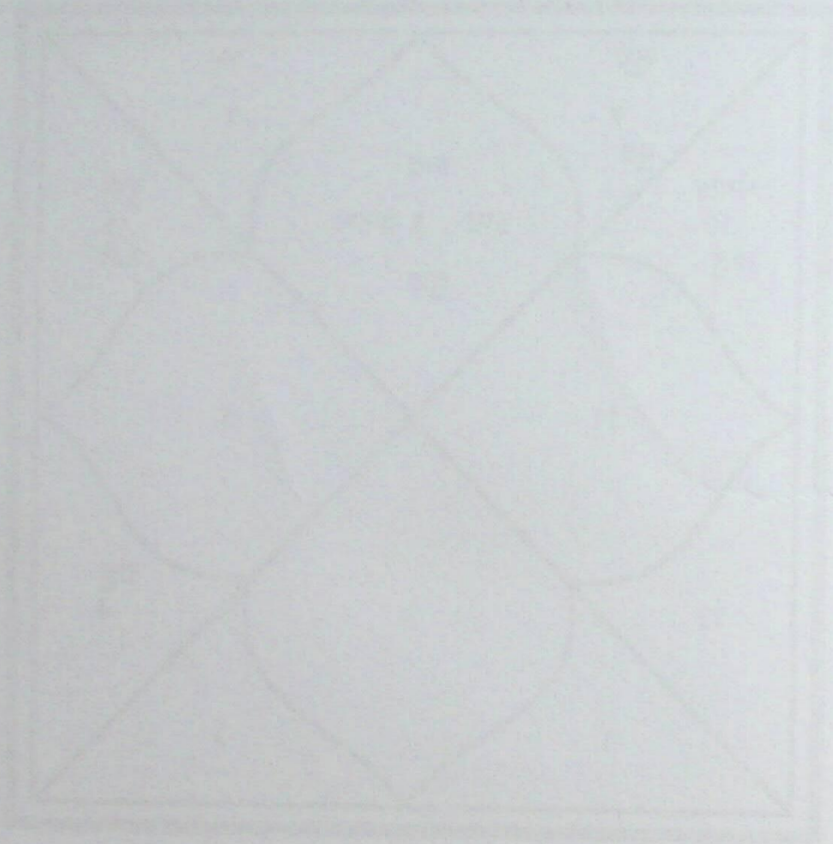
AMIT

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



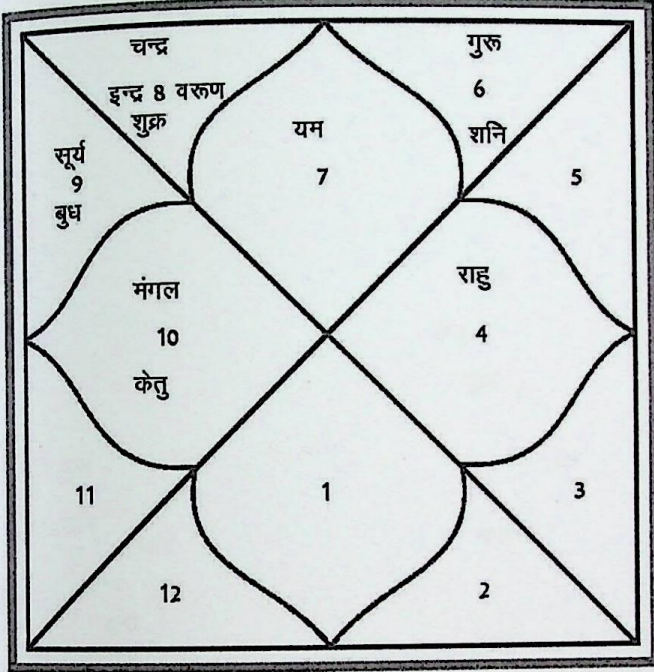


AMIT

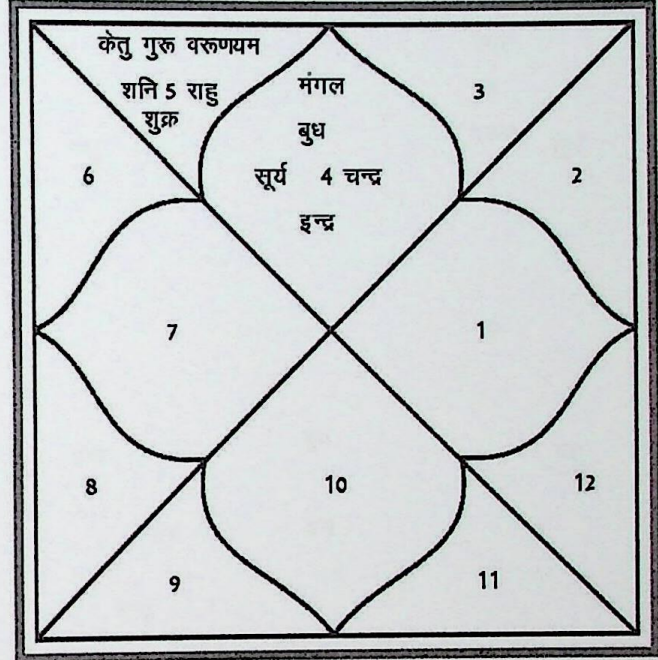
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



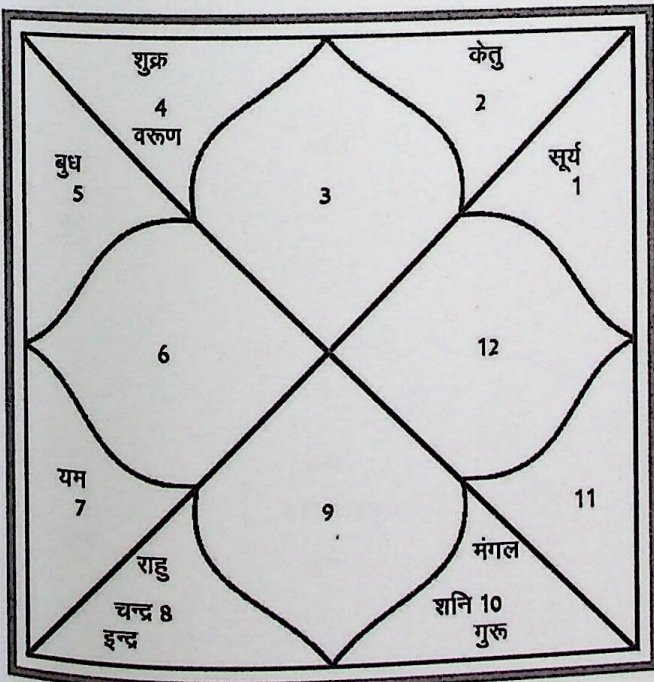
होरा कुण्डली



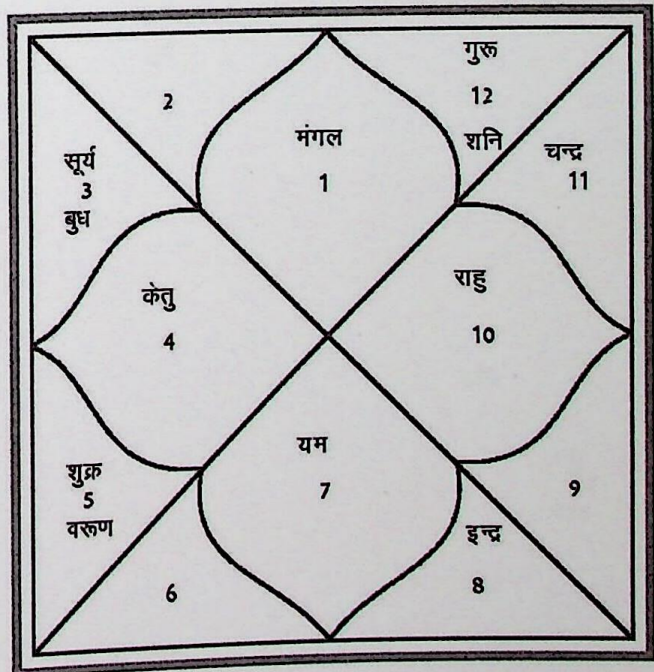
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली



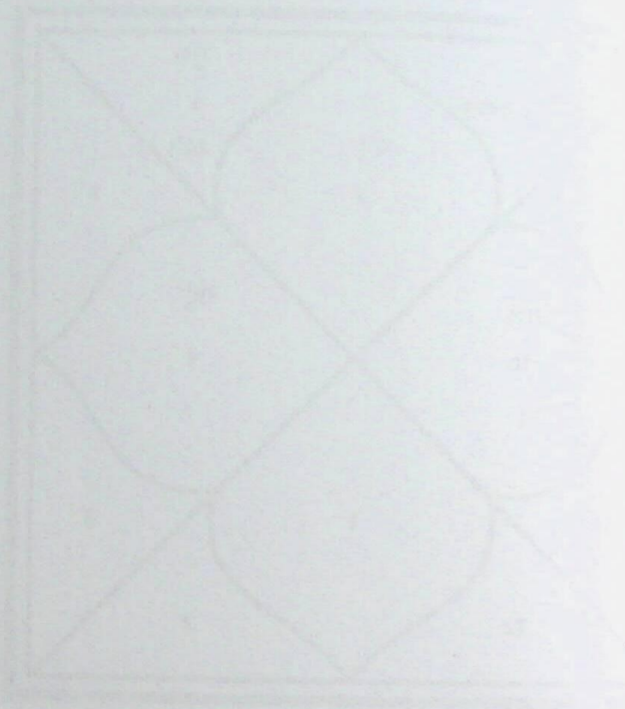
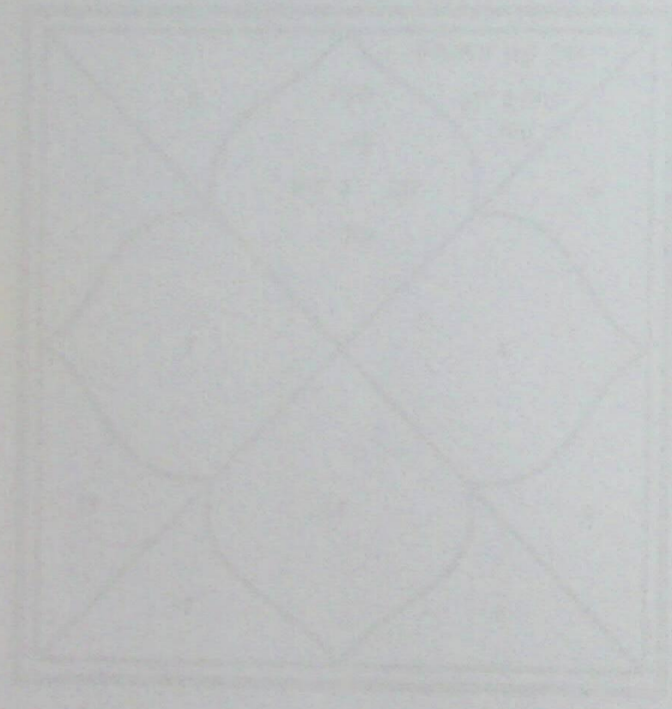
TABLE

1. THE FIRST PART OF THE WORK IS DEVOTED TO THE
GENERAL PRINCIPLES OF THE THEORY OF THE

RELATIONSHIP BETWEEN THE PHYSICAL AND THE
MENTAL ASPECTS OF THE HUMAN MIND.

CHAPTER I

THE HUMAN MIND

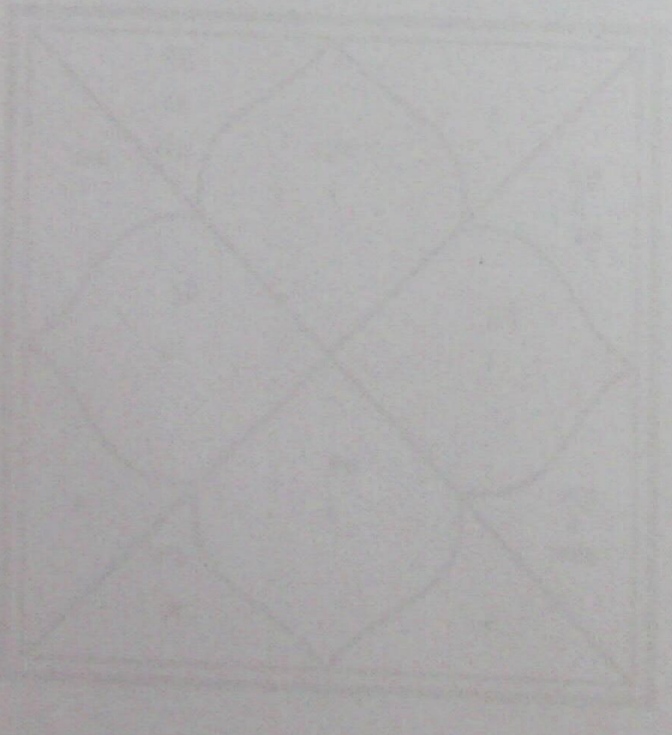


2. THE SECOND PART OF THE WORK IS DEVOTED TO THE
APPLICATION OF THE THEORY TO THE

PHYSICAL ASPECTS OF THE HUMAN MIND.

CHAPTER II

THE PHYSICAL ASPECTS



AMIT

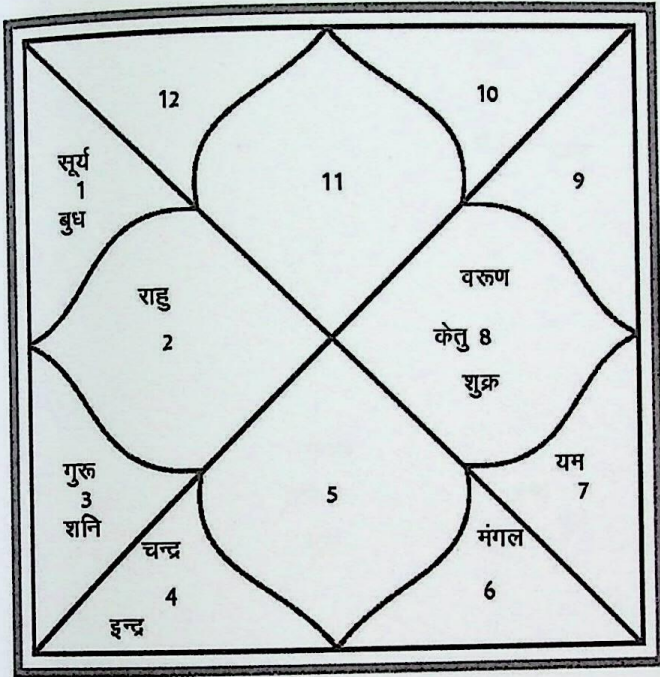
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥

॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

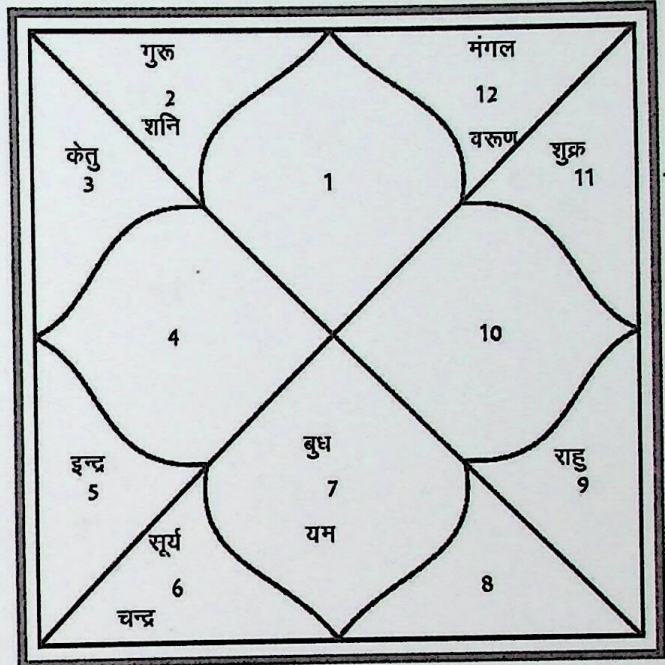
सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।

नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



नवमांश कुण्डली



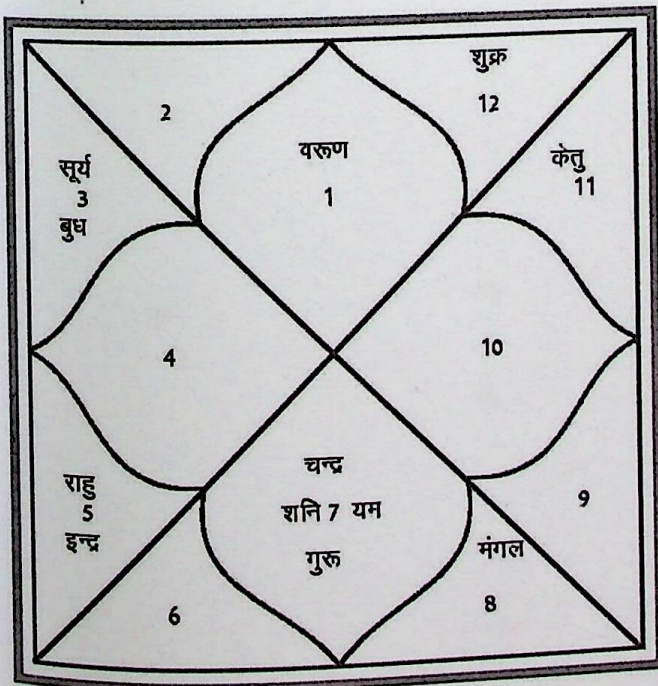
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥

॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

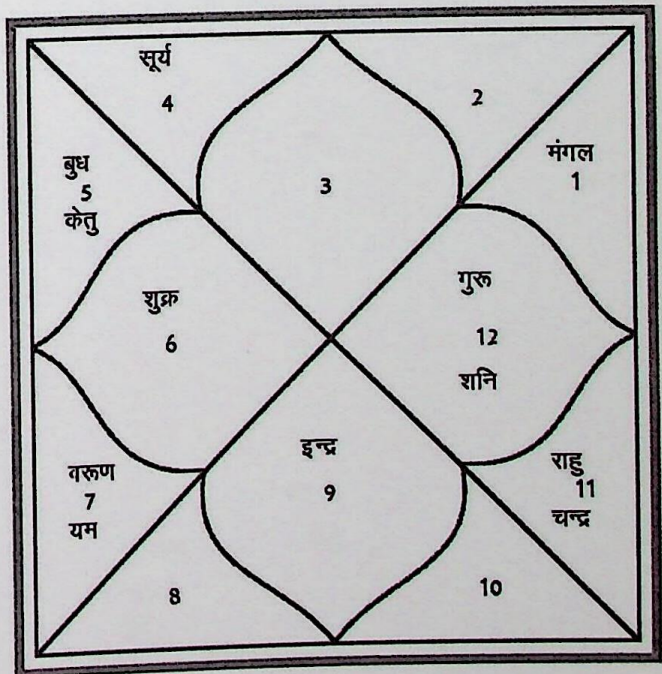
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली



171A

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

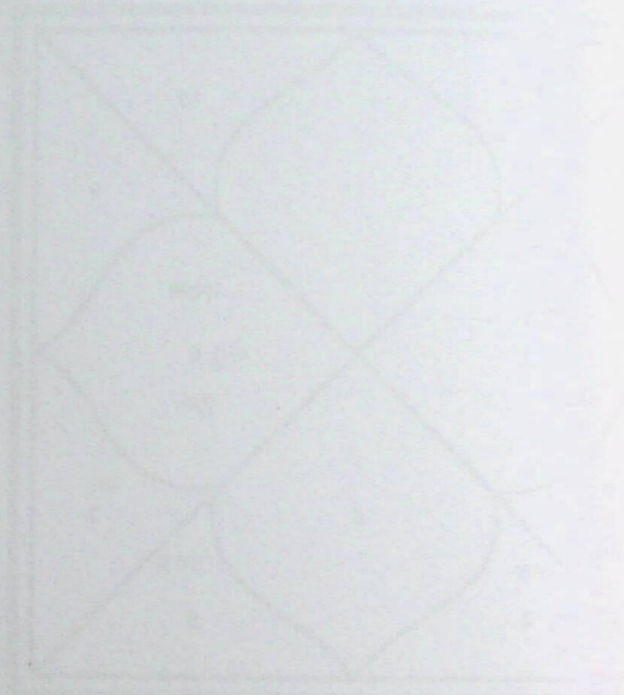
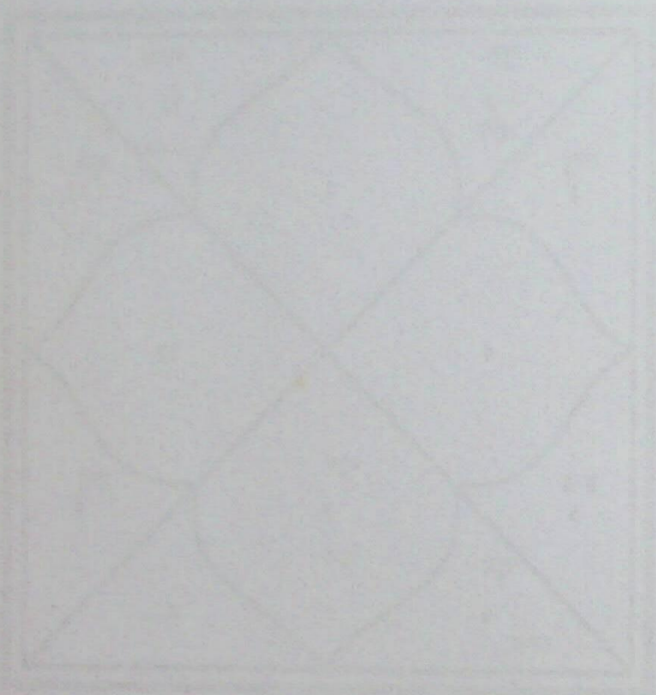
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

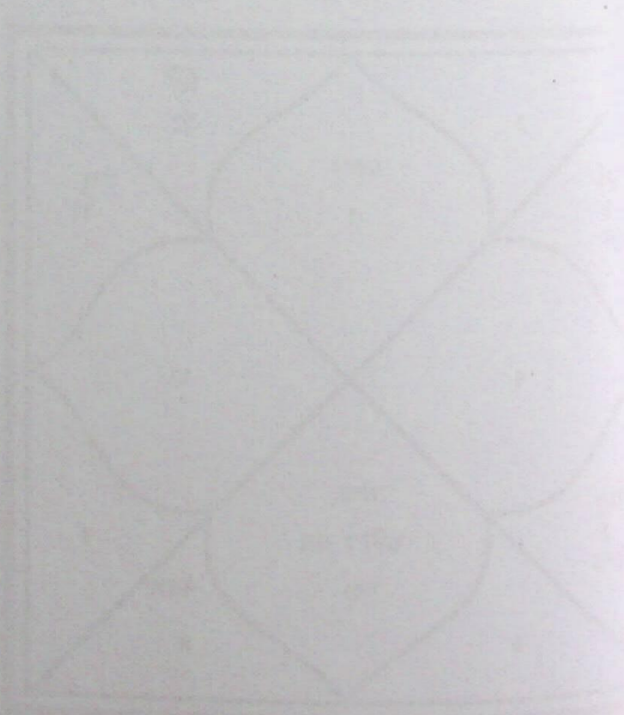
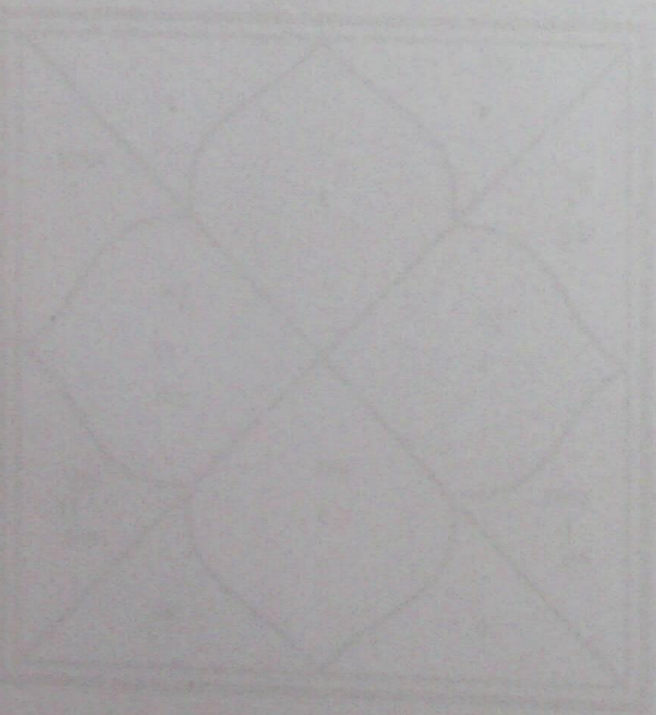
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



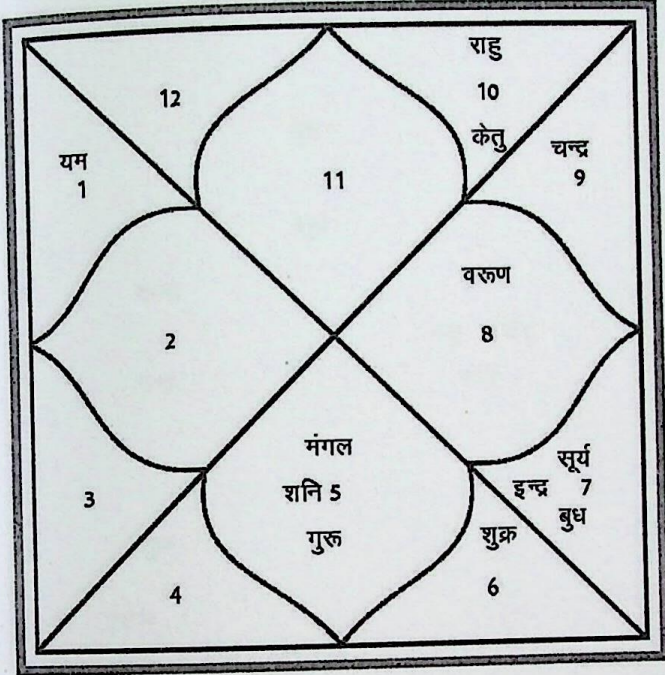
AMIT

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

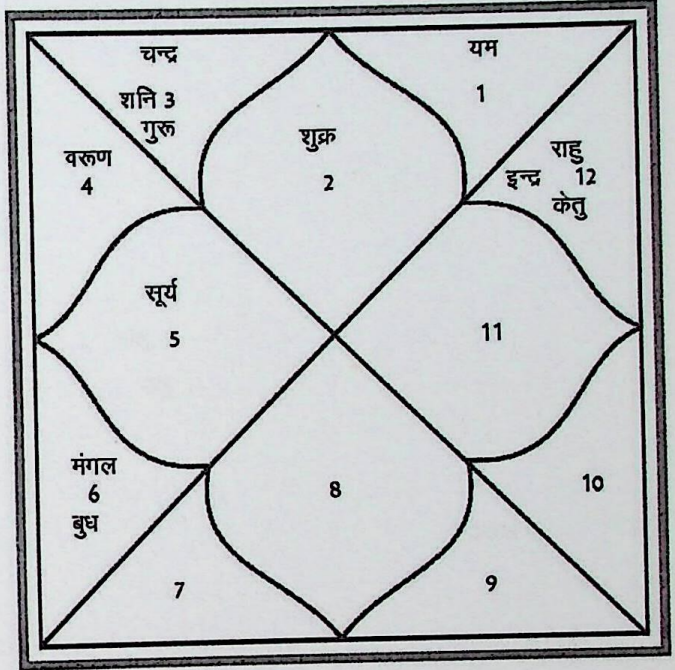
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
 विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली

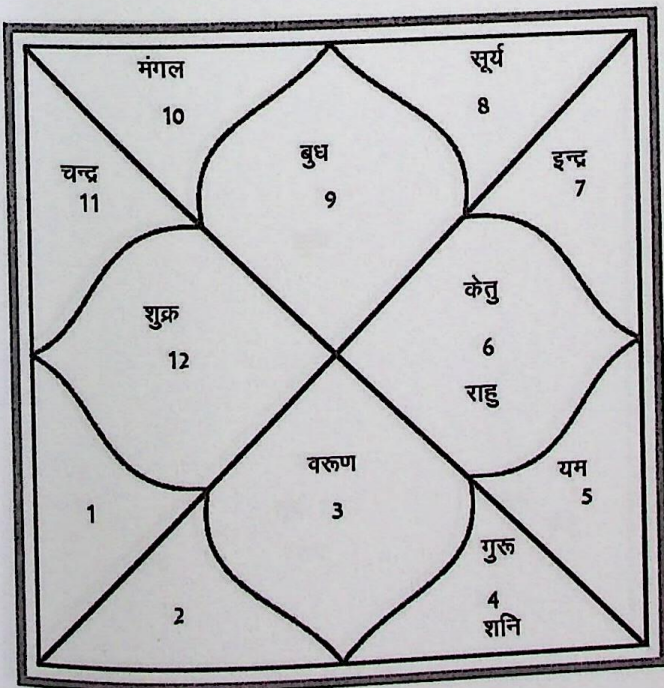


॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

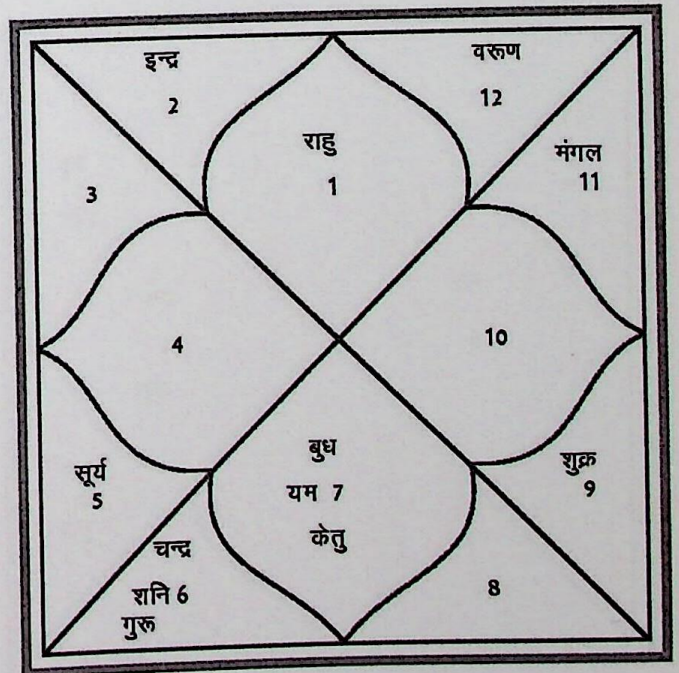
॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
 सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली



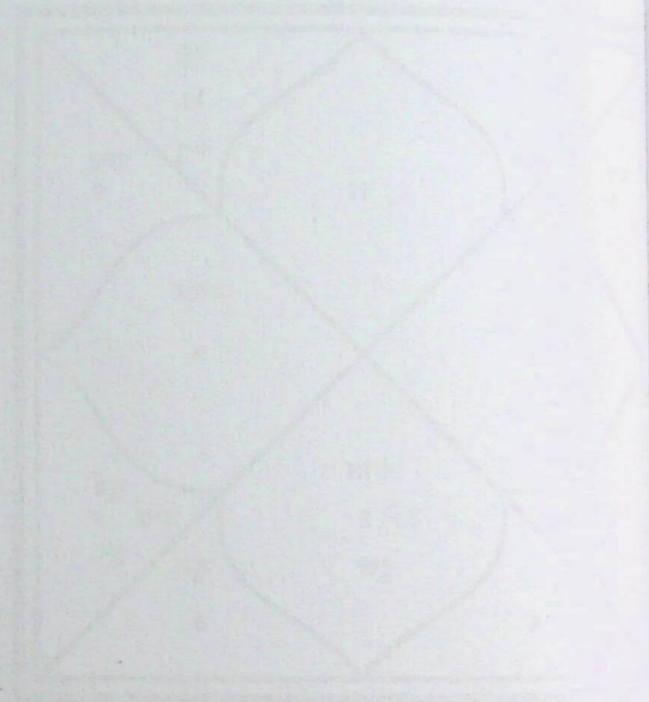
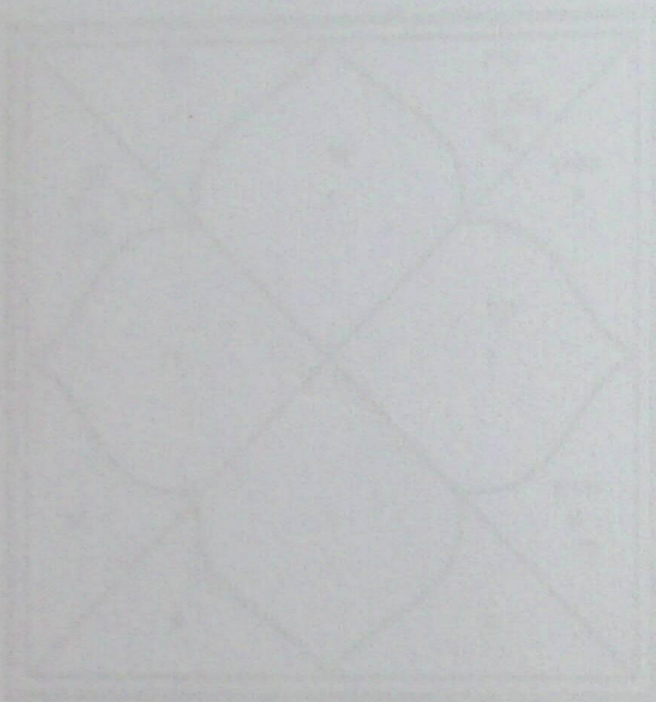
7412

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$ $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$

2. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$ $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$

3. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

4. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

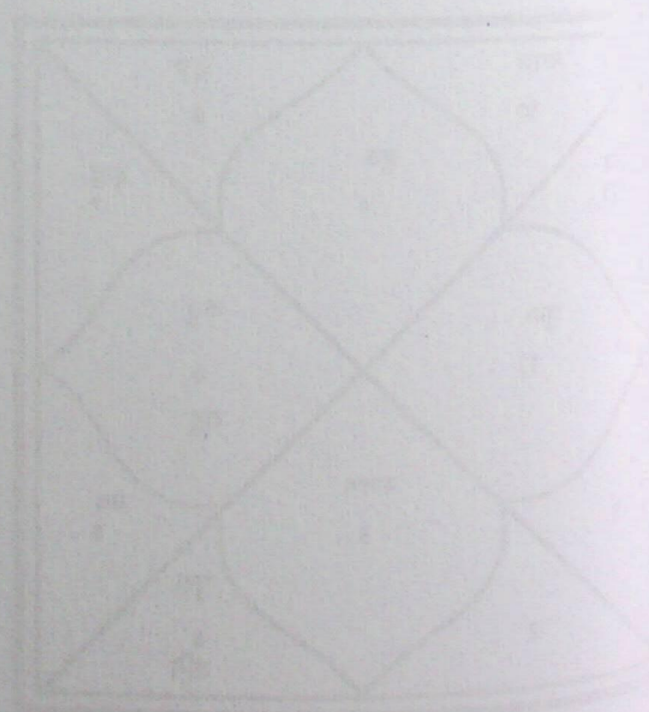
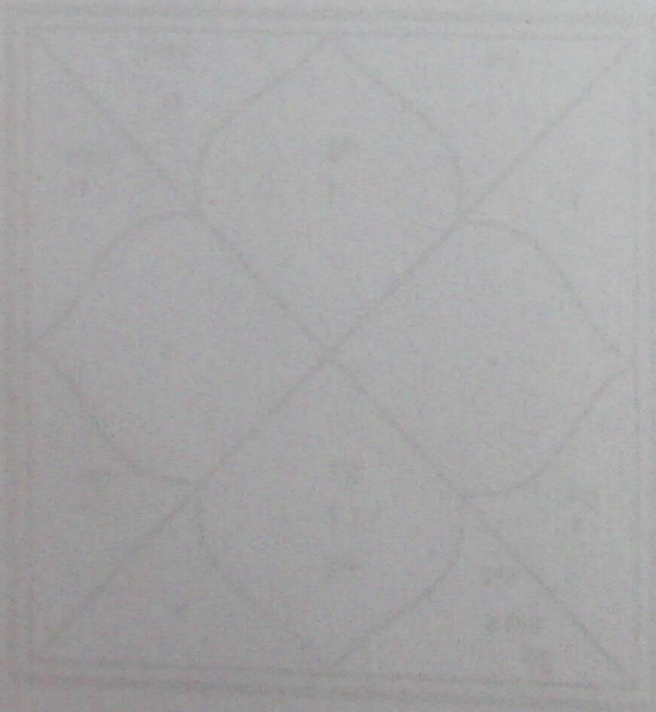


5. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$ $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$

6. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$ $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$

7. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

8. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$



ॐ श्री गणेशाय नमः

AMIT

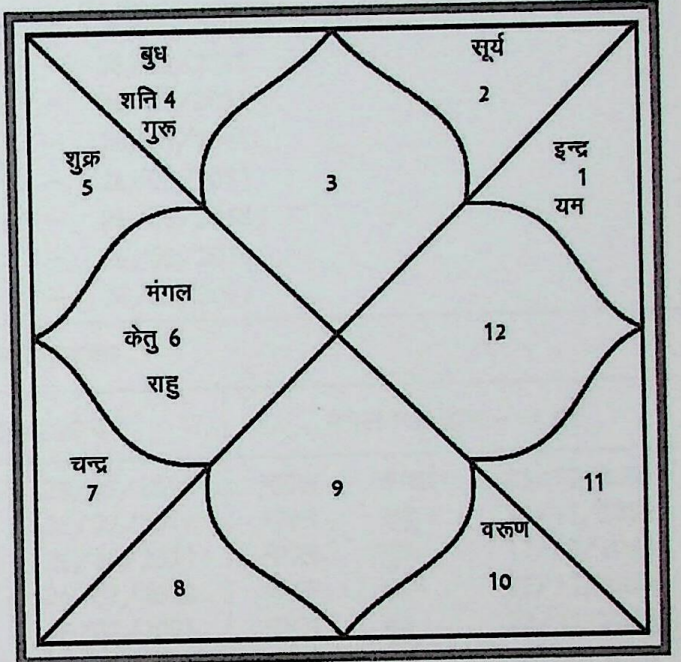
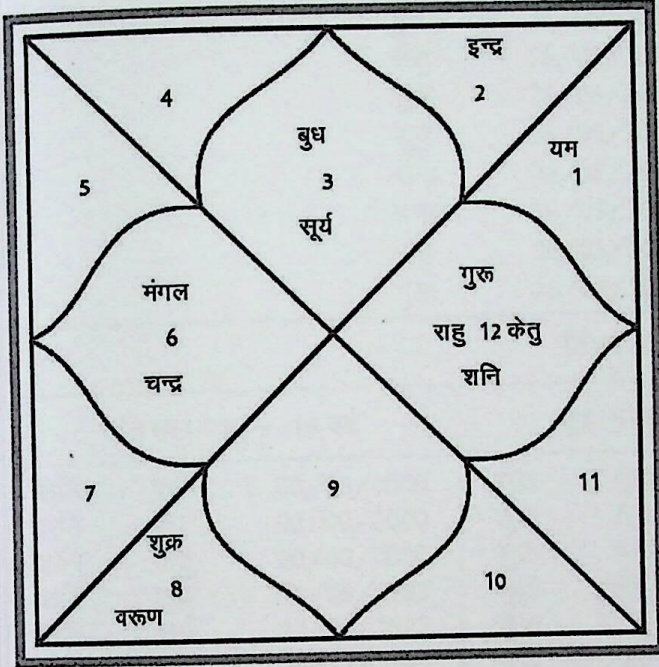
॥ त्रिंशदंशके अरिष्ट फलम् ॥

॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिंशदंश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
 खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिंशदंश कुण्डली

खवेदांश कुण्डली



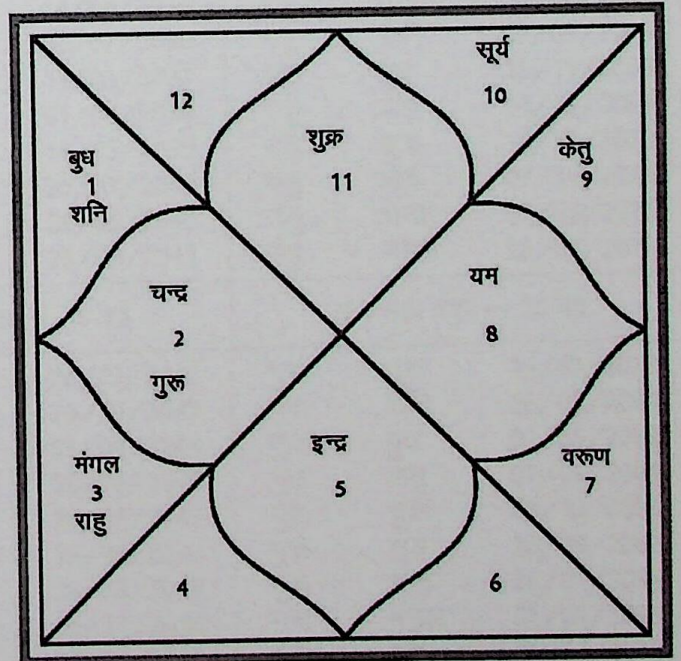
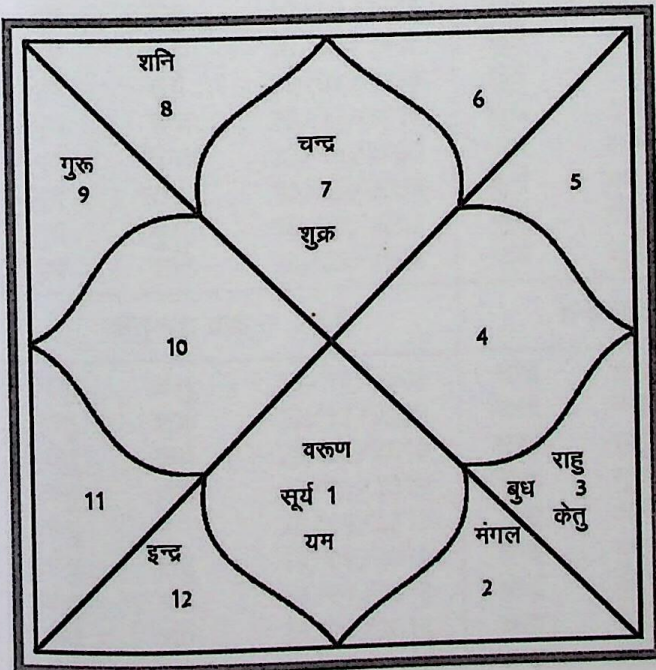
॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

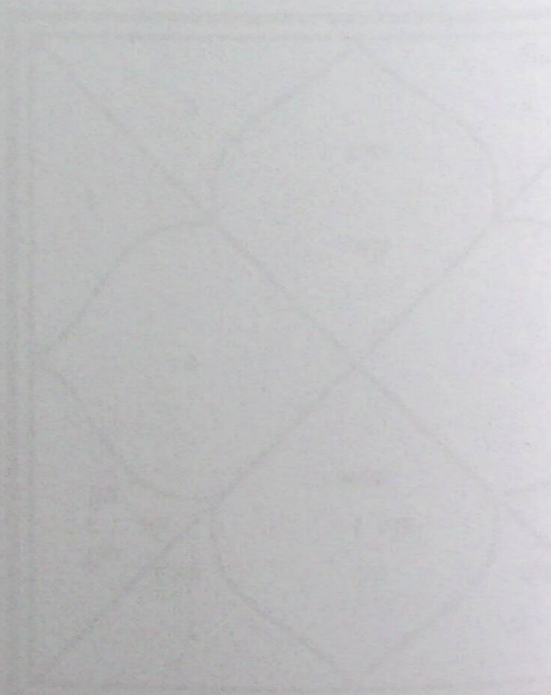
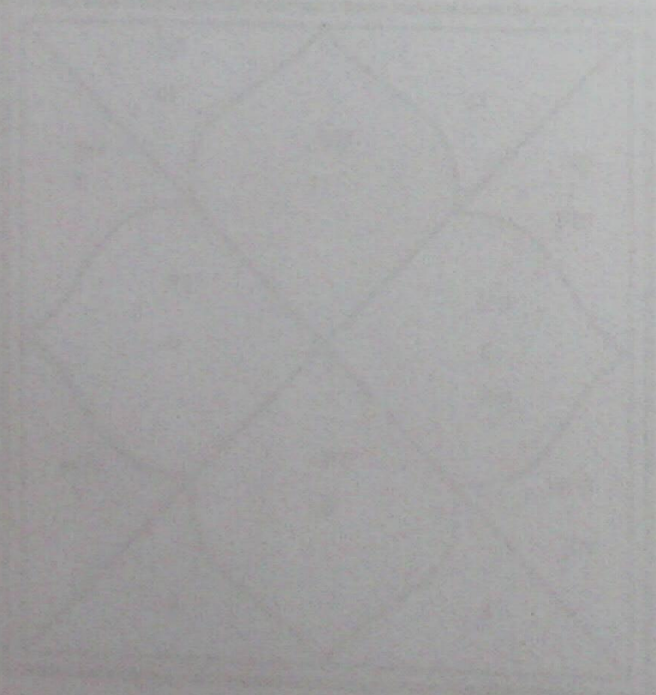
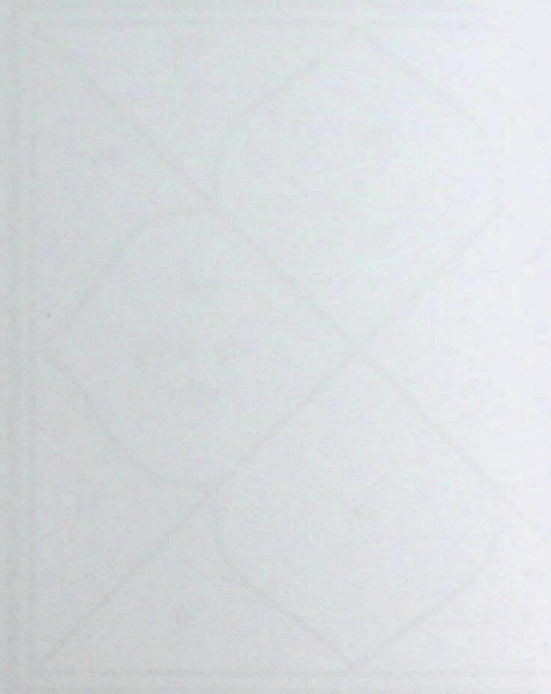
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्
 सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली

षष्ठ्यंश कुण्डली





ॐ श्री गणेशाय नमः

AMIT

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल — शनि 10 वर्ष 4 मास 22 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

शनि	03/01/1981	—	26/05/1991
बुध	26/05/1991	—	26/05/2008
केतु	26/05/2008	—	26/05/2015
शुक्र	26/05/2015	—	26/05/2035
सूर्य	26/05/2035	—	26/05/2041
चन्द्र	26/05/2041	—	26/05/2051
मंगल	26/05/2051	—	26/05/2058
राहु	26/05/2058	—	26/05/2076
गुरु	26/05/2076	—	26/05/2092

विंशोत्तरी अन्तर दशा

शनि महा दशा — 19 वर्ष			शुक्र महा दशा — 20 वर्ष			मंगल महा दशा — 7 वर्ष		
शनि	शनि	00/00/0000	शुक्र	शुक्र	25/09/2018	मंगल	मंगल	23/10/2051
शनि	बुध	00/00/0000	शुक्र	सूर्य	25/09/2019	मंगल	राहु	10/11/2052
शनि	केतु	00/00/0000	शुक्र	चन्द्र	26/05/2021	मंगल	गुरु	17/10/2053
शनि	शुक्र	17/05/1982	शुक्र	मंगल	26/07/2022	मंगल	शनि	25/11/2054
शनि	सूर्य	28/04/1983	शुक्र	राहु	26/07/2025	मंगल	बुध	22/11/2055
शनि	चन्द्र	28/11/1984	शुक्र	गुरु	26/03/2028	मंगल	केतु	19/04/2056
शनि	मंगल	07/01/1986	शुक्र	शनि	26/05/2031	मंगल	शुक्र	19/06/2057
शनि	राहु	13/11/1988	शुक्र	बुध	26/03/2034	मंगल	सूर्य	26/10/2057
शनि	गुरु	26/05/1991	शुक्र	केतु	26/05/2035	मंगल	चन्द्र	26/05/2058
बुध महा दशा — 17 वर्ष			सूर्य महा दशा — 6 वर्ष			राहु महा दशा — 18 वर्ष		
बुध	बुध	23/10/1993	सूर्य	सूर्य	13/09/2035	राहु	राहु	07/02/2061
बुध	केतु	20/10/1994	सूर्य	चन्द्र	14/03/2036	राहु	गुरु	01/07/2063
बुध	शुक्र	20/08/1997	सूर्य	मंगल	20/07/2036	राहु	शनि	07/05/2066
बुध	सूर्य	25/06/1998	सूर्य	राहु	13/06/2037	राहु	बुध	25/11/2068
बुध	चन्द्र	25/11/1999	सूर्य	गुरु	01/04/2038	राहु	केतु	14/12/2069
बुध	मंगल	22/11/2000	सूर्य	शनि	14/03/2039	राहु	शुक्र	14/12/2072
बुध	राहु	10/06/2003	सूर्य	बुध	20/01/2040	राहु	सूर्य	07/11/2073
बुध	गुरु	16/09/2005	सूर्य	केतु	26/05/2040	राहु	चन्द्र	07/05/2075
बुध	शनि	26/05/2008	सूर्य	शुक्र	26/05/2041	राहु	मंगल	26/05/2076
केतु महा दशा — 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा — 10 वर्ष			गुरु महा दशा — 16 वर्ष		
केतु	केतु	23/10/2008	चन्द्र	चन्द्र	26/03/2042	गुरु	गुरु	14/07/2078
केतु	शुक्र	23/12/2009	चन्द्र	मंगल	26/10/2042	गुरु	शनि	26/01/2081
केतु	सूर्य	28/04/2010	चन्द्र	राहु	25/04/2044	गुरु	बुध	01/05/2083
केतु	चन्द्र	28/11/2010	चन्द्र	गुरु	26/08/2045	गुरु	केतु	07/04/2084
केतु	मंगल	25/04/2011	चन्द्र	शनि	26/03/2047	गुरु	शुक्र	07/12/2086
केतु	राहु	14/05/2012	चन्द्र	बुध	26/08/2048	गुरु	सूर्य	25/09/2087
केतु	गुरु	19/04/2013	चन्द्र	केतु	26/03/2049	गुरु	चन्द्र	26/01/2089
केतु	शनि	29/05/2014	चन्द्र	शुक्र	25/11/2050	गुरु	मंगल	01/01/2090
केतु	बुध	26/05/2015	चन्द्र	सूर्य	26/05/2051	गुरु	राहु	26/05/2092



AMIT**लग्न विचार**

तुला राशि, राशि चक्र की सातवीं राशि है। इस राशि का स्वामी शुक्र है। इस राशि में चित्रा नक्षत्र का तृतीय तथा चतुर्थ चरण, स्वाती नक्षत्र तथा विशाखा नक्षत्र का पहला, दूसरा तथा तीसरा चरण आता है। तुला लग्न में जन्म होने से आप मध्यम कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ भुजाओं वाले व्यक्ति होंगे। आप मित्र बनाने में माहिर होंगे तथा आप हँसमुख एवं व्यवहार कुशल भी होंगे। आप अपने जीवन में न्याय व आदर्श को सर्वोपरि महत्त्व देंगे। आप ऐसे कार्य से दूर रहेंगे जो अनीतियुक्त या अधार्मिक हो तथा जिसमें कपट या धोखे की सम्भावना हो। रचनात्मक कार्यों में आपकी रुचि अधिक रहेगी। सामाजिक सेवा के कार्यों में भी आप अपना योगदान देंगे। आप कल्पनाशील व्यक्ति होंगे। आप कल्पना के क्षेत्र में रम जायेंगे तथा व्यावहारिकता से दूर हो जायेंगे। ऐसी स्थिति में जब भी आपकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य होगा, आप निराश हो जायेंगे। कला, संगीत, चलचित्र, नाटक आदि में आपकी रुचि रहेगी। आप इस क्षेत्र से अर्थ प्राप्ति भी करेंगे।

आप स्व-निर्मित पुरुष (सेल्फ मेड मेन) होंगे। आप अपने परिवार या सम्बन्धियों से कोई विशेष सहायता लिये बिना ही अपने परिश्रम, लगन, ईमानदारी तथा कुशलता से लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। आपका पारिवारिक जीवन सफल रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में सद्भाव रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य होगा। आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक उन्नति करेंगे। आप आयात-निर्यात, सम्पदा की खरीद-बेचान, स्टोर कीपर, जनरल मैनेजर, व्यवसायी, दुकानदार, कलाकार आदि व्यवसायों से धन कमायेंगे। आप राजनीति के क्षेत्र में बहुत प्रवीण होंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफल रहेंगे। आपको ज्वर, सिरदर्द, स्नायु रोग, गले तथा फेफड़े के रोग पीड़ित करेंगे। आपको वात तथा कफ प्रधान रोगों, सर्दी-जुखाम तथा रक्तचाप से भी कष्ट हो सकता है।

आपका जन्म तुला लग्न में 20 अंश 00 कला से 23 अंश 20 कला के बीच में होने से आप लम्बे कद, गौरवर्ण तथा बलिष्ठ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका उन्नत ललाट तथा पैनी दृष्टि आपके व्यक्तित्व को और आकर्षक बनायेगी। आपकी निर्णय शक्ति प्रखर रहेगी। आप किसी भी विषय में स्वतन्त्र निर्णय ले सकेंगे। इस कारण आपके कार्य सफल रहेंगे। आत्मविश्वास की आप में कमी नहीं रहेगी। आप स्पष्टवादी व्यक्ति होंगे। निर्भीक भाव से स्पष्ट बातें कहने से आप अलोकप्रिय भी हो जायेंगे। कभी-कभी जोश के अतिरेक आप अपने अधिकारियों का अपमान भी कर सकते हैं। अतः आपको ऐसी स्थिति से बचना चाहिये। आपको क्रोध शीघ्र ही आयेगा। हालांकि वह क्रोध अल्पकालिक ही होगा, किन्तु इससे कभी-कभी आपके मित्र भी आपसे अप्रसन्न हो जायेंगे। आपके विचार सुलझे हुए और स्पष्ट होंगे। चित्रकला, संगीत, नाटक तथा काव्य में आपकी आस्था रहेगी। आप निडर, अभिमानी, तथा उदार व्यक्ति होंगे। आपके शत्रु प्रायः आप से दबकर ही रहेंगे। आपके जीवन में जमीन-जायदाद की प्राप्ति का योग रहेगा तथा आपको आर्थिक लाभ भी होगा। आपका



AMIT

लग्न विचार

पारिवारिक जीवन प्रायः सुखी रहेगा तथा आपका सन्तान सुख सामान्य ही रहेगा। आप इन्जीनियरिंग, वकालत, खनिज कार्य, सेना तथा पुलिस सेवा एवं व्यावसायिक कम्पनियों में उत्तरदायी पदों पर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपको एकल व्यवसाय की बजाय साझेदारी का व्यापार अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। आपको सिरदर्द, चोट, जलन, उदर विकार, स्मरण शक्ति की कमी इत्यादि रोगों से कष्ट हो सकता है।



AMIT**ग्रह विचार****सूर्य**

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान पर धनु में स्थित है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। क्रूर ग्रह सूर्य तृतीय स्थान में अच्छा फल देता है। अतः सूर्य आपको शुभ फल प्रदान करेगा। आप परिश्रमी, कुशल तथा पराक्रमी रहेंगे। विरोधी तथा शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा। आप तीव्र बुद्धि तथा सम्पन्न रहेंगे। आपको जीवन में यात्राएं काफी करनी पड़ेगी तथा इनसे आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा।

स्वास्थ्य साधारणतः ठीक रहेगा किन्तु कभी-कभी सिर दर्द से पीड़ित हो सकते हैं।

आपके भाई-बहिन कम होंगे तथा उनसे आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। आप स्वभाव से ही मृदुभाषी होंगे। दान-पुण्य में भी आपकी रुचि रहेगी। आप बुद्धिमान तथा उच्च शिक्षित होंगे। आप लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, प्रोफेसर या वकील बन सकते हैं। आपका स्वभाव खर्चीला होगा किन्तु आपकी आय पर्याप्त होगी। आपको वाहन सुख भी प्राप्त होगा।

यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से नवम स्थान को देख रहा है। यहाँ नवम स्थान में मिथुन राशि है, जिसका स्वामी बुध सूर्य का मित्र है। यह आपके लिये अच्छे फल प्रदान करेगा। आपकी धर्म में रुचि रहेगी। आपको धार्मिक स्थानों की यात्रा के भी अवसर प्राप्त होंगे। भाग्य की सहायता से आपके कार्य सफल होंगे। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। राज्य पक्ष से सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

तुला लग्न में तृतीय भाव के सूर्य के भाई और पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आपको भाई-बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा आपके पराक्रम में भी विशेष वृद्धि हो सकती है। आप अपने बाहुबल पर भरोसा रखने वाले व्यक्ति होंगे। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होगी। अच्छी आमदनी होने के कारण आप भाग्यवान् व्यक्ति समझे जायेंगे।

चन्द्र

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में, वृश्चिक राशि में स्थित है, जो चन्द्र की नीच राशि है। सामान्यतः द्वितीय स्थान का चन्द्र शुभ फल कारक होता है। यहाँ दशमेश चन्द्र, धन स्थान पर होने से, आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह चन्द्र आपको परिश्रमी तथा कार्यकुशल बनाता है। आपका स्वभाव कुछ तेज होता है, किन्तु अपने मनोभावों तथा मन की नाराजगी को, छुपाने में कुशल होने के कारण, मित्रों में आप लोकप्रिय हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा-कदा सामान्य बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। यदि चन्द्रमा क्षीण या पापाक्रान्त हो तो यह स्वास्थ्य के लिये शुभ नहीं रहता। ऐसी स्थिति में आप नेत्र रोग, मुख, गले तथा सर्दी की बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी।

१००

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ ॥

॥ अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ ॥

॥ अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

AMIT**ग्रह विचार**

शैक्षणिक जीवन में आप अच्छी उन्नति कर सकते हैं। आपकी रुचि विज्ञान, अभियान्त्रिकी आदि विषयों में रहती है।

चन्द्रमा कभी-कभी मानसिक भ्रम की स्थिति भी, उत्पन्न कर सकता है, परन्तु ऐसी स्थिति अस्थायी होती है। आपको कुटुम्ब का सुख कम प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपकी रुचि सर्विस में अधिक रहती है तथा आप सर्विस में उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। राजकीय क्षेत्र में भी, आपको अच्छा पद प्राप्त हो सकता है। प्रकृति से कृपण होने के कारण, आप धन का संचय करने में समर्थ हो सकते हैं।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, अष्टम् स्थान पर वृष राशि में पड़ती है, जो चन्द्र की उच्च राशि है। आप दीर्घायु होंगे। आपको लॉटरी, वसीयत आदि के माध्यम से, आकस्मिक धन की प्राप्ति भी हो सकती है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

तुला लग्न में द्वितीय भाव के चन्द्रमा के नीच का होकर धन-कुटुम्ब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से आपकी धन-संचय शक्ति में कमी आ सकती है तथा कुटुम्ब का सुख भी आपको प्राप्त नहीं होता है। आपके व्यवसाय एवं सुख के मार्ग के बाधाएँ पड़ेंगी तथा धन-वृद्धि के लिये आपको गुप्त-युक्तियों का आश्रय लेना पड़ सकता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टम भाव को देखता है, अतः आपकी आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ में वृद्धि होगी।

मंगल

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में मकर राशि में स्थित है, जो मंगल की उच्च राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ मंगल अच्छे फल नहीं देता है, किन्तु यहाँ धनेश तथा सप्तमेश मंगल के चतुर्थ स्थान में उच्च राशि का होने से यह आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह मंगल आपकी कुण्डली को मंगलीक बनाता है। आपका स्वभाव अभिमानी तथा राजसी रहेगा, किन्तु मित्रों के साथ आपका व्यवहार अच्छा रहेगा।

आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा-कदा वातरोग, रक्त विकार आदि से आपको कष्ट हो सकता है। अपनी माता के साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधायें भी प्राप्त होंगी। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आप मुख्यतः विज्ञान तथा विदेशी भाषाओं के ज्ञान में रुचि रखेंगे। शैक्षणिक जीवन में आपकी प्रगति अच्छी रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। व्यापार में आपकी अभिरुचि होगी तथा व्यापार के द्वारा ही आप प्रगति कर सकते हैं। आपको निजी व्यवसाय के स्थान पर साझेदारी का व्यापार अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

AMIT**ग्रह विचार**

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी मंगल स्वयं ही है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं कहा जा सकता। आपकी पत्नी कार्यकुशल, साहसी किन्तु अभिमानी तथा उग्र स्वभाव की हो सकती है। आपके साथ उसके विवाद तथा मतभेद हो सकते हैं। आपके द्वि-विवाह का योग भी बनता है। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। अपने पिता के साथ आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष की प्रतिकूलता आपके लिए बाधक सिद्ध हो सकती है। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य मंगल के मित्र हैं। आपकी आय बढ़ेगी। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत हो सकते हैं।

तुला लग्न में चतुर्थ भाव के मंगल के उच्च का होकर केन्द्र, माता तथा भूमि के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का विशेष सुख मिलेगा तथा आपके पास धन का संचय भी होगा। यहाँ से मंगल अपनी चौथी दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको स्त्री एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख एवं सफलता की प्राप्ति होगी। मंगल के अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र राशि में दशम भाव को देखने से आपको पिता के सुख में कमी रह सकती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में आपकी उन्नति में व्यवधान पड़ सकता है। मंगल के अपनी आठवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आपको आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता मिलेगी।

बुध

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में, धनु राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु की बुध से शत्रुता है। सामान्यतः तृतीयस्थ बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, यहाँ नवमेश तथा द्वादशेश बुध, तृतीय स्थान में आपको उत्तम फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको सुन्दर, गुणवान, परिश्रमी तथा विद्वान व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा। आपकी मिलनसार प्रकृति के कारण मित्रों की संख्या अधिक रहती है। मित्रों तथा परिजनों में आप लोकप्रिय रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। आपका स्वास्थ्य बाल्यावस्था में कुछ कमजोर तथा बाद में अच्छा रहेगा। यदा-कदा वात रोगों से कष्ट होना सम्भावित है।

आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि विज्ञान, प्राचीन इतिहास, साहित्य, विधि आदि विषयों में रह सकती है। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, धर्मशास्त्र तथा गूढ़ विधाओं के अध्ययन का भी शौक रहेगा। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी धर्म में आस्था रहती है किन्तु इसको आप प्रदर्शित नहीं करते। आपका भाग्योदय 32वें वर्ष में हो सकता है। भाई-बहनों से आपका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा। पराक्रम तथा पुरुषार्थ की आपमें कमी नहीं होगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी

AMIT**ग्रह विचार**

रहेगी। आप साहित्यकार, इतिहासकार, वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ, लेखक तथा प्रोफेसर भी बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है। व्यापार में भी आपको अच्छी सफलता प्राप्त हो सकती है।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जो बुध की स्व-राशि है। धर्म में आपकी आस्था रहेगी। 32वें वर्ष में आपकी आर्थिक उन्नति सम्भव है।

तुला लग्न में तृतीय भाव के बुध के व्ययेश होकर भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आपको भाई-बहिनों का सुख मिलेगा तथा आपके पराक्रम की वृद्धि होगी। आपकी भाग्योन्नति के मार्ग में साधारण रुकावटें आ सकती हैं, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होगा। यहाँ से बुध अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि मिथुन में नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य की वृद्धि होगी तथा आप धर्म का पालन भी करेंगे।

गुरु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः द्वादशस्थ गुरु अशुभफल दायक रहता है। यहाँ तृतीयेश तथा षष्ठेश गुरु द्वादश स्थान में आपको अनिष्ट फल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको भ्रमणप्रिय, उद्यमी तथा व्ययशील व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कटु रहने से परिजनों तथा मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा नहीं रहती है।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नेत्र रोग, आँतों की बीमारियों तथा वात दोष आपको से पीड़ा हो सकती है। बाल्यावस्था में आपका स्वास्थ्य अधिक खराब रह सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, विधि आदि विषयों की ओर रहता है। यदा-कदा किसी कारण से अवरोध अथवा असफलता से आपको शिक्षा में बाधा आ सकती है किन्तु अपने साहस तथा परिश्रम से आप शिक्षा पूर्ण करते हैं। आप भ्रमणप्रिय व्यक्ति होते हैं तथा आपको दूरस्थ स्थानों में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। अपने भाई-बहिनों से आपके वैचारिक मतभेद रहते हैं। आपके शत्रु अधिक होते हैं। गुप्त शत्रु आपके सम्मान को क्षति पहुँचा सकते हैं तथा कोर्ट-कचहरी में भी आपके धन का व्यय होना सम्भव है। अन्ततः आप शत्रुओं का शमन करने में सफल रहेंगे। आपको सन्तान सुख अल्प अथवा आपकी सन्तान को कष्ट होना भी सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, चिकित्सक, विधि विशेषज्ञ, लेखक, सरकारी कर्मचारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ नहीं मिलेगा, यदा-कदा हानि होना भी सम्भव है। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होने से आपको अर्थ संग्रह करने में बाधा रहेगी। इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है।

AMIT**ग्रह विचार**

अपनी माता से आपके मतभेद रह सकते हैं। भूमि, भवन, वाहनादि भौतिक सुख—सुविधायें प्राप्त करने में आपको विलम्ब अथवा बाधाएँ आ सकती हैं। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जो गुरु की स्वराशि है। आपको रोगों से कष्ट हो सकता है। शत्रुओं के कुचक्रों को नष्ट करने में आप सफल रहेंगे। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहता है। यदा—कदा आपको आकस्मिक धन—हानि भी हो सकती है।

तुला लग्न में द्वादश भाव के गुरु के व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से आपका खर्च अधिक होगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होगी। गुरु के षष्ठेश होने के कारण आपको भाई—बहिन के सुख में कुछ कमी प्राप्त हो सकती है तथा आपके पुरुषार्थ पर भी उसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी नीच—दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपके माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी आ सकती है। गुरु के अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने के कारण गुप्त—युक्तियों के द्वारा आप शत्रु—पक्ष में सफलता प्राप्त करेंगे, परन्तु आपको कुछ दबना भी पड़ सकता है। गुरु के अपनी नवीं दृष्टि से अष्टम भाव को शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देखने से आपको कुछ कठिनाइयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलेगी तथा गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई—बहिनों से भी कुछ परेशानी रह सकती है।

शुक्र

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से शुक्र के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः द्वितीय स्थान में शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ लग्नेश तथा अष्टमेश शुक्र धन स्थान में आपको उत्तम फल कारक रहेगा। यह शुक्र आपको विद्वान्, यशस्वी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होता है किन्तु अपनी व्यवहारकुशलता से आप अपरिचितों को भी मित्र बना लेते हैं। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा—कदा आपको चर्म रोग से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी होगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहता है। इसके अलावा संगीत, गायन, वादन, कला आदि विधाओं में भी आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। अध्ययन काल में आपकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ सराहनीय होती हैं। आप दीर्घायु होते हैं। आपको वसीयत आदि माध्यम से आकस्मिक धन लाभ भी प्राप्त हो सकता है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहता है। आपकी पत्नी लम्बे कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक



[Faint, illegible text visible through the paper, likely bleed-through from the reverse side.]

AMIT**ग्रह विचार**

गठन वाली स्त्री होती है। वह कार्यकुशल, गुणवान किन्तु स्वभाव की तेज स्त्री होती है। आपके साथ उसके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। अपनी व्यवहारकुशलता से आप धर में शान्ति तथा सामंजस्य बनाये रख सकते हैं। आप में चारित्रिक दोष भी हो सकते हैं।

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, चिकित्सक, गणितज्ञ, संगीतकार, कलाकार, वैज्ञानिक आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको लाभ होगा। आपको धन प्राप्ति की लालसा तीव्र रहती है तथा आप शीघ्रता से धनी बनना चाहते हैं। इस कारण यह भी सम्भव है कि, आप व्यापार में अवैधानिक तरीकों का प्रयोग करें। ऐसा करना आपके लिये हानिकारक सिद्ध हो सकता है। यह शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से अष्टम स्थान में वृष राशि को देखता है, जो शुक्र की स्वराशि है। आपका आयु पक्ष दीर्घ होता है। आपको आकस्मिक धन लाभ भी प्राप्त हो सकता है।

तुला लग्न में द्वितीय भाव के शुक्र के धन एवं कुटुम्ब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से आपको धन-संचय करने के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ेगा तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होगा। शुक्र के अष्टमेश होने के कारण आपको धन-संचय एवं कुटुम्ब-सुख में कुछ परेशानियाँ भी आती रहेंगी। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि स्वराशि वृषभ में अष्टम भाव को देखता है, अतः आपको आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ प्राप्त होगा।

शनि

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः द्वादशस्थ शनि अशुभ फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा पंचमेश शनि द्वादश स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। यह शनि आपको इष्ट मित्रों तथा परिजनों के सुख में कमी करता है तथा प्रवासी भी बनाता है। आपका स्वभाव कठोर तथा व्यवहार कटु रहेगा। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते हैं। आपके कुछ मित्र आप से असन्तुष्ट होकर आपके गुप्त शत्रु भी बन सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आपको नेत्र तथा वातादि रोगों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, विधि, रसायन, भाषा आदि विषयों में रहता है। तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का आपको शौक रहेगा। आप विदेश में प्रवास भी कर सकते हैं। अपनी माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि के सुखों की प्राप्ति में विलम्ब या बाधाएँ आ सकती हैं। आपको सन्तान सुख में विलम्ब अथवा बाधा भी हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, तकनीकी विशेषज्ञ, विधि-सहायक, वकील, औषध-निर्माता, अर्थशास्त्री आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको उत्तार-चढ़ाव अधिक रहता है।

AMIT**ग्रह विचार**

आपकी प्रकृति व्ययशील रहेगी। इस कारण आपको अर्थ संचय करने में बाधा होगी।

यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से शनि की शत्रुता है। आपको अर्थ संचय करने में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। इस शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। यदा-कदा होने वाले रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। शत्रुओं के कुचक्रों को नष्ट करने में आपको सफलता मिल जायेगी। यह शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से नवम स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आपका कुछ रुझान धर्म की ओर भी हो सकता है। आपका भाग्योदय 36वें वर्ष में हो सकता है।

तुला लग्न में द्वादश भाव के शनि के व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से आपका खर्च अधिक रहेगा तथा आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होगी, परन्तु आपको माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी आ सकती है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः आपको धन-संचय में कमी आ सकती है तथा कुटुम्ब से आपके मतभेद रह सकते हैं। शनि के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष में आपका सामान्य प्रभाव रहेगा। शनि के अपनी दसवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी तथा धर्म के मामलों में भी आपकी रुचि बनी रहेगी। आपकी बुद्धि एवं वाणी में कुछ भ्रम सा भी बना रह सकता है।

राहु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में, कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से राहु की शत्रुता है। सामान्यतः दशमस्थ राहु अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ दशम स्थान में कर्क राशिस्थ राहु शुभ फलप्रद रहेगा। यह राहु आपको स्नेही, परोपकारी, सम्पन्न तथा यशस्वी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अपने गुणों से समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। जीवन के पूर्वार्द्ध में कष्ट रह सकता है, प्रौढ़ अवस्था में आपको सुख प्राप्त होगा। आपको पूर्वजों की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ सकता है। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कफ तथा सर्दी से सम्बन्धित बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, रसायन, चिकित्सा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, कला, काव्य आदि विषयों में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी शौक रहेगा, आप प्रवास भी कर सकते हैं। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे अथवा आपको पिता का सुख कम मिल सकता है। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक

AMIT**ग्रह विचार**

स्थिति अच्छी रहेगी। आप कलाकार, चिकित्सक, वकील, मजिस्ट्रेट, भाषाविद्, प्राध्यापक, लेखक, सम्पादक आदि बन सकते हैं। व्यापार में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश व्यापार से अधिक अर्थ प्राप्ति सम्भव है। राजनीति के क्षेत्र में परिश्रम से आपको सफलता मिल सकती है।

इस राहु की पंचम् पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। परिश्रम से अर्थ संचय में सफल रहेंगे। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यह राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से, चतुर्थ स्थान में मकर राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। माता को शारीरिक कष्ट रह सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त भी हो सकता है। इस राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि, षष्ठम् स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। आपकी मानहानी करने के शत्रुओं के प्रयास विफल रहेंगे।

तुला लग्न में दशम भाव के राहु के केन्द्र, राज्य, पिता एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आपको पिता के सुख में कमी मिल सकती है। साथ ही आपको राज्य के क्षेत्र में भी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आपके समक्ष बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ आ सकती हैं तथा उन्नति के मार्ग में भी आपको रुकावटें पड़ सकती हैं। आप बहुत परेशानियों एवं कठिनाइयों के बाद ही उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर पायेंगे।

केतु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः चतुर्थ स्थान (सुख स्थान) में केतु अशुभ फल प्रदान करता है, यहाँ चतुर्थ स्थान में मकर राशि का केतु आपको अच्छे फल नहीं देगा। यह केतु आपको व्यग्र, चिन्तित, शत्रु भय से ग्रस्त, प्रपंची, आलोचक तथा प्रवासी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कठोर रहेगा तथा आप हठी अथवा दुराग्रही प्रवृत्ति के भी हो सकते हैं। मित्रों के साथ मतभेद रहने के कारण आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता भी प्राप्त नहीं हो पाती है। दूसरों की आलोचना करने की आदत के कारण आपकी लोकप्रियता कम हो सकती है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि नहीं रहेगी। आपके कार्यपूर्ति में विलम्ब हो सकता है। मित्रों तथा परिजनों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। कफ तथा वात रोगों से पीड़ा हो सकती है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, भाषा, विधि, इलेक्ट्रॉनिक्स, अंग्रेजी, रसायन आदि विषयों में रहेगा। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी आपकी रुचि हो



AMIT**ग्रह विचार**

सकती है। पर्यटन का शौक रहेगा किन्तु यात्रा में कष्ट तथा धन हानि हो सकती है। आप प्रवास भी कर सकते हैं। आपका भाग्योदय जन्म स्थान से अन्यत्र हो सकता है। माता का सुख आपको कम ही प्राप्त होता है अथवा उनसे वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। भूमि, भवन, वाहनादि की प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप गणितज्ञ, वकील, रसायनशास्त्री, शिक्षक, लेखक, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ आदि बन सकते हैं। व्यापार में उतार-चढ़ाव से मन अशान्त रहेगा। राजनीति में आपकी रुचि रहती है। जन्मजात कूटनीतिज्ञ होने से आप राजनीति के क्षेत्र में उन्नति कर सकते हैं। अर्थसंचय में आकस्मिक खर्चों के कारण बाधा आ सकती है।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से अष्टम् स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप दीर्घायु व्यक्ति होंगे। आपको यदा-कदा आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि दशम् स्थान में कर्क राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से केतु की शत्रुता है। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होता है। राज्यपक्ष की प्रतिकूलता से आर्थिक हानि भी हो सकती है। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में कन्या राशि को देखता है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका व्यय भार बढ़ेगा। आयात निर्यात के व्यापार से कुछ लाभ हो सकता है।

तुला लग्न में चतुर्थ भाव के केतु के केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कमी मिल सकती है। आप घरेलू झंझटों के शिकार भी बने रहेंगे। कभी-कभी आपके परिवार में घोर अशान्ति उत्पन्न हो सकती है, फिर भी आप अपने धैर्य, साहस, बुद्धि एवं गुप्त-युक्तियों आदि के बल पर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे तथा आपको थोड़ी बहुत सफलता प्राप्त भी होगी।

AMIT

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— हीरा (डायमण्ड) उपरत्न:— वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाइट एगेट)

हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, आयु, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि करने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— पन्ना (एमरल्ड) उपरत्न:— बैरुज(एक्वामेरीन), मरगज(नेफ्ताइट)

पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या—विवेक एवं बुद्धि कारक तथा व्यापार एवं नौकरी हेतु उन्नतिकारक रहेगा।

कारक रत्न:— नीलम (ब्लू सफायर) उपरत्न:— काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली)

नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, धन लाभ एवं व्यापार हेतु समृद्धिकारक रहेगा।

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

ANJALI

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

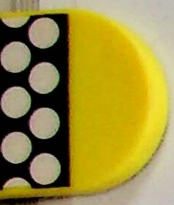
जन्म दिनांक	: 16/06/1977	विक्रमी संवत्	: 2034
जन्म दिन	: बृहस्पतिवार	शक संवत्	: 1899
जन्म समय	: 17:35:26 घण्टे	ऋतु	: ग्रीष्म
इष्टकाल	: 30:15:30 घटी	मास	: आषाढ़
जन्म स्थान	: JABALPUR	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: अमावस्या
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 23:52:38 घण्टे
अक्षांश	: 23:10:00 उत्तर		: 45:58:30 घटी
रेखांश	: 79:57:00 पूर्व	जन्म तिथि	: अमावस्या
स्थानिक समय संस्कार	: -00:10:12 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: रोहिणी
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 06:33:17 घण्टे
स्थानिक समय	: 17:25:14 घण्टे		: 02:40:07 घटी
साम्पातिक काल	: 11:03:49 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: मृगशिरा
वेलान्तर	: 00:00:33 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: शूल
सूर्योदय	: 05:29:14 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 16:41:51 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:52:15 घण्टे		: 28:01:34 घटी
दिनमान	: 13:23:02 घण्टे	जन्म योग	: गण्ड
रात्रिमान	: 10:36:58 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: चतुष्पद
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 10:44:07 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 13:07:13 घण्टे
अयनांश	: 23:32:39	जन्म करण	: नाग



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



ANJALI

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

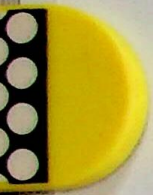
घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	मार्गशीर्ष	लग्न-लग्नाधिपति	:	वृश्चिक-मंगल
दिनांक	:	5,10,15	राशि-राशि स्वामी	:	वृष-शुक्र
दिन	:	शनिवार	नक्षत्र-चरण	:	मृगशिरा-2
नक्षत्र	:	हस्त	नक्षत्र स्वामी	:	मंगल
योग	:	सुकर्मा	योग	:	गण्ड
करण	:	शकुनि	करण	:	नाग
प्रहर	:	4	गण	:	देव
वर्ग	:	सिंह	योनि	:	सर्प
लग्न	:	मिथुन	नाडि	:	मध्या
सूर्य	:	वृश्चिक	वर्ण	:	वैश्य
चन्द्र	:	धनु	वश्य	:	चतुष्पाद
मंगल	:	धनु	वर्ग	:	मृग
बुध	:	कन्या	युंजा	:	पूर्व
गुरु	:	मकर	हसक (तत्व)	:	भूमि
शुक्र	:	मकर	जन्म नामाक्षर	:	वो
शनि	:	तुला	पाया-राशी	:	रजत
राहु	:	मकर	पाया-नक्षत्र	:	लौह
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	मिथुन	भयात	:	27:32:41 घटी
सूर्य के अंश	:	मिथुन 01:40:34	भभोग	:	67:09:02 घटी
लग्न के अंश	:	वृश्चिक 14:24:29	भोग्य दशा काल	:	मंगल 4 व 1 म 16 दिन

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्य जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं। अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र



ANJALI

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

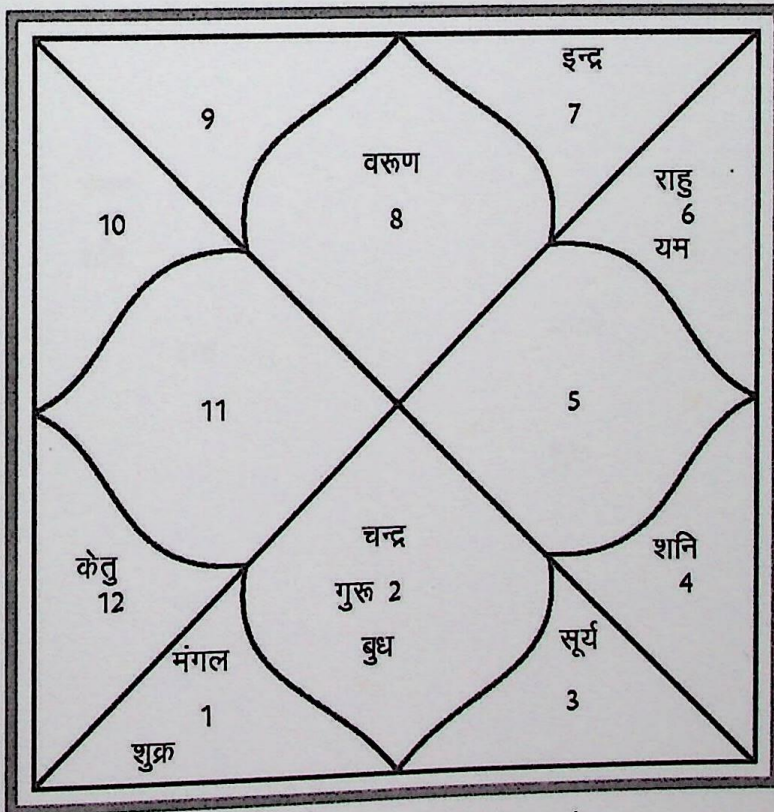
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	वृश्चिक	14:24:29	—	अनुराधा	4	शनि	—	—	—
सूर्य	मिथुन	01:40:34	00:57:19	मृगशिरा	3	मंगल	सम स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	वृष	28:48:09	11:54:46	मृगशिरा	2	मंगल	मूल त्रिकोण	अस्त	मार्गी
मंगल	मेष	14:08:14	00:44:06	भरणी	1	शुक्र	मूल त्रिकोण	—	मार्गी
बुध	वृष	16:21:24	01:52:57	रोहिणी	2	चन्द्र	मित्र स्थान	—	मार्गी
गुरु	वृष	22:54:38	00:13:51	रोहिणी	4	चन्द्र	शत्रु स्थान	अस्त	मार्गी
शुक्र	मेष	15:57:03	00:57:53	भरणी	1	शुक्र	सम स्थान	—	मार्गी
शनि	कर्क	20:00:44	00:05:57	अश्लेषा	2	बुध	शत्रु स्थान	—	मार्गी
राहु	कन्या	28:51:16	00:11:09	चित्रा	2	मंगल	स्व राशी	—	वक्री
केतु	मीन	28:51:16	00:11:09	रेवती	4	बुध	सम स्थान	—	वक्री
इन्द्र	तुला	14:30:54	00:01:27	स्वाति	3	राहु	—	—	वक्री
वरुण	वृश्चिक	20:56:06	00:01:35	ज्येष्ठा	2	बुध	—	—	वक्री
यम	कन्या	17:51:43	00:00:10	हस्त	3	चन्द्र	—	—	वक्री
दशम भाव	सिंह	21:12:11	—	पू.फाल्गुनी	3	शुक्र	—	—	—

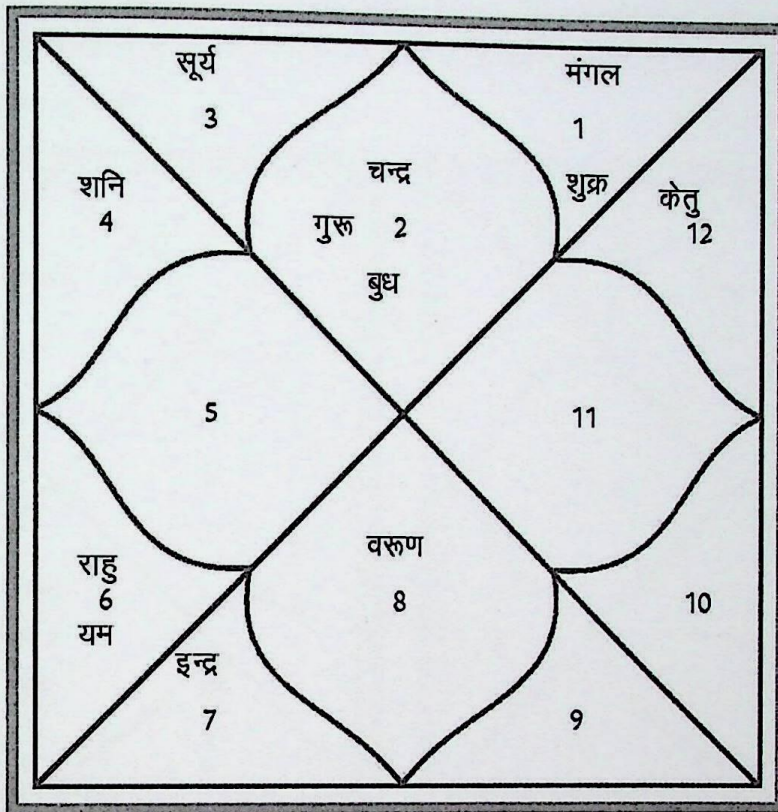
चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:32:39

लग्न कुण्डली

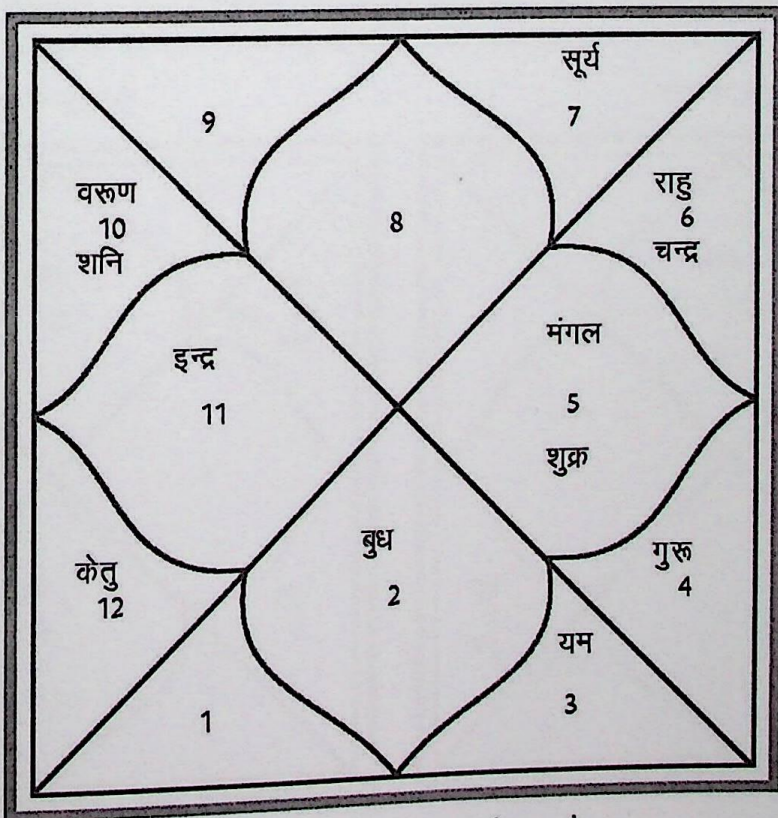


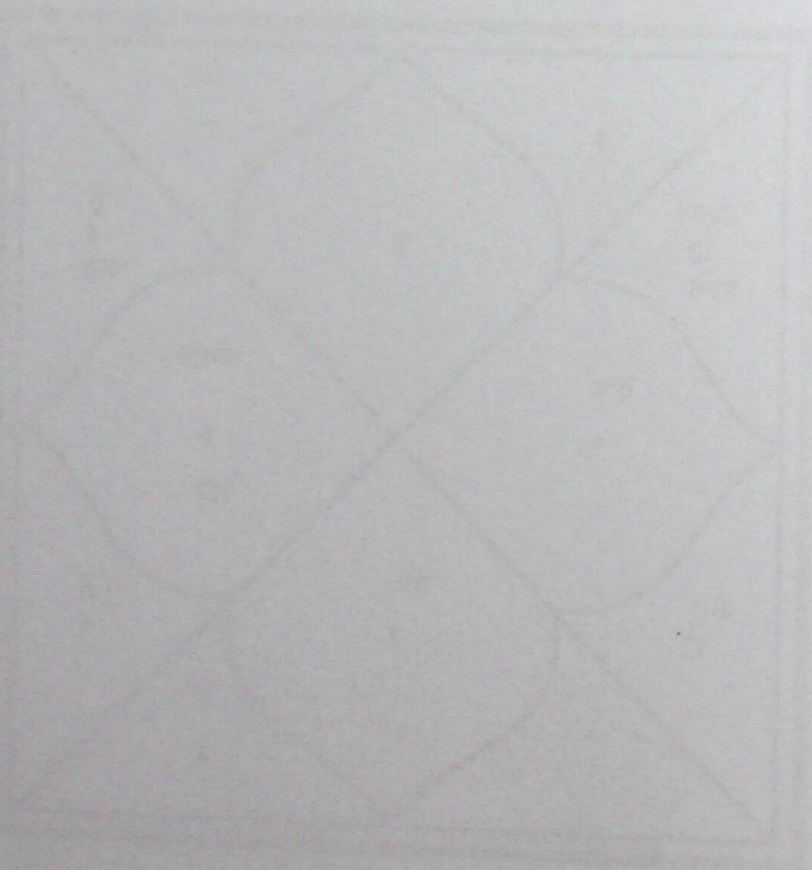
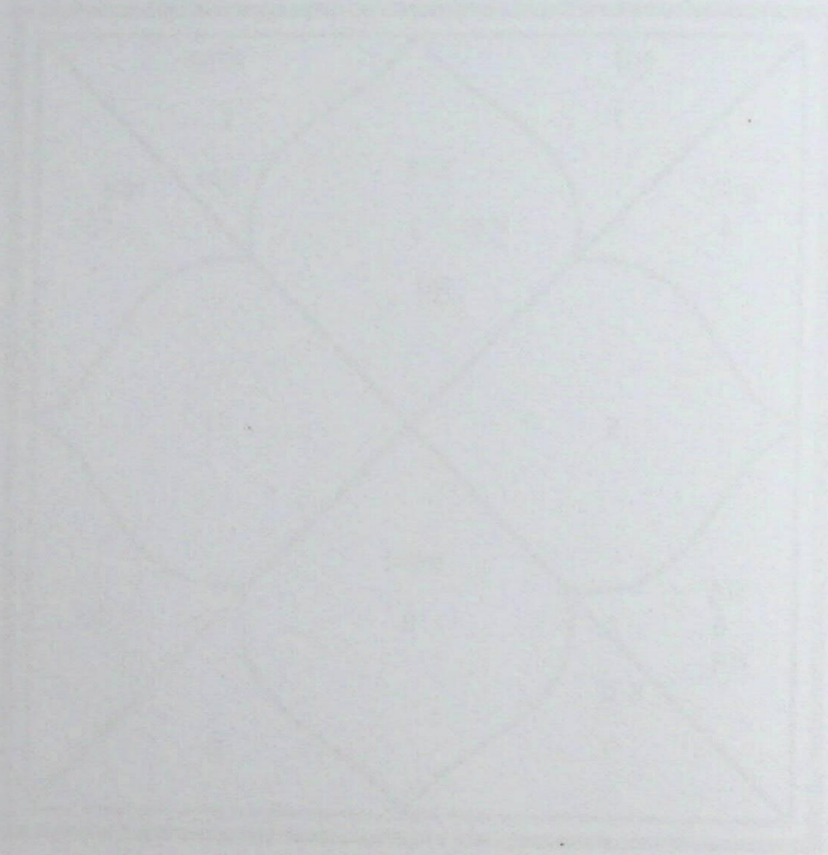
ANJALI

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



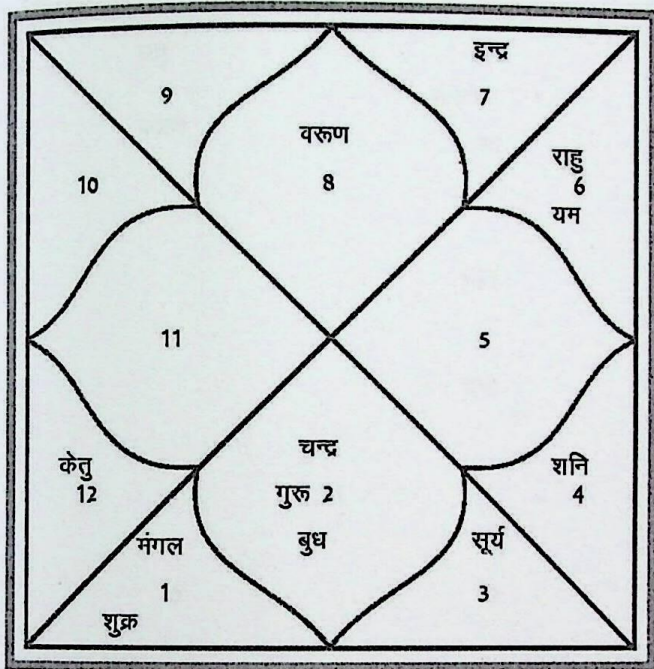


ANJALI

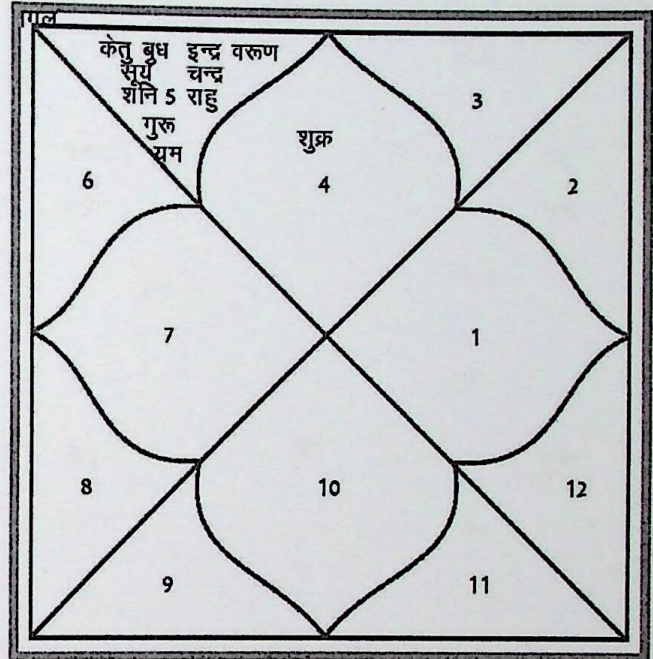
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञान् होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



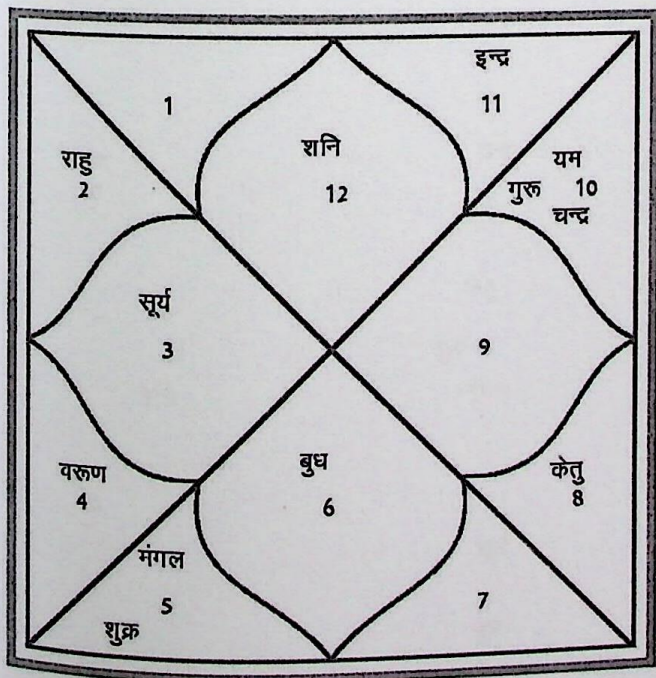
होरा कुण्डली



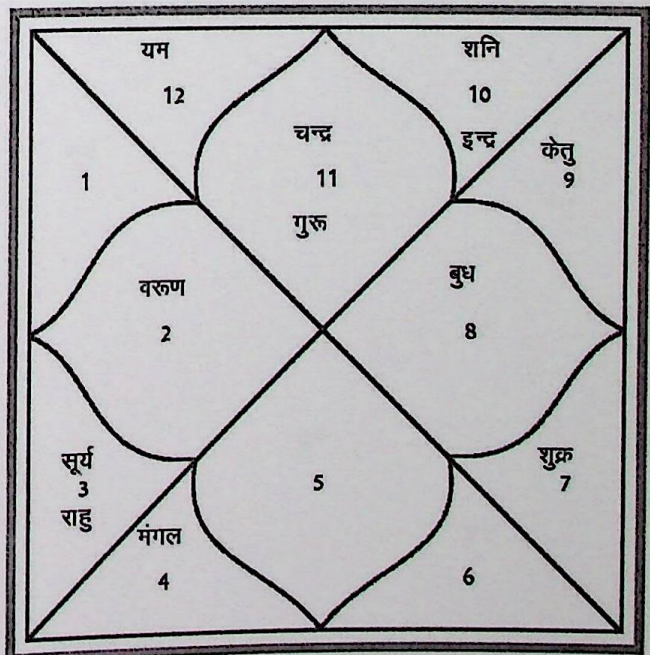
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

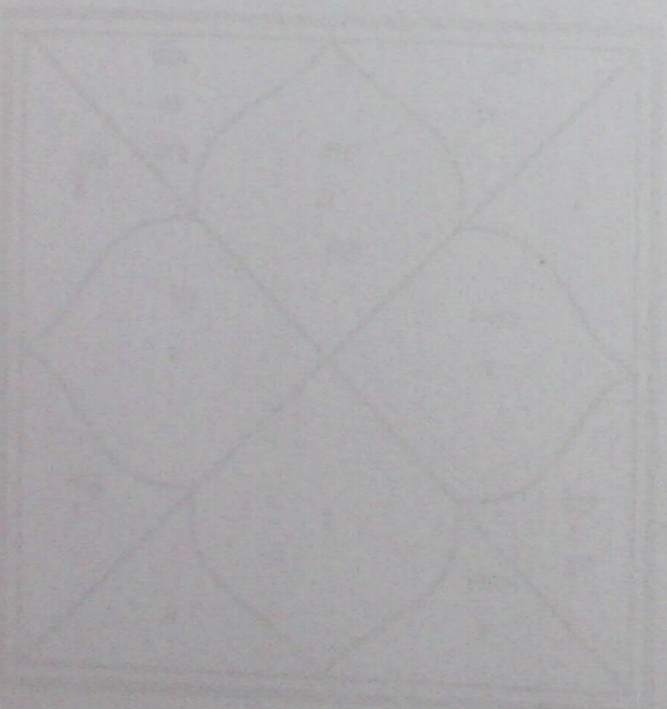
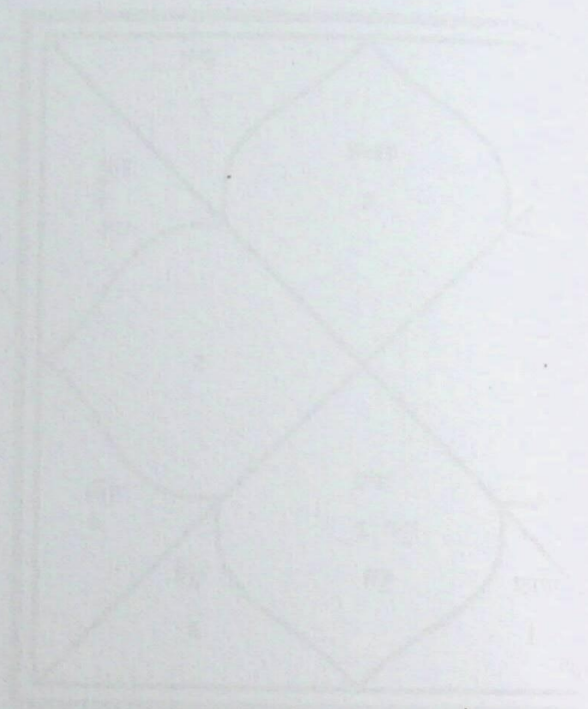
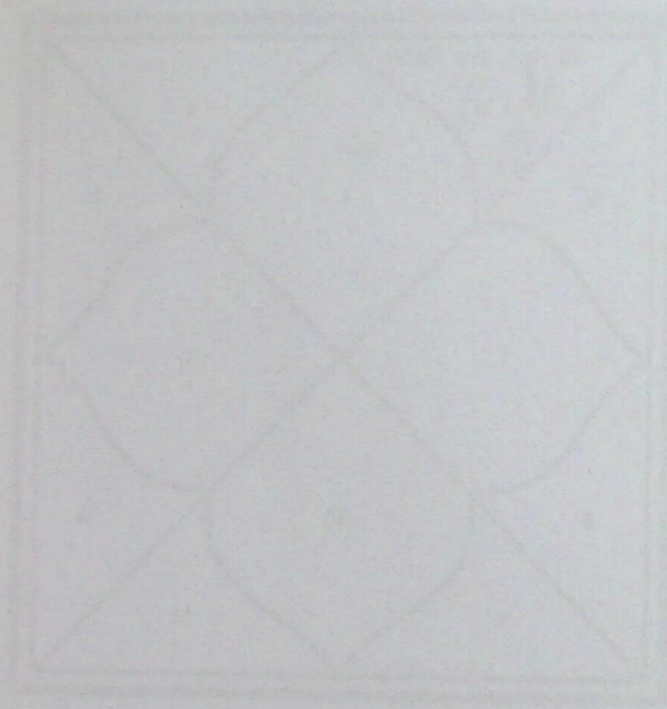
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली



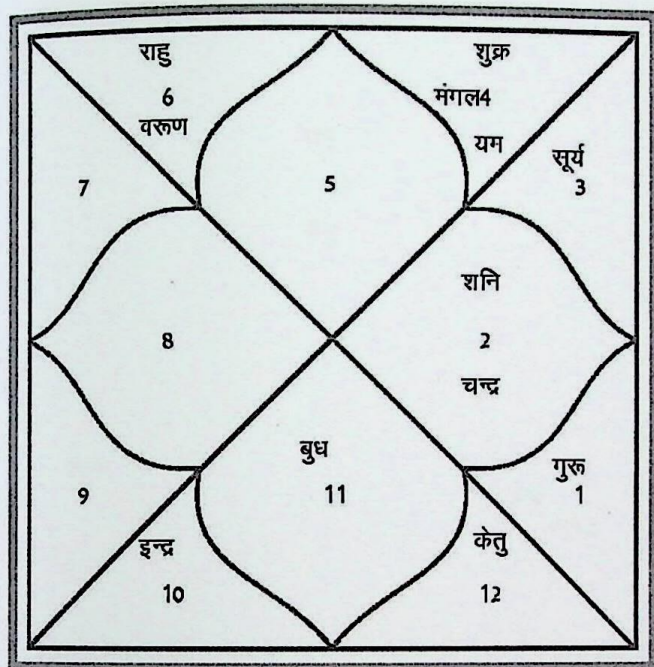


ANJALI

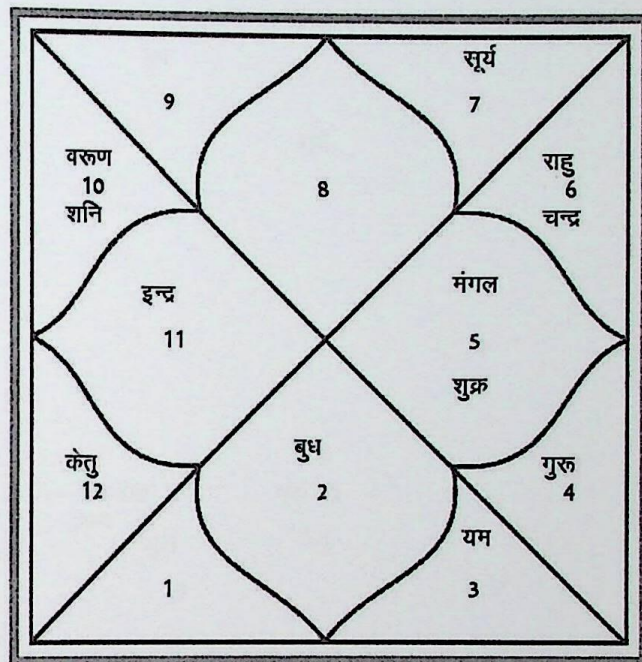
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



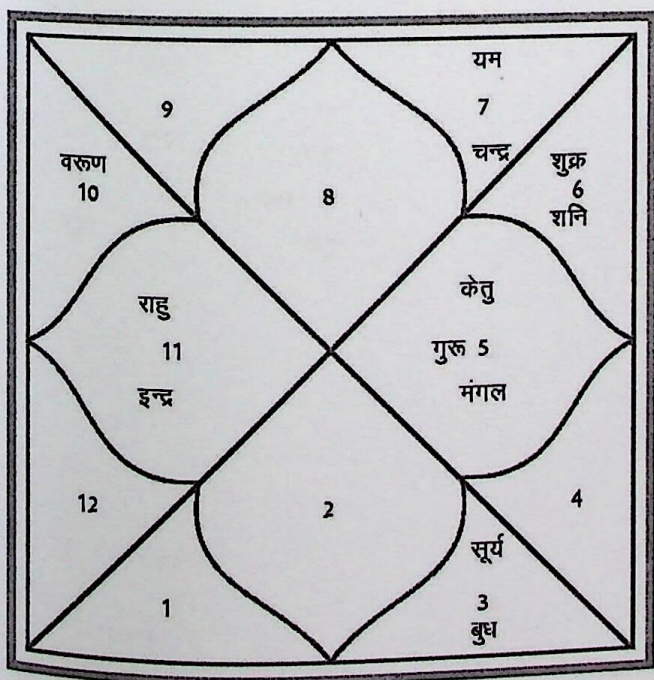
नवमांश कुण्डली



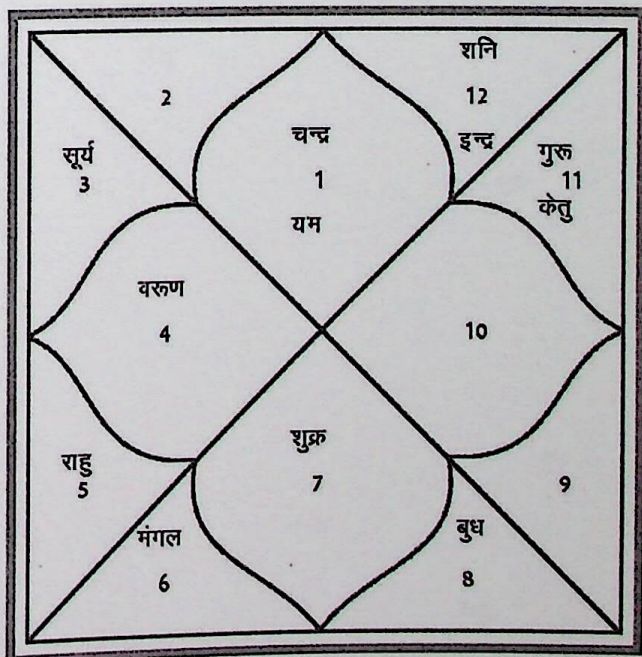
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

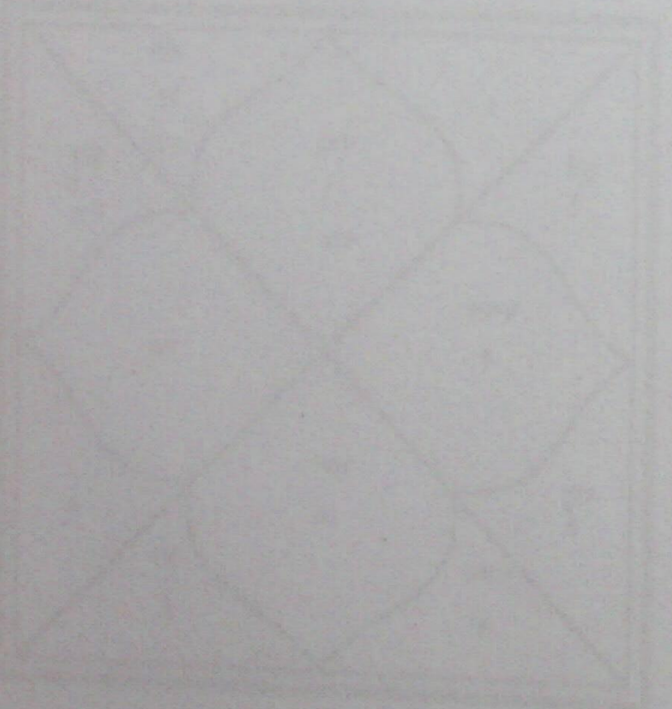
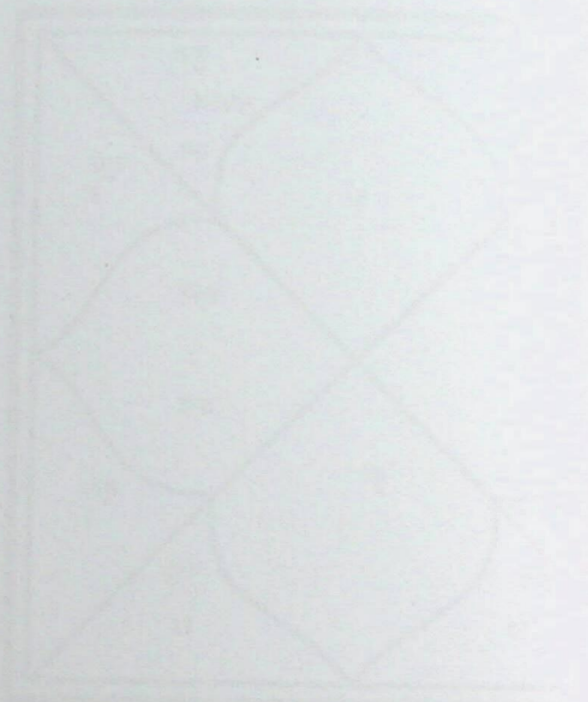
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली





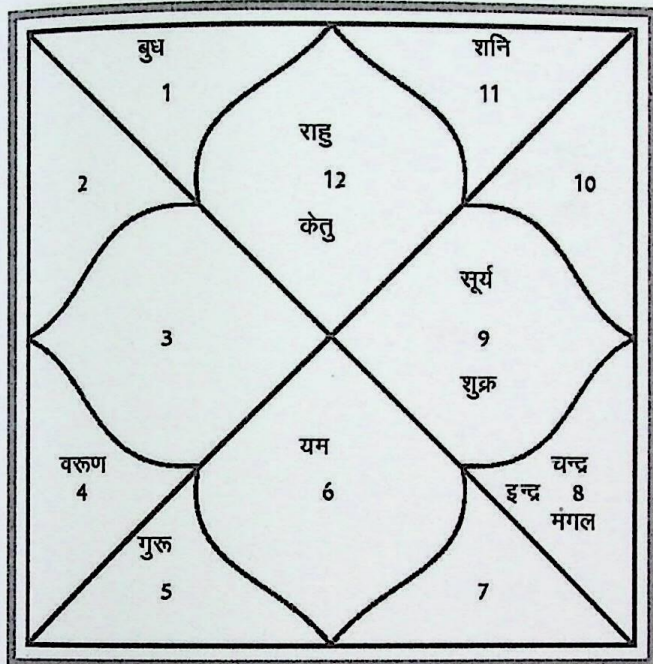
ANJALI

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

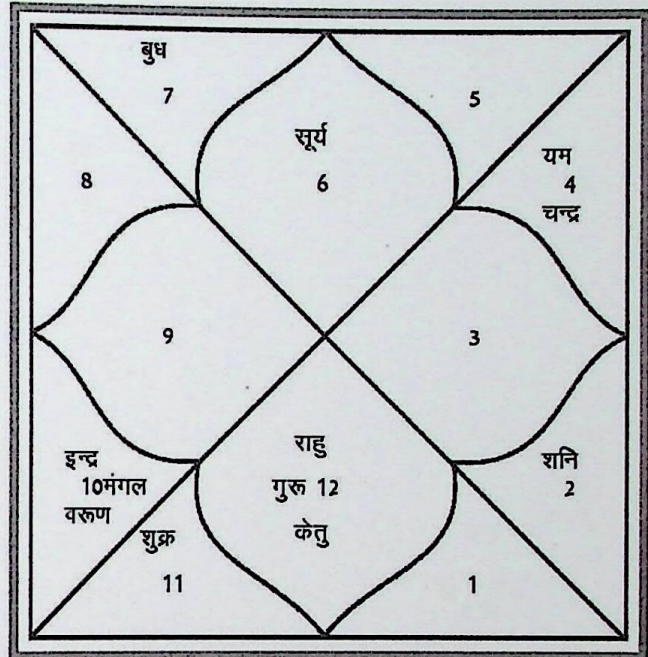
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



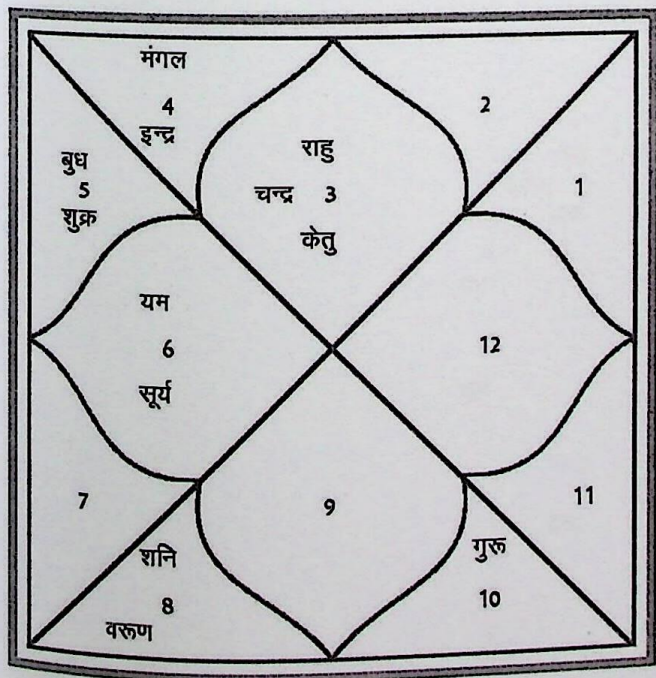
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

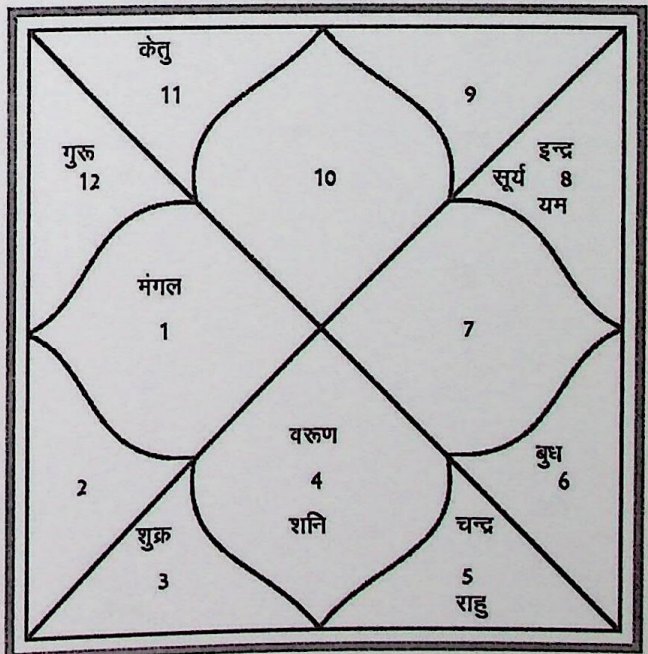
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





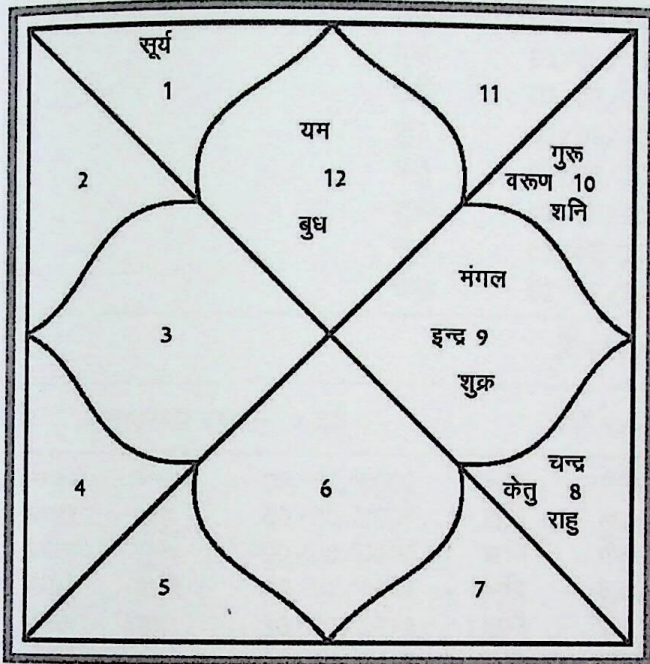
ANJALI

॥ त्रिशांशके अरिष्ट फलम् ॥

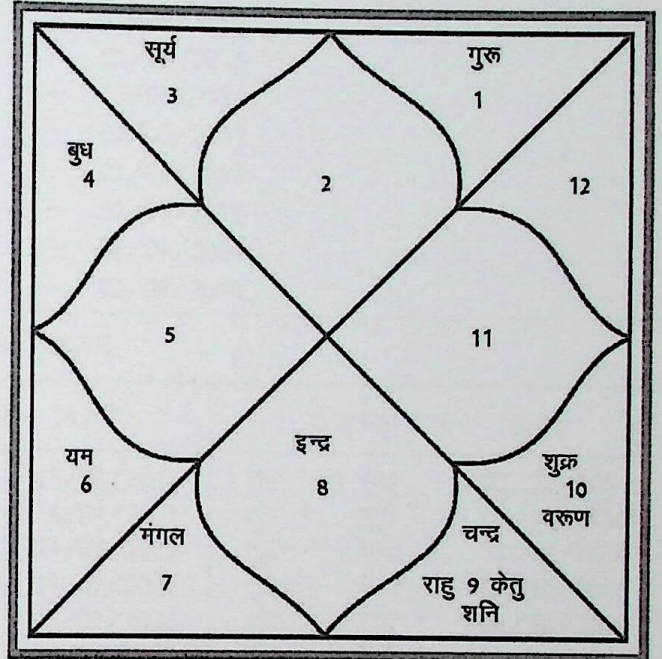
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिशांश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिशांश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

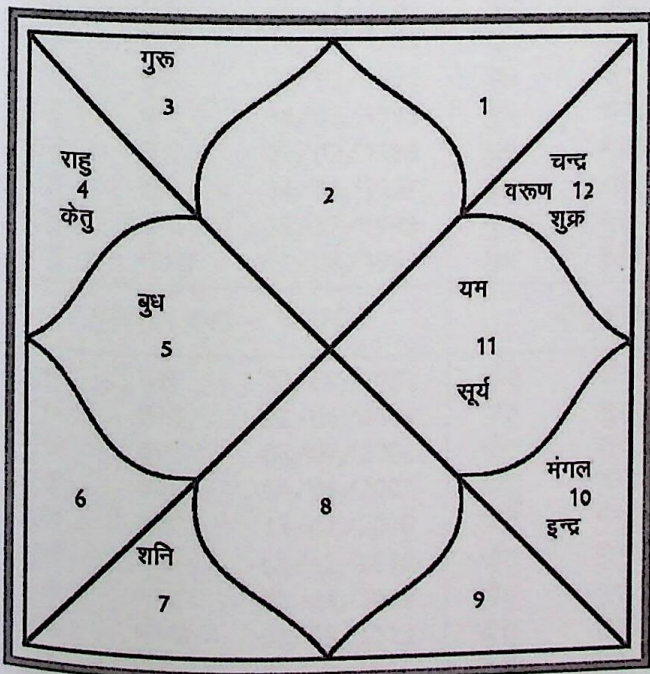


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

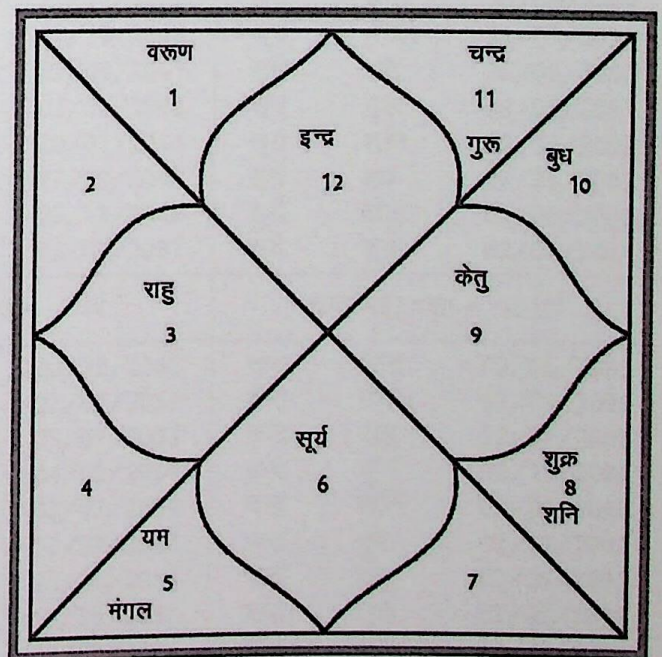
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

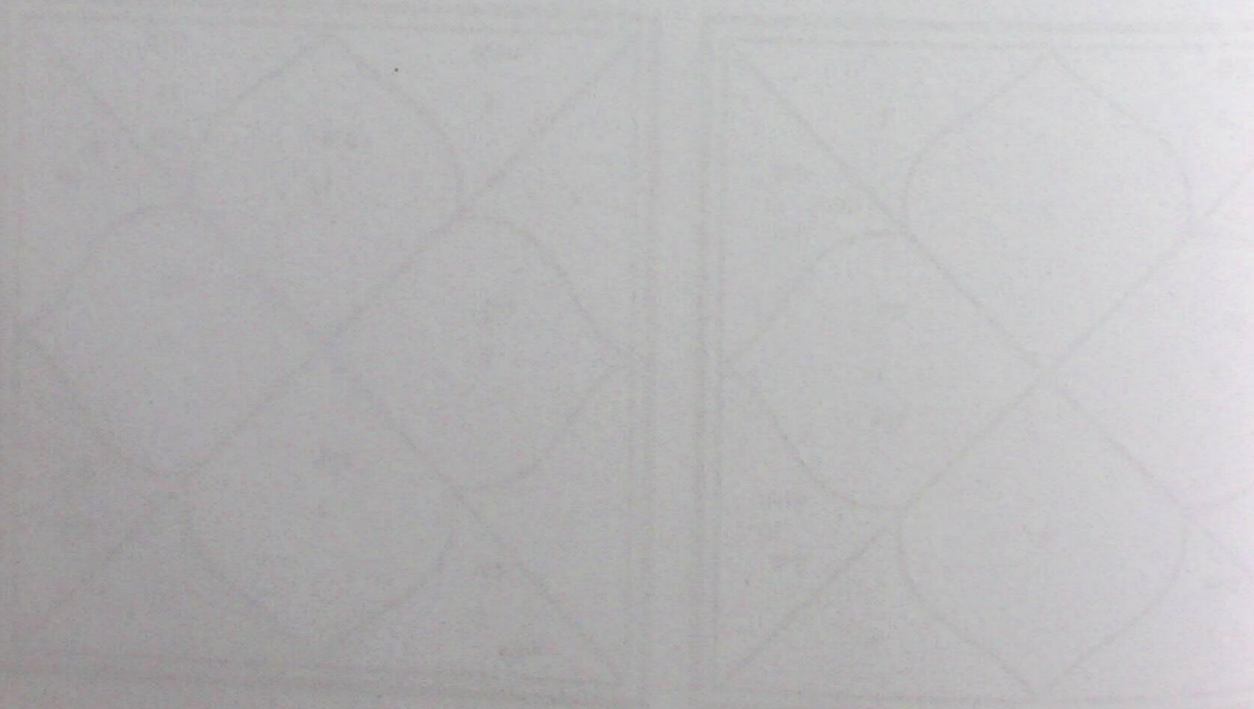
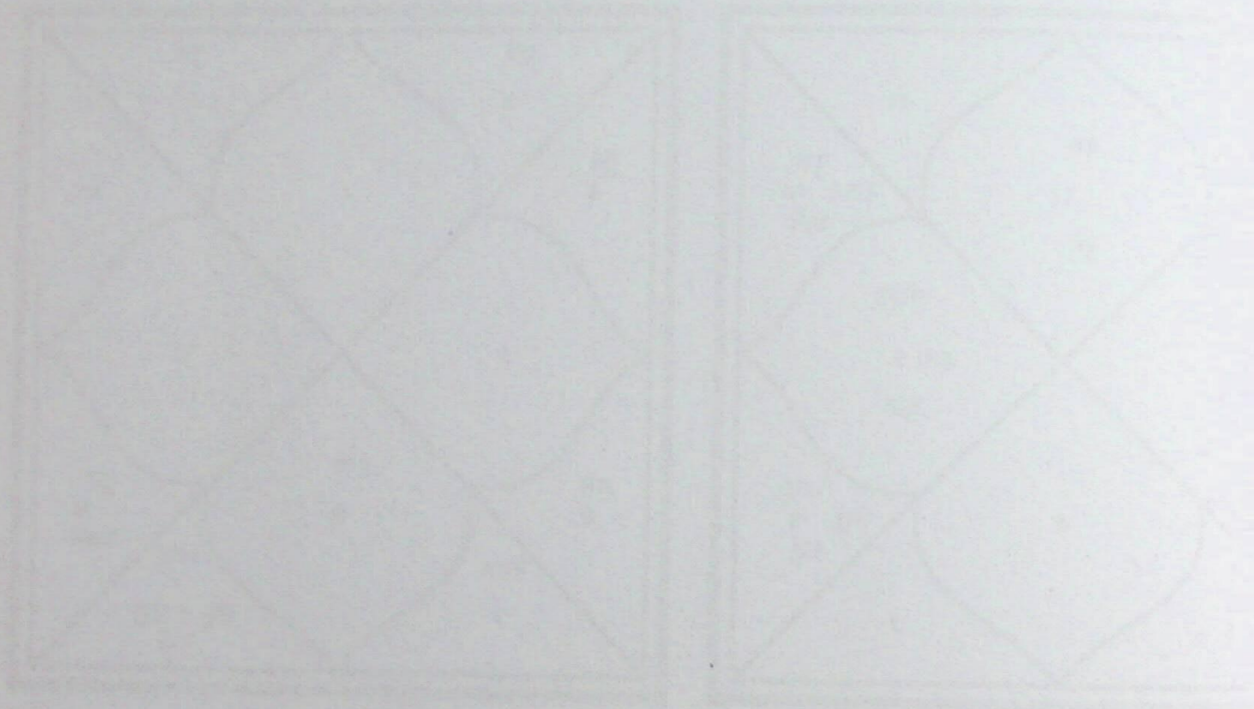
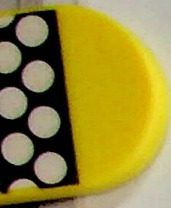
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात् सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





ANJALI

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल — मंगल 4 वर्ष 1 मास 16 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

मंगल	16/06/1977	—	02/08/1981
राहु	02/08/1981	—	02/08/1999
गुरु	02/08/1999	—	02/08/2015
शनि	02/08/2015	—	02/08/2034
बुध	02/08/2034	—	02/08/2051
केतु	02/08/2051	—	02/08/2058
शुक्र	02/08/2058	—	02/08/2078
सूर्य	02/08/2078	—	02/08/2084
चन्द्र	02/08/2084	—	02/08/2094

विंशोत्तरी अन्तर दशा

मंगल महा दशा — 7 वर्ष			शनि महा दशा — 19 वर्ष			शुक्र महा दशा — 20 वर्ष		
मंगल	मंगल	00/00/0000	शनि	शनि	05/08/2018	शुक्र	शुक्र	02/12/2061
मंगल	राहु	00/00/0000	शनि	बुध	14/04/2021	शुक्र	सूर्य	02/12/2062
मंगल	गुरु	00/00/0000	शनि	केतु	24/05/2022	शुक्र	चन्द्र	02/08/2064
मंगल	शनि	02/02/1978	शनि	शुक्र	24/07/2025	शुक्र	मंगल	02/10/2065
मंगल	बुध	30/01/1979	शनि	सूर्य	05/07/2026	शुक्र	राहु	02/10/2068
मंगल	केतु	26/06/1979	शनि	चन्द्र	05/02/2028	शुक्र	गुरु	02/06/2071
मंगल	शुक्र	27/08/1980	शनि	मंगल	14/03/2029	शुक्र	शनि	02/08/2074
मंगल	सूर्य	02/01/1981	शनि	राहु	20/01/2032	शुक्र	बुध	02/06/2077
मंगल	चन्द्र	02/08/1981	शनि	गुरु	02/08/2034	शुक्र	केतु	02/08/2078
राहु महा दशा — 18 वर्ष			बुध महा दशा — 17 वर्ष			सूर्य महा दशा — 6 वर्ष		
राहु	राहु	14/04/1984	बुध	बुध	30/12/2036	सूर्य	सूर्य	20/11/2078
राहु	गुरु	08/09/1986	बुध	केतु	27/12/2037	सूर्य	चन्द्र	20/05/2079
राहु	शनि	14/07/1989	बुध	शुक्र	27/10/2040	सूर्य	मंगल	26/09/2079
राहु	बुध	02/02/1992	बुध	सूर्य	02/09/2041	सूर्य	राहु	20/08/2080
राहु	केतु	18/02/1993	बुध	चन्द्र	02/02/2043	सूर्य	गुरु	08/06/2081
राहु	शुक्र	19/02/1996	बुध	मंगल	30/01/2044	सूर्य	शनि	20/05/2082
राहु	सूर्य	14/01/1997	बुध	राहु	17/08/2046	सूर्य	बुध	27/03/2083
राहु	चन्द्र	14/07/1998	बुध	गुरु	23/11/2048	सूर्य	केतु	02/08/2083
राहु	मंगल	02/08/1999	बुध	शनि	02/08/2051	सूर्य	शुक्र	02/08/2084
गुरु महा दशा — 16 वर्ष			केतु महा दशा — 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा — 10 वर्ष		
गुरु	गुरु	20/09/2001	केतु	केतु	30/12/2051	चन्द्र	चन्द्र	02/06/2085
गुरु	शनि	02/04/2004	केतु	शुक्र	27/02/2053	चन्द्र	मंगल	02/01/2086
गुरु	बुध	08/07/2006	केतु	सूर्य	05/07/2053	चन्द्र	राहु	02/07/2087
गुरु	केतु	14/06/2007	केतु	चन्द्र	04/02/2054	चन्द्र	गुरु	02/11/2088
गुरु	शुक्र	13/02/2010	केतु	मंगल	02/07/2054	चन्द्र	शनि	02/06/2090
गुरु	सूर्य	02/12/2010	केतु	राहु	20/07/2055	चन्द्र	बुध	02/11/2091
गुरु	चन्द्र	02/04/2012	केतु	गुरु	26/06/2056	चन्द्र	केतु	02/06/2092
गुरु	मंगल	08/03/2013	केतु	शनि	05/08/2057	चन्द्र	शुक्र	02/02/2094
गुरु	राहु	02/08/2015	केतु	बुध	02/08/2058	चन्द्र	सूर्य	02/08/2094



ANJALI

लग्न विचार

वृश्चिक राशि, राशि चक्र की आठवीं राशि है। इसका स्वामी मंगल है। इस राशि में विशाखा नक्षत्र का चतुर्थ चरण तथा अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र पूर्ण रूप से आते हैं। वृश्चिक लग्न में जन्म होने से आप मध्यम कद, गेहुँए रंग तथा विस्तृत ललाट वाली स्त्री होंगी। आप स्वस्थ शरीर वाली, मोटी-ताजा, बलिष्ठ तथा तेजस्वी स्त्री होंगी। आप धर्म प्रेमी, अन्वेषण प्रिय तथा गूढ़ विषयों की ज्ञाता रहेंगी। पर्यटन की आप शौकीन होंगी। वृश्चिक लग्न में जन्म होने से आप साहसी तथा कठोर स्त्री होंगी। आप सहज ही वैर नहीं भूलेंगी तथा अवसर मिलने पर पूरा बदला निकाल लेंगी। आपका स्वभाव तेज रहेगा। सामान्यतः स्वभाव से आप सौम्य होंगी। आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व के कारण दूसरे व्यक्ति आपकी ओर शीघ्र ही आकर्षित होंगे। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा आप अवसर आने पर अपने मित्रों की सहायता भी करेंगी। अवसरवादिता तथा आत्म प्रशंसा का अवगुण भी आप में रहेगा। आप कल्पना प्रिय स्त्री होंगी तथा कई प्रकार के कार्य करने की योजनाएँ बनाया करेंगी, किन्तु कार्य आरम्भ करने के बाद आप शीघ्र ही शिथिल हो जायेंगी तथा उत्साह घट जाने के कारण कई बार वह कार्य अधूरा ही रह जायेगा।

दूसरों के कथन पर शीघ्र ही विश्वास कर लेने के कारण आपको अपने जीवन में हानि भी उठानी पड़ेगी। जीवन के मध्य काल बाद आपकी प्रवृत्ति आध्यात्म की ओर झुक जायेगी। आप नवीन सूझबूझ की धनी स्त्री होंगी। आपका पारिवारिक जीवन मध्यम रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में मतभेद होते हुए भी आप विवाद को टालने में सफल रहेंगी। आपका सन्तान सुख सामान्य रहेगा। आप शिक्षा के क्षेत्र में सफल रहेंगी। आप दार्शनिक, प्रोफेसर, रीडर, लेखिका, कवियित्री, नाटककार तथा गायिका आदि बन सकती हैं। आपका यश शीघ्र ही फैलेगा तथा स्थायी रहेगा। आप गुप्तचर विभाग, सेना तथा औद्योगिक क्षेत्रों में भी कार्य करेंगी। आपकी राजनीति में रुचि रहेगी तथा यह रुचि आपको इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्रदान करेगी। आपको प्रायः ज्वर, सिरदर्द, रक्तचाप, गले तथा छाती के रोग पीड़ा देंगे तथा वात एवं कफ सम्बन्धी रोग, चोट, जलन आदि से भी आपको कष्ट होगा।

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में 13 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला के बीच में होने से आप मध्यम कद, गेहुँए रंग व स्वस्थ शरीर वाली स्त्री होंगी। आप शारीरिक रूप से बलशाली तथा तेजस्वी स्त्री होंगी। आप स्वभाव से सौम्य होंगी। मित्र बनाना आपको आयेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा शत्रुओं की संख्या कम रहेगी। आप अपने मित्रों की भरपूर मदद करेंगी। आपको क्रोध शीघ्र ही आ जायेगा। यद्यपि आप शान्त तो जल्दी हो जायेंगी, किन्तु आपके मन में एक नाराजी सी बनी रहेगी तथा आप उसको समय-समय पर प्रकट भी करेंगी। दूसरों के कथन पर विश्वास करने के कारण आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। आप कल्पना प्रिय स्त्री होंगी। पर्यटन में आपकी



[The text in this section is extremely faint and illegible, appearing as light grey marks on the page.]

ANJALI

लग्न विचार

रुचि रहेगी। कला, संगीत, नाटक, काव्य आदि विधाओं की आप शौकीन रहेंगी। आप में आत्मविश्वास तो होगा, परन्तु आपकी निर्णयशक्ति के त्वरित काम नहीं करने से आप अपना काम उलझा लेंगी तथा बाद में उसे अधूरा ही छोड़ देंगी।

आपका भग्योदय जीवन में देरी से होगा, परन्तु तब आपको धन के साथ-साथ उच्च पद तथा यश की प्राप्ति भी होगी। मध्य आयु बाद आपका रुझान धर्म तथा अध्यात्म की ओर हो जायेगा। अध्ययन की ओर आपकी बचपन से ही रुचि रहेगी तथा शैक्षिक दृष्टि से आप उत्तम रहेंगी। युवावस्था में गोपनीय रहस्यों तथा तंत्र-मंत्र की ओर आपका रुझान बढ़ेगा। आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आपका सन्तान सुख भी साधारण ही रहेगा। आप प्रोफेसर, लेखिका, कवियित्री, नाटककार, गायिका, धार्मिक प्रवचनकर्ता, सम्पादक, चिकित्सक आदि बन सकती हैं। राजनीति में भी आप अपना स्थान बना लेंगी। आप प्रायः स्वस्थ रहेंगी। यदा-कदा आपको वात-पित्त की बीमारियाँ सतायेंगी। ज्वर, सिरदर्द, गले तथा छाती की बीमारियाँ भी आपको पीड़ित कर सकती हैं।



ANJALI

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मिथुन राशि में स्थित है जिसका स्वामी बुध है जो सूर्य का मित्र है। अष्टमस्थ सूर्य सामान्यतः अनिष्टकारी फल प्रदान करता है अतः आपके लिये यह सूर्य शुभकारक नहीं होगा। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अष्टमस्थ सूर्य आपको कई प्रकार के यौन रोग, पाइल्स, सिरदर्द आदि से परेशान रखेगा। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी तथा अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिये आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है।

आप परिश्रमी होंगी। कठोर परिश्रम करके अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयत्न करेंगी। आपको व्यापार में आकस्मिक लाभ हो सकता है किन्तु आपको अनैतिक तरीकों से धन कमाने की प्रवृत्ति पर अंकुश रखना चाहिये अन्यथा आप कभी बड़ी कठिनाइयों में पड़ सकती हैं। स्वभाव से आप तेज किन्तु चतुर होंगी। अपना कार्य निकालने के लिये आप किसी भी सीमा तक झुक सकती हैं या उत्क्रोच (रिश्वत) आदि भी देकर अपना कार्य बनाने की कोशिश करेंगी।

यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान को देख रहा है। यहाँ धनु राशि है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। आपको कुटुम्ब का सहयोग मिलेगा। आर्थिक स्थिति सुधारने के आपके प्रयत्न सफल होंगे। अपने पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

वृश्चिक लग्न में अष्टम भाव के सूर्य के आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपके आयु पक्ष में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व का लाभ भी मिलेगा। साथ ही राज्य, पिता एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयों के साथ आपकी उन्नति होगी। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः आप परिश्रम के द्वारा अपने धन में वृद्धि करेंगे तथा कुटुम्ब का सुख एवं सहयोग भी आपको प्राप्त होगा। आप बाहरी स्थान का सम्पर्क भी प्राप्त कर सकेंगे।

चन्द्र

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में, वृष राशि में स्थित है, जो चन्द्र की उच्च राशि है। सामान्यतः सप्तमस्थ चन्द्र मिश्रित फल देता है, यहाँ भाग्येश चन्द्र, सप्तमस्थ उच्च राशि का होने से, आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह चन्द्र आपको सौभाग्यशाली महिला बनाता है। आप मिलनसार स्वभाव की होती हैं तथा शत्रुओं को भी मित्र बनाना आपके लिये सम्भव रहता है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। चन्द्र के निर्बल या पीड़ित रहने पर शीत तथा कफ सम्बन्धी

ANJALI

ग्रह विचार

विभिन्न बीमारियाँ कष्ट देती हैं। गले के रोग अधिक हो सकते हैं। आपका विवाह अच्छे सुसंस्कृत तथा समृद्ध परिवार में होता है। आपके पति सुन्दर, गुणी तथा संगीत आदि कलाओं के ज्ञाता होते हैं। आपका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। आपका अन्यत्र भी कुछ सम्बन्ध होना सम्भव है। सन्तान सुख आपको सामान्य रहता है।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आपके लिये व्यापार करना लाभदायक हो सकता है। व्यापार में आपको धन लाभ के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। यदि आप नौकरी करती हैं, तो अस्थिरता तथा बार-बार परिवर्तन होने से आर्थिक रूप से हानिकारक हो सकती है। साझेदारी का व्यापार भी आपके लिये लाभदायक सिद्ध हो सकता है। सट्टे तथा लॉटरी से भी धन लाभ सम्भव है।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, लग्न स्थान पर वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो चन्द्र की नीच राशि है। आप मध्यम कद, गेहुँए रंग तथा स्वस्थ शरीर वाली महिला होती हैं। आप अच्छे स्वभाव की तथा मिलनसार महिला होती हैं। आपकी मानसिक स्थिति अस्थिर रहती है।

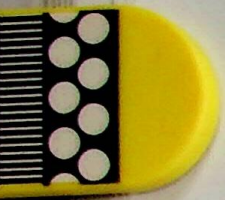
अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्न में सप्तम भाव के चन्द्रमा के उच्च का होकर केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से आपको सुन्दर एवं भाग्यवान् स्त्री मिलेगी तथा आपका गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत होगा। आप व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करेंगे। आपका मनोबल बढ़ा हुआ रहता है, जिसके कारण आपके भाग्य तथा यश में वृद्धि होती है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपके शरीर में कुछ कमजोरी बनी रह सकती है। साथ ही आपको भाग्य तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी का अनुभव होगा।

मंगल

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो मंगल की स्वराशि है। सामान्यतः षष्ठस्थ मंगल अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ लग्नस्थ तथा षष्ठस्थ मंगल षष्ठ स्थान में आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह मंगल आपको अभिमानी प्रकृति की स्त्री बनायेगा। आपका स्वभाव कठोर रहेगा, जिससे आपके परिजन संतप्त रहेंगे परन्तु मित्रों के साथ आपका व्यवहार अच्छा रहेगा।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदा-कदा आपको नेत्र रोग तथा सन्धिवात जैसी बीमारियाँ कष्ट दे सकती हैं। अपने भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। ननिहाल से भी आपको सुख कम



ANJALI

ग्रह विचार

ही मिलेगा। आपके शत्रु अधिक रहेंगे, किन्तु आप उनको परास्त करने में समर्थ रहेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप सेना, पुलिस, फायर ब्रिगेड, मशीन शॉप, होमगार्ड अथवा औद्योगिक क्षेत्रों में कार्य कर सकती हैं। आपकी प्रकृति खर्चीली होगी, जिससे आप मध्यम आयु के पश्चात ही अर्थ संग्रह करने में सफल होंगी। धन लाभ के अलावा आपको प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आपकी धर्म में आस्था कम ही रहेगी। आपकी भाग्योन्नति के मार्ग में बाधाएँ आ सकती हैं। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से मंगल का व्यवहार सम है। आपका व्ययभार बढ़ेगा। व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव तथा हानि होना सम्भावित है। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो मंगल की स्वराशि है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा। आप स्वाभिमानी स्त्री होंगी तथा नेतृत्व की भावना भी आप में रहेगी।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के मंगल के स्वक्षेत्री होकर शत्रु एवं रोग भवन में अपनी स्वराशि मेष पर स्थित होने से आप शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखेंगे तथा विजय भी प्राप्त करेंगे। यहाँ से मंगल के अपनी चौथी नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से आपको भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कमी का अनुभव होगा तथा आपके यश-सम्मान में भी कमी आ सकती है। मंगल के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण आपका खर्च अधिक रहेगा, परन्तु बाहरी स्थानों में आपके अच्छे सम्बन्ध स्थापित होंगे। मंगल के अपनी आठवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से आपके शरीर में कुछ प्रभाव हमेशा बना रहेगा तथा आप परिश्रम के द्वारा अपने आत्मबल में सामान्य वृद्धि करेंगे।

बुध

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में, वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से बुध की मित्रता है। सामान्यतः सप्तमस्थ बुध अच्छे फल देता है, यहाँ अष्टमेश तथा एकादशेश बुध, सप्तम स्थान में आपको शुभ फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको सम्पन्न, दीर्घायु तथा चरित्रवान महिला बनाता है। स्वभाव से आप सौम्य रहेंगी। आपके व्यवहार से परिजन प्रसन्न रहेंगे तथा मित्रों में आप लोकप्रिय रहेंगी। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, यदा-कदा वात रोग प्रभावित कर सकते हैं। शरीर में कोई विकार भी रह सकता है। गुप्त रोग तथा गुदा रोग से भी पीड़ित होने का भय रहेगा।

आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहता है। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, काव्य, ललितकला तथा वाणिज्य विषय की ओर रहती है। आपकी रुचि संगीत, नाट्य, कविता तथा पर्यटन की ओर भी



ANJALI

ग्रह विचार

रह सकती है। व्यापारिक केन्द्रों तथा बड़े नगरों का भ्रमण करना आप पसन्द करेंगी। आपकी आयु दीर्घ रहती है। आपको आकस्मिक धन लाभ होने का भी योग है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आपके पति, सुन्दर, सुशिक्षित तथा अच्छे स्वभाव के होंगे जिनके साथ वैचारिक सामंजस्य रह सकता है। कभी-कभी उनका स्वास्थ्य चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आप शिक्षिका, लेखिका, प्रकाशक तथा व्यापारी भी बन सकती हैं। आप राजकीय सर्विस भी प्राप्त कर सकती हैं। साझेदारी का व्यापार आपके लिये उत्तम लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, लग्न स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। आप ऊँचे कद की, गौरवर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाली महिला होती हैं। आपका चेहरा गोल, आँखें छोटी तथा हाथ-पैर मोटाई लिये हो सकते हैं। विनोदप्रियता, सौम्य स्वभाव तथा अच्छा आचरण आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं।

वृश्चिक लग्न में सप्तम भाव के बुध के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से आपको स्त्री एवं दैनिक रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त होगी तथा आयु एवं पुरातत्व का लाभ भी प्राप्त होगा। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की वृषभ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपको शारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी तथा आपकी दिनचर्या भी शान-शौकत की बनी रहेगी।

गुरु

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः सप्तमस्थ गुरु शुभफल दायक रहता है। यहाँ धनेश तथा पंचमेश गुरु सप्तम स्थान में आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको धार्मिक, यशस्वी तथा धनी स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा एवं आपके मित्रों की संख्या अधिक होती है। आपके व्यवहार से मित्रों और परिजनों में आप लोकप्रिय रहेंगी। समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदा-कदा बवासीर, अतिसार आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान ललितकला, साहित्य, काव्य, आयुर्वेद आदि विषयों की ओर रहता है। संगीत, पत्रकारिता, पर्यटन आदि विधाओं में भी आपकी रुचि रहती है। आपका वैवाहिक जीवन सुखी होगा। आपके पति सुन्दर, कलाप्रेमी, मधुरभाषी तथा सदाचारी व्यक्ति होते हैं। आपके साथ उनका सामंजस्य बना रहेगा। आपको सन्तान सुख मध्यम रहता है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप साहित्यकार, कवियित्री,



ANJALI

ग्रह विचार

रह सकती है। व्यापारिक केन्द्रों तथा बड़े नगरों का भ्रमण करना आप पसन्द करेंगी। आपकी आयु दीर्घ रहती है। आपको आकस्मिक धन लाभ होने का भी योग है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा। आपके पति, सुन्दर, सुशिक्षित तथा अच्छे स्वभाव के होंगे जिनके साथ वैचारिक सामंजस्य रह सकता है। कभी-कभी उनका स्वास्थ्य चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आप शिक्षिका, लेखिका, प्रकाशक तथा व्यापारी भी बन सकती हैं। आप राजकीय सर्विस भी प्राप्त कर सकती हैं। साझेदारी का व्यापार आपके लिये उत्तम लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

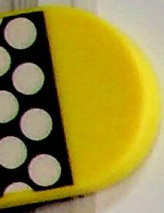
इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, लग्न स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। आप ऊँचे कद की, गौरवर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाली महिला होती हैं। आपका चेहरा गोल, आँखें छोटी तथा हाथ-पैर मोटाई लिये हो सकते हैं। विनोदप्रियता, सौम्य स्वभाव तथा अच्छा आचरण आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं।

वृश्चिक लग्न में सप्तम भाव के बुध के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से आपको स्त्री एवं दैनिक रोजगार के पक्ष में सफलता प्राप्त होगी तथा आयु एवं पुरातत्व का लाभ भी प्राप्त होगा। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की वृषभ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपको शारीरिक बल एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी तथा आपकी दिनचर्या भी शान-शौकत की बनी रहेगी।

गुरु

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः सप्तमस्थ गुरु शुभफल दायक रहता है। यहाँ धनेश तथा पंचमेश गुरु सप्तम स्थान में आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको धार्मिक, यशस्वी तथा धनी स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा एवं आपके मित्रों की संख्या अधिक होती है। आपके व्यवहार से मित्रों और परिजनों में आप लोकप्रिय रहेंगी। समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदा-कदा बवासीर, अतिसार आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान ललितकला, साहित्य, काव्य, आयुर्वेद आदि विषयों की ओर रहता है। संगीत, पत्रकारिता, पर्यटन आदि विधाओं में भी आपकी रुचि रहती है। आपका वैवाहिक जीवन सुखी होगा। आपके पति सुन्दर, कलाप्रेमी, मधुरभाषी तथा सदाचारी व्यक्ति होते हैं। आपके साथ उनका सामंजस्य बना रहेगा। आपको सन्तान सुख मध्यम रहता है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप साहित्यकार, कवियित्री,



ANJALI

ग्रह विचार

कलाकार, न्यायाधीश, चिकित्सक आदि बन सकती हैं। आयुर्वेद चिकित्सक (वैद्य) बनने से आपको धन तथा यश प्राप्त हो सकता है। व्यापार से भी आपको लाभ हो सकता है।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आप स्व-पुरुषार्थ से प्रगति करने वाली स्त्री (सेल्फ मेड वुमेन) होती हैं। अर्थ संचय के लिये आपको परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की गुरु से मित्रता है। आप मध्यम कद, गौरवर्ण तथा साधारण शारीरिक गठन वाली स्त्री होती हैं। आपका व्यक्तित्व आकर्षक तथा स्वभाव सौम्य एवं मिलनसार होता है। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी स्त्री होती हैं। अपने भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में सप्तम भाव के गुरु के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से आपको कुछ मतभेदों के बावजूद भी स्त्री का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा तथा बुद्धि-योग से व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा। साथ ही आपको विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में भी सफलता मिलेगी। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आपकी आमदनी अच्छी रहेगी। गुरु के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण आपको शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी। गुरु के अपनी नवीं नीच-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से आपको भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी मिल सकती है तथा पुरुषार्थ में भी कमी का अनुभव होगा।

शुक्र

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से शुक्र के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः षष्ठस्थ शुक्र अच्छे फल नहीं देता है। यहाँ सप्तमेश तथा द्वादशेश शुक्र षष्ठम स्थान में आपको अशुभ फल प्रदान करेगा। यह शुक्र आपको आचरण हीन तथा कंजूस स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव कठोर रहता है तथा आपको क्रोध भी शीघ्र ही आ जाता है। परिजनों से आपका मेल नहीं रहता है तथा आपके रुखे व्यवहार से मित्र भी आपके विरोधी बन जाते हैं।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आपको नेत्र रोग हो सकते हैं। सांसर्गिक रोगों जैसे-तपेदिक, यौन रोग आदि का भय भी आपको रहता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों में रहता है। इसके अतिरिक्त गणित, संगीत, साहित्य आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहती है। गायन, वादन तथा पर्यटन भी आपका शौक रहेगा। अध्ययन काल में



[Faint, illegible text visible through the paper, likely bleed-through from the reverse side.]

ANJALI

ग्रह विचार

यदा-कदा बीमारी आदि कारणों से भी आपको बाधा आ सकती है, किन्तु अपने परिश्रम से आप सफलता प्राप्त कर लेती हैं। शत्रु आपको पीड़ित कर सकते हैं। वे आपको आर्थिक हानि तथा मानसिक कष्ट भी पहुँचा सकते हैं। अन्ततः आप इन शत्रुओं को दबाने में सफल रहेंगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहता है। आपके पति ऊँचे कद, गौरवर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। उनका स्वभाव तेज रहता है। आपके साथ उनके मतभेद तथा झगड़े होने सम्भव हैं। उनका स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपसी प्रेम तथा सामंजस्य बनाये रखने में आपको कठिनाई आ सकती है।

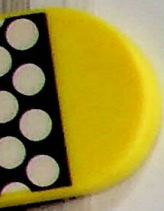
आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप गणितज्ञ, लेखिका, प्राध्यापिका, वैज्ञानिक, संगीतकार, निर्देशक, कलाकार, गायिका आदि बन सकती हैं। व्यापार में आपको लाभ कम होता है। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होने से अर्थ संग्रह करना आपके लिए सम्भव नहीं हो पाता है। यह शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्राचार्य स्वयं ही हैं। व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव रहेगा। समुद्र पारीय व्यापार में आपको लाभ हो सकता है।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के शुक्र के शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आप शत्रु-पक्ष में शान्तिपूर्ण उपायों के द्वारा अपना काम निकालेंगे। आपको अपनी गृहस्थ जीवन के कार्य-संचालन में भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि तुला में द्वादश भाव को देखता है, अतः आपका खर्च अधिक रहेगा तथा आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से अत्यधिक परिश्रम के द्वारा ही सामान्य लाभ प्राप्त होगा।

शनि

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से नवम स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से शनि की शत्रुता है। सामान्यतः नवमस्थ शनि अच्छे फल देता है। यहाँ तृतीयेश तथा चतुर्थेश शनि नवम स्थान में आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह शनि आपको उद्यमी, विदुषी, दयालु, धार्मिक, सम्पन्न तथा लोकप्रिय स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा। आपके व्यवहार तथा विद्वता से समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी। आप स्व-पराक्रम से प्रगति करने वाली स्त्री (सेल्फ मेड वुमेन) होती हैं। मित्रों तथा परिजनों से आपका स्नेह रहेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कफ-खाँसी, सर्दी की बीमारियों आदि से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, कला, रसायन, चिकित्सा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष तथा धर्मशास्त्रों के स्वाध्याय आदि में आप रुचि रखती हैं। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आप तीर्थयात्राएँ भी कर सकती हैं। आपका विदेश यात्रा का योग भी बनता है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी भी होती हैं। अपने



ANJALI

ग्रह विचार

भाई-बहिनों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। अपनी माता से आपका स्नेह रहेगा। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है। आपकी धर्म में आस्था रहती है। आपका भाग्योदय 36वें वर्ष में हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप साहित्यकार, प्राध्यापिका, लेखिका, कलाकार, चिकित्सक, रसायनज्ञ, विधिवेत्ता आदि बन सकती हैं। व्यापार में भी आपको पर्याप्त लाभ होगा।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आपकी आय में वृद्धि होगी। आपको आय के नये स्रोतों की प्राप्ति हो सकती है। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से तृतीय स्थान में मकर राशि को देखता है, जो शनि की स्वराशि है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी स्त्री होती हैं। अपने भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते हैं। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जो शनि की नीच राशि है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। आपके पराक्रम के आगे शत्रु नतमस्तक होंगे।

वृश्चिक लग्न में नवम भाव के शनि के त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आप कुछ असन्तोष के साथ धर्म का पालन करेंगे तथा कुछ रुकावटों के साथ आपकी भाग्योन्नति होगी। आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होगा। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आपकी आमदनी अच्छी रहेगी तथा आपको धन का प्रचुर लाभ प्राप्त होगा। शनि के अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने के कारण आपके भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होगी। शनि के अपनी दसवीं नीच-दृष्टि से शत्रु मंगल की मेष राशि में षष्ठ भाव को देखने से आपको शत्रु-पक्ष से कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है तथा आपका ननिहाल का पक्ष भी कमजोर बना रहेगा। फिर भी आप भाग्यवान व्यक्ति समझे जायेंगे एवं सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

राहु

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में, कन्या राशि में स्थित है, जो राहु की स्वराशि है। सामान्यतः एकादशस्थ राहु अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ एकादश स्थान में कन्या राशिस्थ राहु आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह राहु आपको विदुषी, काव्यप्रिय, सम्पन्न तथा सुखी महिला बनाता है। स्वभाव से आप मिलनसार रहेंगी। आपकी विदुषिता तथा समाज सेवा के कार्यों से समाज में आप प्रतिष्ठित रहेंगी। आपके मित्र अधिक रहते हैं। ज्योतिषियों तथा तांत्रिकों से भी आपका सम्पर्क रह सकता है। आपके मित्र विश्वसनीय तथा यथासमय सहायता करने वाले होते हैं। मित्रों ओर परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कर्ण रोग अथवा वात-विकार से पीड़ित हो सकती हैं।



[Faint, illegible text visible through the paper, likely bleed-through from the reverse side.]

ANJALI

ग्रह विचार

आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, अर्थशास्त्र, चिकित्सा, रसायन, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स, विधि आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में आपकी रुचि रहती है। उच्च शिक्षा अथवा पर्यटन के लिए आपको विदेश यात्रा का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप चिकित्सक, रसायनज्ञ, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, प्राध्यापिका, लेखिका, वकील, सरकारी अधिकारी आदि बन सकती हैं। व्यापार में उत्तम लाभ मिल सकता है। राजनीति के क्षेत्र में आप सफल तथा कीर्तिशाली रह सकती हैं। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होती है किन्तु आय पर्याप्त रहने से अर्थ संग्रह में बाधा नहीं रहेगी।

इस राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि, तृतीय स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आप साहसी तथा परिश्रमी महिला होती हैं। भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यह राहु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से, पंचम स्थान में मीन राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा। सन्तान सुख सामान्य रहेगा। प्रथम सन्तान कन्या हो सकती है। यह राहु अपनी नवम पूर्ण दृष्टि से, सप्तम स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखमय रहेगा। आपके पति का स्वभाव मिलनसार रहने से आपके साथ सामंजस्य बना रहेगा।

वृश्चिक लग्न में एकादश भाव के राहु के लाभ भवन में अपने मित्र की कन्या राशि पर स्थित होने से आपको अपने क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आप अपनी बुद्धि, चातुर्य, विवेक-शक्ति एवं गुप्त-युक्तियों के द्वारा विशेष लाभ कमायेंगे। अधिक मुनाफा कमाने के लिए आप उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करेंगे। आप स्वार्थ-सिद्ध करने में चतुर व्यक्ति होंगे तथा कभी-कभी आपको अनायास ही मुफ्त जैसा धन भी मिलेगा, इतने पर भी आप अपनी आमदनी के सम्बन्ध में असन्तुष्ट बने रहेंगे।

केतु

आपका जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मीन राशि में स्थित है, जो केतु की स्वराशि है। सामान्यतः पंचम स्थान (सुत स्थान) में केतु अच्छे फल नहीं देता है, यहाँ पंचम स्थान में मीन राशि का केतु आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह केतु आपको बुद्धिमती, पराक्रमी, परीश्रमी, वाक्पटु, सम्पन्न तथा सुखी महिला बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अच्छे व्यवहार से आप अपरिचितों को भी मित्र बना लेती हैं। मित्रों का सहयोग आपको प्राप्त होता है। समाजसेवा तथा जनहितकारी कार्यों से आप यश प्राप्त करेंगी। गुणों से समाज में आपकी प्रतिष्ठा होती है। प्रखर बुद्धि तथा परीश्रम से आपके कार्य समय पर पूर्ण होते हैं। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहेगा। यदा-कदा उदर रोग तथा कफ



ANJALI

ग्रह विचार

सम्बन्धी बीमारियों से पीड़ित हो सकती हैं।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, इतिहास, रसायन, चिकित्सा, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, आध्यात्मिक व धार्मिक ग्रन्थों तथा तंत्र शास्त्र जैसे गूढ़ विषयों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। पर्यटनप्रिय महिला होने से आपको ऐतिहासिक तथा जलीय स्थानों (नदी, झील तथा समुद्र तटीय स्थान) में भ्रमण करना पसन्द होता है। आप उच्च शिक्षा तथा पर्यटन के लिये विदेश भी जा सकती हैं। प्रवास से लाभ सम्भव है। सन्तान सुख में कमी अथवा कन्या सन्तान की अधिकता हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप इतिहासकार, रसायनशास्त्री, चिकित्सिका, भाषाविद्, प्राध्यापिका, लेखिका, बैंक, बीमा अधिकारी आदि बन सकती हैं। व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ हो सकता है। राजनीति में तीव्र प्रगति से आप शासन में उच्च पद भी प्राप्त कर सकती हैं। अर्थ संचय में सफलता मिलेगी।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से नवम् स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से केतु की शत्रुता है। धर्म में आपकी आस्था कम रहेगी। आपके भाग्योदय में विलम्ब हो सकता है। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कन्या राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपकी आय में वृद्धि होगी। आपकी आय के एक से अधिक साधन हो सकते हैं। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से प्रथम स्थान (जन्म लग्न) में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। आप लम्बे कद की, गेहुँए वर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाली महिला होती हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा मिलनसार स्वभाव से आप समाज में लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित रहेंगी।

वृश्चिक लग्न में पंचम भाव के केतु के त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको विद्याध्ययन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है तथा सन्तान के पक्ष से भी कष्ट प्राप्त हो सकता है। आप बड़े जिद्दी, दृढ़ निश्चयी, गुप्त-युक्तियों से काम लेने वाले, साहसी, निर्भय तथा धैर्यवान व्यक्ति होंगे। आपके मस्तिष्क में गुप्त-चिन्ताओं का निवास रहेगा, परन्तु आप उन्हें किसी पर प्रकट नहीं होने देंगे। आपका बातचीत करने का ढंग भी अच्छा नहीं हो सकता है।



ANJALI

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगोट)
मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, आयु, स्वास्थ्य में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्य रत्न:— मोती (पर्ल) उपरत्न:— चन्द्रकान्त मणि(मून स्टोन), सफेद हकीक(व्हाइट एगोट)
मोती चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में सोमवार को संध्याकाल में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद चन्द्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त पूर्व धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, धन वृद्धि, विद्या—विवेक दायक तथा व्यवसाय में उन्नतिकारक रहेगा।

कारक रत्न:— पुखराज (येलो सफायर) उपरत्न:— सुनैला(सिटरीन), पीला हकीक(येलो एगोट)
पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, व्यापार तथा व्यवसाय में उन्नतिकारक रहेगा।

BHARAT

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

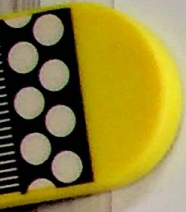
जन्म दिनांक	: 30/11/1973	विक्रमी संवत्	: 2030
जन्म दिन	: शुक्रवार	शक संवत्	: 1895
जन्म समय	: 23:24:56 घण्टे	ऋतु	: हेमन्त
इष्टकाल	: 42:05:28 घटी	मास	: मार्गशीर्ष
जन्म स्थान	: REWA	पक्ष	: शुक्ल
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: पंचमी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 14:01:22 घण्टे
अक्षांश	: 24:32:00 उत्तर		: 18:36:34 घटी
रेखांश	: 81:18:00 पूर्व	जन्म तिथि	: षष्ठी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:04:48 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: श्रवण
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 31:51:28 घण्टे
स्थानिक समय	: 23:20:08 घण्टे		: 63:11:48 घटी
साम्पातिक काल	: 03:57:57 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: श्रवण
वेलान्तर	: -00:11:23 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: वृद्धि
सूर्योदय	: 06:34:45 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 09:39:49 घण्टे
सूर्यास्त	: 17:12:05 घण्टे		: 07:42:39 घटी
दिनमान	: 10:37:20 घण्टे	जन्म योग	: ध्रुव
रात्रिमान	: 13:22:40 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: बालव
सूर्य की स्थिति (अयन)	: दक्षिणायन	करण समाप्ति काल	: 14:01:22 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: दक्षिण		: 18:36:34 घण्टे
अयनांश	: 23:29:50	जन्म करण	: कौलव



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



BHARAT

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

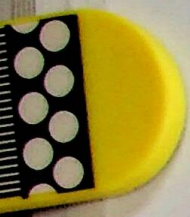
घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	वैशाख	लग्न-लग्नाधिपति	:	सिंह-सूर्य
दिनांक	:	4,9,14	राशि-राशि स्वामी	:	मकर-शनि
दिन	:	मंगलवार	नक्षत्र-चरण	:	श्रवण-3
नक्षत्र	:	रोहिणी	नक्षत्र स्वामी	:	चन्द्र
योग	:	वैधृति	योग	:	ध्रुव
करण	:	शकुनि	करण	:	कौलव
प्रहर	:	4	गण	:	देव
वर्ग	:	मूषक	योनि	:	वानर
लग्न	:	वृश्चिक	नाडि	:	अन्त्या
सूर्य	:	कुम्भ	वर्ण	:	वैश्य
चन्द्र	:	सिंह	वश्य	:	जलचर
मंगल	:	मीन	वर्ग	:	बिलाव
बुध	:	धनु	युंजा	:	पर
गुरु	:	मेष	हंसक (तत्व)	:	भूमि
शुक्र	:	वृष	जन्म नामाक्षर	:	खे
शनि	:	मकर	पाया-राशी	:	ताम्र
राहु	:	मिथुन	पाया-नक्षत्र	:	ताम्र
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	धनु	भयात	:	46:14:07 घटी
सूर्य के अंश	:	वृश्चिक 14:53:52	भभोग	:	67:22:29 घटी
लग्न के अंश	:	सिंह 08:55:37	भोग्य दशा काल	:	चन्द्र 3 व 1 म 19 दिन

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्व जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं। अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूर्वाशुनी	उ.फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य



BHARAT

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

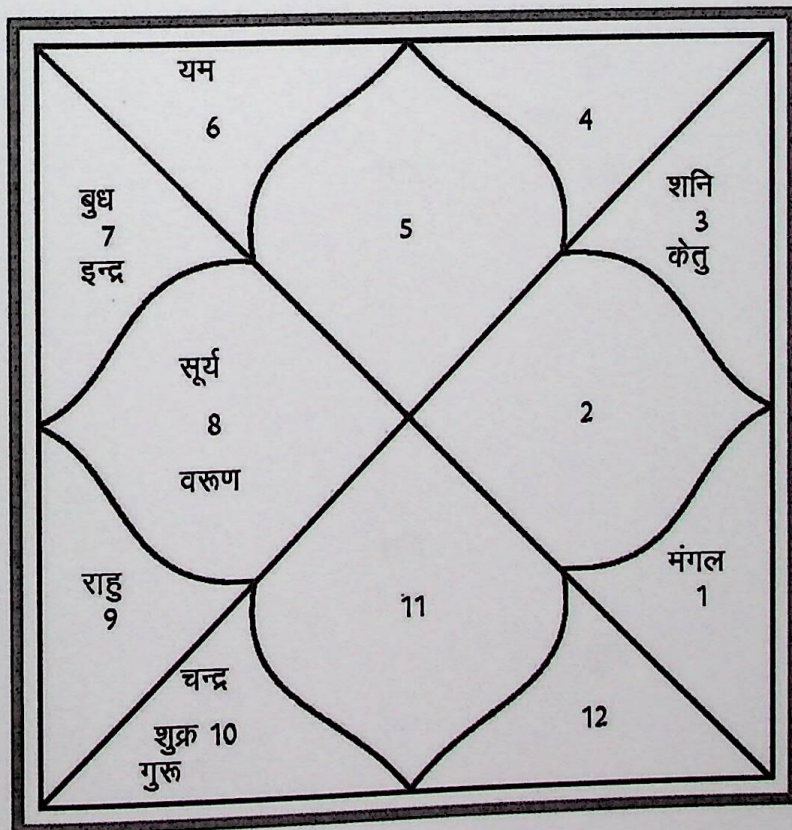
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

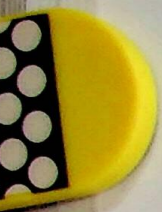
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	सिंह	08:55:37	—	मघा	3	केतु	—	—	—
सूर्य	वृश्चिक	14:53:52	01:00:49	अनुराधा	4	शनि	मित्र स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	मकर	19:09:00	11:54:10	श्रवण	3	चन्द्र	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	मेष	01:57:22	00:03:44	अश्विनी	1	केतु	मूल त्रिकोण	—	मार्गी
बुध	तुला	25:23:43	01:13:45	विशाखा	2	गुरु	मित्र स्थान	—	मार्गी
गुरु	मकर	14:44:35	00:10:21	श्रवण	2	चन्द्र	नीच स्थान	—	मार्गी
शुक्र	मकर	00:45:14	00:51:10	उत्तराषाढा	2	सूर्य	मित्र स्थान	—	मार्गी
शनि	मिथुन	09:32:10	00:04:16	आर्द्रा	1	राहु	मित्र स्थान	—	वक्री
राहु	धनु	05:11:14	00:01:48	मूल	2	केतु	नीच स्थान	—	मार्गी
केतु	मिथुन	05:11:14	00:01:48	मृगशिरा	4	मंगल	नीच स्थान	—	मार्गी
इन्द्र	तुला	02:34:30	00:03:02	चित्रा	3	मंगल	—	—	मार्गी
वरुण	वृश्चिक	13:42:35	00:02:16	अनुराधा	4	शनि	—	अस्त	मार्गी
यम	कन्या	12:53:24	00:01:19	हस्त	1	चन्द्र	—	—	मार्गी
दशम भाव	वृष	08:06:29	—	कृत्तिका	4	सूर्य	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:29:50

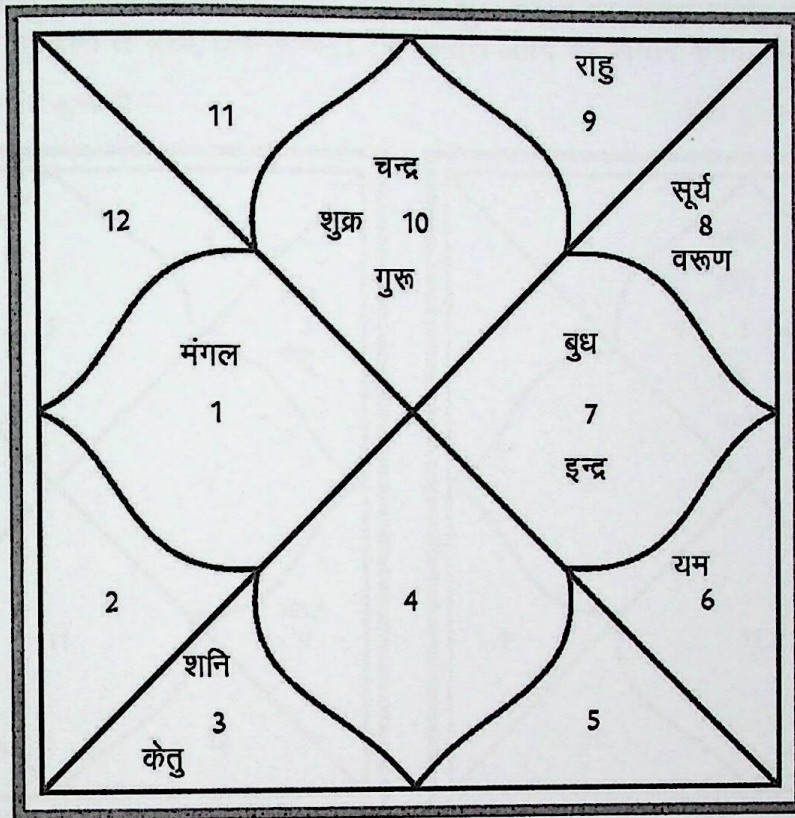
लग्न कुण्डली



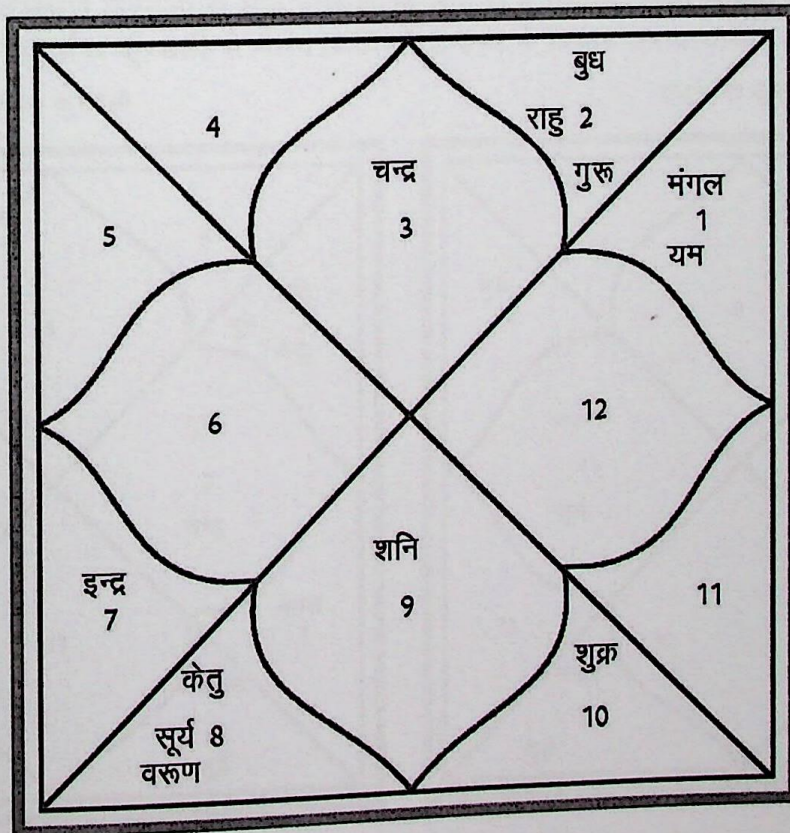


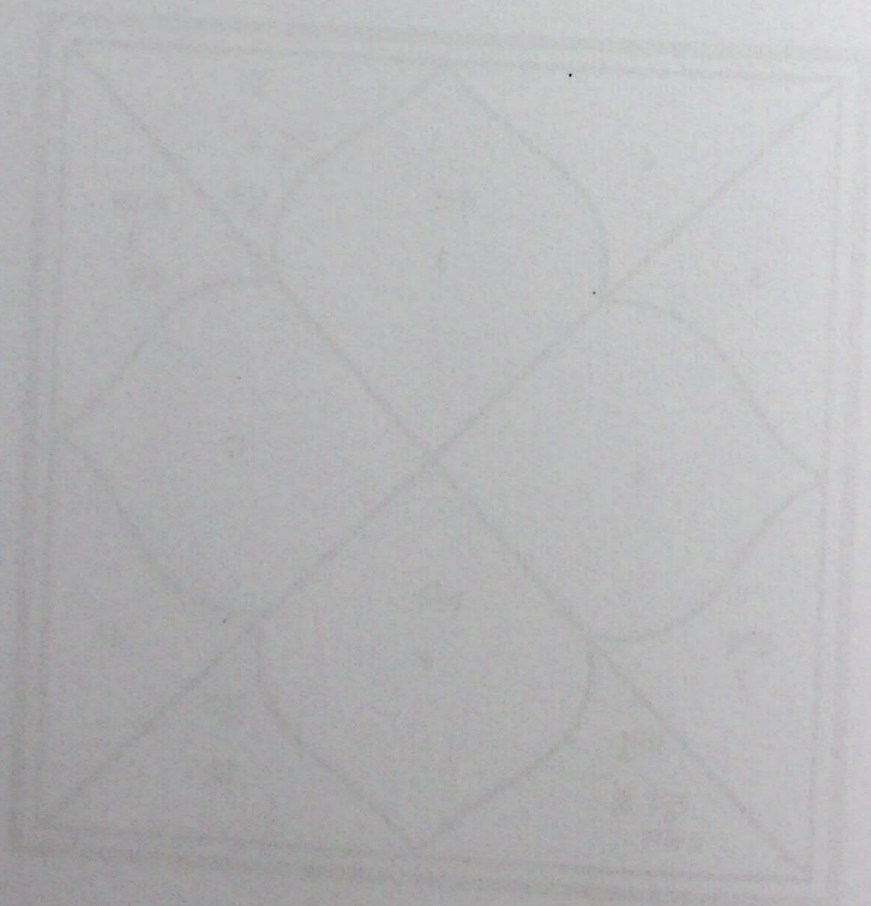
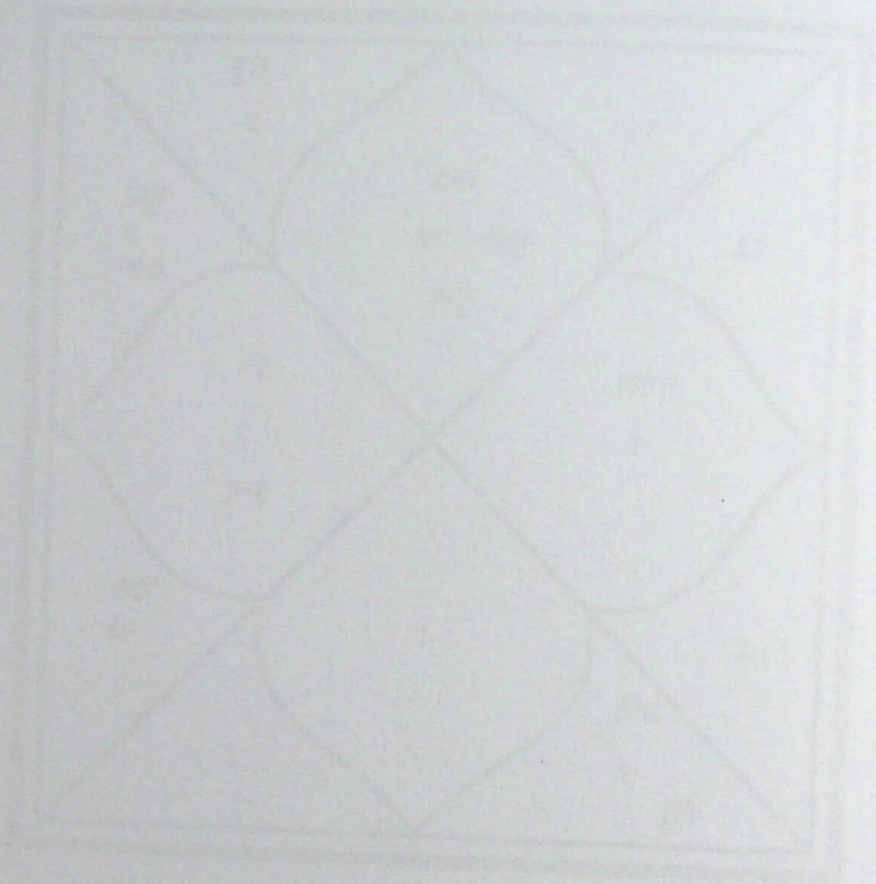
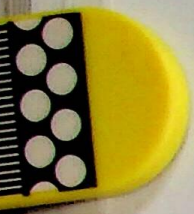
BHARAT

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



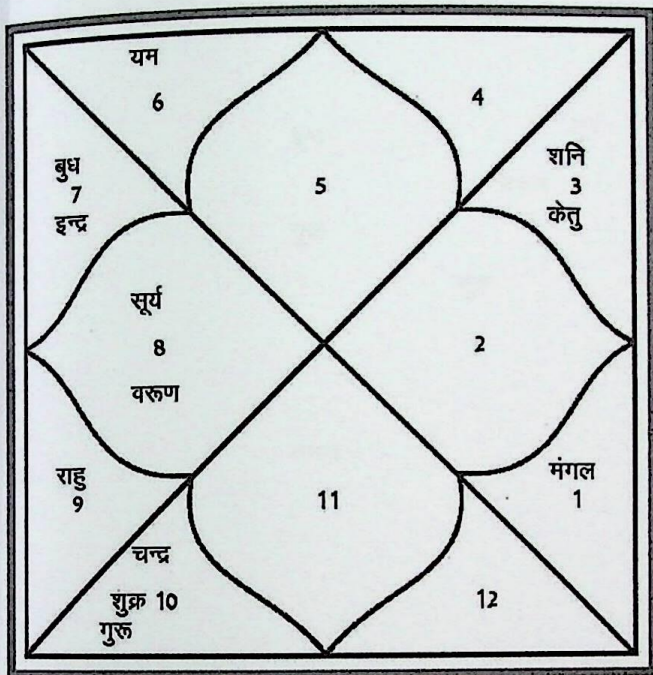


BHARAT

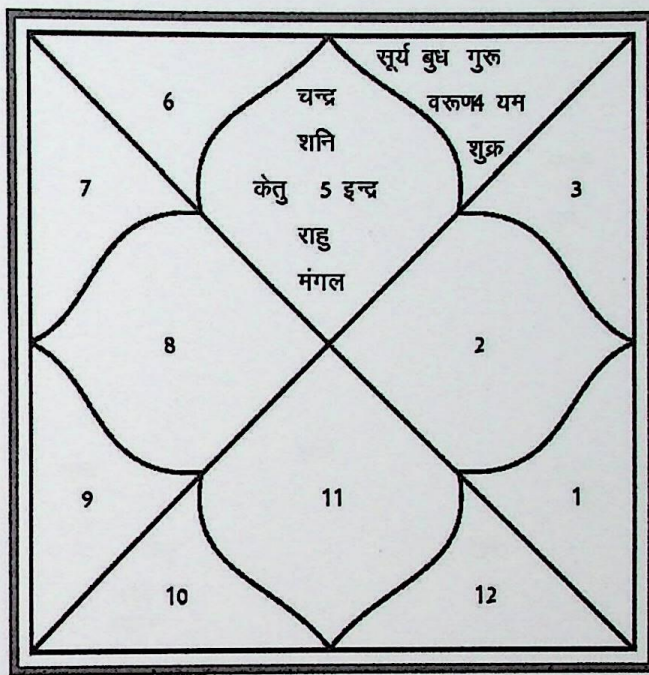
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



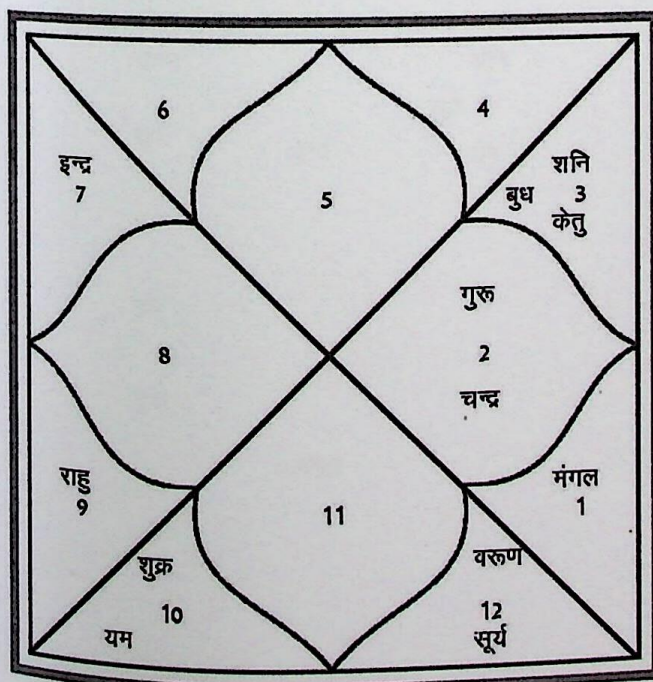
होरा कुण्डली



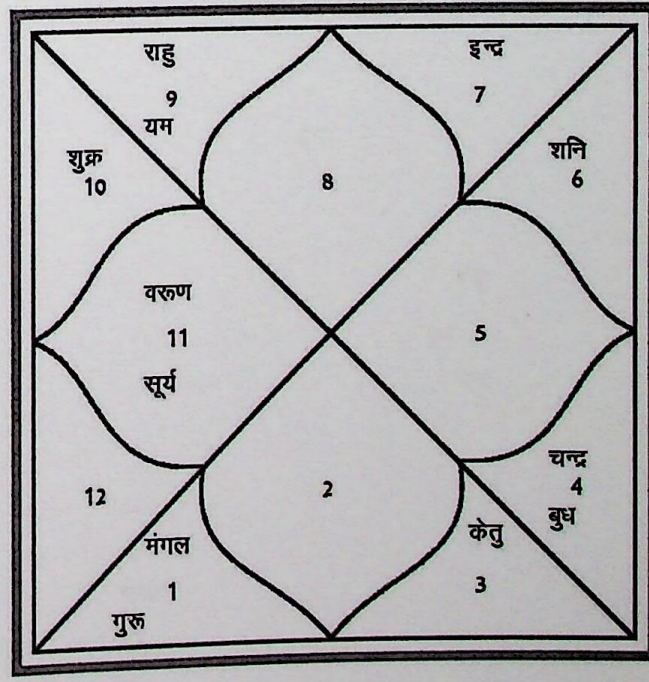
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

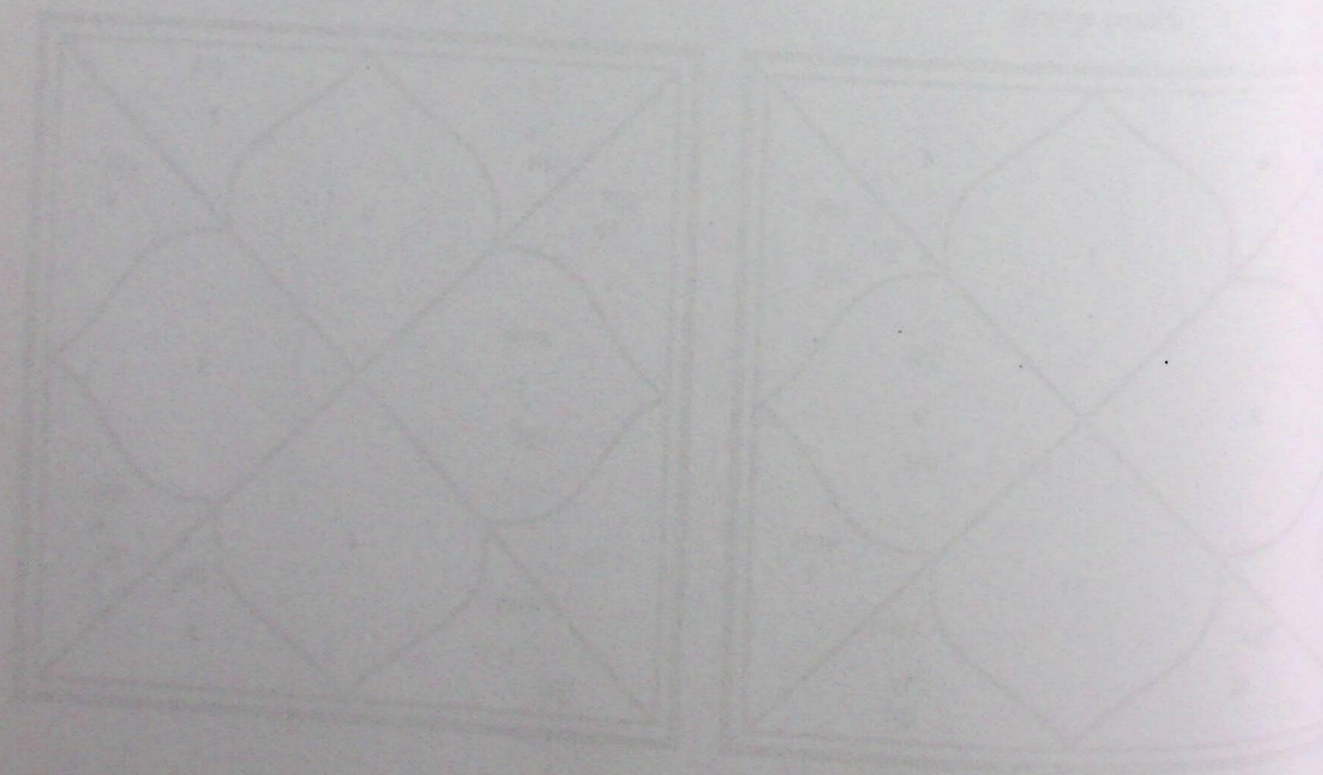
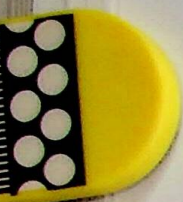
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली



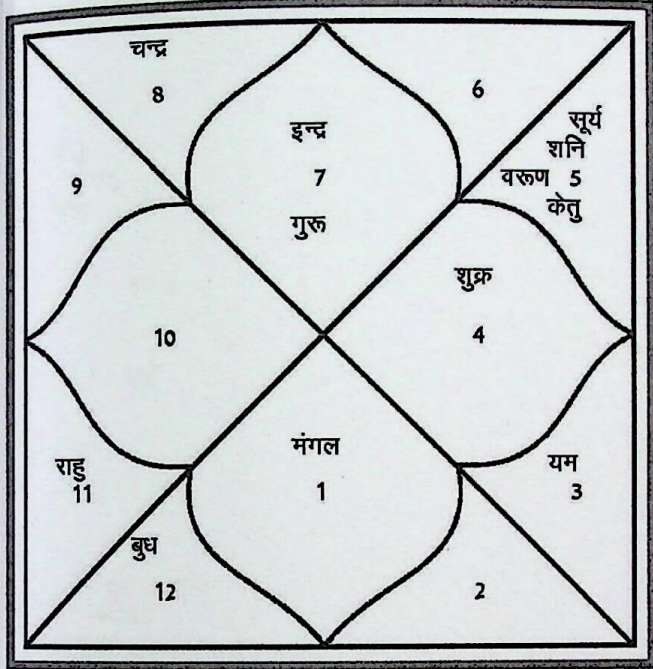


BHARAT

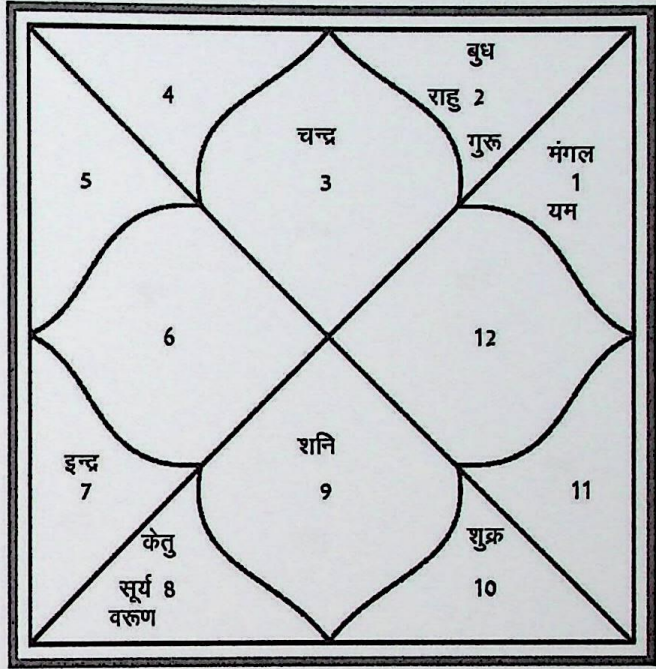
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



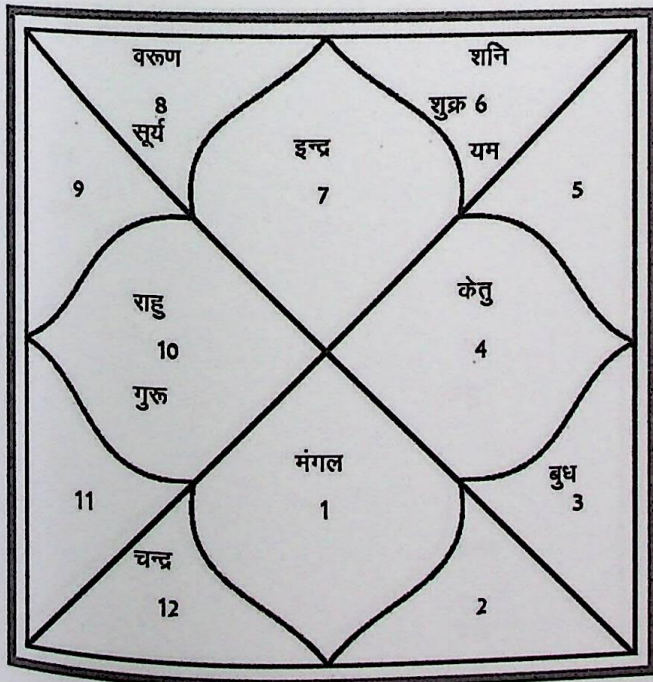
नवमांश कुण्डली



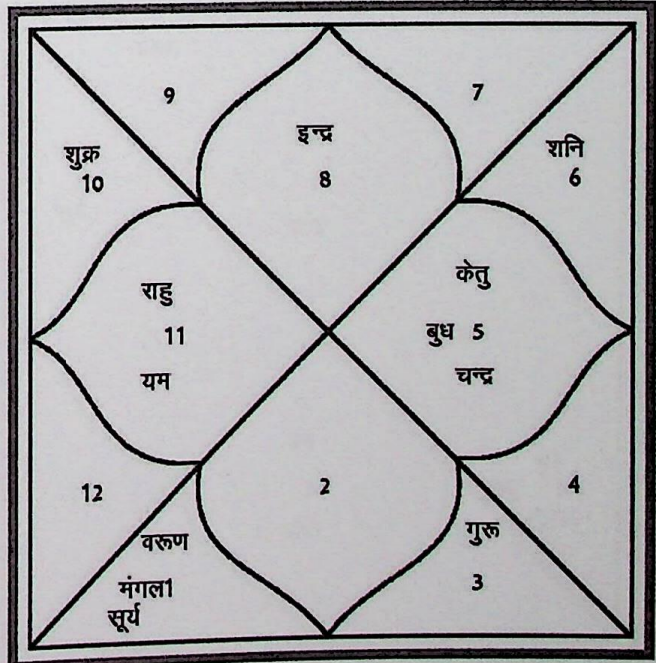
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

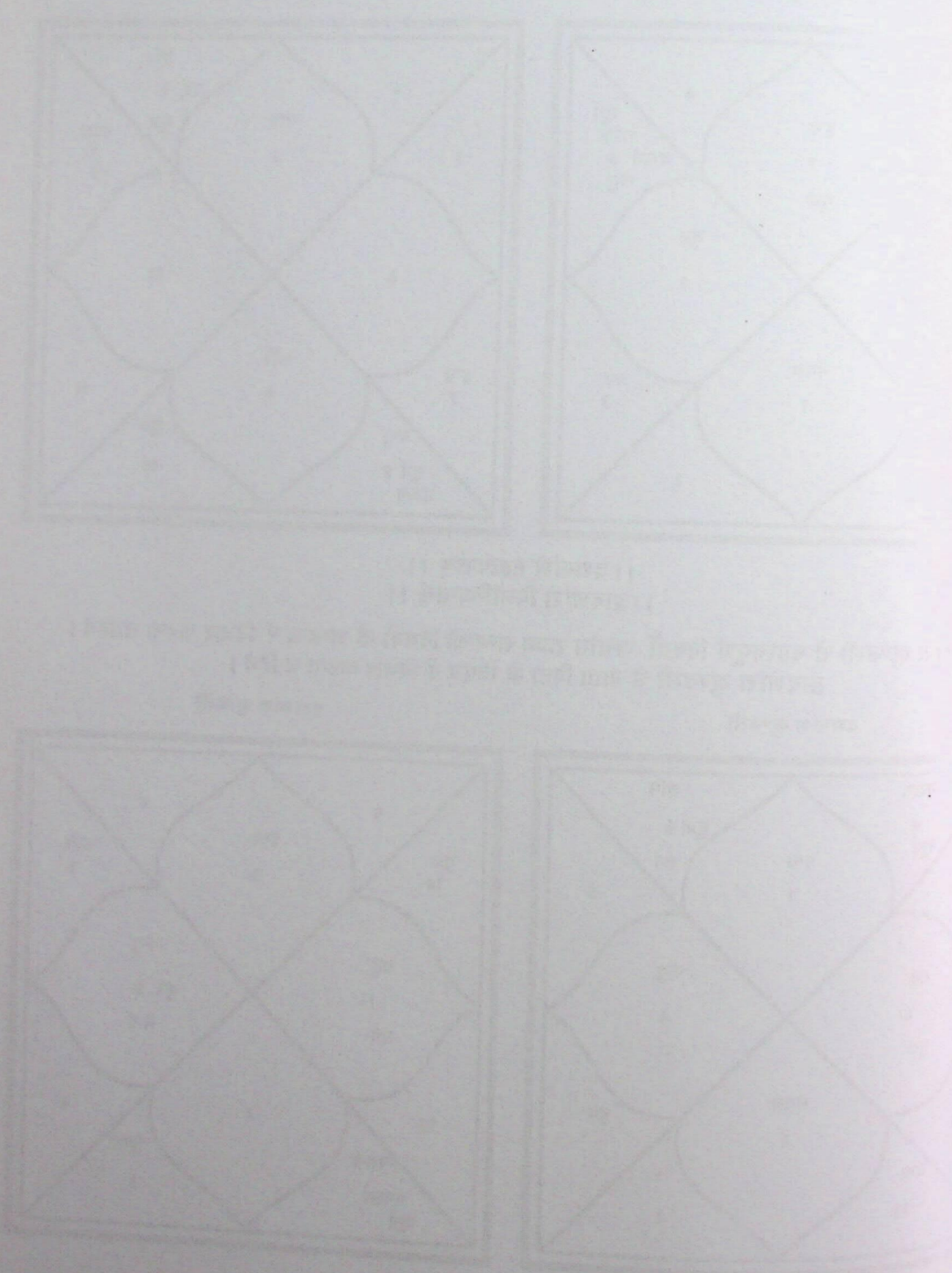
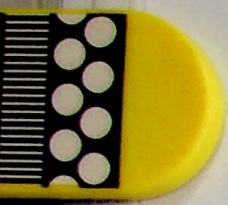
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली





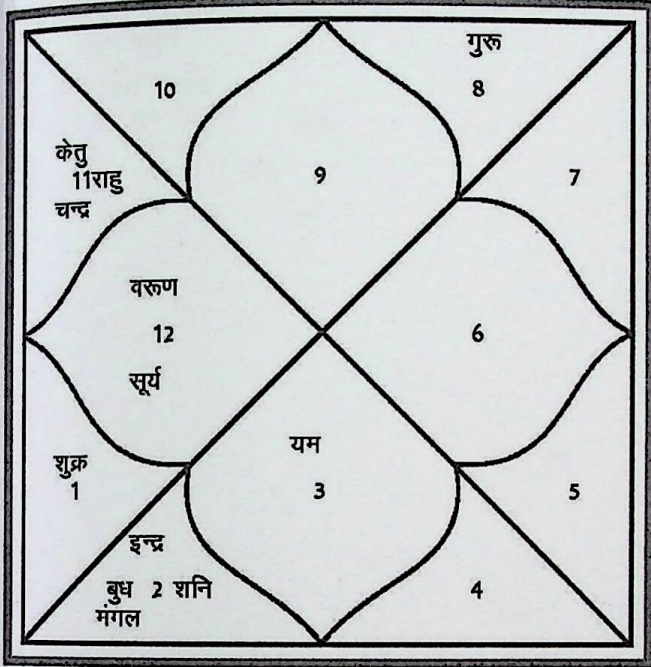
BHARAT

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

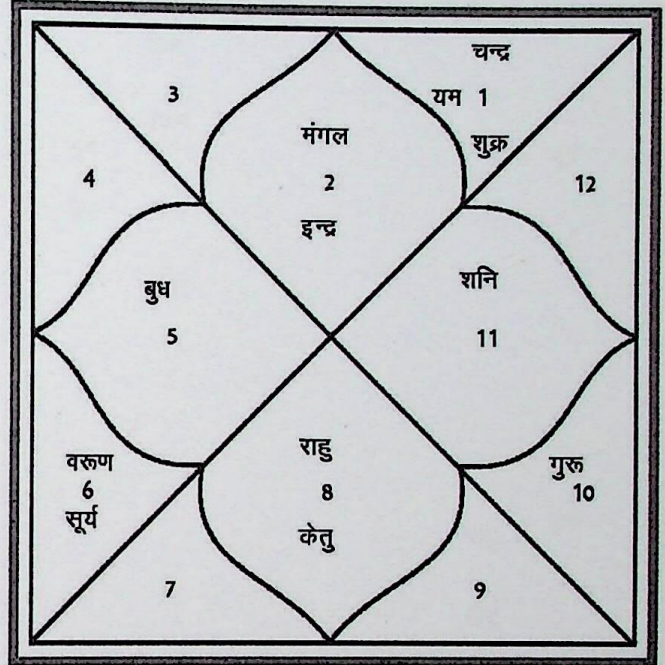
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



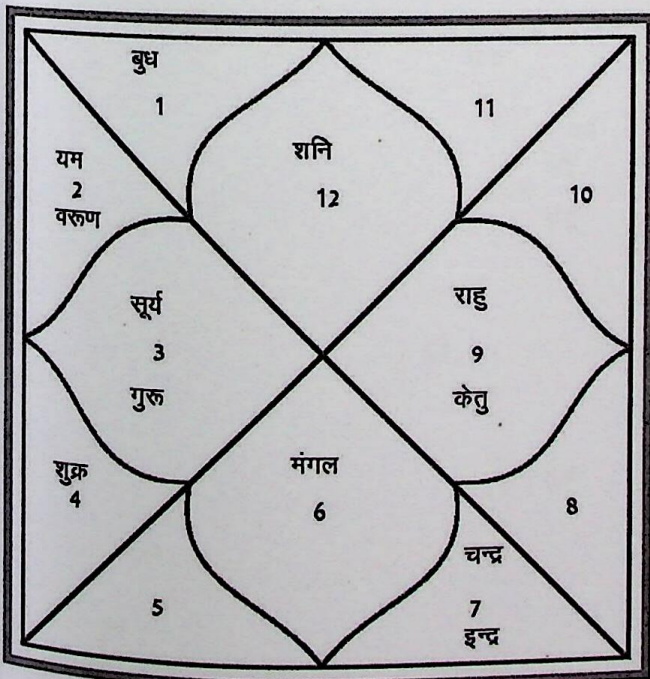
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

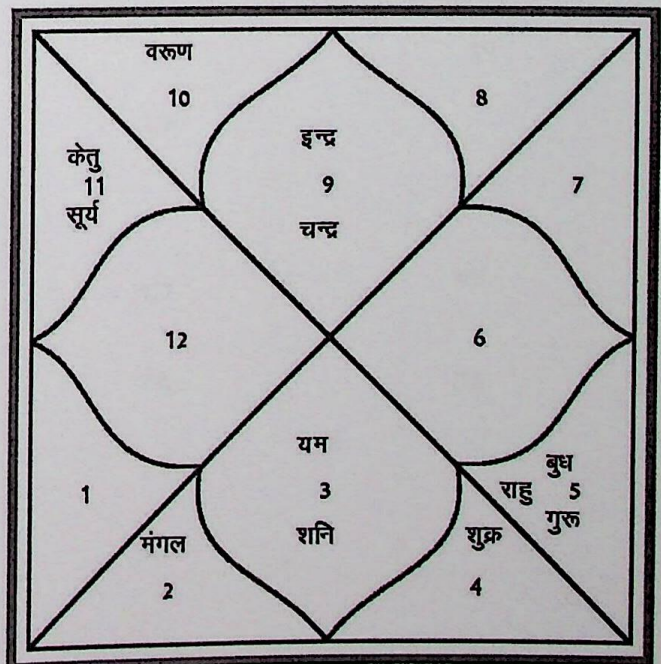
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

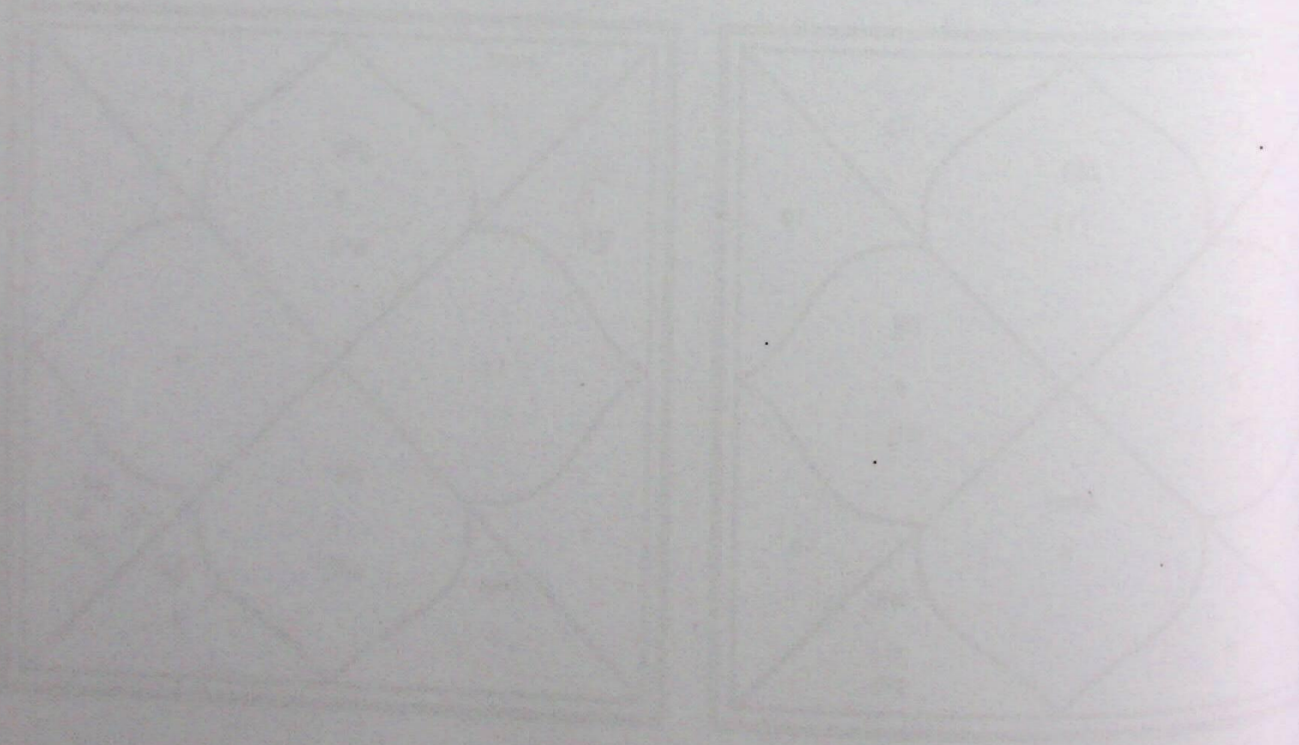
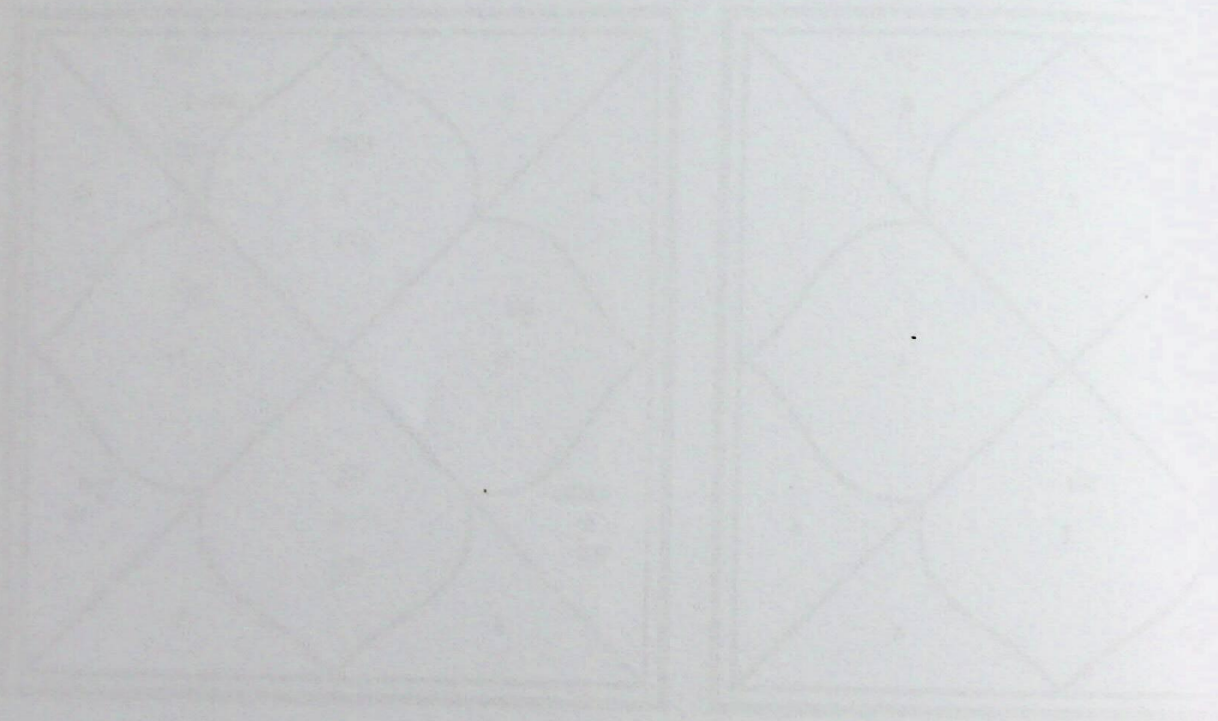
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





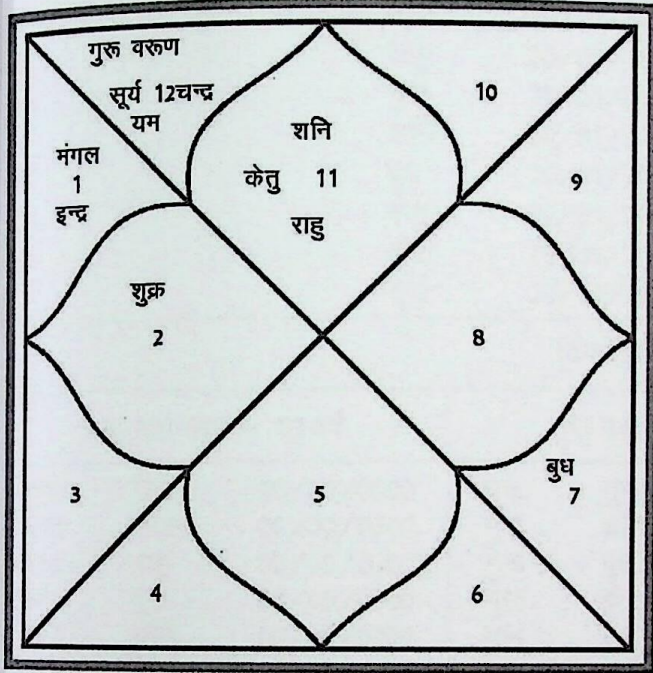
BHARAT

॥ त्रिंशदंशके अरिष्ट फलम् ॥

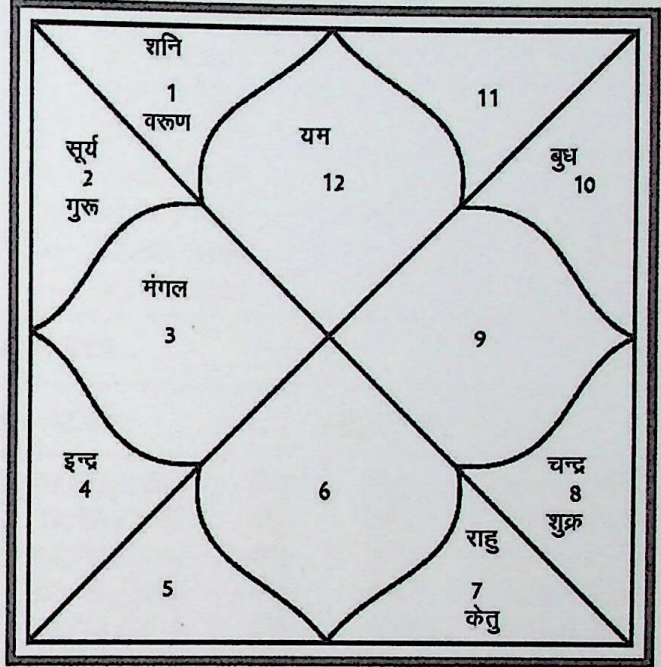
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिंशदंश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिंशदंश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

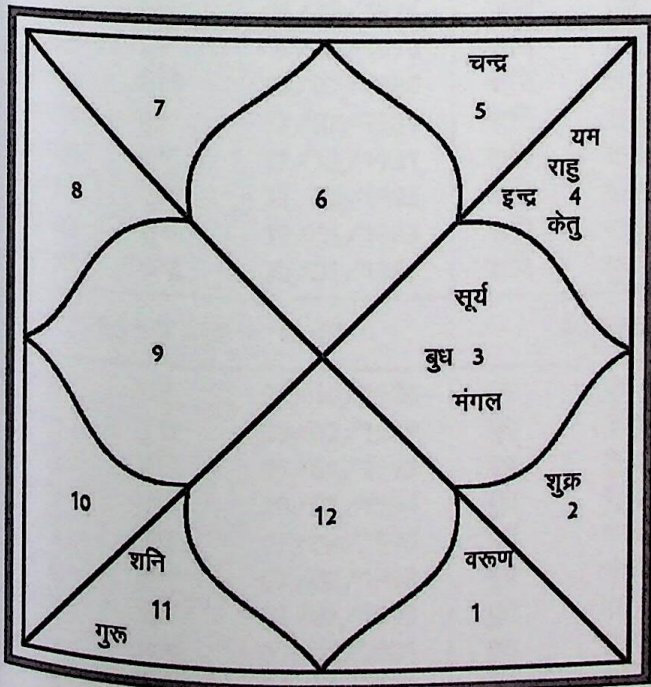


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

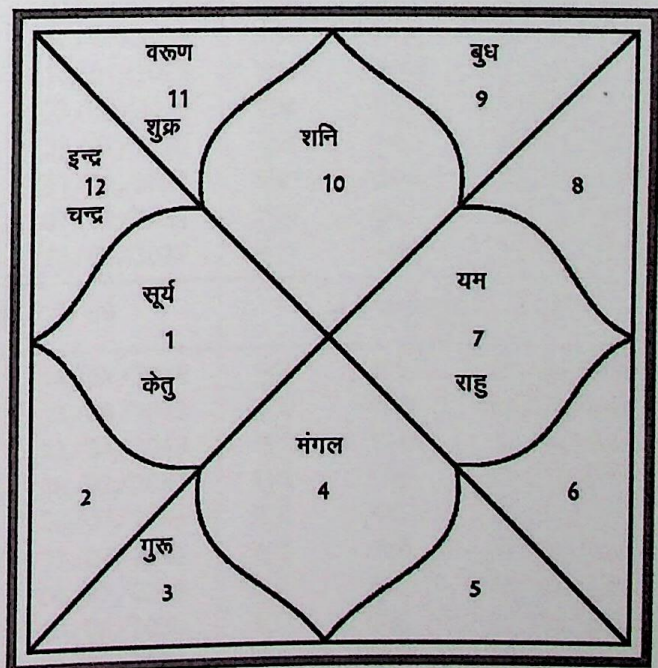
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

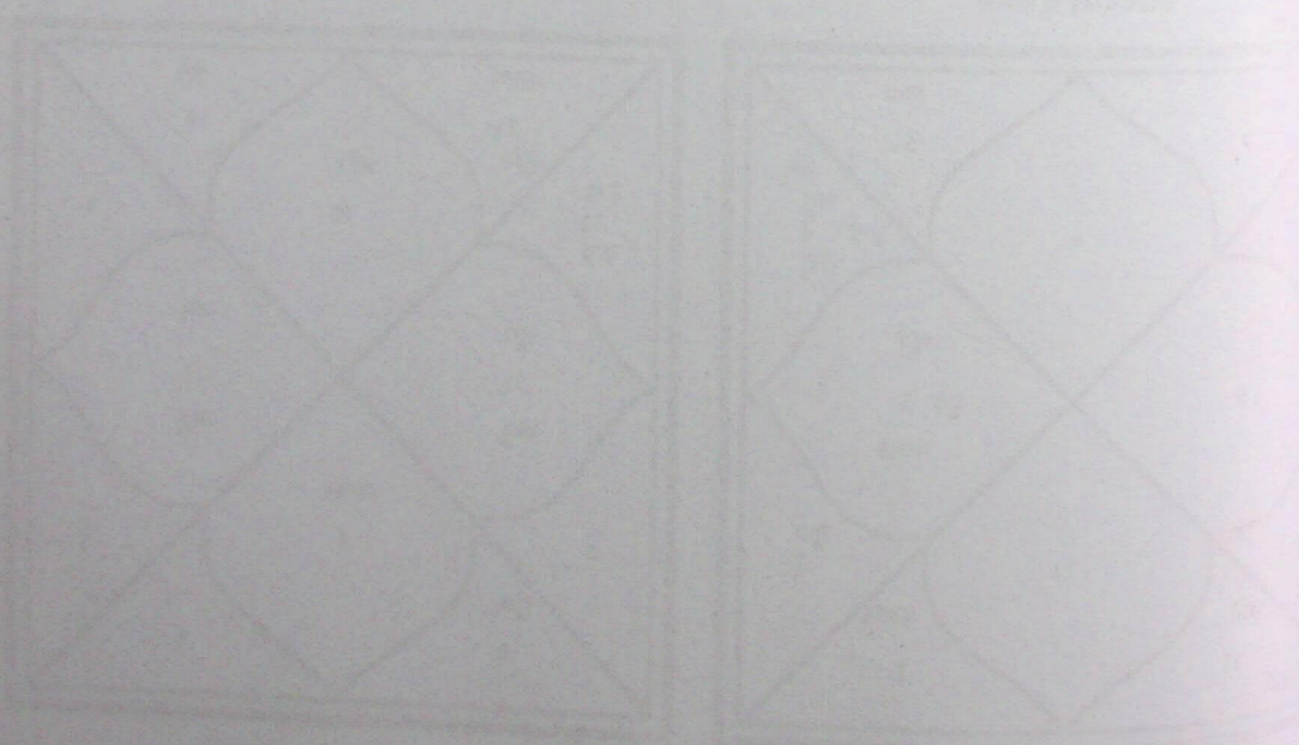
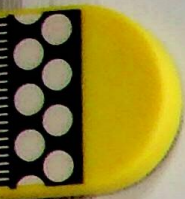
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात् सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





BHARAT

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल — चन्द्र 3 वर्ष 1 मास 19 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

चन्द्र	30/11/1973	—	20/01/1977
मंगल	20/01/1977	—	20/01/1984
राहु	20/01/1984	—	20/01/2002
गुरु	20/01/2002	—	20/01/2018
शनि	20/01/2018	—	20/01/2037
बुध	20/01/2037	—	20/01/2054
केतु	20/01/2054	—	20/01/2061
शुक्र	20/01/2061	—	20/01/2081
सूर्य	20/01/2081	—	20/01/2087

विंशोत्तरी अन्तर दशा

चन्द्र महा दशा — 10 वर्ष

चन्द्र	चन्द्र	00/00/0000
चन्द्र	मंगल	00/00/0000
चन्द्र	राहु	00/00/0000
चन्द्र	गुरु	00/00/0000
चन्द्र	शनि	00/00/0000
चन्द्र	बुध	19/04/1974
चन्द्र	केतु	19/11/1974
चन्द्र	शुक्र	20/07/1976
चन्द्र	सूर्य	20/01/1977

गुरु महा दशा — 16 वर्ष

गुरु	गुरु	07/03/2004
गुरु	शनि	19/09/2006
गुरु	बुध	26/12/2008
गुरु	केतु	01/12/2009
गुरु	शुक्र	01/08/2012
गुरु	सूर्य	20/05/2013
गुरु	चन्द्र	19/09/2014
गुरु	मंगल	26/08/2015
गुरु	राहु	20/01/2018

केतु महा दशा — 7 वर्ष

केतु	केतु	16/06/2054
केतु	शुक्र	17/08/2055
केतु	सूर्य	23/12/2055
केतु	चन्द्र	23/07/2056
केतु	मंगल	20/12/2056
केतु	राहु	07/01/2058
केतु	गुरु	13/12/2058
केतु	शनि	23/01/2060
केतु	बुध	20/01/2061

मंगल महा दशा — 7 वर्ष

मंगल	मंगल	16/06/1977
मंगल	राहु	04/07/1978
मंगल	गुरु	10/06/1979
मंगल	शनि	20/07/1980
मंगल	बुध	17/07/1981
मंगल	केतु	13/12/1981
मंगल	शुक्र	12/02/1983
मंगल	सूर्य	19/06/1983
मंगल	चन्द्र	20/01/1984

शनि महा दशा — 19 वर्ष

शनि	शनि	23/01/2021
शनि	बुध	01/10/2023
शनि	केतु	10/11/2024
शनि	शुक्र	10/01/2028
शनि	सूर्य	23/12/2028
शनि	चन्द्र	23/07/2030
शनि	मंगल	01/09/2031
शनि	राहु	07/07/2034
शनि	गुरु	20/01/2037

शुक्र महा दशा — 20 वर्ष

शुक्र	शुक्र	20/05/2064
शुक्र	सूर्य	20/05/2065
शुक्र	चन्द्र	20/01/2067
शुक्र	मंगल	20/03/2068
शुक्र	राहु	20/03/2071
शुक्र	गुरु	19/11/2073
शुक्र	शनि	20/01/2077
शुक्र	बुध	19/11/2079
शुक्र	केतु	20/01/2081

राहु महा दशा — 18 वर्ष

राहु	राहु	01/10/1986
राहु	गुरु	23/02/1989
राहु	शनि	01/01/1992
राहु	बुध	20/07/1994
राहु	केतु	07/08/1995
राहु	शुक्र	07/08/1998
राहु	सूर्य	01/07/1999
राहु	चन्द्र	01/01/2001
राहु	मंगल	20/01/2002

बुध महा दशा — 17 वर्ष

बुध	बुध	16/06/2039
बुध	केतु	13/06/2040
बुध	शुक्र	13/04/2043
बुध	सूर्य	18/02/2044
बुध	चन्द्र	20/07/2045
बुध	मंगल	17/07/2046
बुध	राहु	04/02/2049
बुध	गुरु	10/05/2051
बुध	शनि	20/01/2054

सूर्य महा दशा — 6 वर्ष

सूर्य	सूर्य	07/05/2081
सूर्य	चन्द्र	07/11/2081
सूर्य	मंगल	13/03/2082
सूर्य	राहु	07/02/2083
सूर्य	गुरु	25/11/2083
सूर्य	शनि	07/11/2084
सूर्य	बुध	13/09/2085
सूर्य	केतु	20/01/2086
सूर्य	शुक्र	20/01/2087

BHARAT

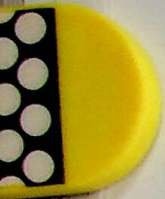
लग्न विचार

सिंह राशि, राशि चक्र की पाँचवी राशि है। इसका स्वामी सूर्य है जो सब ग्रहों का राजा माना जाता है। इस राशि में मघा, पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण आता है। इस लग्न में जन्म होने से आप कद में लम्बे, सुन्दर, चौड़े ललाट तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका व्यक्तित्व सूर्य से प्रभावित होने के कारण आप राजसी, अनुशासन प्रिय तथा साहस युक्त व्यक्ति होंगे। आप उदार व्यक्ति होंगे तथा दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर रहेंगे। स्वभाव के आप उग्र होंगे, किन्तु आपका क्रोध अल्पकालिक ही रहेगा। कभी-कभी तो आपको यह बात भी विस्मृत नहीं रहेगी कि कुछ समय पूर्व आप किस बात पर क्रोधित हुए थे। आत्मप्रशंसा आपका स्वभाव रहेगा। आप विरोध सहन नहीं करेंगे। मनोरंजन के साधन यथा नाच, गाने, नाटक, चलचित्र आदि में आप रुचि रखेंगे, किन्तु यह रुचि सीमित ही होगी अर्थात् अपने कार्य के अतिरिक्त जो समय शेष बचेगा उसी समय में आप इन गतिविधियों में सम्मिलित होंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी के बीच में वैचारिक मतभेद से अनबन बनी रहेगी। आपका सन्तान सुख भी सामान्य रहेगा। आपकी रुचि प्रशासनिक सेवाओं में रहेगी। उच्च प्रशासनिक सेवाओं, प्रबन्धक, संयोजक, अधिकारी वर्ग, पुलिस सेवाओं आदि में भी आप सफलता से कार्य कर सकेंगे। राजनीतिक क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे। आपकी विशेषता रहेगी कि आप अपने उच्चाधिकारियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों सभी के विश्वासपात्र होंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहेगा, परन्तु मध्य आयु पश्चात् हृदय रोग से कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, रक्तचाप, सूजन, वात, ज्वर तथा आँखों की बीमारियों से भी आपको पीड़ित होना पड़ेगा।

आपका जन्म सिंह लग्न में 06 अंश 40 कला से 10 अंश 00 कला के बीच में होने से आप बौद्धिक क्षेत्र में उन्नत होंगे। आप पढ़ने-लिखने तथा पत्राचार में तेज तथा तर्क-वितर्क में कुशल होंगे। आप कद के लम्बे, पतले तथा साधारण रंगरूप के व्यक्ति होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में आप तेज रहेंगे। आप उच्च शिक्षा के कई प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लेंगे। आप उच्च शिक्षा के लिये विदेश यात्रा भी कर सकेंगे। हो सकता है कि आप तकनीकी योग्यता भी हाँसिल करके यान्त्रिक क्षेत्रों में कार्य करने लेंगे। आप हास-परिहास में चतुर, उद्यमी तथा कार्य करने में उतावले होंगे। इस जल्दबाजी के कारण कभी-कभी आपके बनते कार्यों में भी बाधा आ जायेगी। आपको कोई भी कार्य धैर्य तथा शान्ति से पूर्ण करने चाहिये। आप में निर्णय क्षमता की कमी रहेगी, इस कारण आपके कार्यों में त्रुटियाँ हो सकती हैं।

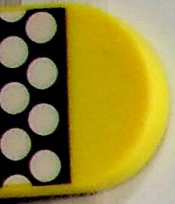
बुद्धिजीवी स्वभाव होने के बावजूद ईश्वर तथा धर्म में आपका विश्वास रहेगा, परन्तु आप में कट्टरता नहीं होगी। आप सर्वधर्म समभाव में विश्वास करेंगे तथा किसी भी विषय पर खुले दिल से चर्चा



BHARAT

लग्न विचार

करने में विश्वास करेंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आप अपने जैसी ही उच्च शिक्षा प्राप्त पत्नी पसन्द करेंगे। आपका सन्तान सुख मध्यम रहेगा। आप लेखन, अध्यापन, वित्त विभाग, दूर संचार, वाणिज्य क्षेत्र, सम्पादन, मीडिया, आयात-निर्यात विभाग, विक्रय प्रतिनिधि आदि कार्य सफलतापूर्वक करेंगे। आपको पाइल्स, गॉलब्लेडर, सर्दी-जुखाम, फेफड़ों से सम्बन्धित बीमारियाँ, निम्न रक्तचाप आदि से कष्ट रहेगा। आप प्रायः तनाव ग्रस्त रहेंगे इस कारण आपका स्वास्थ्य अधिक प्रभावित रहेगा।



BHARAT

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि में विद्यमान है जिसका स्वामी मंगल सूर्य का मित्र है। सामान्यतः चतुर्थ स्थान में सूर्य मिश्रित फल प्रदान करता है किन्तु यहाँ अपने मित्र के घर में सूर्य अच्छे फलों में वृद्धि करेगा। यह सूर्य आपको आकर्षक तथा प्रभावशाली बनायेगा। आप बुद्धिमान तथा साहसी होंगे जिससे शत्रुपक्ष आपसे भयभीत रहेगा।

पारिवारिक सुख आपको अच्छी मात्रा में प्राप्त होगा। आप अच्छे पद पर प्रतिष्ठित रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी। आप निरोगी तथा दीर्घायु होंगे तथा शनैः शनैः सम्पत्ति एकत्रित कर लेंगे। भूमि, मकान, वाहन आदि सभी सुख सुविधायें आपको प्राप्त होंगी। कला, संगीत, काव्य में आपकी रुचि होगी। पर्यटन का भी शौक रहेगा।

आप व्यावहारिक प्रकृति वाले होंगे। जीवन में सम्पन्नता होते हुए भी मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं होगी। आपका स्वभाव कठोर रहने से यदा—कदा कुटुम्बीजन भी आपसे रुष्ट हो सकते हैं। आपको रक्तचाप, हृदय, तथा फेफड़ों से सम्बन्धित बीमारियों से सावधान रहना चाहिये।

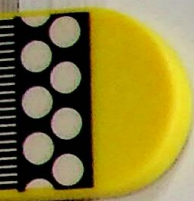
इस सूर्य की पूर्ण (सप्तम) दृष्टि दशम स्थान पर पड़ती है जहाँ वृष राशि विद्यमान है। इसका स्वामी शुक्र सूर्य का शत्रु है, अतः यह आपको दशम स्थान सम्बन्धी फलों में कमी करेगा। आपके पिता के साथ मतभेद रह सकते हैं, पिता का सुख पूरी तरह प्राप्त नहीं होगा। व्यवसाय में भी आपको यदा—कदा संकट उपस्थित हो सकता है। राज्य पक्ष स आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

सिंह लग्न में चतुर्थ भाव के सूर्य के केन्द्र, माता, भूमि, मकान एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से आपको माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होगा तथा शरीर आनन्दित बना रहेगा। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु—दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशम भाव को देखता है, अतः अपने पिता के साथ आपका वैमनस्य रह सकता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपको अधिक प्रयत्नों के बाद कुछ ही सफलता प्राप्त होगी।

चन्द्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में, मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से चन्द्र की शत्रुता है। सामान्यतः चन्द्र षष्ठ स्थान में अच्छे फल नहीं देता है। अतः यह चन्द्र आपको शुभ फल प्रदान नहीं करेगा। यह चन्द्र आपको बाल्यारिष्ट कारक रहेगा। आपका आचरण भी सन्देहास्पद रहेगा। स्वभाव से आप क्रोधी होते हैं, जिसके कारण आपके मित्र भी, आपके शत्रु बन जाते हैं।

आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। सामान्यतः रक्त की खराबी से सम्बन्धित बीमारियाँ, कफ तथा सर्दी



BHARAT

ग्रह विचार

से सम्बन्धित बीमारियाँ आपको होती रहेगी। यदि चन्द्रमा क्षीण या पापाक्रान्त हो तो आप श्वास, खाँसी, दमा आदि रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। भ्रमण में आपकी रुचि रहेगी। भ्रमण के लिये आप विदेश भी जा सकते हैं तथा ऐसी भी सम्भावना है, कि आप विदेश में ही जा बसें।

आपके मित्र कम तथा शत्रु अधिक होते हैं, जो आपको आर्थिक, मानसिक परेशानियाँ पहुँचाने के प्रयत्न करते हैं, किन्तु अन्ततः परास्त होते हैं। ननिहाल का सुख भी, आपको कम ही प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी। आय कम तथा खर्च अधिक होने से कर्ज लेने की नौबत भी आ सकती है। सर्विस में भी आपको परेशानी रहेगी। व्यापार में लाभ कम होने से धन संचय करने में भी बाधा रहती है। सन्तान सुख में आपको कमी रहेगी। माता-पिता का सुख भी कम ही मिलता है।

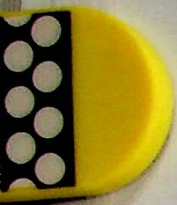
इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, द्वादश स्थान पर कर्क राशि में पड़ती है, जो चन्द्र की स्वराशि है। आपका व्यय भार बढ़ेगा। आकस्मिक हानि से सावधान रहें। आयात-निर्यात के व्यापार से लाभ सम्भावित है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। भूमि, भवन, वाहनादि से सुख प्राप्ति में भी बाधाएं आएंगी।

सिंह लग्न में षष्ठ भाव के चन्द्रमा के व्ययेश होकर शत्रु तथा रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको शत्रु-पक्ष के द्वारा उत्पन्न किये गये झगड़े-झंझट एवं रोग आदि में खर्च करना पड़ सकता है तथा खर्च की चिंता से भी आपका मन चिन्तित एवं दुखी बना रहेगा। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से द्वादश भाव को अपनी स्वराशि कर्क में देखता है, अतः खर्च जुटाने की परेशानी रहते हुए भी आप अधिक खर्च करेंगे तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ उठावेंगे। खर्च के द्वारा ही आपको शत्रु-पक्ष में भी सफलता मिलेगी।

मंगल

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से नवम स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो उसकी स्वराशि है। सामान्यतः नवमस्थ मंगल शुभफल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा नवमेश मंगल नवम स्थान में आपको श्रेष्ठ फल प्रदान करेगा। यह मंगल आपकी कुण्डली में उत्तम राजयोग का निर्माण करता है। आप साहसी, पुरुषार्थी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे। आपका स्वभाव राजसी तथा स्वाभिमानयुक्त रहेगा। समाज में उच्च वर्गों के प्रतिष्ठित लोग आपके मित्र रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपकी आत्मशक्ति मजबूत रहने से सामान्य बीमारियों से आप विचलित भी नहीं होंगे। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। विज्ञान विषय में आपकी विशेष रुचि रहेगी। आपकी मनोवृत्ति उदार तथा धार्मिक होगी। पर्यटन में आपकी रुचि रहेगी तथा आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है। साथ ही यह भी सम्भव है कि आप विदेश में ही प्रवास करें। आपका भाग्योदय 28वें



BHARAT

ग्रह विचार

वर्ष में होगा। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आपको सर्विस करना आर्थिक सम्पन्नता के लिये व्यापार की अपेक्षा अधिक अच्छा रहेगा। आप औद्योगिक क्षेत्रों में तकनीकी पदों के लिये सुयोग्य होंगे। राजकीय क्षेत्रों के स्थान पर निजी क्षेत्र के उद्योग आपके लिए अधिक उत्तम रहेंगे। इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आपका व्यय भार बढ़ेगा। व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव तथा हानि भी प्राप्त हो सकती है। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल से सम है। अपने भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आप आत्मबल से परिपूर्ण तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होंगे। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो मंगल की स्वराशि है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति भी होगी।

सिंह लग्न में नवम भाव के मंगल के त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में अपनी स्वराशि मेष पर स्थित होने से आपको भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यहाँ से मंगल अपनी चौथी नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः आपको खर्च में कमी के कारण कष्ट प्राप्त होगा तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी परेशानी हो सकती है। मंगल के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन का सुख आपके लिए असन्तोषयुक्त रह सकता है, परन्तु आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। मंगल के अपनी आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने के कारण आपको माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होगा।

बुध

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में, तुला राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र की बुध से मित्रता है। सामान्यतः तृतीय स्थान में बुध मिश्रित फल देता है, यहाँ धनेश तथा एकादशेश बुध तृतीय स्थान में आपको मिश्रित फल ही प्रदान करेगा। यह बुध आपको पराक्रमी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार तथा विनोदप्रिय होगा। मित्रों में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा परिजन भी आपका सम्मान करेंगे। आपका स्वास्थ्य कुछ कमजोर रह सकता है। सिरदर्द, वात रोग तथा नसों की बीमारियों से ग्रस्त रह सकते हैं। गुप्त रोगों का भी भय रहेगा।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में साहित्य, वाणिज्य, ललित कलाओं की ओर रुझान रहेगा। आप परिश्रमी होते हैं तथा अध्ययन के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों के निवारण में सफल रहेंगे। संगीत, काव्य, पर्यटन आदि में भी आपकी रुचि रहती है। भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपके व्यवसाय में उनकी सहायता मिल सकती है।

BHARAT**ग्रह विचार**

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, समीक्षक अथवा सम्पादक हो सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है। व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ प्राप्त हो सकता है, व्यवसाय में अनैतिक तरीके अपनाने से दूर रहें अन्यथा आप राजदंड के भागी भी हो सकते हैं। इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। आपमें धार्मिक भावना की कमी रहेगी। आपका भाग्योदय 32वें वर्ष में सम्भव है।

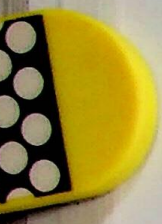
सिंह लग्न में तृतीय भाव के बुध के भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित होने से आपको भाई-बहिन का सुख मिलेगा तथा आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आप अपने पुरुषार्थ के द्वारा धन कमायेंगे तथा विवेक के द्वारा लाभ के मार्ग में उन्नति करेंगे। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य की उन्नति होगी तथा आप धर्म का पालन भी करेंगे। आप धनी, सुखी, हिम्मतवान, धर्मात्मा एवं यशस्वी व्यक्ति होंगे।

गुरु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में मकर राशि में स्थित है, जो गुरु की नीच राशि है। सामान्यतः षष्ठस्थ गुरु अच्छे फल नहीं देता है। यहाँ पंचमेश तथा अष्टमेश गुरु षष्ठ स्थान में आपको अशुभफल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको अपने कार्यों में सफलता कम तथा असफलता अधिक प्रदान करेगा। आपका स्वभाव क्रोधी रहेगा तथा अपने परिजनों से आपका व्यवहार कड़वा रहेगा। आपके व्यवहार से मित्र भी आपके शत्रु बन जायेंगे।

आपका स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है। आपको बाल्यावस्था में सर्प, जल तथा विष भय रह सकता है। युवावस्था में आपको मधुमेह तथा मध्य आयु पश्चात् हृदय रोग एवं कुष्ठ रोग का भय भी रहता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, आयुर्वेद, विधि, कला वर्ग आदि विषयों की ओर रहता है। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, जादू-टोने आदि में भी आपकी रुचि रहती है। शैक्षणिक जीवन में आपको बाधा अथवा कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ सकता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहता है। आपको यदा-कदा आकस्मिक धन-हानि का सामना भी करना पड़ सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप राज्य कर्मचारी, शिक्षक, लेखक, साहित्य सेवी आदि बन सकते हैं। आपको चिकित्सा तथा वकालत में अर्थ प्राप्ति तो हो सकती है, परन्तु यश प्राप्त नहीं होगा। आपको व्यापार की अपेक्षा नौकरी करना लाभप्रद रहता है। शत्रुओं से आपको कष्ट उठाना पड़ेगा किन्तु आप इनको परास्त करने में समर्थ रहते हैं। आपको सन्तान सुख अल्प रहेगा।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपके सम्बन्ध अपने पिता से अच्छे नहीं रहेंगे। राज्य पक्ष की प्रतिकूलता से आपको हानि



BHARAT**ग्रह विचार**

भी उठानी पड़ सकती है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आपका व्ययभार अधिक रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव तथा आयात-निर्यात के व्यापार में आपको हानि उठानी पड़ सकती है। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपको धन प्राप्ति के लिये अधिक परिश्रम करना होगा। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध मतभेदयुक्त रहेंगे।

सिंह लग्न में षष्ठ भाव के गुरु के नीच का होकर शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको शत्रु-पक्ष से चिन्ता रहेगी तथा आपके सन्तान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। आपको पुरातत्त्व की हानि तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी मिल सकती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी थोड़ी सफलता मिलेगी। पिता से भी आपका वैमनस्य रह सकता है। गुरु के अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से आपका व्यय अधिक रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों से अच्छी शक्ति मिलेगी। गुरु के अपनी नवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से आपके धन एवं कुटुम्ब की सामान्य वृद्धि होगी।

शुक्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः षष्ठस्थ शुक्र अशुभ फल प्रदान करता है। यहाँ तृतीयेश तथा दशमेश शुक्र षष्ठ स्थान में आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह शुक्र आपको चतुर तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहता है। आपके व्यवहार से मित्र और परिजन आप से प्रसन्न नहीं रहते हैं। आपके कुछ मित्र गुप्त शत्रुता भी कर सकते हैं। इनसे आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नेत्र रोग, शारीरिक पीड़ा तथा गले के विकारों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान रसायन, चिकित्सा, दर्शन, विधि, संगीत, काव्य आदि विषयों में रहता है। विदेशी साहित्य, गायन-वादन, निर्देशन आदि में आपकी रुचि रहती है। अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष एवं उच्चाधिकारियों की प्रतिकूलता से आपको हानि उठानी पड़ सकती है। आपने भाई-बहनों से भी आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। शत्रुओं के कुचक्रों से आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहता है। आपकी पत्नी साधारण रूप रंग, लम्बे कद तथा शारीरिक रूप से कुछ कृष हो सकती है। आपके साथ उसका प्रेम रहेगा। उसका स्वभाव तेज हो सकता है, परन्तु आपके साथ उसका प्रेम व सामंजस्य बना रहेगा।



BHARAT

ग्रह विचार

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप चिकित्सक, रसायन शास्त्री, औषध निर्माता, संगीतकार, निर्देशक, वकील आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव तथा हानि भी हो सकती है। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्र से शुक्र की शत्रुता है। आपका व्ययभार अधिक होने से आपको कठिनाई हो सकती है। आयात-निर्यात के व्यापार में आपको हानि भी हो सकती है।

सिंह लग्न में षष्ठ भाव के शुक्र के शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आप अत्यन्त चतुर एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। आपका पिता के साथ कुछ मतभेद रह सकता है, परन्तु आपको राज्य के क्षेत्र में परिश्रम के द्वारा उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में द्वादश भाव को देखता है, अतः आपका खर्च अधिक रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से सुख मिलेगा। आप गुप्त-युक्तियों के बल पर सफलता प्राप्त करते रहेंगे।

शनि

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः एकादशस्थ शनि अच्छे फल देता है। यहाँ षष्ठेश तथा सप्तमेश शनि एकादश स्थान में आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह शनि आपको धैर्यवान, शत्रुहन्ता तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा किन्तु कभी-कभी आप हठी तथा दुराग्रही भी बन सकते हैं। आपके मित्र अधिक रहते हैं तथा ये मित्र आपके सहायक भी सिद्ध होते हैं। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा वात-विकार से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, भाषा, विधि दर्शन आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि विषयों में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आपके शत्रुओं की संख्या कम होती है, उनसे आपको कोई प्रत्यक्ष हानि भी नहीं होती किन्तु गुप्त शत्रु आपके व्यवसाय तथा उच्चाधिकारियों से आपके सम्बन्धों में बाधा डाल सकते हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। आपकी पत्नी मध्यम कद, गेहुँए वर्ण तथा साधारण शारीरिक गठन वाली स्त्री होती है। उसका स्वभाव सौम्य रहता है तथा वह सुशिक्षित एवं आज्ञाकारिणी स्त्री होती है। आपके साथ उसका स्नेह व सामंजस्य बना रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, भाषाविद्, वकील, मजिस्ट्रेट, सम्पादक आदि बुद्धिजीवी वर्ग से सम्बन्धित कार्य कर सकते हैं। व्यापार में भी आपको लाभ हाता है। राजनीतिक क्षेत्र में भी आपको सफलता मिल सकती है।



BHARAT

ग्रह विचार

यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से लग्न स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आप लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा स्वभाव मिलनसार रहता है। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से पंचम स्थान में धनु राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहेगा। सन्तान सुख में आपको विलम्ब अथवा बाधा हो सकती है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका आयु पक्ष उत्तम रहेगा। आपको यदा-कदा आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है।

सिंह लग्न में एकादश भाव के शनि के लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपको आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। विशेषकर शत्रु-पक्ष से लाभ प्राप्त होगा। आपका स्त्री का सुख परेशानियों के साथ मिल सकता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी परिश्रम के द्वारा अच्छी सफलता मिलेगी। यहाँ से शनि अपनी तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः आपके शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी आ सकती है तथा आपको बीमारी भी हो सकती है। शनि के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण आपको सन्तान एवं विद्या के पक्ष में कमी रह सकती है। शनि के अपनी दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आपको पुरातत्त्व के लाभ में कमी मिल सकती है तथा जीवन के सम्बन्ध में भी चिन्ताएँ बनी रहेंगी।

राहु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में, धनु राशि में स्थित है, जो राहु की नीच राशि है। सामान्यतः पंचमस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता, यहाँ पंचम स्थान में धनु राशि (नीच राशि) का राहु आपको अशुभ फल देगा। यह राहु आपको मानसिक दृष्टि से अशान्त, हठी, चिन्तातुर तथा अस्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहेगा। व्यवहार कुशलता के अभाव में आपकी स्पष्टवादिता लोगों में आपको कम लोकप्रिय बना देती है। आपके मित्र कम रहेंगे तथा उनसे यथा समय मदद मिलना कठिन रहेगा। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्धों में मधुरता कम रहेगी। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वात रोग, अपच तथा उदर रोगों से कष्ट हो सकता है। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी फलतः हृदय रोग का भय रह सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, विधि, दर्शन, भाषा, पुरातत्त्व आदि विषयों में रहेगा। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। अध्ययन काल में बाधाओं अथवा कभी-कभी असफलता का सामना भी करना पड़ सकता है। सम्भव है कि आपको अपनी रुचि का विषय नहीं मिल पाए। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी किन्तु यात्रा अथवा प्रवास में कष्ट हो सकता है। सन्तान सुख में बाधा अथवा संतान को कष्ट



BHARAT**ग्रह विचार**

हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, इतिहासकार, वकील, भाषाविद, पुरातत्ववेत्ता आदि बन सकते हैं। व्यापार, निजी व्यवसाय में अच्छा लाभ मिलने की सम्भावना कम रहेगी।

इस राहु की पंचम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। धर्म में आपकी आस्था कम रहेगी। आपके भाग्योदय में विलम्ब हो सकता है। यह राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से, एकादश स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो राहु की उच्च राशि है। आपकी आय में वृद्धि होगी। लेखन, प्रकाशन, संशोधन आदि कार्यों से आपको धन तथा यश प्राप्त हो सकता है। इस राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि, लग्न स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आप लम्बे कद के, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। तेज स्वभाव तथा कटु व्यवहार से आपके व्यक्तित्व की विशेषताएँ प्रभावहीन रहेंगी।

सिंह लग्न में पंचम भाव के राहु के नीच का होकर त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आपको सन्तान के पक्ष में कष्ट मिल सकता है तथा विद्या में भी कमी रह सकती है। आप अपने बुद्धि बल से अपनी अयोग्यताओं को छिपायेंगे, परन्तु बोलचाल में शिष्टाचार, विनम्रता एवं सत्य का पालन नहीं कर पायेंगे। आप गुप्त-युक्तियों से अपने स्वार्थ को सिद्ध करने वाले व्यक्ति होंगे, परन्तु कभी-कभी अपने मन में घबरा भी जायेंगे।

केतु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जो केतु की नीच राशि है। सामान्यतः एकादश स्थान में केतु शुभ फलप्रद रहता है, यहाँ एकादश स्थान में मिथुन राशि (नीच राशि) का केतु आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह केतु आपको विद्वान, परिश्रमी, अधिकार सम्पन्न, चिन्ताग्रस्त तथा प्रवासी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा किन्तु आपकी प्रवृत्ति हठी अथवा दुराग्रही हो सकती है। अपनी बात पर दृढ़ रहने से कभी-कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। मित्रों से आपके सम्बन्ध घनिष्ठ नहीं रहते हैं तथा कुछ मित्र आपसे गुप्त शत्रुता भी कर सकते हैं। समाज सेवा में आपका योगदान नाममात्र का ही होता है। कार्यों में आने वाले अवरोधों का आप परिश्रम से निवारण करते हैं। परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे किन्तु मित्रों से आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। गुह्य रोग, उदर विकार तथा वातादि रोगों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, भाषा, कला, विधि, आदि विषयों में रहेगा। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में आपकी रुचि रहती है। आपको पर्यटन का भी शौक रहेगा किन्तु प्रवास से लाभ सम्भव नहीं है। आपकी आर्थिक



BHARAT**ग्रह विचार**

स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, कलाकार, अर्थशास्त्री, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, वकील, न्यायाधीश, बैंक, बीमा कर्मचारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ हो सकता है। राजनीति में कठोर परिश्रम से कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है। शनैः शनैः अर्थसंचय में आपको सफलता मिलेगी।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से तृतीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होते हैं। भाई-बहिनों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि पंचम् स्थान में धनु राशि पर पड़ती है, जो केतु की उच्च राशि है। आप उच्च शिक्षित तथा बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं। सन्तान सुख में कमी अथवा सन्तान को कष्ट हो सकता है। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से सप्तम् स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद की, गेहुँए अथवा कुछ श्याम वर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाली महिला होगी उसका स्वभाव तेज रहेगा। यदा-कदा वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं किन्तु अपनी व्यवहारकुशलता से आप सामंजस्य बनाये रखने में सफल रहेंगे।

सिंह लग्न में एकादश भाव के केतु के लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपको आय के क्षेत्र में घोर कठिनाइयों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। धनोपार्जन में कमी के कारण आपको दुःख का अनुभव होगा तथा कभी-कभी धन की कमी से घोर संकटों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु अपनी गुप्त-युक्ति, धैर्य, परिश्रम एवं साहस के बल पर आप उन सब कठिनाइयों को पार करेंगे तथा लाभ-उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नहीं करेंगे।



BHARAT**रत्न विचार**

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— माणिक्य (रुबी) उपरत्न:— सौगन्धिक(स्पाईनल रुबी), मैसूरी(स्टार रुबी)

माणक तीन रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में रविवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद सूर्य के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय पूर्व धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, आयु, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्य रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगेट)

मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या—विवेक तथा व्यापार में वृद्धि एवं नौकरी में उन्नति कारक रहेगा।

कारक रत्न:— पुखराज (येलो सफायर) उपरत्न:— सुनैला(सिटरीन), पीला हकीक(येलो एगेट)

पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, व्यापार व्यवसाय में प्रगति तथा रोग एवं शत्रु नाशक रहेगा।



DEEPA

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 5 - 06/09/1979	विक्रमी संवत्	: 2036
जन्म दिन	: बुधवार - बृहस्पतिवार	शक संवत्	: 1901
जन्म समय	: 05:41:07 घण्टे	ऋतु	: शरद
इष्टकाल	: 59:22:46 घटी	मास	: भाद्रपद
जन्म स्थान	: JABALPUR	पक्ष	: शुक्ल
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: चतुर्दशी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 20:14:54 घण्टे
अक्षांश	: 23:10:00 उत्तर		: 35:47:14 घटी
रेखांश	: 79:57:00 पूर्व	जन्म तिथि	: पूर्णिमा
स्थानिक समय संस्कार	: -00:10:12 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: धनिष्ठा
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 19:55:21 घण्टे
स्थानिक समय	: 05:30:55 घण्टे		: 34:58:22 घटी
साम्पातिक काल	: 04:28:55 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: शतभिषा
वेलान्तर	: -00:01:05 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: अतिगण्ड
सूर्योदय	: 05:56:01 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 11:41:53 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:22:14 घण्टे		: 14:24:41 घटी
दिनमान	: 12:26:13 घण्टे	जन्म योग	: सुकर्मा
रात्रिमान	: 11:33:47 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: गर
सूर्य की स्थिति (अयन)	: दक्षिणायन	करण समाप्ति काल	: 10:05:47 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 10:24:26 घण्टे
अयनांश	: 23:34:18	जन्म करण	: विष्टि



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



DEEPA

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

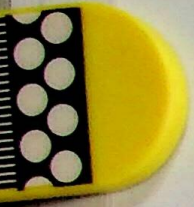
घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	चैत्र	लग्न-लग्नाधिपति	:	सिंह-सूर्य
दिनांक	:	3,8,13	राशि-राशि स्वामी	:	कुम्भ-शनि
दिन	:	बृहस्पतिवार	नक्षत्र-चरण	:	शतभिषा-2
नक्षत्र	:	आर्द्रा	नक्षत्र स्वामी	:	राहु
योग	:	गण्ड	योग	:	सुकर्मा
करण	:	किंस्तुघ्न	करण	:	विष्टि
प्रहर	:	3	गण	:	राक्षस
वर्ग	:	श्वान	योनि	:	अश्व
लग्न	:	मिथुन	नाडि	:	अद्या
सूर्य	:	वृष	वर्ण	:	शूद्र
चन्द्र	:	मिथुन	वश्य	:	मानव
मंगल	:	मिथुन	वर्ग	:	मेष
बुध	:	वृष	युंजा	:	पर
गुरु	:	कर्क	हंसक (तत्व)	:	वायु
शुक्र	:	सिंह	जन्म नामाक्षर	:	सा
शनि	:	मेष	पाया-राशी	:	स्वर्ण
राहु	:	कन्या	पाया-नक्षत्र	:	ताम्र
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	कन्या	भयात	:	24:27:43 घटी
सूर्य के अंश	:	सिंह 19:15:14	भभोग	:	52:45:12 घटी
लग्न के अंश	:	सिंह 15:34:36	भोग्य दशा काल	:	राहु 9 व 7 म 25 दिन

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्व जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं। अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल



DEEPA

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

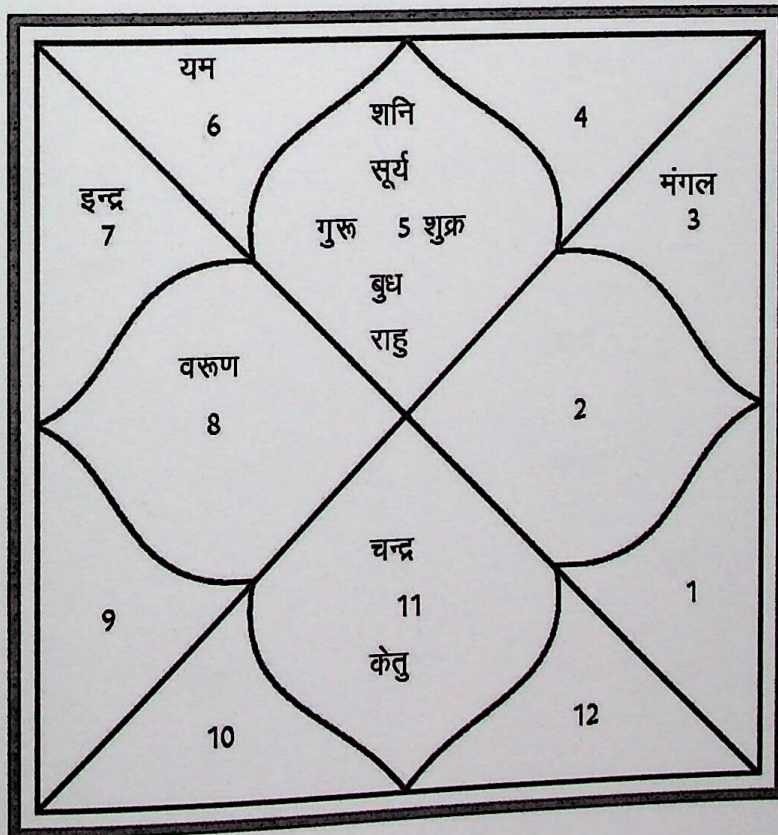
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

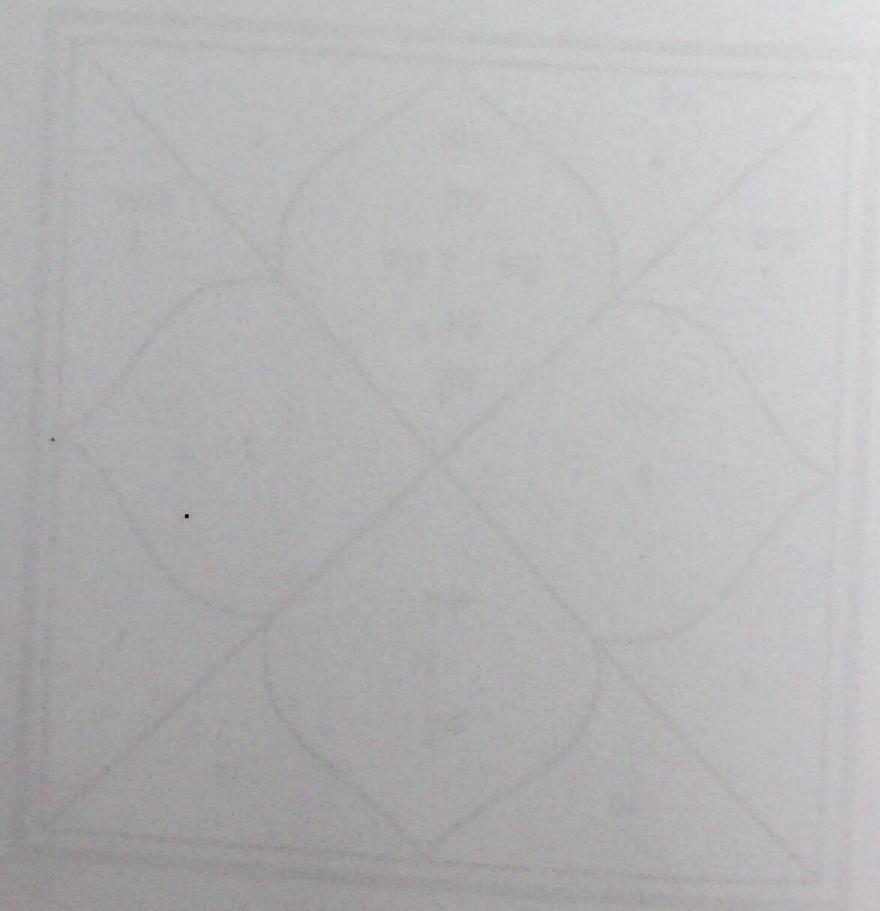
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	सिंह	15:34:36	—	पू.फाल्गुनी	1	शुक्र	—	—	—
सूर्य	सिंह	19:15:14	00:58:10	पू.फाल्गुनी	2	शुक्र	मूल त्रिकोण	—	मार्गी
चन्द्र	कुम्भ	12:50:58	15:12:38	शतभिषा	2	राहु	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	मिथुन	24:50:16	00:37:40	पुनर्वसु	2	गुरु	शत्रु स्थान	—	मार्गी
बुध	सिंह	12:26:14	01:56:29	मघा	4	केतु	मित्र स्थान	अस्त	मार्गी
गुरु	सिंह	01:36:01	00:12:49	मघा	1	केतु	मित्र स्थान	—	मार्गी
शुक्र	सिंह	22:23:23	01:14:29	पू.फाल्गुनी	3	शुक्र	शत्रु स्थान	अस्त	मार्गी
शनि	सिंह	23:06:31	00:07:31	पू.फाल्गुनी	3	शुक्र	शत्रु स्थान	अस्त	मार्गी
राहु	सिंह	14:54:46	00:00:01	पू.फाल्गुनी	1	शुक्र	शत्रु स्थान	अस्त	मार्गी
केतु	कुम्भ	14:54:46	00:00:01	शतभिषा	3	राहु	शत्रु स्थान	—	मार्गी
इन्द्र	तुला	24:05:01	00:02:04	विशाखा	2	गुरु	—	—	मार्गी
वरुण	वृश्चिक	24:09:47	00:00:13	ज्येष्ठा	3	बुध	—	—	मार्गी
यम	कन्या	24:09:55	00:02:02	चित्रा	1	मंगल	—	—	मार्गी
दशम भाव	वृष	15:21:53	—	रोहिणी	2	चन्द्र	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:34:18

लग्न कुण्डली

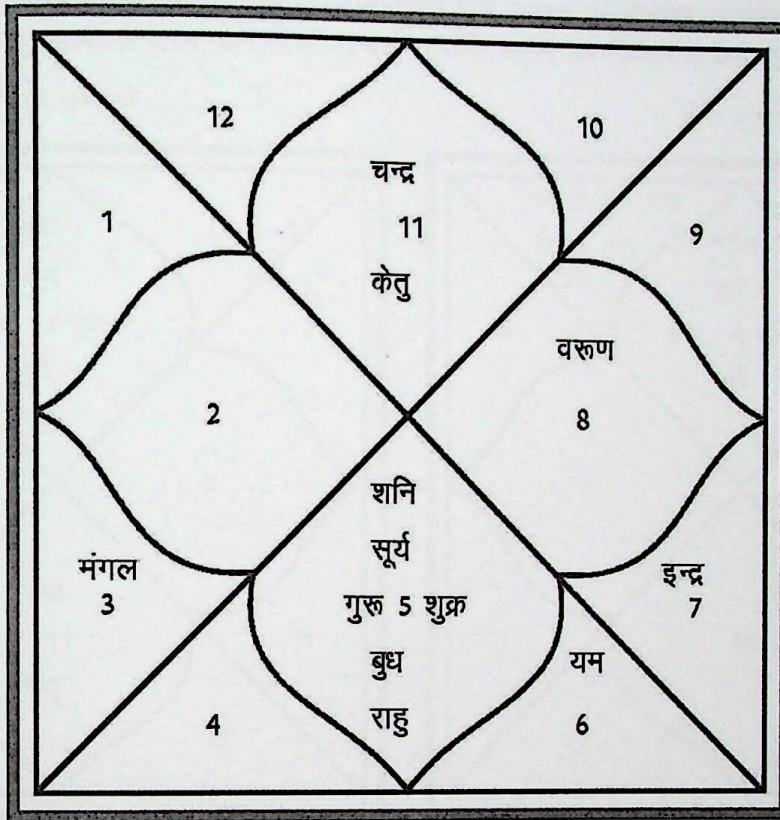




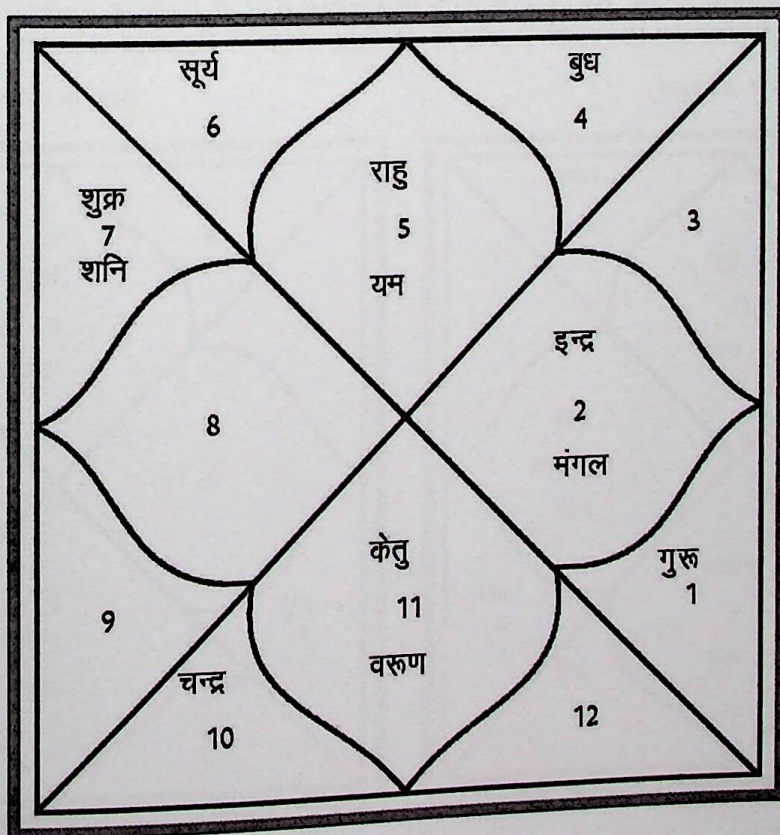
ॐ श्री गणेशाय नमः

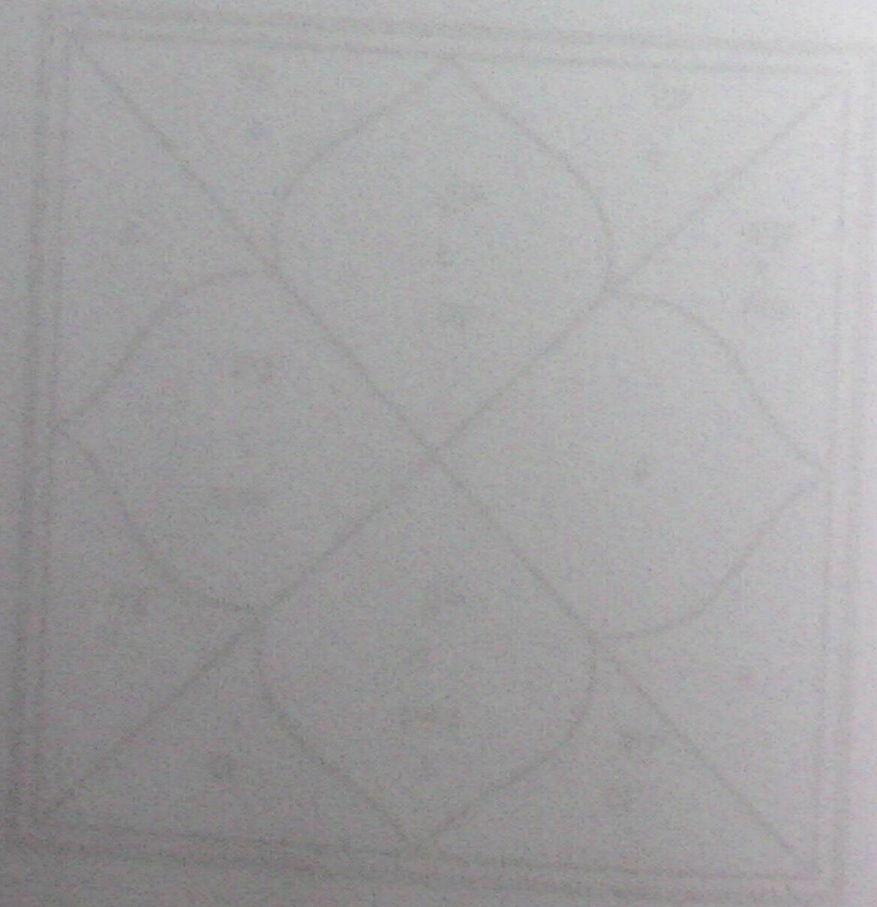
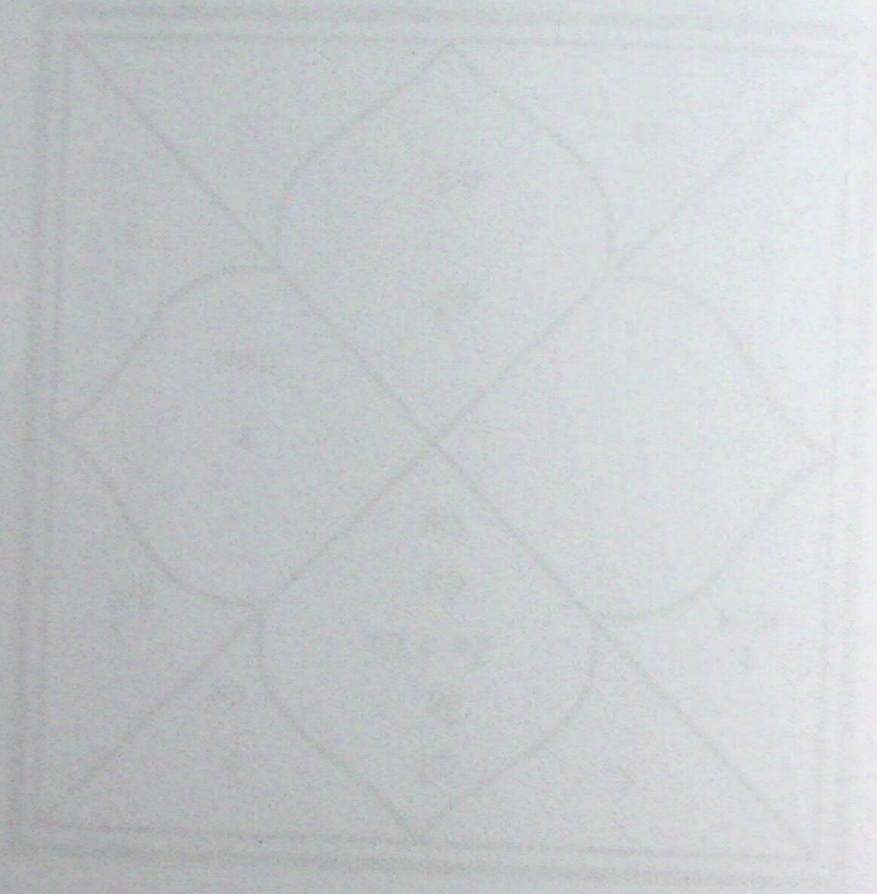
DEEPA

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली





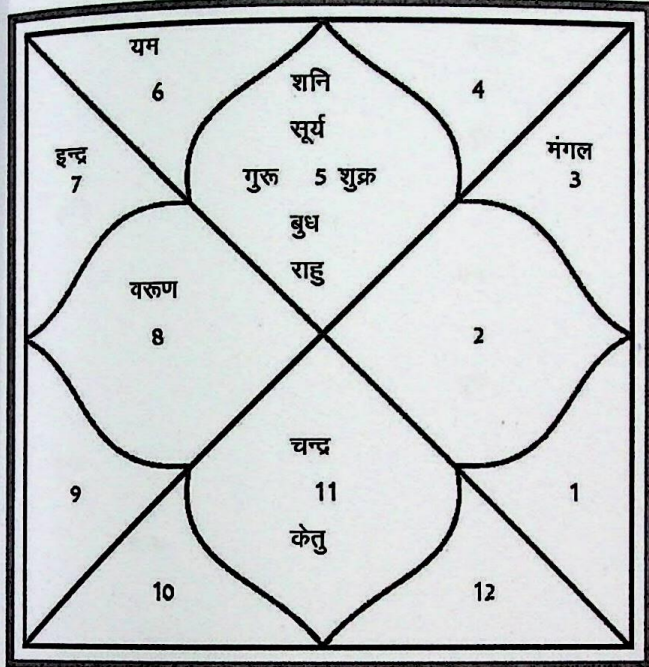
DEEPA

॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥

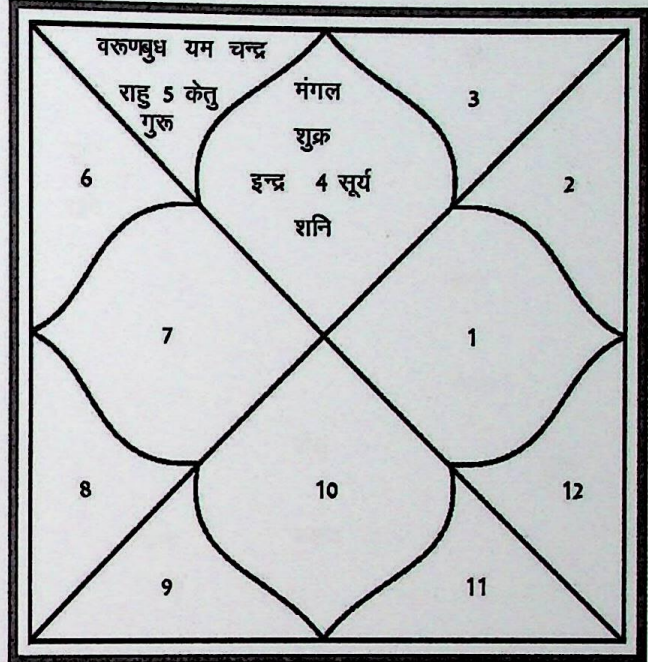
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



होरा कुण्डली



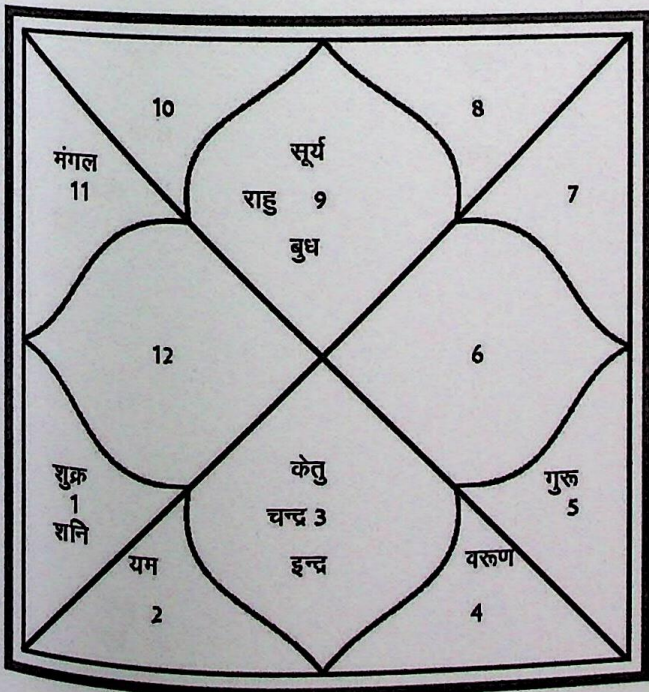
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥

॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

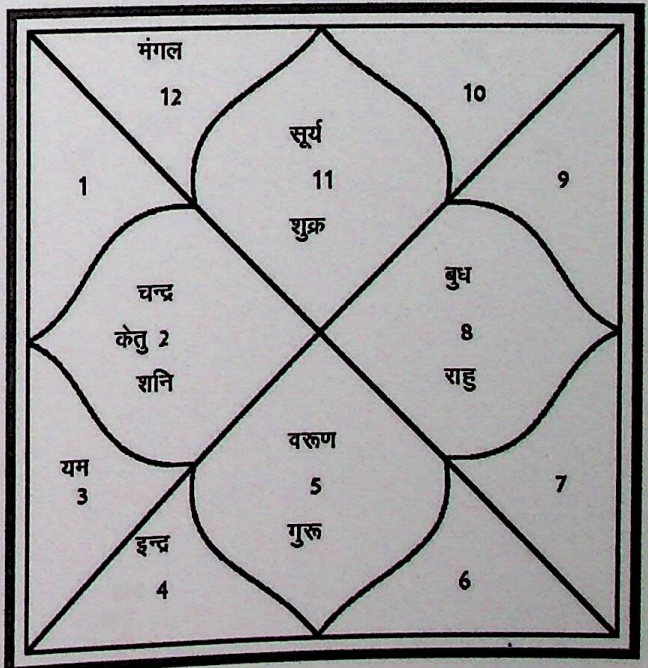
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

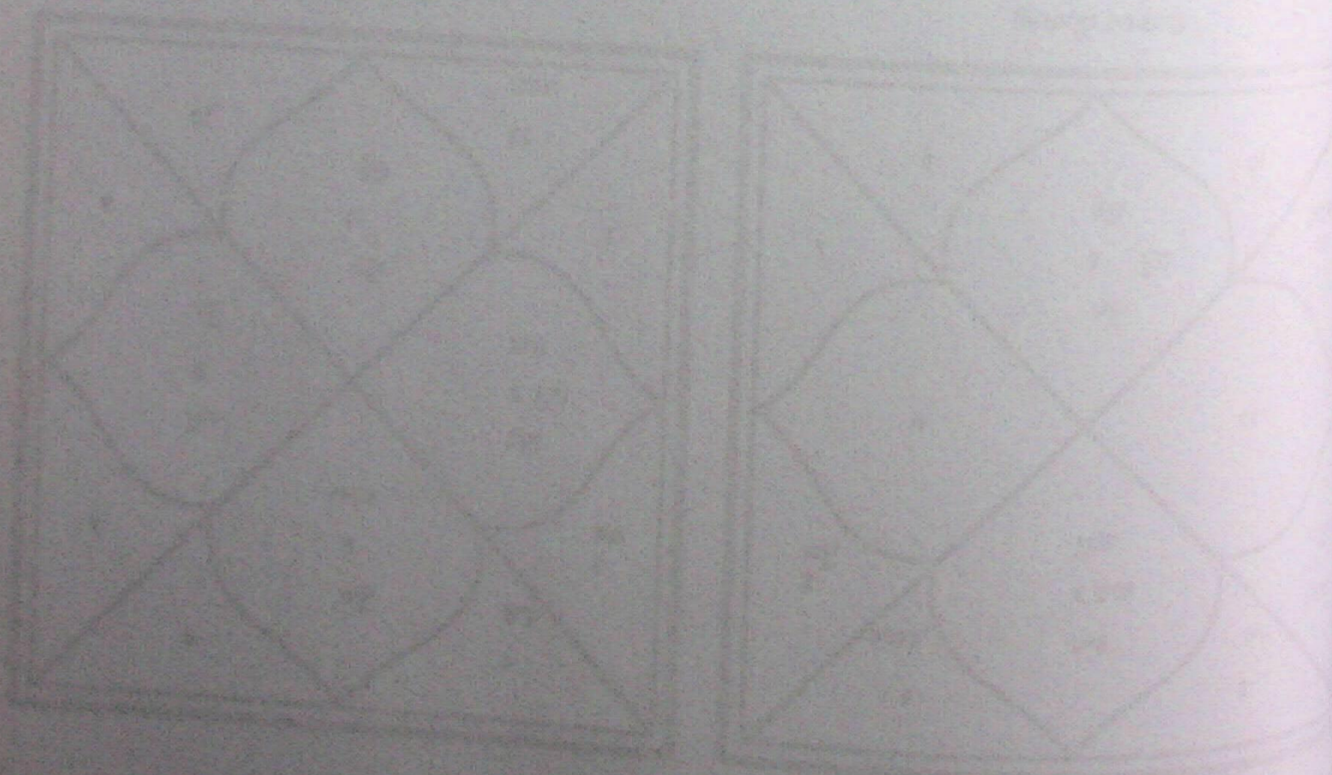
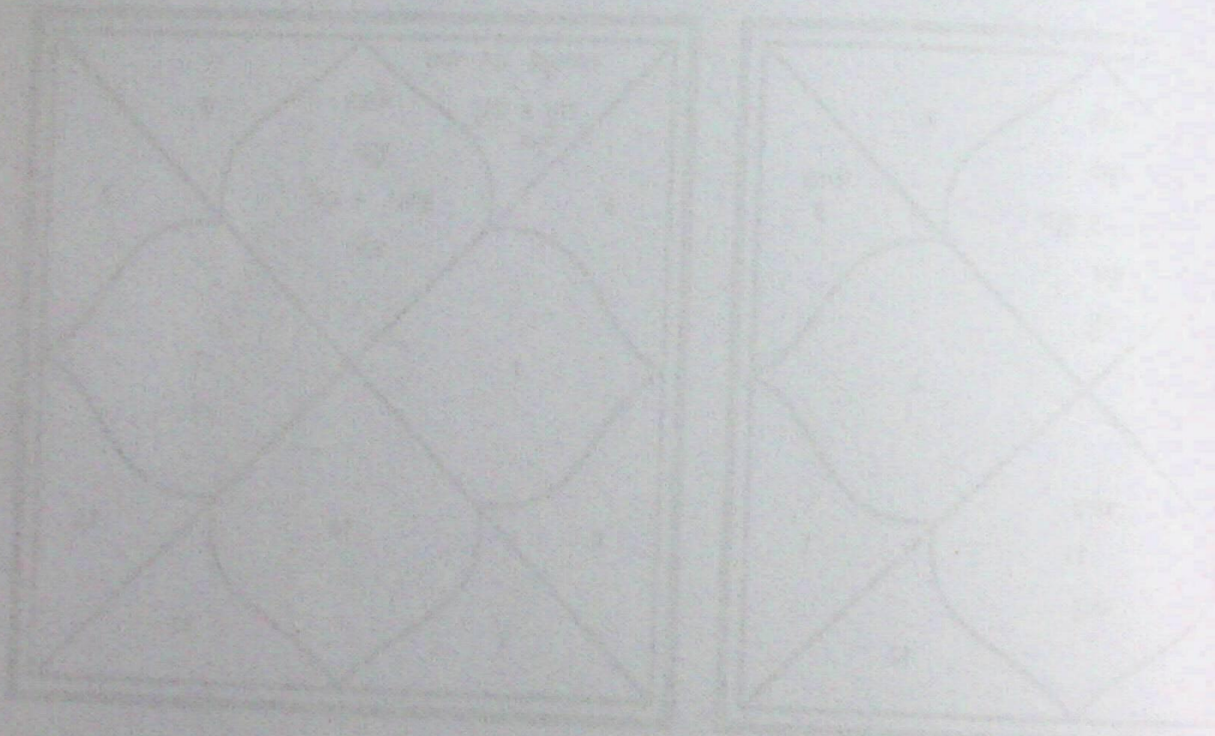
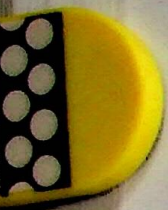
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली





ॐ श्री गणेशाय नमः

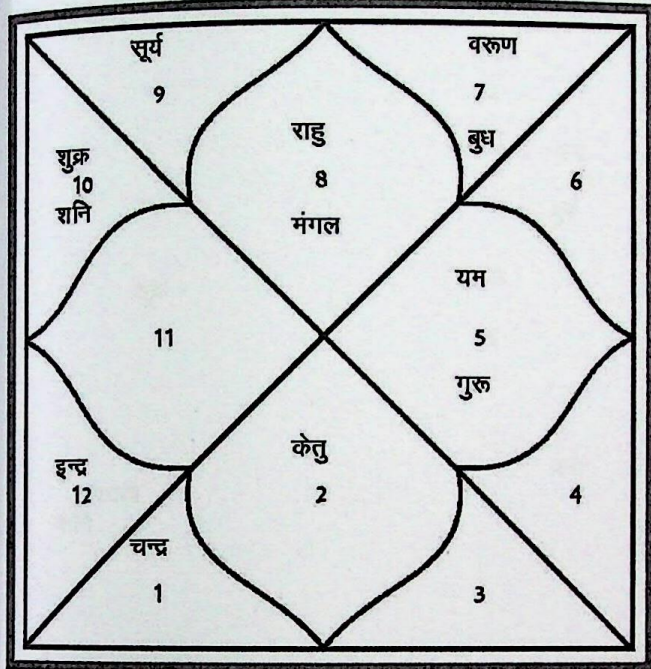
DEEPA

॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥

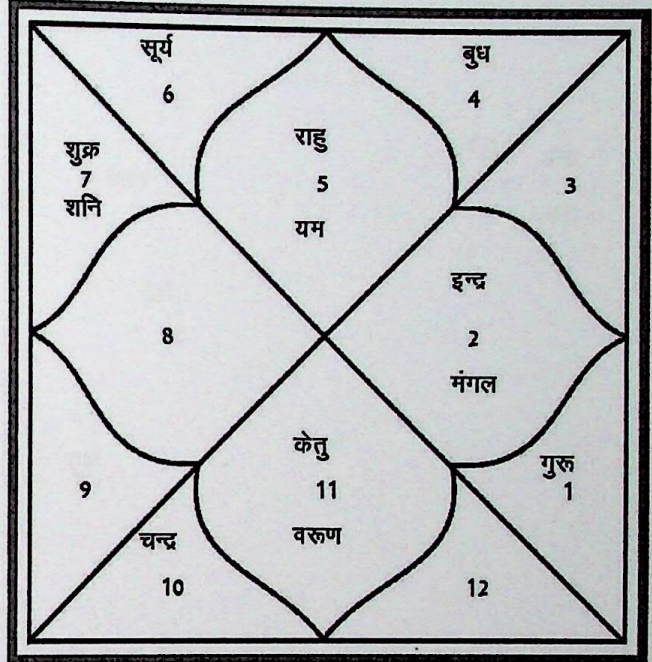
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



नवमांश कुण्डली

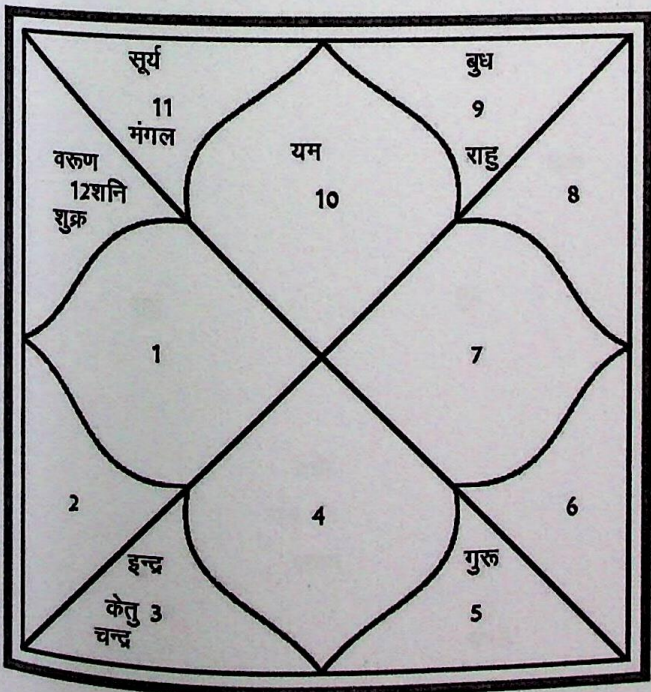


॥ दशमांशे महत्फलम् ॥

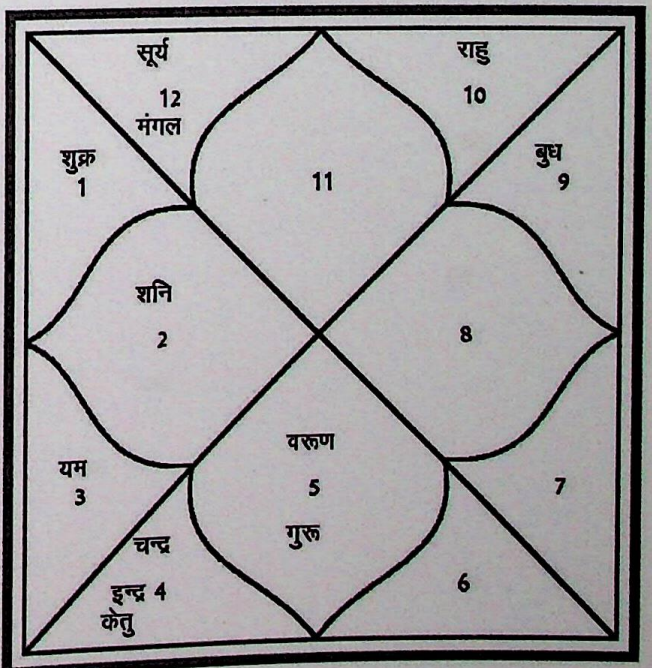
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

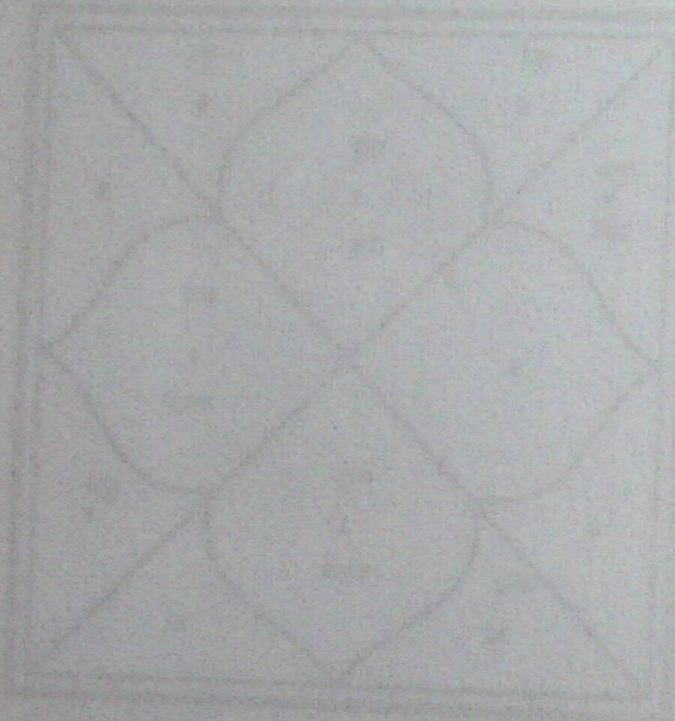
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली





ॐ श्री गणेशाय नमः

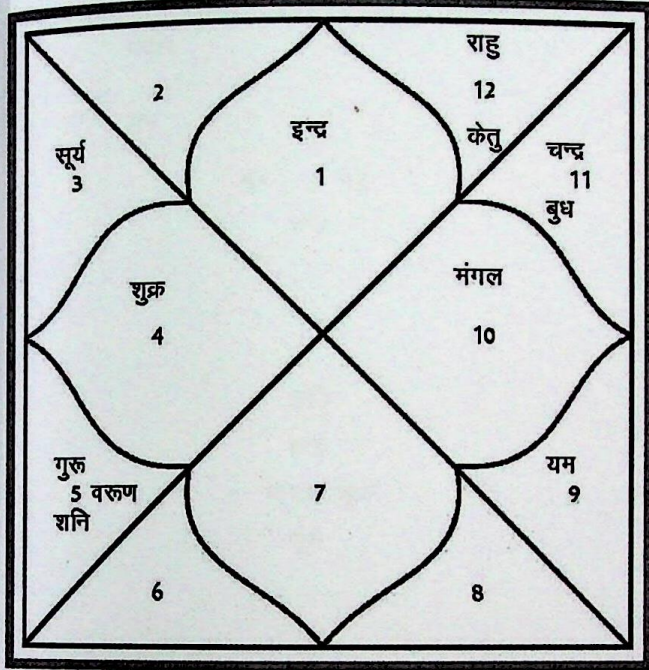
DEEPA

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

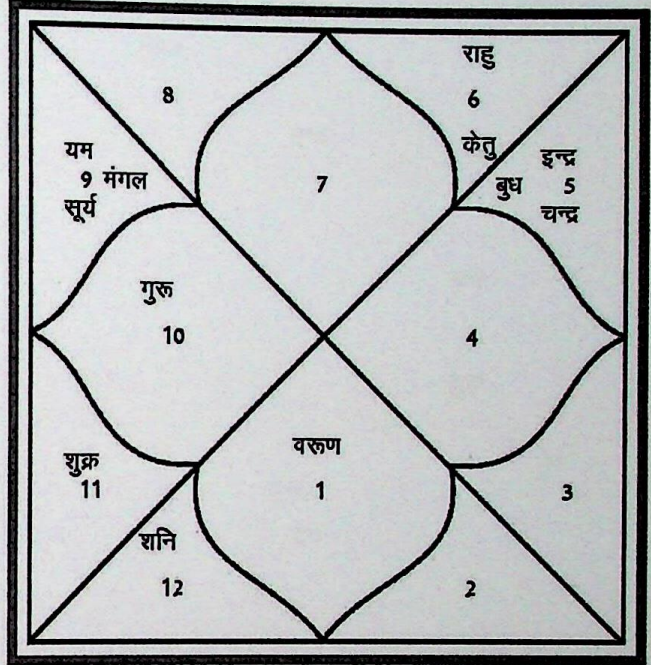
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



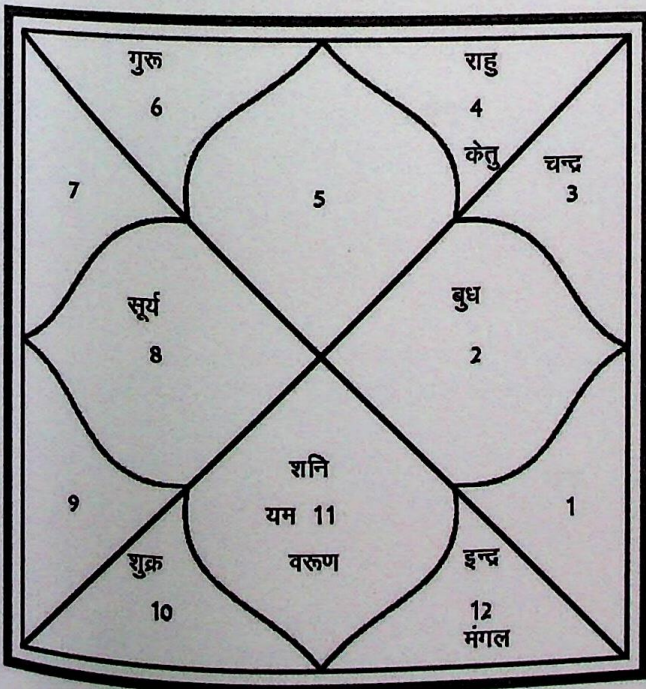
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

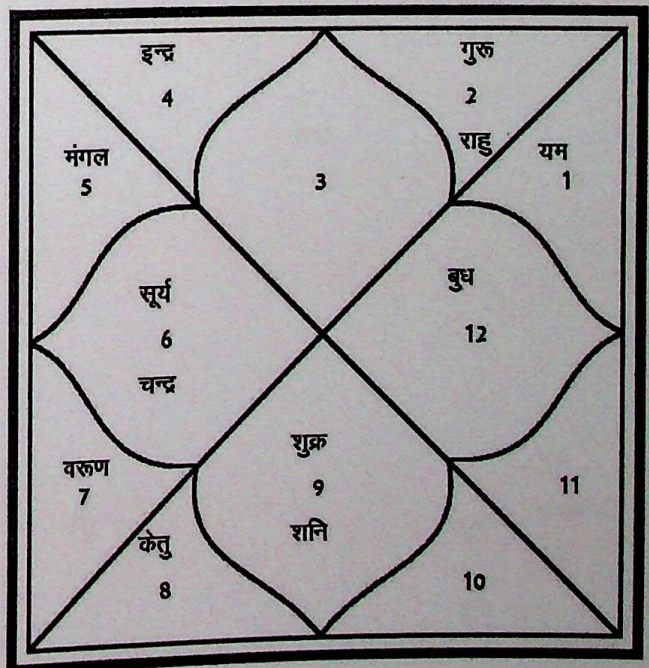
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

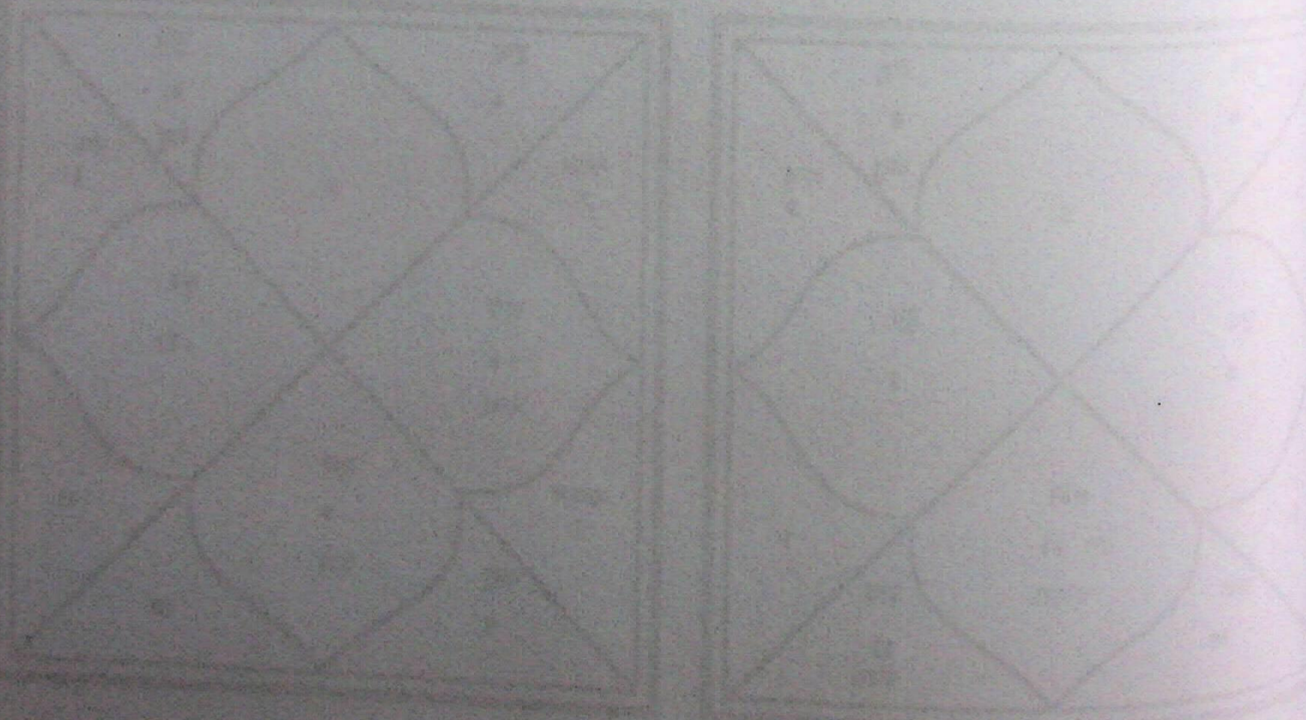
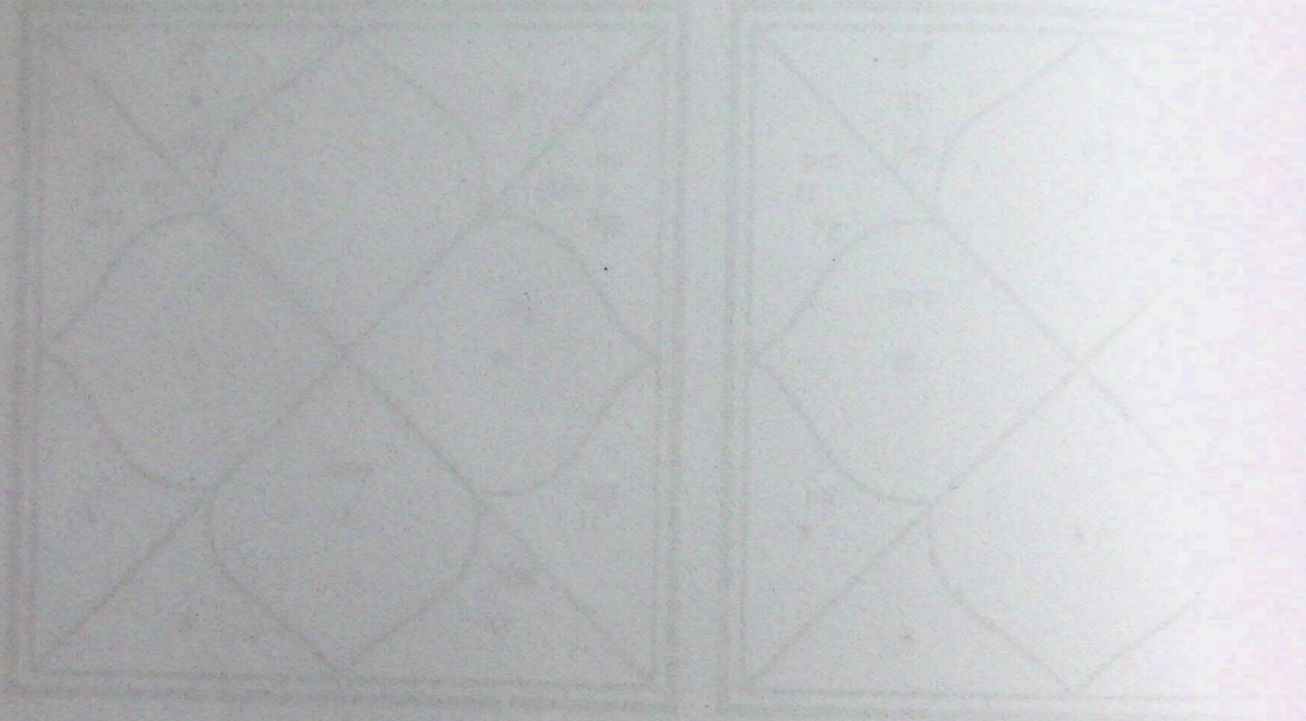
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





DEEPA

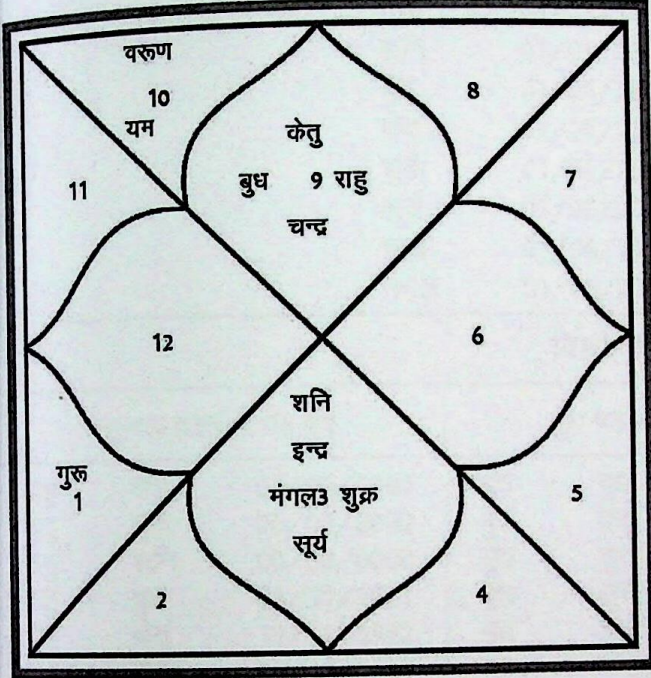
॥ त्रिंशदंशके अरिष्ट फलम् ॥

॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

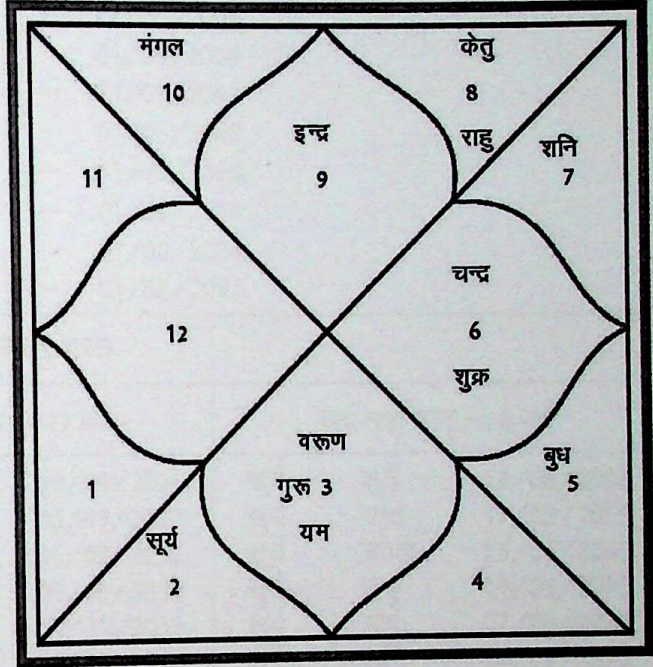
त्रिंशदंश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिंशदंश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

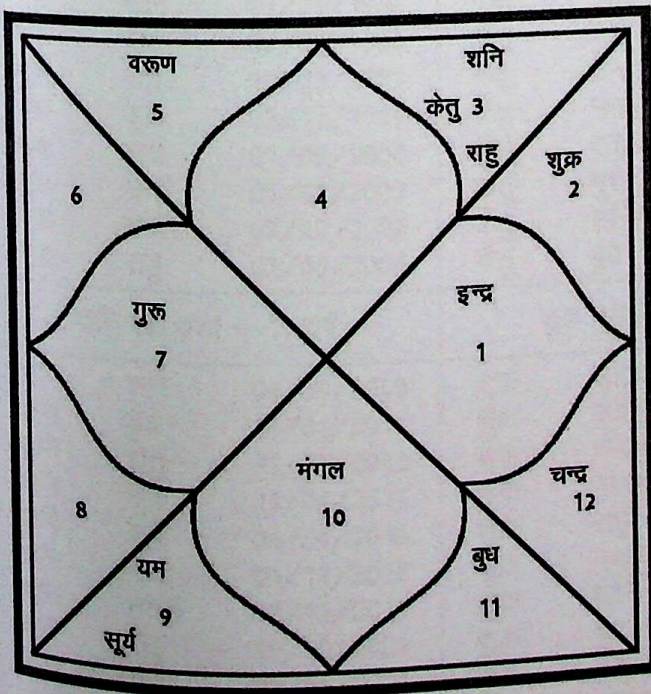


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

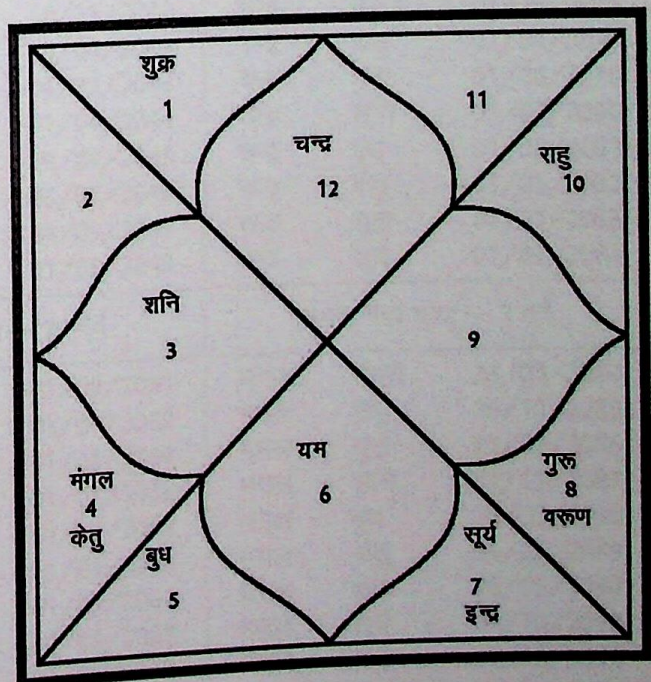
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

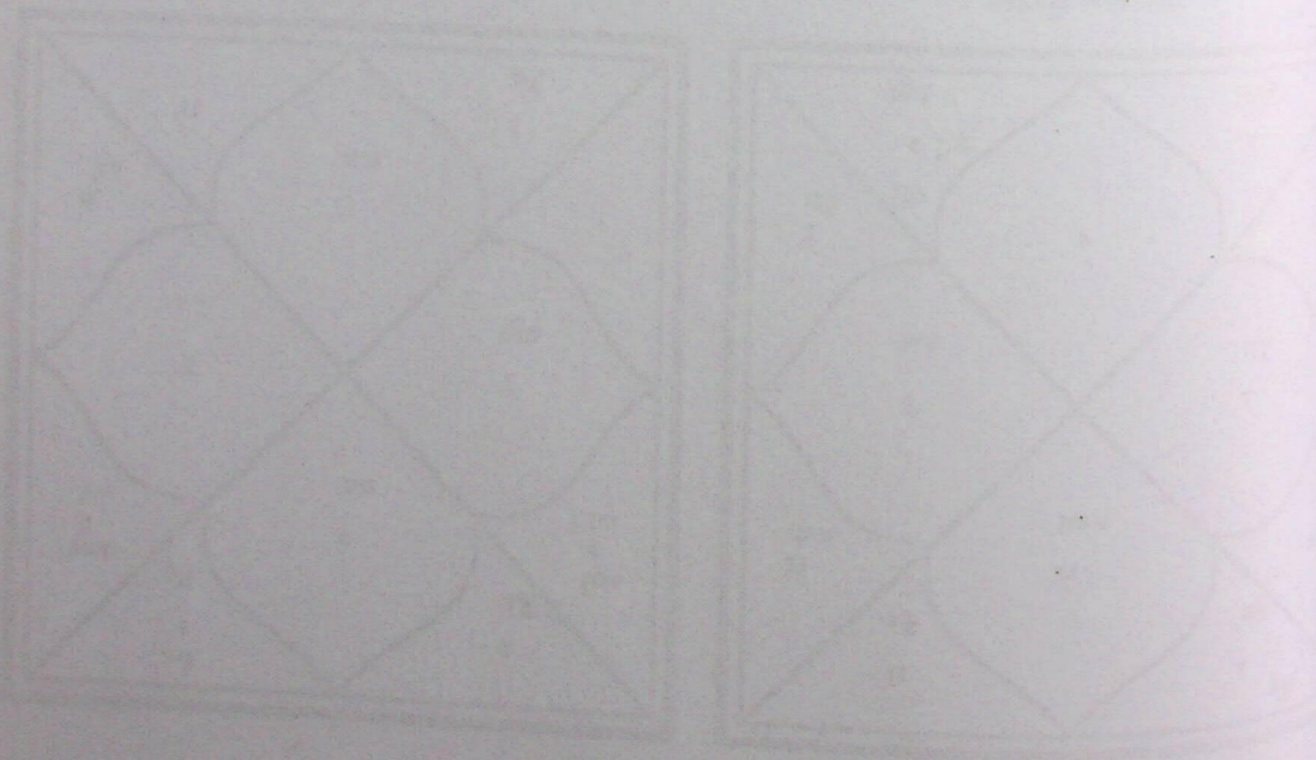
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात् सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





DEEPA

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - राहु 9 वर्ष 7 मास 25 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

राहु	06/09/1979	-	01/05/1989
गुरु	01/05/1989	-	01/05/2005
शनि	01/05/2005	-	01/05/2024
बुध	01/05/2024	-	01/05/2041
केतु	01/05/2041	-	01/05/2048
शुक्र	01/05/2048	-	01/05/2068
सूर्य	01/05/2068	-	01/05/2074
चन्द्र	01/05/2074	-	01/05/2084
मंगल	01/05/2084	-	01/05/2091

विंशोत्तरी अन्तर दशा

राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष			सूर्य महा दशा - 6 वर्ष		
राहु	राहु	00/00/0000	बुध	बुध	28/09/2026	सूर्य	सूर्य	19/08/2068
राहु	गुरु	00/00/0000	बुध	केतु	25/09/2027	सूर्य	चन्द्र	17/02/2069
राहु	शनि	00/00/0000	बुध	शुक्र	26/07/2030	सूर्य	मंगल	25/06/2069
राहु	बुध	01/11/1981	बुध	सूर्य	01/06/2031	सूर्य	राहु	19/05/2070
राहु	केतु	19/11/1982	बुध	चन्द्र	01/11/2032	सूर्य	गुरु	07/03/2071
राहु	शुक्र	19/11/1985	बुध	मंगल	29/10/2033	सूर्य	शनि	18/02/2072
राहु	सूर्य	13/10/1986	बुध	राहु	16/05/2036	सूर्य	बुध	26/12/2072
राहु	चन्द्र	13/04/1988	बुध	गुरु	22/08/2038	सूर्य	केतु	01/05/2073
राहु	मंगल	01/05/1989	बुध	शनि	01/05/2041	सूर्य	शुक्र	01/05/2074
गुरु महा दशा - 16 वर्ष			केतु महा दशा - 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष		
गुरु	गुरु	19/06/1991	केतु	केतु	28/09/2041	चन्द्र	चन्द्र	01/03/2075
गुरु	शनि	01/01/1994	केतु	शुक्र	28/11/2042	चन्द्र	मंगल	01/10/2075
गुरु	बुध	07/04/1996	केतु	सूर्य	04/04/2043	चन्द्र	राहु	01/04/2077
गुरु	केतु	13/03/1997	केतु	चन्द्र	04/11/2043	चन्द्र	गुरु	01/08/2078
गुरु	शुक्र	13/11/1999	केतु	मंगल	01/04/2044	चन्द्र	शनि	01/03/2080
गुरु	सूर्य	01/09/2000	केतु	राहु	19/04/2045	चन्द्र	बुध	01/08/2081
गुरु	चन्द्र	01/01/2002	केतु	गुरु	26/03/2046	चन्द्र	केतु	01/03/2082
गुरु	मंगल	07/12/2002	केतु	शनि	04/05/2047	चन्द्र	शुक्र	01/11/2083
गुरु	राहु	01/05/2005	केतु	बुध	01/05/2048	चन्द्र	सूर्य	01/05/2084
शनि महा दशा - 19 वर्ष			शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष		
शनि	शनि	04/05/2008	शुक्र	शुक्र	01/09/2051	मंगल	मंगल	28/09/2084
शनि	बुध	13/01/2011	शुक्र	सूर्य	01/09/2052	मंगल	राहु	16/10/2085
शनि	केतु	21/02/2012	शुक्र	चन्द्र	01/05/2054	मंगल	गुरु	22/09/2086
शनि	शुक्र	22/04/2015	शुक्र	मंगल	01/07/2055	मंगल	शनि	01/11/2087
शनि	सूर्य	04/04/2016	शुक्र	राहु	01/07/2058	मंगल	बुध	29/10/2088
शनि	चन्द्र	04/11/2017	शुक्र	गुरु	01/03/2061	मंगल	केतु	26/03/2089
शनि	मंगल	13/12/2018	शुक्र	शनि	01/05/2064	मंगल	शुक्र	26/05/2090
शनि	राहु	19/10/2021	शुक्र	बुध	01/03/2067	मंगल	सूर्य	01/10/2090
शनि	गुरु	01/05/2024	शुक्र	केतु	01/05/2068	मंगल	चन्द्र	01/05/2091



DEEPA**लग्न विचार**

सिंह राशि, राशि चक्र की पाँचवी राशि है। इसका स्वामी सूर्य है जो सब ग्रहों का राजा माना जाता है। इस राशि में मघा, पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण आता है। इस लग्न में जन्म होने से आप कद में लम्बी, सुन्दर, चौड़े ललाट तथा स्वस्थ शरीर वाली स्त्री होंगी। आपका व्यक्तित्व सूर्य से प्रभावित होने के कारण आप राजसी, अनुशासन प्रिय तथा साहस युक्त स्त्री होंगी। आप उदार स्त्री होंगी तथा दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर रहेंगी। स्वभाव की आप उग्र होंगी, किन्तु आपका क्रोध अल्पकालिक ही रहेगा। कभी-कभी तो आपको यह बात भी विस्मृत नहीं रहेगी कि कुछ समय पूर्व आप किस बात पर क्रोधित हुई थी। आत्मप्रशंसा आपका स्वभाव रहेगा। आप विरोध सहन नहीं करेंगी। मनोरंजन के साधन यथा नाच, गाने, नाटक, चलचित्र आदि में आप रुचि रखेंगी, किन्तु यह रुचि सीमित ही होगी अर्थात् अपने कार्य के अतिरिक्त जो समय शेष बचेगा उसी समय में आप इन गतिविधियों में सम्मिलित होंगी।

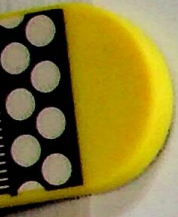
आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी के बीच में वैचारिक मतभेद से अनबन बनी रहेगी। आपका सन्तान सुख भी सामान्य रहेगा। आपकी रुचि प्रशासनिक सेवाओं में रहेगी। उच्च प्रशासनिक सेवाओं, प्रबन्धक, संयोजक, अधिकारी वर्ग, पुलिस सेवाओं आदि में भी आप सफलता से कार्य कर सकेंगी। राजनीतिक क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगी। आपकी विशेषता रहेगी कि आप अपने उच्चाधिकारियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों सभी की विश्वासपात्र होंगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहेगा, परन्तु मध्य आयु पश्चात् हृदय रोग से कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, रक्तचाप, सूजन, वात, ज्वर तथा आँखों की बीमारियों से भी आपको पीड़ित होना पड़ेगा।

आपका जन्म सिंह लग्न में 13 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला के बीच में होने से आप अपने जीवन में साहसी तथा अनुशासनप्रिय रहेंगी। आप उदार, सहृदयी किन्तु कुछ स्वार्थी भी होंगी। आप कद में लम्बी, गौरवर्ण, चौड़े ललाट वाली तथा स्वस्थ स्त्री होंगी। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा आत्मविश्वास अपूर्व होगा। आप स्वभाव से गर्म होंगी, किन्तु शीघ्र ही शान्त भी हो जायेंगी। आपकी निर्णय शक्ति प्रबल होने से आप अपने कार्यों में सफल रहेंगी तथा लोगों में प्रशंसा प्राप्त करेंगी। आप अपने निर्देशन में कार्य कराना पसन्द करेंगी, किसी अन्य के निर्देशन में कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। स्वतन्त्र रहकर आप अधिक अच्छा कार्य कर सकेंगी। आपकी रुचि खेलों तथा अन्य मनोरंजन के साधनों की ओर रहेगी, किन्तु आप अपनी रुचि को कार्यों पर हावी नहीं होने देंगी। आपका सम्बन्ध भावनाओं से कम तथा वास्तविकता पर अधिक होगा। ईश्वर पर आपका विश्वास होगा, किन्तु आप अपने पर धर्म तथा रूढ़ियों को हावी नहीं होने देंगी। आपके मन में कठोरता के साथ कुछ उदारता भी रहेगी। आप किसी भी संकटग्रस्त की मदद के



DEEPA**लग्न विचार**

लिये शीघ्र ही तत्पर हो जायेंगी। आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में आपसी सामंजस्य के स्थान पर मतभेद रहेगा। आपका सन्तान सुख भी साधारण ही रहेगा। आप व्यापारिक क्षेत्रों की अपेक्षा सर्विस में जाना अधिक पसन्द करेंगी। सर्विस के क्षेत्र में भी आप उच्च स्थानों जैसे प्रबन्धकीय, प्रशासकीय, प्रमुख आदि पदों पर अधिक सफलतापूर्वक कार्य करेंगी। आप सेना, पुलिस, गुप्तचर विभाग, केन्द्रीय व राज्य सरकार तथा कम्पनियों के उच्चपदों आदि पर कार्य करेंगी। आप प्रायः स्वस्थ रहेंगी, किन्तु यदा-कदा ज्वर, चोट, सिरदर्द आदि से पीड़ित हो सकती हैं। वृद्धावस्था में हृदय रोग से भी आपको कष्ट हो सकता है।



DEEPA**ग्रह विचार****सूर्य**

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ। सूर्य आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान पर है जो स्वयं सूर्य की स्वराशि ही है। यह सूर्य आपके लिये उत्तम फलप्रद रहेगा। आप ऊँचे कद, गौरवर्ण तथा सबल शरीर वाली होंगी। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा जिससे आपके सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति प्रभावित होगा। आप स्वाभिमानी होंगी तथा आपमें आत्मविश्वास प्रबल होगा। स्वभाव से आप जिद्दी होंगी तथा जिस काम के लिये निश्चय कर लेंगी उसे पूरा करके ही छोड़ेंगी। आपके पराक्रम के आगे शत्रु भी घबरायेंगे।

आप महत्वाकांक्षी महिला होंगी तथा कठोर परिश्रम द्वारा अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी करेंगी। आप शीघ्र ही क्रोधित तथा शीघ्र ही शान्त हो जायेंगी। लग्न का सूर्य सन्तान सुख में कमी करता है। आपको जीवन में यश प्राप्त होगा तथा आप उच्च पद भी प्राप्त कर सकती हैं। आपकी बुद्धि तेज होगी। विज्ञान के अतिरिक्त आध्यात्मिक विषयों में भी रुचि रहेगी है। आप पर्यटन की भी शौकीन होंगी। आपको नेत्र विकारों से कष्ट रहेगा, आँखों में रतौंधी रोग भी हो सकता है। बचपन में भी आपको व्याधियाँ परेशान करेंगी।

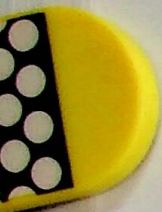
यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान को देखता है। वहाँ कुम्भ राशि है जिसका स्वामी शनि सूर्य का शत्रु है अतः आपके सप्तम स्थान सम्बन्धी फलों में कुछ अशुभता भी हो सकती है। इसके प्रभाव से आपके पती भी स्वाभिमानी, स्वभाव के तेज तथा दुराग्रही हो सकते हैं। आपमें तथा आपके पती के स्वभाव में मेल नहीं होगा। साझेदारी का व्यापार भी आपको लाभप्रद नहीं रहेगा। आपके पिता से सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष सामान्यतः अनुकूल ही रहेगा।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के सूर्य के केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपनी स्वराशि सिंह में स्थित होने से आपकी शारीरिक शक्ति, आत्मबल, स्वाभिमान, सौन्दर्य, हिम्मत तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। आप लम्बे कद के व्यक्ति होंगे। यहाँ से सूर्य सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको स्त्री-पक्ष से असन्तोष रह सकता है तथा दैनिक खर्च एवं व्यवसाय के मार्ग में भी आपको कुछ कठिनाइयाँ आती रहेंगी।

चन्द्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में, कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से चन्द्र की शत्रुता है। सामान्यतः सप्तमस्थ चन्द्र मिश्रित फल प्रदान करता है, किन्तु द्वादशेश चन्द्र, सप्तम स्थान में, अच्छे फल नहीं देता। अतः यह चन्द्र, आपको मिश्रित फल ही प्रदान करेगा।

यह चन्द्र आपको अभिमानी महिला बनाता है। क्रोधी स्वभाव की होने के कारण मित्रों और परिजनो



DEEPA**ग्रह विचार**

का स्नेह आपको कम मिलता है। आपमें ईर्ष्या तथा छल-कपट की भावना भी रहती है, जिसके कारण आपकी प्रतिष्ठा पर भी आघात लग सकता है। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। क्षीण या पापाक्रान्त चन्द्र सिर तथा नेत्रों में रोग उत्पन्न करता है। मानसिक रोग भी हो सकते हैं।

आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपके पति का स्वभाव तेज तथा प्रकृति व्ययशील रहेगी। उनके साथ आपके वैचारिक मतभेद, विवादों को उत्पन्न कर सकते हैं। आपके सम्बन्ध अन्यत्र भी कहीं हो सकते हैं। साझेदारी के व्यापार से, आपको अधिक लाभ नहीं मिल पाएगा। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। आपको सर्विस में, अच्छा पद प्राप्त हो सकता है। प्रकृति से मितव्ययी होने के कारण आप धन का संचय करने में समर्थ हो सकती हैं। सर्विस में यदा-कदा उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, प्रथम स्थान पर सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से चन्द्र की मित्रता है। आप औसत से कुछ अधिक लम्बे कद की, गौरवर्ण तथा अच्छे शारीरिक गठन वाली महिला होती हैं। स्वभाव से राजसी, किन्तु क्रोधी होने से, आपके मित्रों की संख्या कम होती है। अपनी माता के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त हो सकता है।

सिंह लग्न में सप्तम भाव के चन्द्रमा के व्ययेश होकर केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि में स्थित होने से आपको स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि उठानी पड़ सकती है तथा घरेलू खर्च चलाने में भी कुछ असन्तोष एवं कठिनाइयों का अनुभव होगा। साथ ही आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ होगा, परन्तु आपके मन में कमजोरी एवं चिन्ता सी बनी रहेगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपके शरीर में दुर्बलता भी बनी रहेगी।

मंगल

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। सामान्यतः एकादशस्थ मंगल अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा नवमेश मंगल एकादश स्थान में आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह मंगल आपको दीर्घायु, सुखी तथा सम्पन्न स्त्री बनायेगा। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा तथा मित्रों और परिजनों में आप लोकप्रिय रहेंगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा पेट के रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान वाणिज्य विषय की ओर अधिक रहेगा। पठन-पाठन में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा तथा आप विदेश



DEEPA**ग्रह विचार**

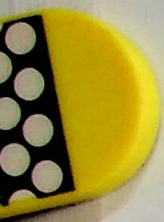
यात्रा पर भी जा सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप सर्विस करना अधिक पसन्द करेंगी। राजकीय क्षेत्र में सर्विस करना आपको लाभप्रद रहेगा। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत भी हो सकते हैं। आपकी प्रकृति मितव्ययी होगी। शनैः शनैः आप अर्थ संग्रह करने में समर्थ रहेंगी।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपको अर्थलाभ के लिये अधिक परिश्रम करना होगा। आपको कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होगा। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा तथा आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश भी जा सकती हैं। आपका सन्तान सुख मध्यम रहेगा। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो मंगल की उच्च राशि है। आपको यदा-कदा होने वाले रोगों से कष्ट हो सकता है। शत्रु आपको हानि पहुँचाने के कुचक्रों में विफल रहेंगे।

सिंह लग्न में एकादश भाव के मंगल के लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपकी आमदनी में वृद्धि होगी तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है, अतः आपको धन की प्राप्ति होगी एवं कुटुम्ब के द्वारा भी सुख मिलेगा। मंगल के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से आपको सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलती है। मंगल के अपनी आठवीं उच्च दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण आपको शत्रुओं, रोगों तथा झंझटों पर विजय प्राप्त हो सकती है। आप अत्यन्त प्रभावशाली, शत्रुजयी, धनी तथा ननिहाल का भी सुख प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे।

बुध

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में, सिंह राशि में स्थित है। सामान्यतः लग्नस्थ बुध अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ धनेश तथा एकादशेश बुध प्रथम स्थान में आपको शुभ फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको न्यायप्रिय, सम्पन्न तथा सुखी महिला बनाता है। आप ऊँचे कद की, गौरवर्ण तथा सबल शारीरिक संरचना वाली महिला होती हैं। आपका चेहरा लम्बा, विस्तृत ललाट तथा आँखें बड़ी व तीक्ष्ण होंगी। आप स्वभाव से स्वाभिमानी तथा व्यवहारकुशल होंगी। आप श्रेष्ठ वक्ता, विदुषी तथा विनोदी स्त्री होती हैं। आपके गुणों के कारण मित्र समुदाय में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी तथा परिजनों में भी आप सम्मान की दृष्टि से देखी जा सकती हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदा-कदा नेत्र रोग से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी गणित, विज्ञान विषयों में अधिक रुचि रहेगी।



DEEPA

ग्रह विचार

खेलों में भी आपकी रुचि रहती है तथा आप संगीत आदि कलाओं तथा ज्योतिष जैसी गूढ़ विधाओं का ज्ञान भी रख सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखिका, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, प्रोफेसर आदि बन सकती हैं। आप राजकीय क्षेत्र में प्रतिष्ठित पद भी प्राप्त कर सकती हैं। आपकी प्रकृति मितव्ययी होगी तथा आय अधिक रहने से आप अर्थ संचय में समर्थ हो सकती हैं।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, सप्तम् स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि की बुध से मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पति सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान होंगे जिनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। साझेदारी का व्यापार आपको लाभदायक हो सकता है। सिंह लग्न में प्रथम भाव के बुध के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपको शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी। आप विवेकी, सम्मानित, भोगी तथा धनी व्यक्ति होंगे। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से भी अत्यन्त उन्नति, सफलता एवं सुख की प्राप्ति होगी। आप यशस्वी एवं प्रतिष्ठित भी हो सकते हैं।

गुरु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से गुरु की मित्रता है। सामान्यतः लग्नस्थ गुरु शुभफलदायक रहता है। यहाँ पंचमेश तथा अष्टमेश गुरु लग्न स्थान में आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको आस्तिक, विदुषी, मंत्र शास्त्रज्ञ तथा सम्पन्न स्त्री बनाता है। आप ऊँचे कद, गौरवर्ण तथा सबल शारीरिक गठन वाली स्त्री होती हैं। आपका मुख तेजस्वी तथा ललाट उन्नत रहता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होता है किन्तु अपनी व्यवहार कुशलता तथा अच्छे व्यवहार से आप अपने परिजनों एवं मित्रों का विश्वास जीत लेंगी और उनके स्नेह व सम्मान की आप पात्र होंगी। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा-कदा चर्म रोग से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आपका रुझान साहित्य, विधि, इतिहास, भाषा, दर्शन शास्त्र आदि विषयों में रहता है। इन विषयों के अध्ययन में आपको अच्छी सफलता प्राप्त होती है। इसके अलावा ज्योतिष, धर्मशास्त्र, पुरातत्व विज्ञान तथा पर्यटन में आपकी रुचि रहती है। आप दीर्घायु होती हैं। आपको वसीयत आदि किसी माध्यम से आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। आपको सन्तान सुख सामान्य रहता है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप साहित्यकार, प्राध्यापिका, जज, वकील, लेखिका, इतिहासकार अथवा राज्य-शासन में उच्च पदस्थ अधिकारी बन सकती हैं। व्यापार में भी आपको लाभ होता है।



DEEPA**ग्रह विचार**

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जो गुरु की स्वराशि है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम होता है। यह गुरु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से गुरु के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहता है। आपके पति सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान व्यक्ति होते हैं। यदा-कदा होने वाले वैचारिक मतभेदों को छोड़कर अपने पति से आपका सामंजस्य बना रहेगा। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। आपकी धर्म में आस्था रहती है। आपका भाग्योदय 16वें वर्ष में हो सकता है।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के गुरु के अष्टमेश होकर केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपको शारीरिक-सौन्दर्य, प्रभाव एवं दीर्घायु प्राप्त होगी। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में आपको शक्ति, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होगी। गुरु की अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से आपको स्त्री एवं दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ असन्तोष रह सकता है। गुरु के अपनी नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण आपको भाग्य एवं धर्म की उन्नति प्राप्त होगी तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ मिलेगा। आप अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति होंगे।

शुक्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से शुक्र की शत्रुता है। सामान्यतः लग्न स्थान में शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ तृतीयेश तथा दशमेश शुक्र प्रथम स्थान में आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह शुक्र आपको पुरुषार्थी, सुखी, सम्पन्न तथा सुस्वादु भोजन की शौकीन बनाता है। आप लम्बे कद, गौरवर्ण, उच्च ललाट तथा अच्छे शारीरिक गठन वाली स्त्री होती हैं। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होता है तथा आपको शीघ्र ही क्रोध भी आ जाता है, किन्तु यह क्रोध अल्पकालिक ही होता है। अपने मित्रों और परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

आपका स्वास्थ्य सामान्य रहता है। यदा-कदा नेत्र रोग तथा वात-पित्तादि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, संगीत तथा विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहता है। गायन-वादन, नाटक, सिनेमा की ओर तथा पर्यटन आदि में आपकी रुचि रहती है। अपने पिता से आपके यदा-कदा वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहना सम्भव है। अपने भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। आपका वैवाहिक जीवन मध्यम रहेगा। आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। आपके पति



DEEPA**ग्रह विचार**

सुन्दर, सुशिक्षित तथा तेज स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं। आपके साथ उनके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापिका, लेखिका, गणितज्ञ, संगीतकार, निर्देशक, चिकित्सक आदि बन सकती हैं। आपको राजकीय नौकरी भी प्राप्त हो सकती है। व्यापार में आपको लाभ मध्यम रहेगा। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। आपका विवाह कुलीन घराने में होता है। अपने पति से आपका प्रेम रहेगा। यदा-कदा आप दोनों पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। घर में शान्ति तथा सामंजस्य स्थापित करने में आप सफल रहेंगी।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के शुक्र के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपको शारीरिक सौन्दर्य, श्रृंगार, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होगी तथा भाई-बहिन एवं पिता के साथ कुछ मतभेद रहते हुए भी सुख प्राप्त होगा। आप अपनी उन्नति के लिये बहुत परिश्रम करेंगे तथा चातुर्य का सहारा भी लेंगे। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को शनि की कुम्भ राशि में देखता है, अतः आपको स्त्री-पक्ष से सफलता, शक्ति एवं प्रतिष्ठा मिलेगी तथा आपको दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी।

शनि

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। सामान्यतः लग्न स्थान में स्थित शनि अच्छे फल नहीं देता है। यहाँ षष्ठेश तथा सप्तमेश शनि लग्न स्थान में आपको अशुभ फल प्रदान करेगा। यह शनि आपको उतावली, विलासी तथा अधिकार सम्पन्न स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव क्रोधी होता है तथा आप ऐसी स्थिति में अपना आपा खोकर हिंसा पर भी उतर सकती हैं। आपके व्यवहार से लोगों में आपके व्यक्तित्व का आकर्षण नहीं रहेगा। आप लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाली स्त्री होती हैं। आपके मित्रों की संख्या सीमित होती है। अपने परिजनों से आपको स्नेह कम रहता है, किन्तु अपने मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। यदा-कदा आपको नेत्र रोग अथवा वात विकारों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान, गणित, अंग्रेजी, भाषा, विधि, पुरातत्त्व, भू-विज्ञान आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा तथा आपको देशाटन का अवसर भी प्राप्त होता है। अपने आपके शत्रु अधिक रहते हैं। आपको उनके कुचक्रों से हानि भी उठानी पड़ सकती है। अपने पराक्रम से आप उनका दमन कर सकती हैं। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपके पति



DEEPA**ग्रह विचार**

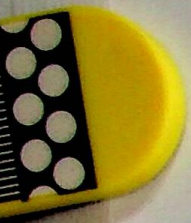
लम्बे कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। उनका स्वभाव तेज रहेगा। आपके साथ उनके वैचारिक मतभेद तथा विवाद हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप प्राध्यापिका, गणितज्ञ, भाषाविद्, विधिवेत्ता, लेखिका, पुरातत्ववेत्ता आदि बन सकती हैं। आपको सरकारी नौकरी भी प्राप्त हो सकती है। व्यापार में आपको लाभ कम रहता है। आपकी व्ययशील प्रकृति होने के कारण अर्थ-संचय करने में आपको बाधा रहेगी।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जो शनि की उच्च राशि है। अपने भाई बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते हैं। साहस तथा पुरुषार्थ से आपके कार्य सिद्ध होते हैं। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जो शनि की स्वराशि है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपसी मतभेदों तथा विवादों से आप दोनों पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य का अभाव रहेगा। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से शनि की मित्रता है। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के शनि के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपको शरीर के सम्बन्ध में परेशानी, रोग आदि का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु शत्रु-पक्ष पर आपका कुछ प्रभाव रहेगा। यहाँ से शनि अपनी तीसरी उच्च एवं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखता है, अतः आपको भाई-बहिन की शक्ति प्राप्त होगी तथा आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। शनि के अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से आपको कुछ परेशानियों के साथ स्त्री एवं व्यवसाय का सुख तथा लाभ मिलेगा। शनि के अपनी दसवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने के कारण आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलता, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

राहु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में, सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। सामान्यतः लग्नस्थ राहु मिश्रित फल प्रदान करता है, यहाँ जन्म लग्न (प्रथम स्थान) में सिंह राशि का राहु आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह राहु आपको पराक्रमी, सुखी, दयावान तथा सम्पन्न महिला बनाता है। आप लम्बे कद की, गेहुँए वर्ण तथा स्वस्थ सुगठित शरीर वाली महिला होती हैं। व्यक्तित्व से आप प्रभावशाली तथा स्वभाव से स्वाभिमानी रहेंगी। पराक्रम तथा विदुषिता आदि गुणों के कारण समाज में आप प्रतिष्ठित रहेंगी। समाज के हित के लिए आप कार्यरत रहती हैं। मित्रों और परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। यदा-कदा वातादि विकारों से पीड़ित हो सकती हैं।



DEEPA**ग्रह विचार**

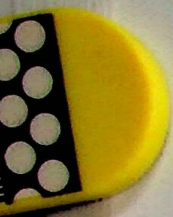
आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आप गम्भीर तथा मननशील महिला होती हैं। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि गणित, विधि, इलेक्ट्रॉनिक्स, भाषा, दर्शन, साहित्य आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष आदि गूढ़ विषयों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। पर्वतीय प्रदेशों के भ्रमण का शौक रहेगा, आप प्रवास भी कर सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप गणितज्ञ, वकील, भाषाविद, मजिस्ट्रेट, प्राध्यापिका, तकनीकी विशेषज्ञ, लेखिका आदि बन सकती हैं आपको सरकारी नौकरी भी मिल सकती है। व्यापार में लाभ उत्तम रहेगा। राजनीति में सफलता मिलने पर उच्च पद सहज प्राप्त हो सकता है, धन तथा यश दोनों की प्राप्ति सम्भव है।

इस राहु की पंचम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जो राहु की नीच राशि है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा। सन्तान सुख में बाधा अथवा सन्तान को कष्ट भी सम्भव है। इस राहु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, सप्तम् स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपके पति लम्बे कद के, गेहुँए या कुछ श्याम वर्ण तथा कृश शारीरिक गठन वाले हो सकते हैं। उनका स्वभाव तेज रहेगा। आपकी व्यवहार कुशलता से आपसी सामंजस्य बना रहेगा। इस राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की राहु से शत्रुता है। धर्म में आपकी आस्था कम रहेगी। आपकी भाग्योन्नति में कुछ विलम्ब हो सकता है।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के राहु के केन्द्र एवं शरीर के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपके शारीरिक सौन्दर्य में कमी आ सकती है तथा सुख-शान्ति में भी बाधा पड़ सकती है। आपको शरीर में कभी-कभी बड़े कष्ट का सामना करना पड़ सकता है तथा आप भीतरी चिन्ताओं से भी चिन्तित बने रहेंगे। आप किसी उच्च पद पर पहुँचने अथवा किसी विशेष कार्य को करने के लिए गुप्त-युक्ति, परिश्रम एवं साहस का सहारा लेंगे एवं सफलता की ओर बढ़ेंगे।

केतु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से सप्तम् स्थान में कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः सप्तम् स्थान में केतु अशुभ फल प्रदान करता है, यहाँ सप्तम् स्थान में कुम्भ राशि का केतु आपको अच्छे फल नहीं देगा। यह केतु आपको मानसिक पीड़ा, शत्रुभय, राजभय आदि से क्लेशकारक होता है। आपका स्वभाव कठोर रहेगा तथा आप कुछ हठी व दुराग्रही प्रकृति की महिला हो सकती हैं। आपके कटु व्यवहार से मित्र भी विरोधी बन जाते हैं। समाजसेवा तथा जनहितकारी कार्यों में आप तभी भाग लेती हैं जब इनसे कुछ हित साधन होता हो। आपके कार्यों में बाधाएं आती हैं तथा कठोर परिश्रम से ही आपके कार्य पूरे हो सकते हैं। मित्रों का सहयोग कम मिल पाता है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्धों में मधुरता



DEEPA**ग्रह विचार**

का अभाव रहता है। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वात रोग, आंतों तथा गुदा रोगों से पीड़ित हो सकती हैं। मानसिक रोगों का भी भय रह सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि गणित, अंग्रेजी, इलेक्ट्रॉनिक्स, विधि, साहित्य, भाषा आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के अध्ययन का भी शौक रह सकता है। पर्यटन में आपकी रुचि होती है किन्तु यात्रा में कष्ट तथा हानि हो सकती है। प्रवास से लाभ सम्भावित नहीं है। आपका वैवाहिक जीवन साधारण रह सकता है। आपके पति लम्बे कद के, गेहुँए अथवा कुछ श्याम वर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे उनका स्वभाव तेज रहेगा। धैर्य तथा व्यवहारकुशलता से आप सद्भाव तथा सामंजस्य बनाये रख सकती हैं। उनका स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षिका, लेखिका, वकील, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, गणितज्ञ, रेल्वे, बीमा कर्मचारी आदि बन सकती हैं। व्यापार में लाभ साधारण रहेगा। राजनीति में आपको विशेष सफलता मिलना कठिन प्रतीत होता है। आकस्मिक व्यय के कारण अर्थ संचय में बाधा रहेगी।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो केतु की नीच राशि है। आपकी आय में कमी हो सकती है। आपके द्वारा अर्थ लाभ के लिए किये गये प्रयत्न कम ही सफल रहेंगे।

इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में सिंह राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से केतु की मित्रता है। आप लम्बे कद की, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाली महिला होती हैं। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है किन्तु उग्र स्वभाव के कारण समाज में आपकी यथोचित लोकप्रियता नहीं रह पाती है। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से तृतीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप साहसी तथा परीश्रमी महिला होती हैं। भाई-बहिनों का सुख आपको कम ही प्राप्त होता है अथवा उनसे वैचारिक मतभेद भी रह सकते हैं। सिंह लग्न में सप्तम भाव के केतु के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित होने से आपको स्त्री के सुख में कमी एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आप गुप्त-धैर्य एवं साहस के साथ अपनी गृहस्थी का पालन करेंगे। आप कभी-कभी गहरी मुसीबतों में भी फँस सकते हैं, परन्तु अपने धैर्य एवं साहस को नहीं छोड़ेंगे, अन्ततः आपको सफलता प्राप्त होगी। आपकी मुत्रेन्द्रिय में विकार भी हो सकता है।



DEEPA

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिफल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— माणिक्य (रुबी) उपरत्न:— सौगन्धिक(स्पाईनल रुबी), मैसूरी(स्टार रुबी)

माणक तीन रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में रविवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद सूर्य के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय पूर्व धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, आयु, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्य रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगेट)

मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या-विवेक तथा व्यापार में वृद्धि एवं नौकरी में उन्नति कारक रहेगा।

कारक रत्न:— पुखराज (येलो सफायर) उपरत्न:— सुनैला(सिटरीन), पीला हकीक(येलो एगेट)

पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, व्यापार व्यवसाय में प्रगति तथा रोग एवं शत्रु नाशक रहेगा।



DEVESH

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

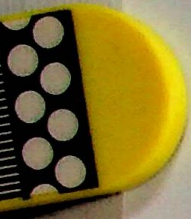
जन्म दिनांक	: 25/05/1987	विक्रमी संवत्	: 2044
जन्म दिन	: सोमवार	शक संवत्	: 1909
जन्म समय	: 09:02:20 घण्टे	ऋतु	: ग्रीष्म
इष्टकाल	: 08:50:38 घटी	मास	: ज्येष्ठ
जन्म स्थान	: DELHI	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: त्रयोदशी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 18:39:27 घण्टे
अक्षांश	: 28:39:00 उत्तर		: 32:53:26 घटी
रेखांश	: 77:13:00 पूर्व	जन्म तिथि	: त्रयोदशी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:21:08 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: अश्विनी
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 13:21:56 घण्टे
स्थानिक समय	: 08:41:12 घण्टे		: 19:39:38 घटी
साम्पातिक काल	: 00:49:58 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: अश्विनी
वेलान्तर	: -00:03:11 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: सौभाग्य
सूर्योदय	: 05:30:05 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 13:31:02 घण्टे
सूर्यास्त	: 19:05:50 घण्टे		: 20:02:23 घटी
दिनमान	: 13:35:45 घण्टे	जन्म योग	: सौभाग्य
रात्रिमान	: 10:24:15 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: गर
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 06:22:50 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 02:11:53 घण्टे
अयनांश	: 23:40:48	जन्म करण	: वणिज



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



DEVESH

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

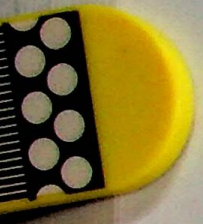
घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	कार्तिक	लग्न-लग्नाधिपति	:	मिथुन-बुध
दिनांक	:	1,6,11	राशि-राशि स्वामी	:	मेष-मंगल
दिन	:	रविवार	नक्षत्र-चरण	:	अश्विनी-4
नक्षत्र	:	मघा	नक्षत्र स्वामी	:	केतु
योग	:	विष्कम्भ	योग	:	सौभाग्य
करण	:	बव	करण	:	वणिज
प्रहर	:	1	गण	:	देव
वर्ग	:	सिंह	योनि	:	अश्व
लग्न	:	मेष	नाडि	:	अद्या
सूर्य	:	कर्क	वर्ण	:	क्षत्रिय
चन्द्र	:	मेष	वश्य	:	चतुष्पाद
मंगल	:	सिंह	वर्ग	:	मृग
बुध	:	वृष	युंजा	:	पूर्व
गुरु	:	कन्या	हंसक (तत्व)	:	अग्नि
शुक्र	:	तुला	जन्म नामाक्षर	:	ला
शनि	:	मिथुन	पाया-राशी	:	स्वर्ण
राहु	:	वृश्चिक	पाया-नक्षत्र	:	स्वर्ण
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	मिथुन	भयात	:	52:22:20 घटी
सूर्य के अंश	:	वृष 09:44:26	भभोग	:	63:13:45 घटी
लग्न के अंश	:	मिथुन 29:23:19	भोग्य दशा काल	:	केतु 1 व 2 म 12 दिन

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मित्रं चैवातिमित्रं च जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं। अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध



DEVESH

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

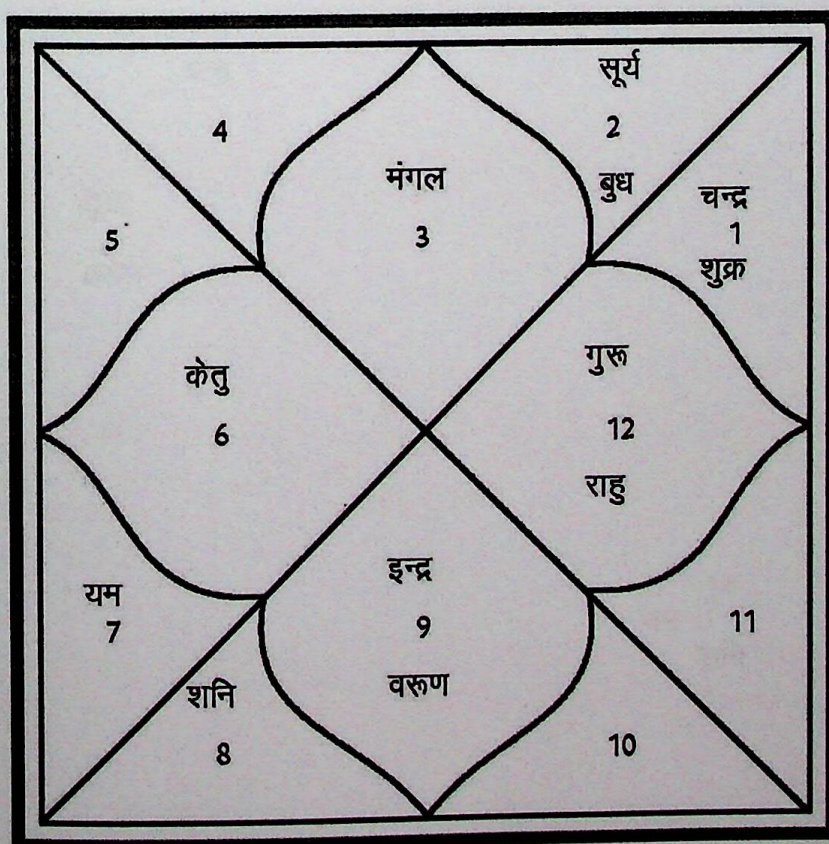
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

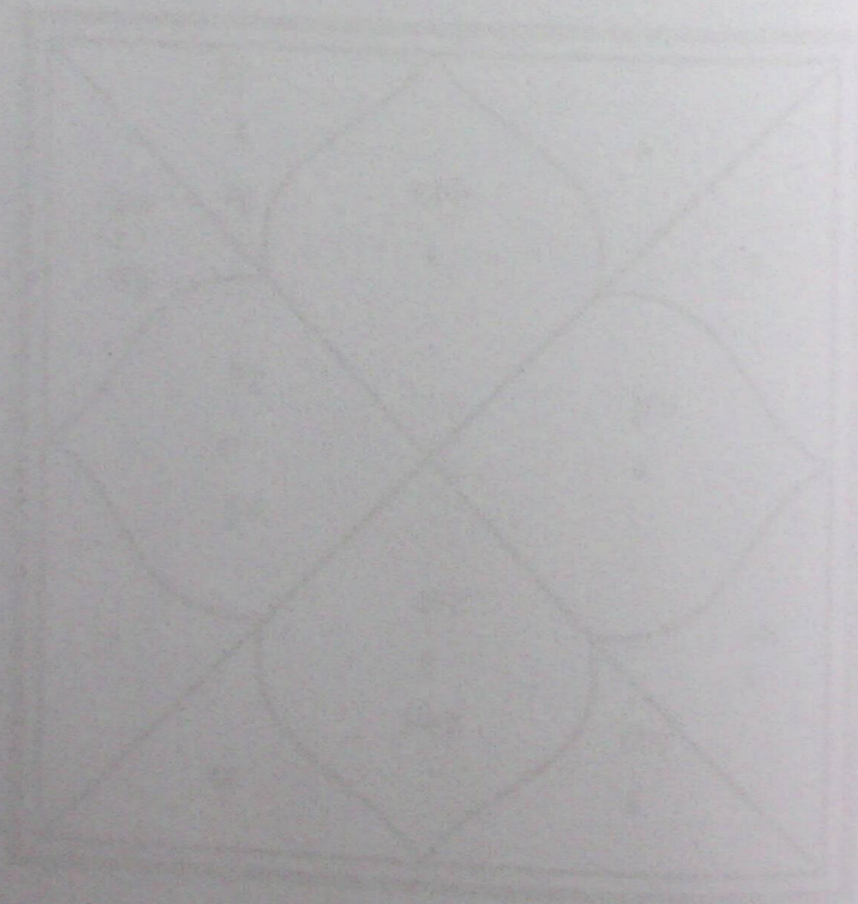
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	मिथुन	29:23:19	—	पुनर्वसु	3	गुरु	—	—	—
सूर्य	वृष	09:44:26	00:57:40	कृत्तिका	4	सूर्य	शत्रु स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	मेष	11:02:38	12:42:58	अश्विनी	4	केतु	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	मिथुन	08:56:08	00:38:59	आर्द्रा	1	राहु	शत्रु स्थान	—	मार्गी
बुध	वृष	28:27:12	01:41:29	मृगशिरा	2	मंगल	मित्र स्थान	—	मार्गी
गुरु	मीन	25:44:06	00:12:20	रेवती	3	बुध	स्व राशी	—	मार्गी
शुक्र	मेष	15:35:31	01:12:46	भरणी	1	शुक्र	सम स्थान	—	मार्गी
शनि	वृश्चिक	25:17:08	00:04:11	ज्येष्ठा	3	बुध	शत्रु स्थान	—	वक्री
राहु	मीन	16:43:33	00:03:48	रेवती	1	बुध	सम स्थान	—	वक्री
केतु	कन्या	16:43:33	00:03:48	हस्त	3	चन्द्र	सम स्थान	—	वक्री
इन्द्र	धनु	01:56:03	00:02:12	मूल	1	केतु	—	—	वक्री
वरुण	धनु	13:48:38	00:01:16	पूर्वाषाढा	1	शुक्र	—	—	वक्री
यम	तुला	14:12:34	00:01:29	स्वाति	3	राहु	—	—	वक्री
दशम भाव	मीन	19:53:45	—	रेवती	1	बुध	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:40:48

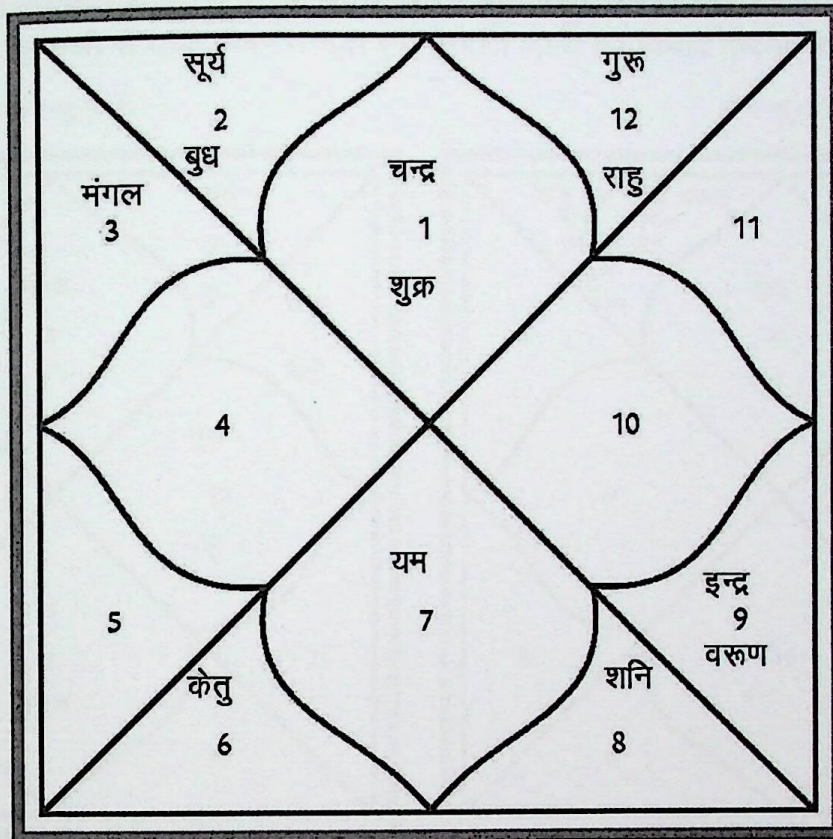
लग्न कुण्डली



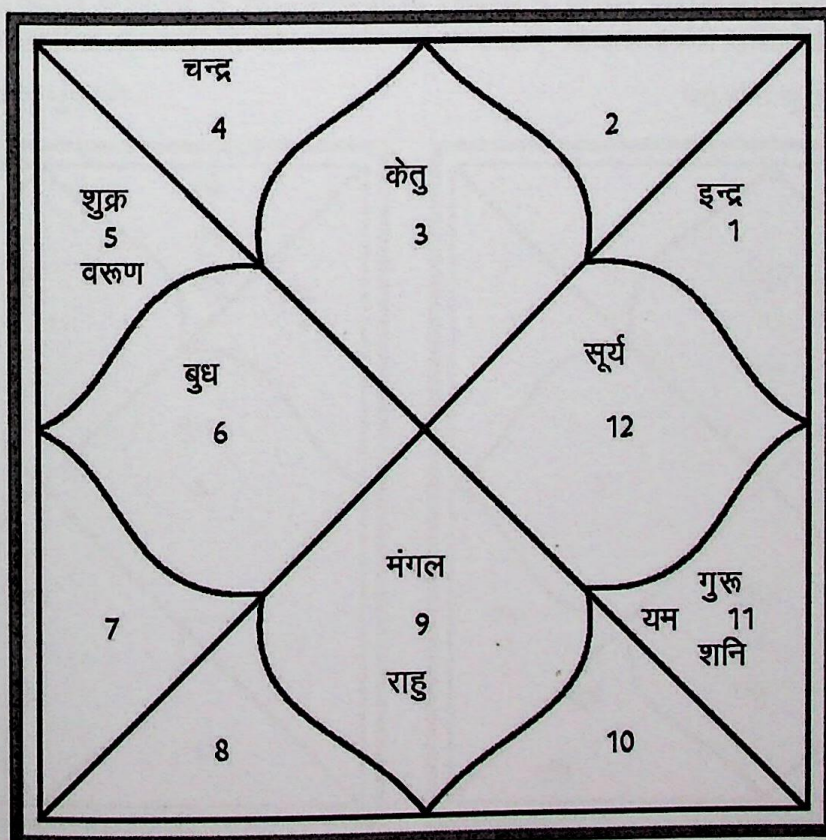


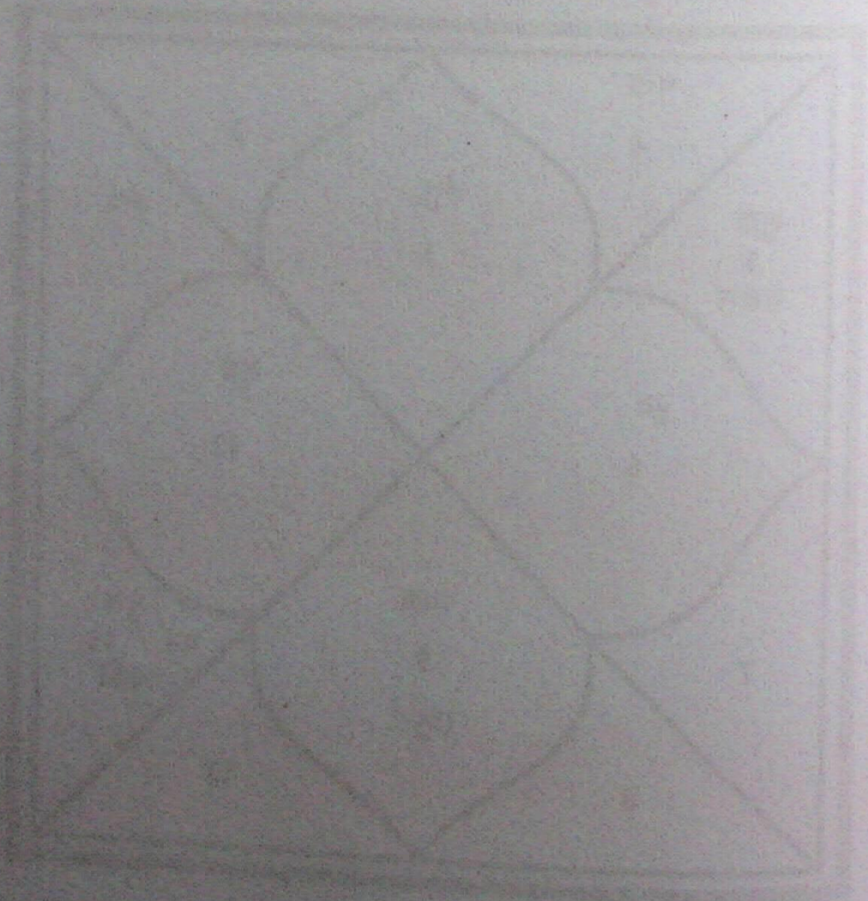
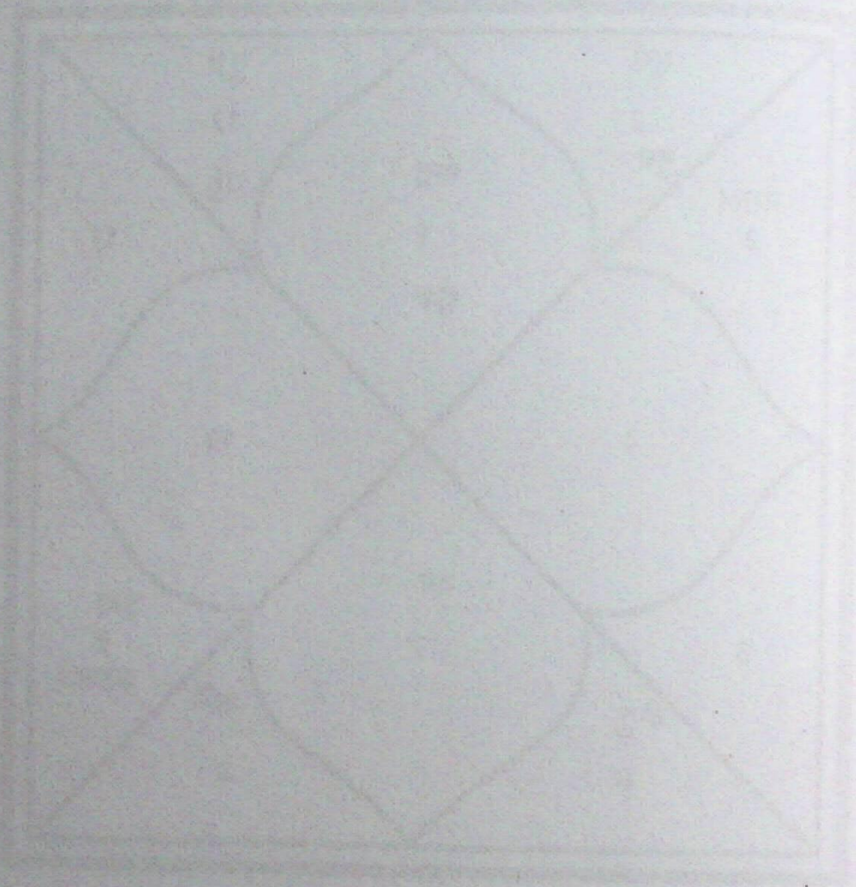
DEVESH

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



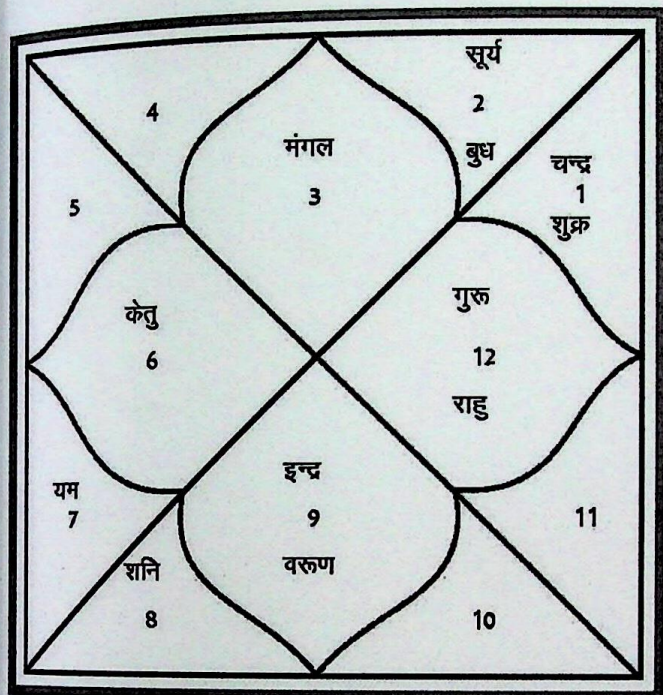


DEVESH

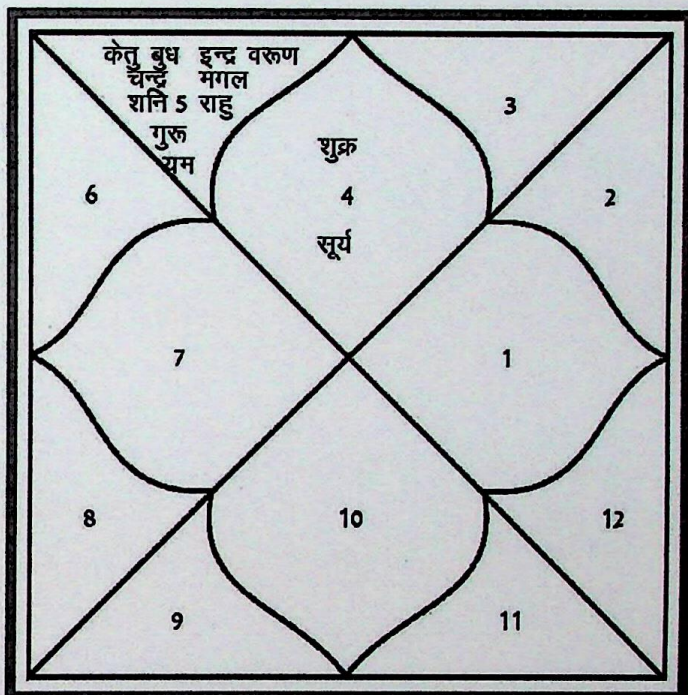
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



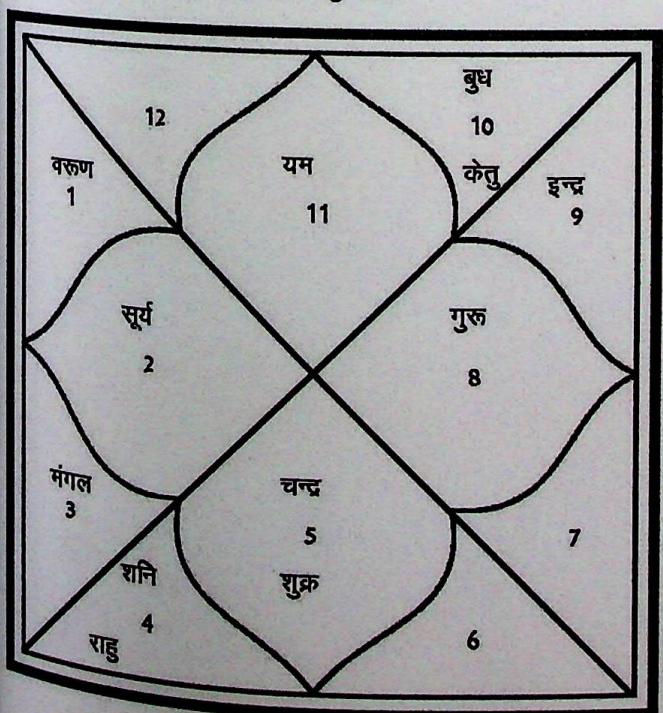
होरा कुण्डली



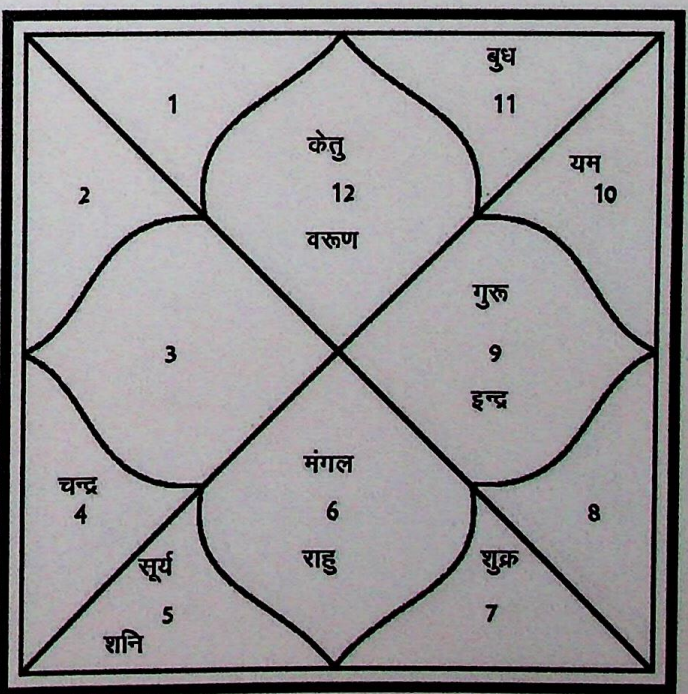
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

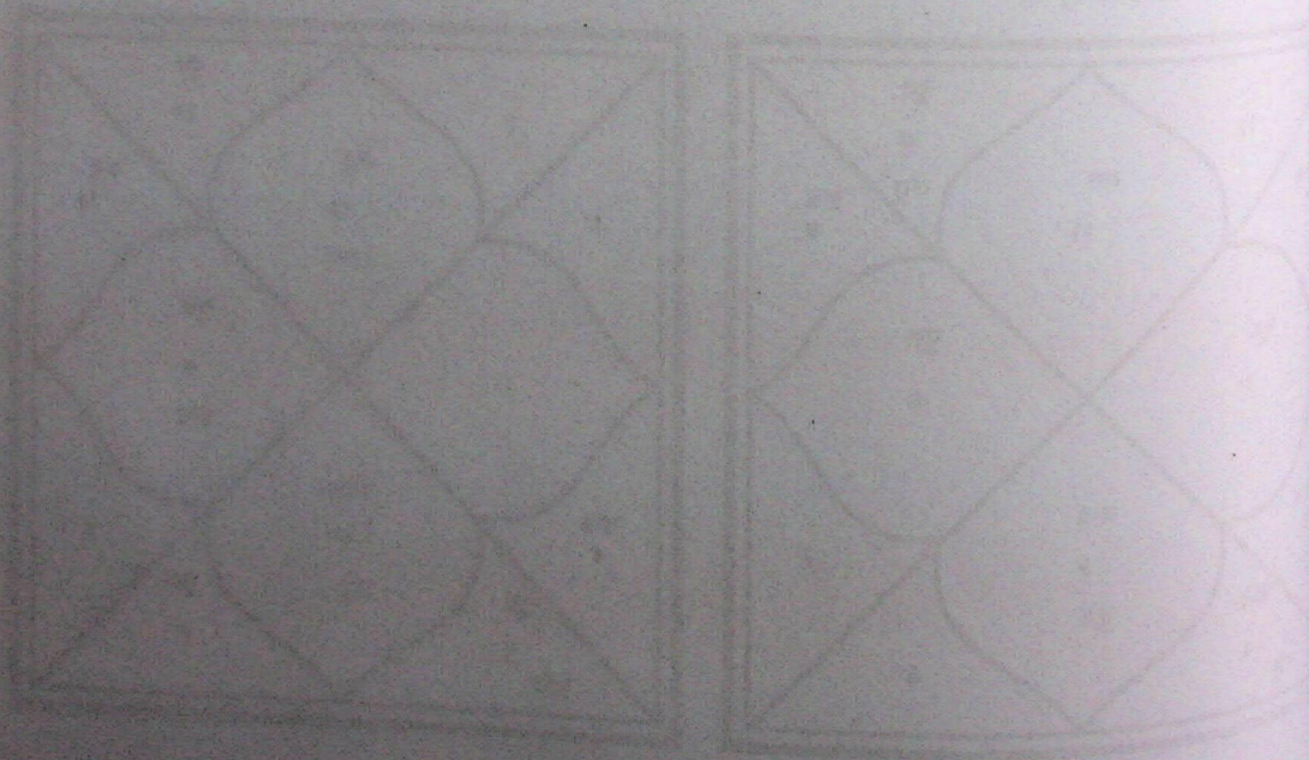
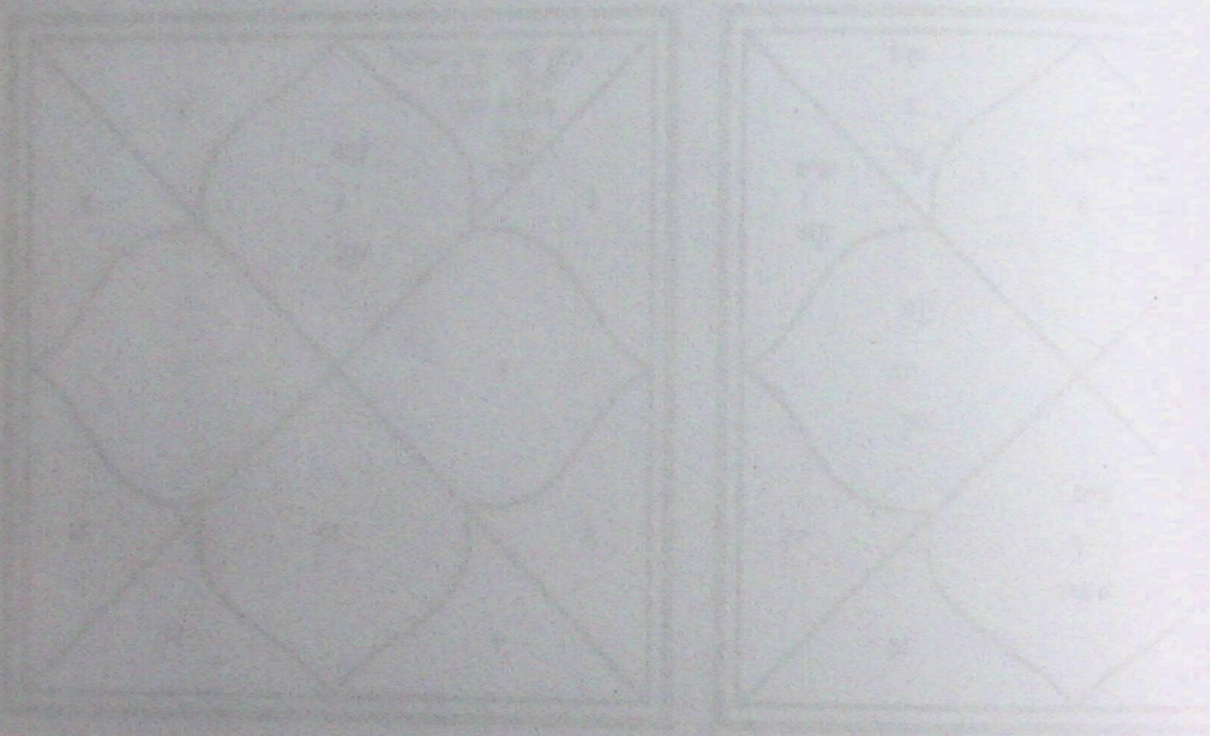
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली





DEVESH

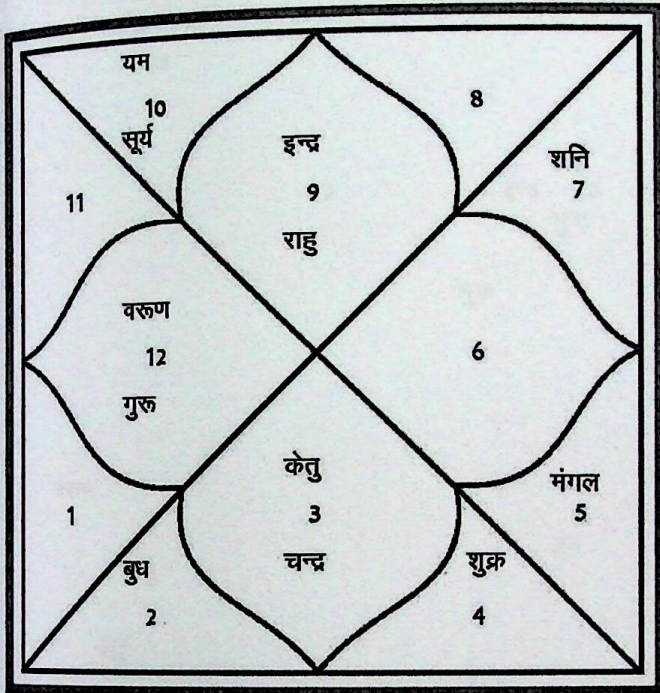
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥

॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

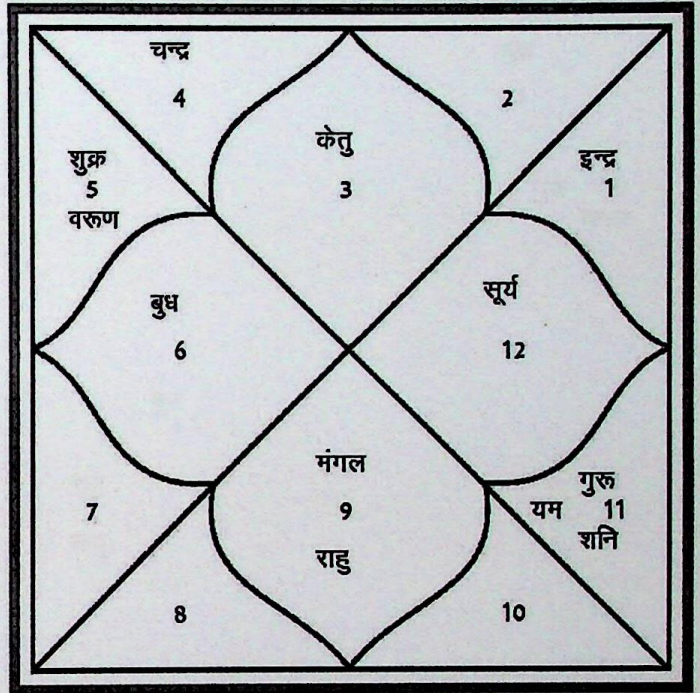
सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।

नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



नवमांश कुण्डली



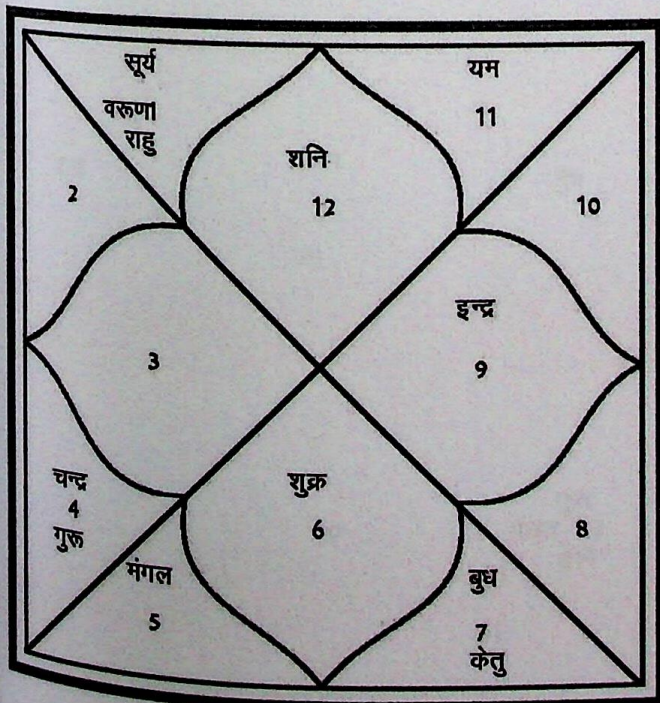
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥

॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

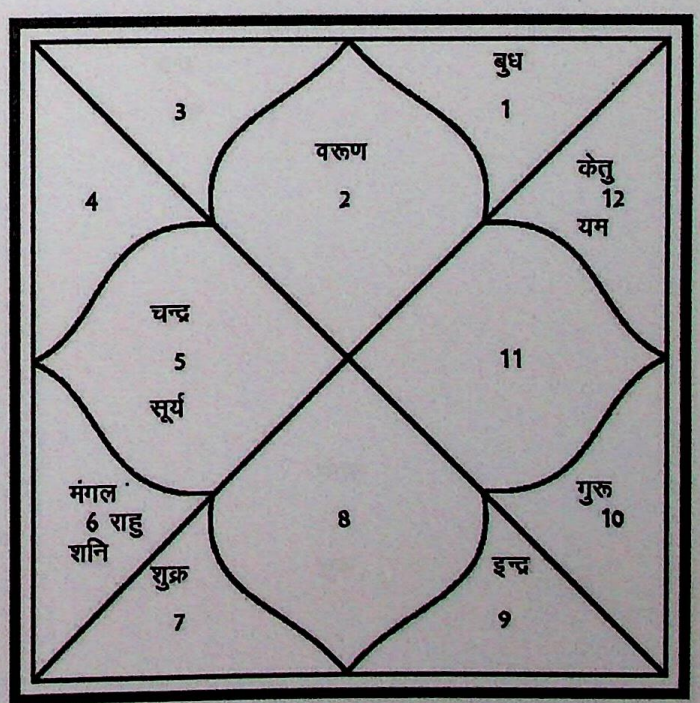
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली



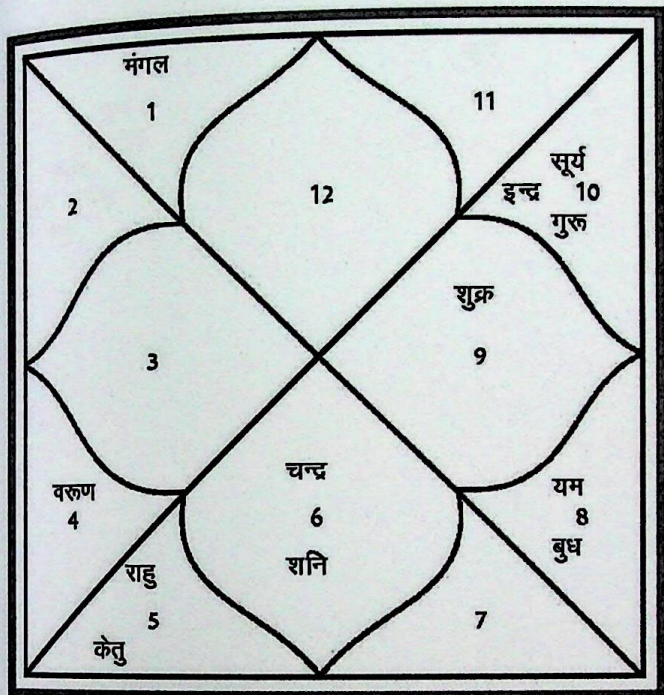
DEVESH

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

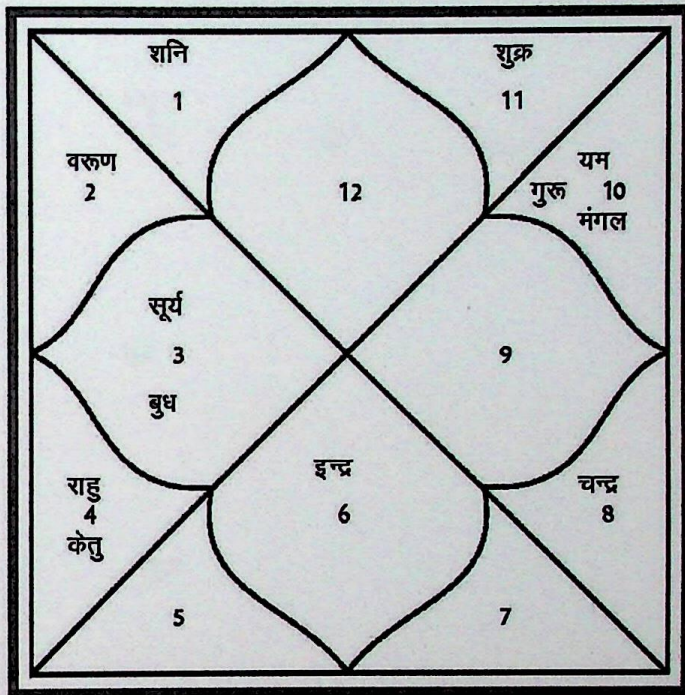
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली

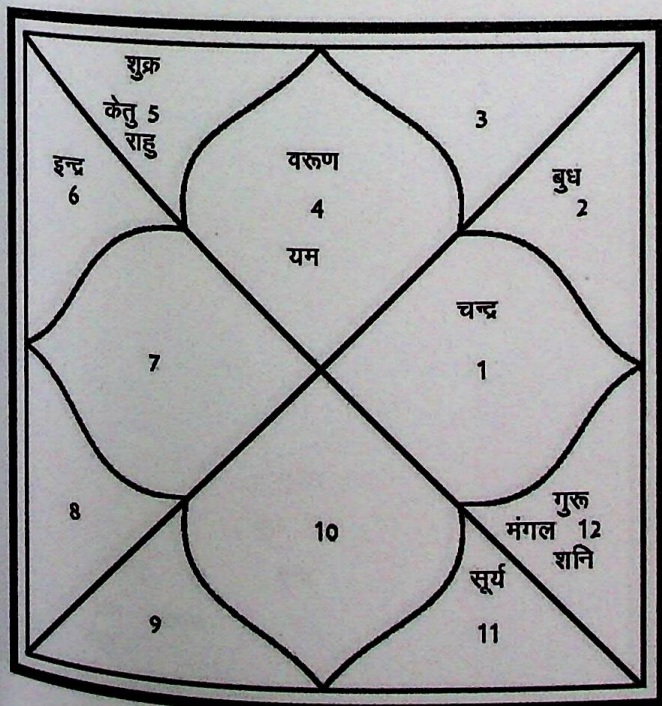


॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

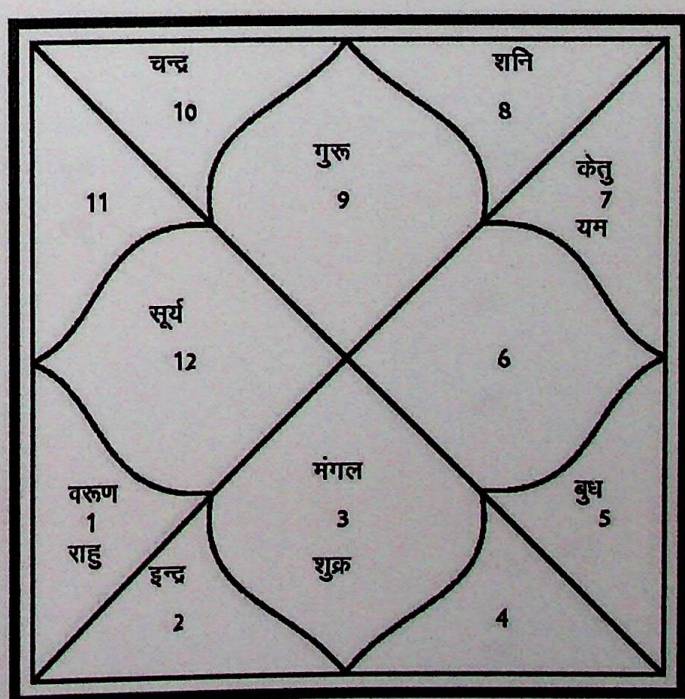
॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

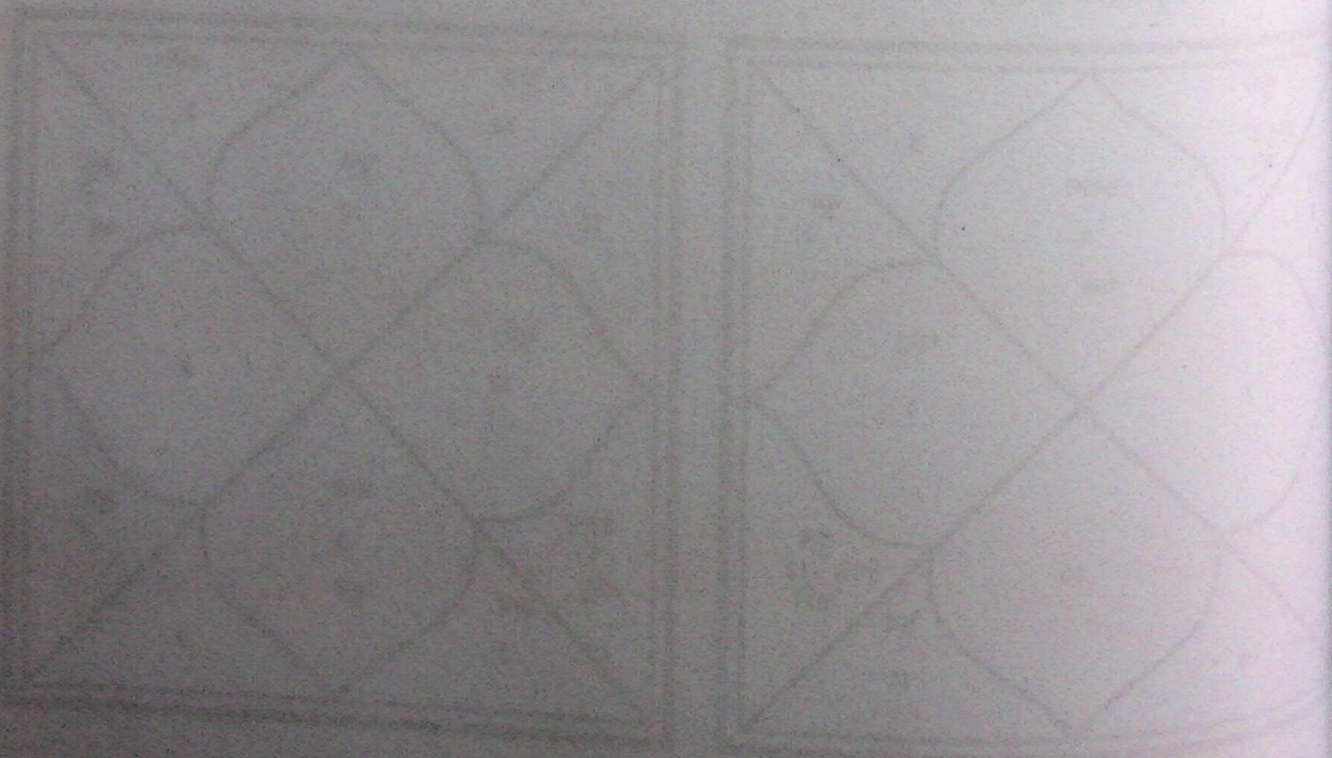
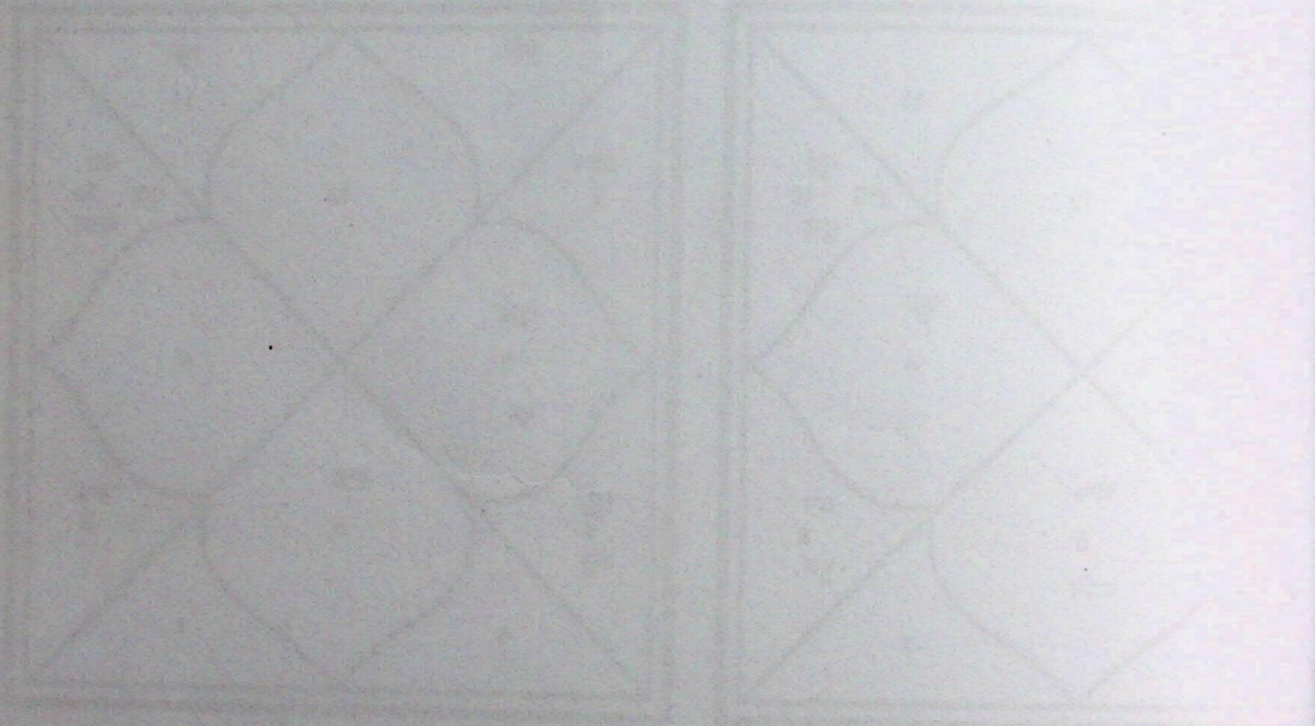
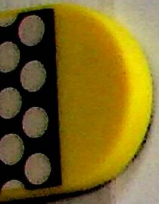
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





DEVESH

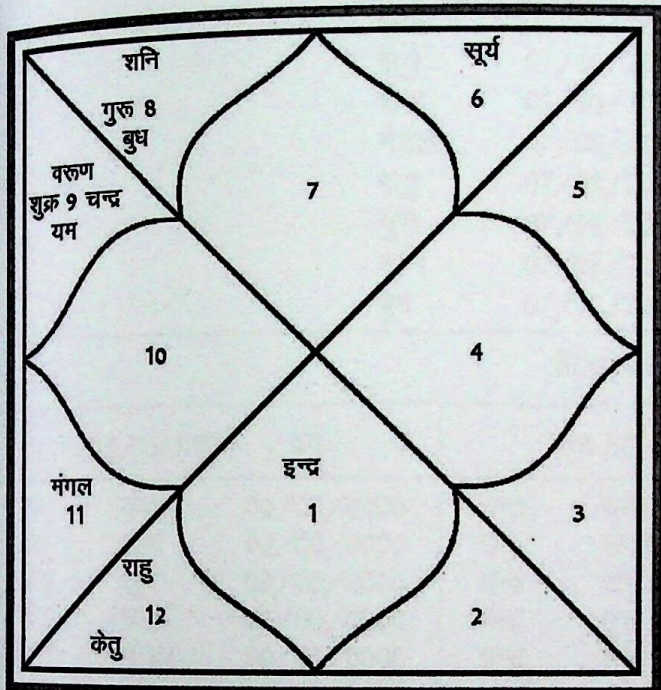
॥ त्रिंशशके अरिष्ट फलम् ॥

॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

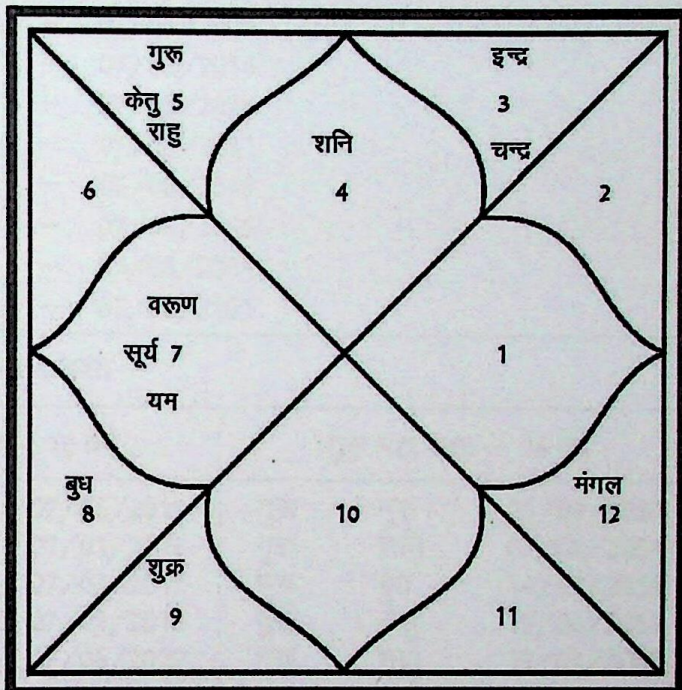
त्रिंशश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिंशश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली



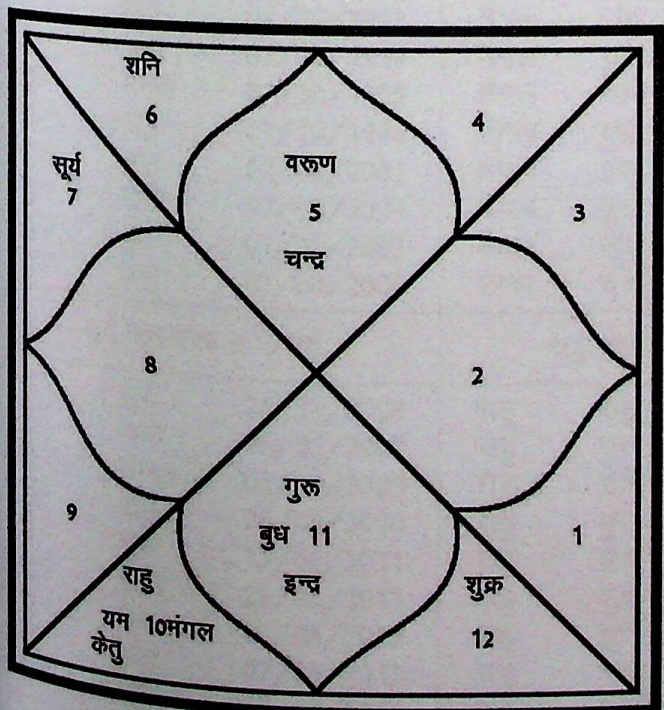
॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

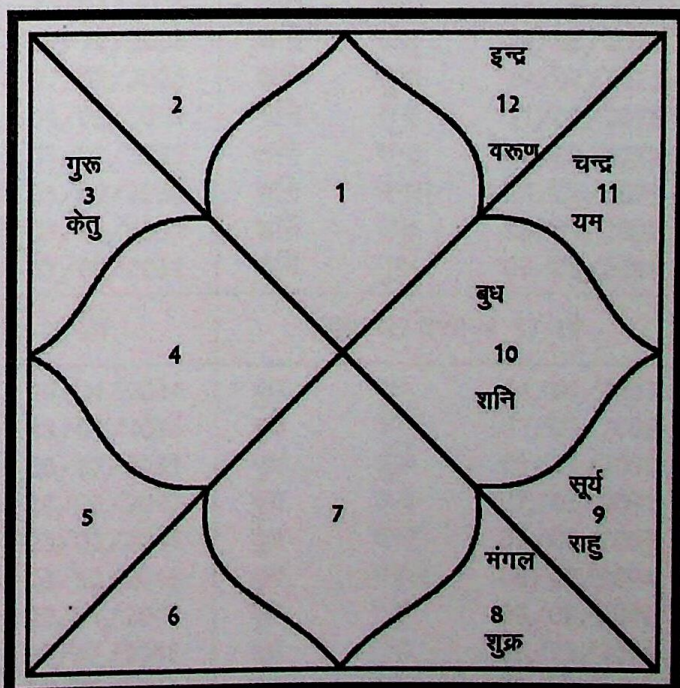
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्

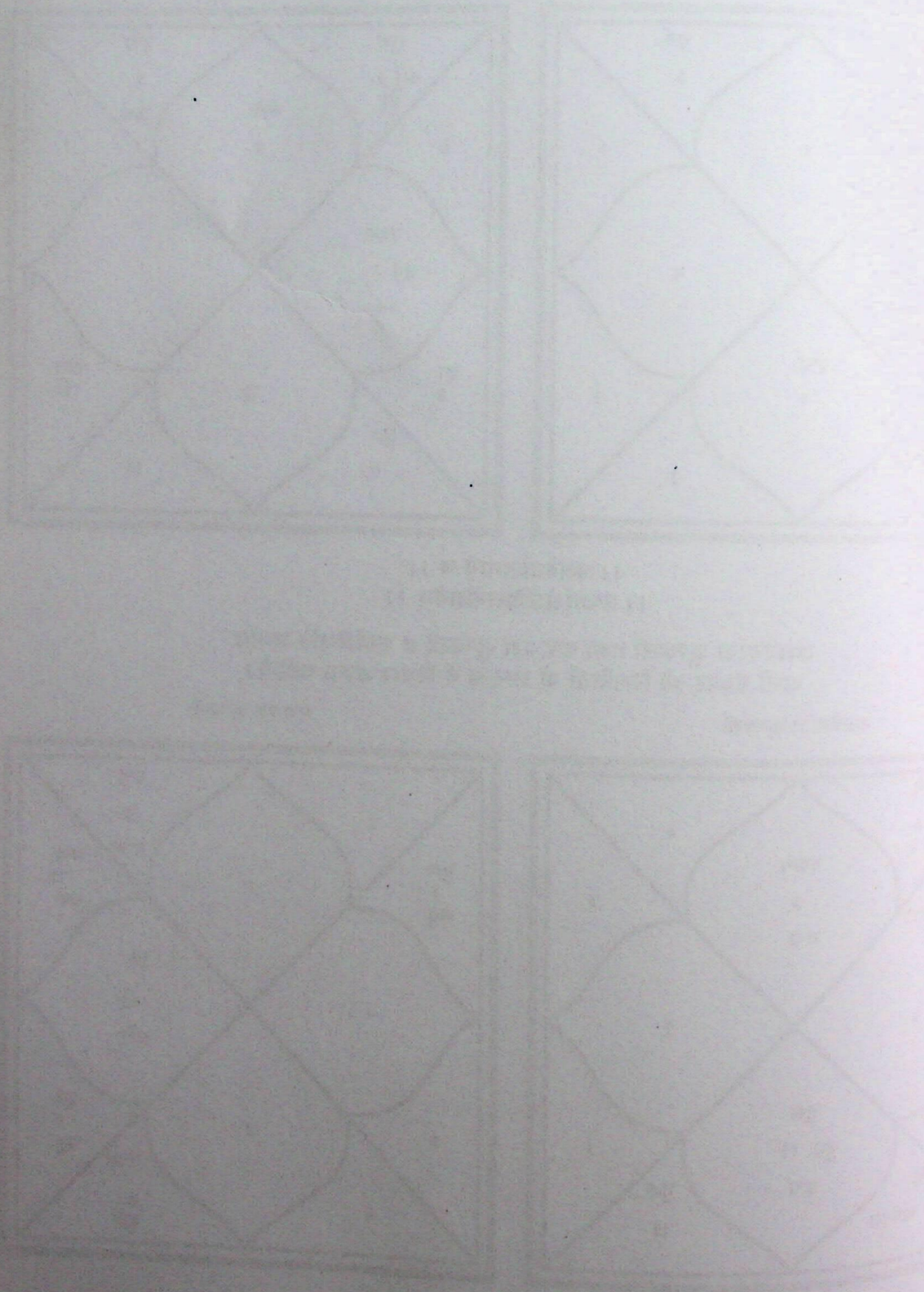
सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





DEVESH

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - केतु 1 वर्ष 2 मास 12 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

केतु	25/05/1987	-	07/08/1988
शुक्र	07/08/1988	-	07/08/2008
सूर्य	07/08/2008	-	07/08/2014
चन्द्र	07/08/2014	-	07/08/2024
मंगल	07/08/2024	-	07/08/2031
राहु	07/08/2031	-	07/08/2049
गुरु	07/08/2049	-	07/08/2065
शनि	07/08/2065	-	07/08/2084
बुध	07/08/2084	-	07/08/2101

विंशोत्तरी अन्तर दशा

केतु महा दशा - 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष			गुरु महा दशा - 16 वर्ष		
केतु	केतु	00/00/0000	चन्द्र	चन्द्र	07/06/2015	गुरु	गुरु	25/09/2051
केतु	शुक्र	00/00/0000	चन्द्र	मंगल	07/01/2016	गुरु	शनि	07/04/2054
केतु	सूर्य	00/00/0000	चन्द्र	राहु	07/07/2017	गुरु	बुध	14/07/2056
केतु	चन्द्र	00/00/0000	चन्द्र	गुरु	07/11/2018	गुरु	केतु	19/06/2057
केतु	मंगल	00/00/0000	चन्द्र	शनि	07/06/2020	गुरु	शुक्र	19/02/2060
केतु	राहु	00/00/0000	चन्द्र	बुध	07/11/2021	गुरु	सूर्य	07/12/2060
केतु	गुरु	00/00/0000	चन्द्र	केतु	07/06/2022	गुरु	चन्द्र	07/04/2062
केतु	शनि	11/08/1987	चन्द्र	शुक्र	07/02/2024	गुरु	मंगल	14/03/2063
केतु	बुध	07/08/1988	चन्द्र	सूर्य	07/08/2024	गुरु	राहु	07/08/2065
शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष			शनि महा दशा - 19 वर्ष		
शुक्र	शुक्र	07/12/1991	मंगल	मंगल	04/01/2025	शनि	शनि	11/08/2068
शुक्र	सूर्य	07/12/1992	मंगल	राहु	23/01/2026	शनि	बुध	19/04/2071
शुक्र	चन्द्र	07/08/1994	मंगल	गुरु	29/12/2026	शनि	केतु	29/05/2072
शुक्र	मंगल	07/10/1995	मंगल	शनि	07/02/2028	शनि	शुक्र	29/07/2075
शुक्र	राहु	07/10/1998	मंगल	बुध	04/02/2029	शनि	सूर्य	11/07/2076
शुक्र	गुरु	07/06/2001	मंगल	केतु	01/07/2029	शनि	चन्द्र	09/02/2078
शुक्र	शनि	07/08/2004	मंगल	शुक्र	01/09/2030	शनि	मंगल	20/03/2079
शुक्र	बुध	07/06/2007	मंगल	सूर्य	07/01/2031	शनि	राहु	26/01/2082
शुक्र	केतु	07/08/2008	मंगल	चन्द्र	07/08/2031	शनि	गुरु	07/08/2084
सूर्य महा दशा - 6 वर्ष			राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष		
सूर्य	सूर्य	25/11/2008	राहु	राहु	19/04/2034	बुध	बुध	04/01/2087
सूर्य	चन्द्र	26/05/2009	राहु	गुरु	13/09/2036	बुध	केतु	01/01/2088
सूर्य	मंगल	01/10/2009	राहु	शनि	20/07/2039	बुध	शुक्र	01/11/2090
सूर्य	राहु	26/08/2010	राहु	बुध	07/02/2042	बुध	सूर्य	07/09/2091
सूर्य	गुरु	13/06/2011	राहु	केतु	23/02/2043	बुध	चन्द्र	07/02/2093
सूर्य	शनि	26/05/2012	राहु	शुक्र	23/02/2046	बुध	मंगल	04/02/2094
सूर्य	बुध	01/04/2013	राहु	सूर्य	20/01/2047	बुध	राहु	23/08/2096
सूर्य	केतु	07/08/2013	राहु	चन्द्र	20/07/2048	बुध	गुरु	28/11/2098
सूर्य	शुक्र	07/08/2014	राहु	मंगल	07/08/2049	बुध	शनि	07/08/2101

10

DEVESH

लग्न विचार

मिथुन राशि, राशि चक्र की तीसरी राशि है। इस राशि का स्वामी बुध है। इसलिये इस लग्न में जन्म लेने से आप पर बुध का प्रभाव प्रधान रहेगा। आप औसत से कुछ लम्बे, गौरवर्ण युक्त, स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका ललाट ऊँचा तथा चेहरे पर ऐसी चमक होगी, जो आपके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आकर्षित करने के लिये पर्याप्त होगी। आप प्रबल कर्मठ तथा साहसी व्यक्ति होंगे। दिन रात परिश्रम करना आपका स्वभाव रहेगा और जब तक ध्येय तक नहीं पहुँचेंगे आप विश्राम नहीं करेंगे। आप योजना बनाने तथा उनका क्रियान्वयन करने में प्रवीण होंगे। आपकी निर्णय शक्ति अच्छी रहेगी तथा आप कई कलाओं में विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे। मिथुन लग्न में जन्म लेने से आप पढ़ने में तेज होंगे तथा आप कई विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकेंगे। आपको उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान के लिये विदेश जाने का अवसर भी प्राप्त होगा। आप भावुक भी होंगे। आपके जीवन में कई उतार चढ़ाव आयेंगे, किन्तु आप कठिनाइयों के बीच में से सही मार्ग निकालने में सक्षम रहेंगे।

आर्थिक क्षेत्र में आप पटु होंगे तथा अपने जीवन में अर्थ संचय करने में सफल रहेंगे। आर्ट, काव्य, लेखन, चित्रकला, प्रकाशन, संपादन, पत्रकारिता आदि में आप सफल रहेंगे। आपका बौद्धिक स्तर उन्नत होने से आप शैक्षिक कार्य भी अच्छी तरह से कर सकेंगे। फलतः आप प्राध्यापक, प्रधानाचार्य या शिक्षा विभाग से सम्बन्धित कार्य करेंगे। आपको राजनीति में भी सफलता प्राप्त होगी। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा तथा आपकी पत्नी गुणी तथा सुशिक्षित होगी। आपका सन्तान सुख भी अच्छा रहेगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, किन्तु कभी-कभी चोट, दुर्घटना, वात रोगों, जलन आदि रोगों से आपको कष्ट प्राप्त हो सकता है। आपके अधिक भावुक होने पर आपको रक्तचात तथा स्नायुतंत्र की बीमारियों से भी पीड़ित होना पड़ सकता है, जिसका निराकरण उचित आहार-विहार तथा उपचार से ही किया जा सकेगा।

आपका जन्म मिथुन लग्न में 26 अंश 40 कला से 30 अंश 00 कला तक होने से आप विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। आपका भावुक हृदय होने से आप में निर्णय शक्ति बहुत तीव्र होगी। आप बहुत परिश्रमी होंगे, जब तक अपने ध्येय तक नहीं पहुँचेंगे परिश्रम करते रहेंगे। आपकी पढ़ने-लिखने में बहुत रुचि रहेगी। आप प्रत्येक प्रकार का विषय पढ़ने में रुचि रखेंगे, तथा उसका जीवन में उपयोग भी करेंगे। आप कद में लम्बे, गेहुँए रंग तथा बलिष्ठ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। किसी भी व्यक्ति को अपनी वाणी से प्रभावित करने में सक्षम होने के कारण आप आकर्षक व्यक्तित्वधारी व्यक्ति होंगे। अपने जीवन को आप स्वयं ही निर्मित करेंगे। अर्थ संचय के क्षेत्र में आप प्रवीण होंगे। आपके कठोर परिश्रम तथा भाग्य का सहारा मिलने से आप धन एकत्र करने में सफल रहेंगे। आपका बचपन आर्थिक रूप से इतना समृद्ध नहीं रहेगा, किन्तु युवावस्था में आपकी आर्थिक



DEVESH**लग्न विचार**

स्थिति सबल हो जायेगी।

पर्यटन का आपको शौक होगा। शिक्षा अथवा व्यवसाय के लिये आपकी विदेश यात्रा भी सम्भव है। राजनीति में आपकी रुचि हो सकती है। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा तथा सन्तान सुख भी अच्छा रहेगा। आप लेखन, कला, अध्यापन, व्यवसायी, प्रेस रिपोर्टर, एजेन्ट, वाणिज्यिक कार्यों आदि से धनोपार्जन करेंगे। आपको वात रोग, चोट, दुर्घटना, स्नायु रोग तथा रक्तचाप आदि रोगों से कष्ट होगा।



DEVESH

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से आदर्श भाव में अपने शत्रु शुक्र की राशि वृषभ में स्थित है। द्वादश का सूर्य सामान्यतः अशुभ फल ही प्रदान करता है। अतः यह आपके लिये शुभ नहीं रहेगा। यह सूर्य आपको बचपन से ही कष्ट प्रदान करने लगेगा। आय कम तथा खर्चा अधिक होगा।

आपके स्वभाव में भी रुखापन आयेगा। यह सूर्य आपको शारीरिक रूप से भी पीड़ित करेगा। आपको नेत्र रोग हो सकता है। आयात-निर्यात या विदेश व्यापार में भी हानि उठानी पड़ सकती है। आपके भाई-बहिन आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। आप पर चारित्रिक लांछन लगने का भी भय रहेगा। आपके पराक्रम तथा उत्साह में कमी रहेगी। किसी भी कार्य को करने में कई प्रकार की बाधाएं आयेंगी तथा धन की कमी से कार्य पूर्ण करने में विलम्ब होगा। आपको व्यापार में भी घाटा हो सकता है।

इस सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ती है जिसका स्वामी मंगल सूर्य का मित्र है। यह आपको शत्रु पक्ष से भी कभी-कभी लाभ दिला सकता है। रोगों से विशेष सावधानी अपेक्षित है। आपके सम्बन्ध अपने पिता से कटु रह सकते हैं। राज्य पक्ष आपके प्रतिकूल रहेगा। राज्य की ओर से आपको पीड़ित होना पड़ सकता है।

मिथुन लग्न में द्वादश भाव के सूर्य के व्यय भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि में स्थित होने से आपका खर्च अधिक रहेगा परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से आपको लाभ होगा। भाई-बहनों के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी आपको हानि उठानी पड़ सकती है। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः भीतरी रूप से कमजोर होते हुए भी अपनी कमजोरी को छिपाकर आप प्रकट रूप में हिम्मत दिखाते हुए शत्रु पक्ष पर अपना प्रभाव कायम रखने में सक्षम रहेंगे। आप परिश्रमी व्यक्ति होंगे।

चन्द्र

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में, मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से चन्द्र की मित्रता है। सामान्यतः एकादश स्थान में चन्द्र, अच्छे फल देता है, अतः यह चन्द्र, आपको श्रेष्ठ फल प्रदान करेगा। यह चन्द्र आपको उदार, सदाचारी तथा परोपकारी बनाता है। स्वभाव से आप मिलनसार होते हैं तथा व्यवहार कुशलता का गुण, लोगों में आपकी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहता है। बचपन में आप यदा-कदा अस्वस्थ होते हैं किन्तु युवावस्था में निरोग रहते हैं, यदि चन्द्रमा क्षीण या पापाक्रान्त हो तो, विभिन्न रोग पीड़ित कर सकते हैं। आपकी बुद्धि तीव्र होती है। शैक्षणिक जीवन में, विज्ञान तथा अभियान्त्रिकी के क्षेत्र में,



DEVESH

ग्रह विचार

अध्ययन करने में आपकी रुचि रहेगी। आपका शैक्षणिक रिकॉर्ड भी अच्छा रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहती है। आपको राज्य शासन या निजी क्षेत्र में अच्छी सर्विस प्राप्त हो सकती है। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत भी हो सकते हैं। व्यापार में भी आपको लाभ प्राप्त होगा। समाज में भी आप प्रतिष्ठित रहेंगे।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान पर तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से चन्द्र की शत्रुता है। आपको सन्तान सुख प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। सन्तान के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता रहेगी, सन्तान सुख भी मध्यम रहेगा। मानसिक तनाव तथा चिन्ताएं भी रह सकती हैं। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा।

मिथुन लग्न में एकादश भाव के चन्द्रमा के लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की राशि मेष पर स्थित होने से आपको धन का विशेष लाभ प्राप्त होगा। साथ ही आपको कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः आपको सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होगी।

मंगल

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में मिथुन राशि में ही स्थित है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। सामान्यतः लग्न स्थान का मंगल सामान्य फल देता है। यहाँ षष्ठेश तथा एकादशेश मंगल लग्न स्थान में स्थित होने से आपको अच्छे फल प्राप्त होंगे। आप मध्यम कद, गौर वर्ण तथा सामान्य स्वस्थ वाले व्यक्ति होंगे। प्रथम स्थान का मंगल आपकी कुण्डली को मंगलीक बनाता है। आपका स्वभाव वाचाल होगा, अतः आपके मित्र अधिक रहेंगे। आपकी यह प्रवृत्ति कई लोगों को आपका विरोधी भी बना सकती है, परन्तु विरोधी आपका अनिष्ट करने में समर्थ नहीं हो पायेंगे। आप अनेक कलाओं में प्रवीण तथा समाज में प्रतिष्ठित रहेंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः सामान्य रहेगा। यदा-कदा, रक्तविकार, चर्म रोग, सिर दर्द आदि रोग हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपकी सर्विस में उन्नति अधिक होगी। आपको उत्तम पद-प्राप्त होगा। डॉक्टर, इन्जीनियर, वकील, अधिकारी, फिटर आदि पदों पर आप सफलतापूर्वक कार्य करेंगे। जीवन के मध्यकाल में अर्थ संचय करके आप समृद्ध बन जायेंगे।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपके सम्बन्ध अपनी माता से सामान्य रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में विलम्ब सम्भव है। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपकी पत्नी सुशिक्षित, अभिमानी तथा गर्म स्वभाव की होगी। उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। आपका



DEVESH

ग्रह विचार

द्वि-विवाह भी सम्भव है। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो मंगल की उच्च राशि है। आप दीर्घायु होंगे। आपको आकस्मिक धन लाभ सम्भव है। मिथुन लग्न में प्रथम भाव के मंगल के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित होने से आपको शारीरिक श्रम के द्वारा धन का यथेष्ट लाभ प्राप्त होगा तथा शत्रु-पक्ष में भी विजय प्राप्त होगी। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः माता एवं सुख के पक्ष में आपको कुछ असन्तोषयुक्त लाभ प्राप्त होगा। मंगल की सातवीं दृष्टि के सप्तम भाव में पड़ने से आपको स्त्री के सम्बन्ध में कुछ रोग एवं परेशानी हो सकती है, परन्तु परिश्रम के द्वारा व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा। मंगल की आठवीं उच्च-दृष्टि के अष्टम भाव में पड़ने से आपकी आयु में वृद्धि होगी तथा पुरातत्त्व का लाभ भी आपको प्राप्त होगा।

बुध

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में, वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से बुध की मित्रता है। सामान्यतः द्वादशस्थ बुध शुभफलदायक नहीं रहता, यहाँ लग्नेश तथा चतुर्थेश बुध, द्वादश स्थान में आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको चतुर तथा खर्चीली प्रवृत्ति का व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कठोर तथा रुखा रहता है। आपके मित्रों की संख्या कम रहेगी तथा परिजन भी आपसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। अपने व्यवहार से आप मित्रों को भी शत्रु बना लेते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहता है। यदा-कदा नेत्र रोग, मस्तिष्क तथा नाड़ियों के रोगों से पीड़ा हो सकती है। बाल्यावस्था में कष्ट अधिक रहता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहती है। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, वाणिज्य विषयों में अधिक हो सकता है। ललित कला, संगीत आदि विद्याओं में रुचि रहेगी। परिश्रम अधिक करना पड़ सकता है। भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। माता से सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में विलम्ब सम्भावित है। आपकी प्रवृत्ति खर्चीली होती है किन्तु अधिकांश व्यय शुभ कार्यों में हो सकता है। आपको कुसंगति तथा व्यसनों से बचकर रहना चाहिये। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। आप अध्यापक, पुस्तक विक्रेता, क्लर्क, लेखक आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ मध्यम रहेगा। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है।

इस बुध की सप्तम पूर्ण दृष्टि, षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। आपको कभी-कभी रोगों से पीड़ा हो सकती है। शत्रु आपकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाने तथा आपको कोर्ट-कचहरी में फंसाने के प्रयास करते हैं किन्तु आप चतुराई से उन्हें विफल कर सकते हैं।

मिथुन लग्न में दशम भाव के बुध के व्यय भवन तथा बाहरी सम्बन्धों के भवन में अपने मित्र शुक्र की



DEVESH

ग्रह विचार

वृषभ राशि पर स्थित होने से आपका खर्च अधिक रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही आपके माता, भूमि, मकान आदि के सुख-सम्बन्ध में कुछ कमी बनी रह सकती है तथा आपको अपनी जन्म भूमि से दूर रहकर ही सुख प्राप्त होगा। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः आप शत्रु-पक्ष में शान्ति एवं विवेक के द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। खर्च की अधिकता के कारण आप भीतरी रूप से चिन्तित रहते हुए भी अपने प्रभाव एवं सम्मान को बनाये रखेंगे।

गुरु

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मीन राशि में स्थित है, जो गुरु की स्वराशि है। सामान्यतः दशम स्थान में स्थित गुरु शुभ फल प्रदान करता है। यहाँ सप्तमेश तथा दशमेश गुरु दशम स्थान में स्वराशिस्थ होकर आपको श्रेष्ठ फलदाता रहेगा। यह गुरु आपको विद्वान्, आस्तिक, चरित्रवान्, पराक्रमी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहता है। आपके व्यवहार से मित्र तथा परिजन आपसे प्रसन्न रहते हैं। आपके मित्र भी गुणवान् तथा आपके कार्यों में सहायक सिद्ध होंगे।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा-कदा वातविकार तथा आँतों की बीमारी से कष्ट आपको हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, इतिहास, संस्कृत, पुरातत्त्व, विधि आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन तथा पर्यटन में भी आपकी रुचि रहती है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। आपकी पत्नी सुशिक्षित, गुणवान्, तथा शान्त स्वभाव की स्त्री होती है। आपके साथ उसके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। आपकी सन्तान को कष्ट होना सम्भव है। आपके सम्बन्ध अपने पिता से अच्छे रहते हैं। राज्य पक्ष की अनुकूलता से आपके कार्यों के बनने में आसानी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप उच्च कोटि के साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, प्राध्यापक, आचार्य, वकील, मजिस्ट्रेट आदि बन सकते हैं। आपको सरकारी नौकरी भी मिल सकती है। व्यापार में भी आपकी उन्नति होगी।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आपका विभिन्न स्रोतों से धन लाभ होगा। कुटुम्ब का सुख भी आपको मिलता है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। आपको यदा-कदा रोगों से कष्ट हो सकता है। आपके प्रभाव तथा अच्छे व्यवहार से शत्रु भी आपके मित्र बन जाते हैं।



DEVESH

ग्रह विचार

मिथुन लग्न में दशम भाव के गुरु के केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपनी स्वराशि मीन पर स्थित होने से आपको राज्य एवं पिता के द्वारा सुख, सहयोग एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलेगी। गुरु के अपनी पाँचवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण आपको धन-संचय की उत्तम शक्ति प्राप्त होगी। गुरु के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण आपको माता, भूमि, मकान, सम्पत्ति आदि का पर्याप्त सुख मिलेगा तथा नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने के कारण आप शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली बने रहेंगे तथा मामा के द्वारा भी आपको सहायता मिलेगी।

शुक्र

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में, मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से शुक्र के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः एकादशस्थ शुक्र अच्छे फल देता है, यहाँ पंचमेश तथा द्वादशेश शुक्र, एकादश स्थान में स्थित होकर आपको शुभ फल प्रदान करेगा। यह शुक्र आपको विद्वान, कला प्रवीण, दीर्घायु, परोपकारी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी रहेगा, आपकी व्यवहार कुशलता से आगन्तुक प्रभावित रहेंगे। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपके कार्य एवं व्यवसाय को बढ़ाने में मित्र सहायता भी कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा, पेट सम्बन्धी विकारों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, संगीत, कला, भाषा, काव्य, चिकित्सा आदि विषयों में रहेगा। नाट्य, चलचित्र, गायन, वादन में भी आपकी रुचि रहती है। खेल-जगत में भी आप यश प्राप्त कर सकते हैं। अपनी उपलब्धियों के लिए आपको सम्मानित या पुरस्कृत भी किया जा सकता है। आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा आपकी पत्नी सुन्दर, सुशिक्षित किन्तु कुछ तेज स्वभाव की हो सकती है, आपसी प्रेम तथा व्यवहारकुशलता से दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान सुख में कमी या सन्तान को कष्ट भी हो सकता है।

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप प्राध्यापक, गणितज्ञ, चिकित्सक, अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार, लेखक, कवि आदि बन सकते हैं। व्यापार में पर्याप्त लाभ मिल सकता है। इस शुक्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र, स्वयं ही हैं। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा। सन्तान को कष्ट सम्भावित है।

मिथुन लग्न में एकादश भाव के शुक्र के लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आपकी आमदनी अच्छी रहेगी, परन्तु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आपका खर्च भी अधिक बना रहेगा। इसके साथ ही आपके मस्तिष्क में कुछ चिन्ता एवं परेशानी बनी रहेगी। यहाँ से



DEVESH

ग्रह विचार

शुक्र अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि तुला में पंचम भाव को देखता है, अतः आपको सन्तान के पक्ष से सुख प्राप्त होगा तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी प्रवीणता प्राप्त होगी, परन्तु शुक्र व्ययश होने के कारण आपको सन्तान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ उठानी पड़ सकती है तथा आपके मस्तिक में चिन्ता भी बनी रहेगी।

शनि

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से शनि की शत्रुता है। सामान्यतः षष्ठस्थ शनि अच्छे फल देता है। यहाँ अष्टमेश तथा नवमेश शनि षष्ठ स्थान में आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह शनि आपको व्यसनों तथा बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। आपका स्वभाव अभिमानी रहता है तथा आपको क्रोध भी शीघ्र ही आ जाता है। आपके कठोर व्यवहार से परिजन आप से भीत रहते हैं, परन्तु मित्रों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। आपको मधुमेह, कोष्ठ बद्धता आदि बीमारियों से कष्ट हो सकता है। बाल्यावस्था में आपको पानी, सर्प एवं विषभय भी रहता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहता है। इसके अतिरिक्त गणित, साहित्य, पुरातत्त्व, विधि आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहती है। तकनीकी विषयों के अध्ययन में आपकी विशेष रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आप दीर्घायु होते हैं। आपको आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। आपकी धर्म में आस्था कम ही रहती है। आपके भाग्योदय में विलम्ब हो सकता है। शत्रु आपको पीड़ित करने के लिये कुचक्र रच सकते हैं किन्तु अपने पराक्रम से आप शत्रुओं को नष्ट करने में सफल रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वकील, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, साहित्यकार, पुरातत्त्ववेत्ता, चिकित्सक आदि बन सकते हैं। व्यापार में भी आपको लाभ होगा।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो शनि की स्वराशि है। आप दीर्घायु होते हैं। आपको यदा-कदा आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से बुध की मित्रता है। आपका व्ययभार बढ़ेगा। आयात-निर्यात के व्यापार में आपको लाभ अधिक मिल सकता है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होते हैं। अपने भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे।

मिथुन लग्न में षष्ठ भाव के शनि के शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर



DEVESH

ग्रह विचार

स्थित होने से आपको शत्रु तथा झगड़े-झंझट के क्षेत्र में सफलता एवं विजय प्राप्त होगी। शनि के अपनी तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टम भाव को देखने से आपकी आयु में वृद्धि होगी तथा आपको पुरातत्त्व का लाभ भी प्राप्त होगा। शनि के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण आपका खर्च बहुत ठाट का रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ मिलेगा। शनि के अपनी दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण आपको भाई-बहिन के सुख में बाधा पड़ सकती है तथा आपके पराक्रम में भी कमी आ सकती है। आप बहुत परिश्रमी व्यक्ति होंगे।

राहु

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में, मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः दशमस्थ राहु अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ दशम स्थान में मीन राशि का राहु आपको शुभ फल प्रद रहेगा। यह राहु आपके व्यवसाय में सफलता प्रदान करता है। आपका स्वभाव गम्भीर तथा आगन्तुकों से व्यवहार अच्छा रहेगा। आपकी विद्वता तथा अन्य गुणों की समाज में प्रशंसा होगी। समाज सेवा के कार्यों में आपकी भागीदारी रहती है। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कफज रोगों के कारण कष्ट हो सकता है। वाहन से भय सम्भव है।

आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्त्व, विधि, दर्शन, भाषा आदि विषयों की ओर रहेगा। ज्योतिष, धर्मशास्त्र तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। आप पर्यटन प्रिय होते हैं, विदेश यात्रा के योग भी हैं। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होता है। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वकील, भाषाविद्, इतिहासकार, मजिस्ट्रेट, सरकारी अधिकारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में उत्तम लाभ हो सकता है। आयात निर्यात का व्यापार अधिक लाभदायक रह सकता है। राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता मिल सकती है।

इस राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्र से राहु की शत्रुता है। आप अर्थ संग्रह के लिये कठोर परिश्रम करेंगे। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यह राहु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से, चतुर्थ स्थान में कन्या राशि को देखता है, जो राहु की स्वराशि है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है। इस राहु की नवम पूर्ण दृष्टि, षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रुओं के कुचक्रों को अपने पराक्रम से नष्ट करने में आप सफल रहेंगे।



DEVESH

ग्रह विचार

मिथुन लग्न में दशम भाव के राहु के केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के सुख-सम्बन्ध में कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है तथा गुप्त-युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता मिलेगी, परन्तु कभी-कभी व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा के ऊपर घोर संकट भी घिर सकते हैं। आप आदर्शवादी हो सकते हैं तथा बहुत कुछ संकट उठा चुकने के बाद अन्त में यश, प्रतिष्ठा एवं भाग्य के क्षेत्र में थोड़ी सफलता प्राप्त कर लेंगे।

केतु

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः चतुर्थ स्थान में केतु अच्छे फल नहीं देता है, यहाँ चतुर्थ स्थान में कन्या राशि का केतु आपको अशुभ फल देगा। यह केतु आपको चिन्तित, प्रवासी, परनिन्दक, शत्रुओं से पीड़ित तथा परेशान व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कठोर रहेगा। मित्रों से मतभेद रहने से उनका पूरा सहयोग प्राप्त होना सम्भव नहीं होगा। आपके कार्य कठिनाई से पूरे हो सकेंगे। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि नहीं रहेगी। भाई-बन्धुओं से भी आपका मेल कम रहेगा। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वातविकार से कष्ट, गुप्त रोग तथा विषप्रयोग का भय भी रह सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, विधि, भाषा, रसायन, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि विषयों में रहेगा। विभिन्न विषयों के अध्ययन से सामान्य ज्ञान बढ़ाने में आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी शौक रहेगा, यात्रा में कष्ट तथा प्रवास में हानि हो सकती है। माता से आपको सुख कम ही प्राप्त होता है। भूमि, भवन, वाहनादि से सुखों की प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, अर्थशास्त्री, वकील, रसायनज्ञ, तकनीकी विशेषज्ञ, भाषाविद् आदि बन सकते हैं। व्यापार में उतार चढ़ाव से मन अशान्त रहेगा तथा लाभ साधारण रहेगा। राजनीति में भी विशेष सफलता नहीं मिल पाएगी। अर्थसंचय में बाधा रह सकती है। यह केतु अपनी पंचम पूर्ण दृष्टि से अष्टम स्थान में मकर राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप दीर्घायु व्यक्ति होंगे। आपको यदा-कदा आकस्मिक धनलाभ भी हो सकता है।

इस केतु की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जो केतु की स्वराशि है। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष से किसी विशेष लाभ की सम्भावना नहीं है। यह केतु अपनी नवम पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के



DEVESH**ग्रह विचार**

सम्बन्ध सम हैं। आपका व्यय भार अधिक रहेगा। आयात-निर्यात के व्यापार में सामान्य लाभ हो सकता है।

मिथुन लग्न में चतुर्थ भाव के केतु के केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित होने से आप घरेलू-सुख को प्राप्त करने के लिए चतुराई का आश्रय लेंगे, परन्तु आपको माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी एवं असन्तोष का सामना करना पड़ सकता है। कन्या राशि पर स्थित केतु को स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः आप अपने गुप्त-धैर्य एवं साहस के बल पर उन्नतः सुख के साधनों में सफलता प्राप्त कर लेंगे तथा स्थायी सुख पाने के लिए भी प्रयत्नशील बने रहेंगे।



DEVESH

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— पन्ना (एमरल्ड) उपरत्न:— बैरूज(एक्वामरीन), मरगज(नेफ्ताइट)

पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य, आयु में वृद्धि करने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— नीलम (ब्लू सफायर) उपरत्न:— काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली)
नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय कारक, धन वृद्धि कारक, व्यावसायिक उन्नति कारक रहेगा।

कारक रत्न:— हीरा (डायमण्ड) उपरत्न:— वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाइट एगोट)
हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके भाग्योदय, व्यापार—व्यवसाय में उन्नतिदायक तथा धन वृद्धि कारक रहेगा।

EESHAY

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 18/04/1977	विक्रमी संवत्	: 2034
जन्म दिन	: सोमवार	शक संवत्	: 1899
जन्म समय	: 07:00:00 घण्टे	ऋतु	: बसन्त
इष्टकाल	: 02:42:50 घटी	मास	: वैशाख
जन्म स्थान	: NAGPUR	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: अमावस्या
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 16:05:28 घण्टे
अक्षांश	: 21:9:00 उत्तर		: 25:26:28 घटी
रेखांश	: 79:6:00 पूर्व	जन्म तिथि	: अमावस्या
स्थानिक समय संस्कार	: -00:13:36 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: रेवती
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 06:39:07 घण्टे
स्थानिक समय	: 06:46:24 घण्टे		: 01:50:36 घटी
साम्पातिक काल	: 20:30:37 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: अश्विनी
वेलान्तर	: -00:00:37 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: विष्कम्भ
सूर्योदय	: 05:54:52 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 23:14:35 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:31:06 घण्टे		: 43:19:18 घटी
दिनमान	: 12:36:14 घण्टे	जन्म योग	: विष्कम्भ
रात्रिमान	: 11:23:46 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: नाग
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 16:05:28 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 25:26:28 घण्टे
अयनांश	: 23:32:30	जन्म करण	: नाग



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



EESHAY

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	कार्तिक	लग्न-लग्नाधिपति	:	मेष-मंगल
दिनांक	:	1,6,11	राशि-राशि स्वामी	:	मेष-मंगल
दिन	:	रविवार	नक्षत्र-चरण	:	अश्विनी-1
नक्षत्र	:	मघा	नक्षत्र स्वामी	:	केतु
योग	:	विष्कम्भ	योग	:	विष्कम्भ
करण	:	बव	करण	:	नाग
प्रहर	:	1	गण	:	देव
वर्ग	:	मृग	योनि	:	अश्व
लग्न	:	मेष	नाड़ि	:	अद्या
सूर्य	:	कर्क	वर्ण	:	क्षत्रिय
चन्द्र	:	मेष	वश्य	:	चतुष्पाद
मंगल	:	सिंह	वर्ग	:	सिंह
बुध	:	वृष	युंजा	:	पूर्व
गुरु	:	कन्या	हंसक (तत्व)	:	अग्नि
शुक्र	:	तुला	जन्म नामाक्षर	:	चू
शनि	:	मिथुन	पाया-राशी	:	स्वर्ण
राहु	:	वृश्चिक	पाया-नक्षत्र	:	स्वर्ण
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	मेष	भयात	:	00:52:36 घटी
सूर्य के अंश	:	मेष 04:21:48	भभोग	:	66:38:14 घटी
लग्न के अंश	:	मेष 23:19:15	भोग्य दशा काल	:	केतु 6 व 10 म 26 दिन

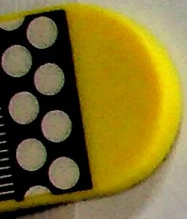
॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्य जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं।

अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध



EESHAY

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

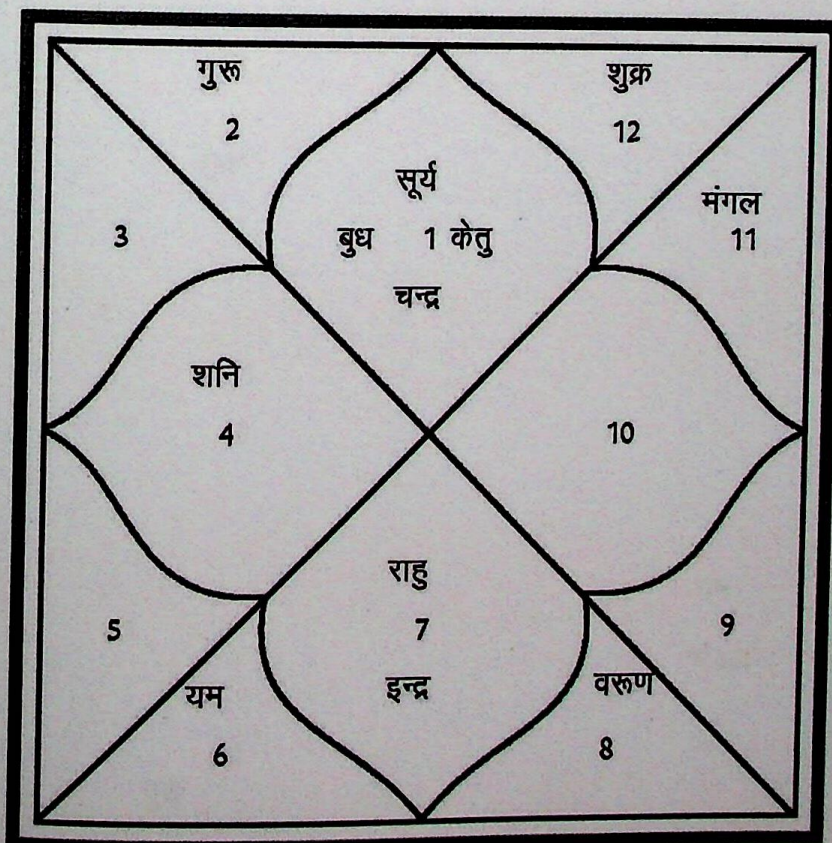
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

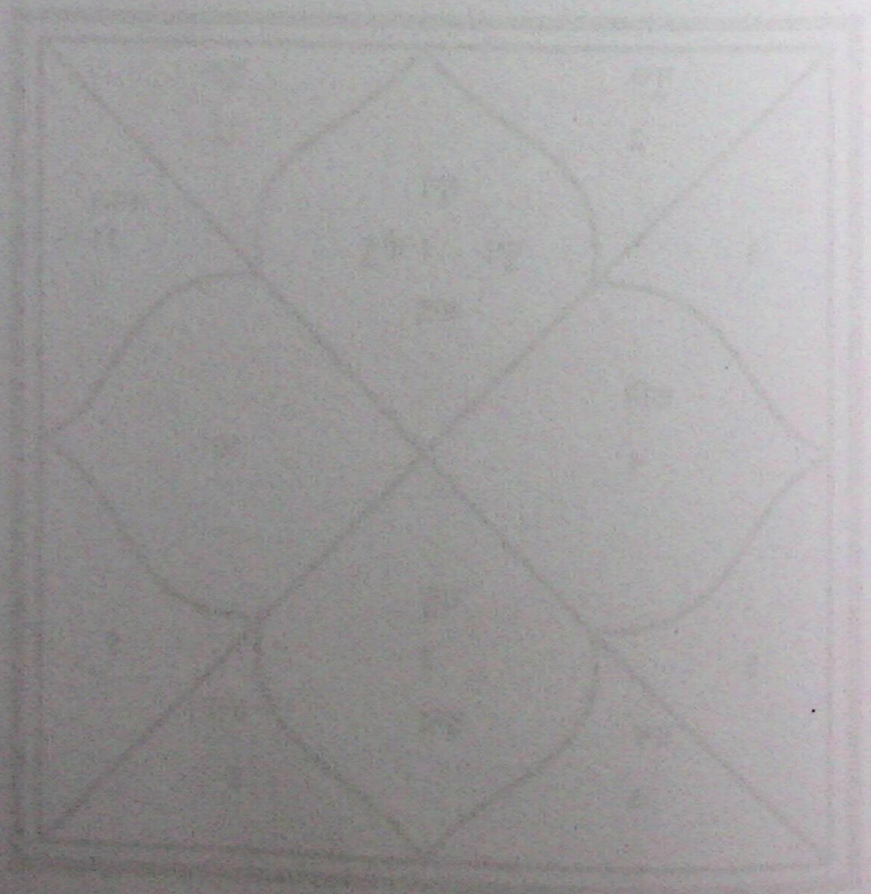
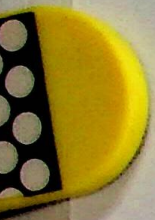
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	मेष	23:19:15	—	भरणी	3	शुक्र	—	—	—
सूर्य	मेष	04:21:48	00:58:40	अश्विनी	2	केतु	उच्च स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	मेष	00:10:31	12:03:31	अश्विनी	1	केतु	सम स्थान	अस्त	मार्गी
मंगल	कुम्भ	29:01:45	00:46:35	पू.भाद्रपद	3	गुरु	सम स्थान	—	मार्गी
बुध	मेष	20:45:53	00:12:16	भरणी	3	शुक्र	सम स्थान	—	मार्गी
गुरु	वृष	09:23:59	00:12:43	कृत्तिका	4	सूर्य	शत्रु स्थान	—	मार्गी
शुक्र	मीन	16:27:06	00:22:17	उ.भाद्रपद	4	शनि	उच्च स्थान	—	वक्री
शनि	कर्क	16:27:07	00:00:45	पुष्य	4	शनि	शत्रु स्थान	—	मार्गी
राहु	तुला	00:48:33	00:00:01	चित्रा	3	मंगल	मित्र स्थान	—	मार्गी
केतु	मेष	00:48:33	00:00:01	अश्विनी	1	केतु	मित्र स्थान	अस्त	मार्गी
इन्द्र	तुला	16:44:11	00:02:28	स्वाति	4	राहु	—	—	वक्री
वरुण	वृश्चिक	22:21:15	00:00:57	ज्येष्ठा	2	बुध	—	—	वक्री
यम	कन्या	18:51:22	00:01:36	हस्त	3	चन्द्र	—	—	वक्री
दशम भाव	मकर	11:45:27	—	श्रवण	1	चन्द्र	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:32:30

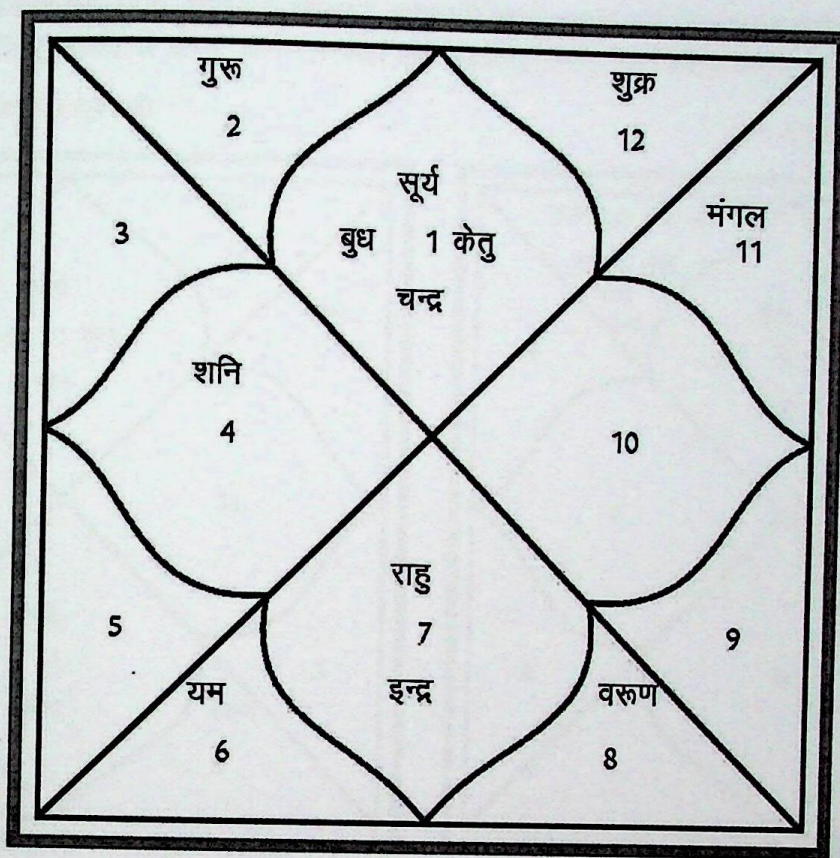
लग्न कुण्डली



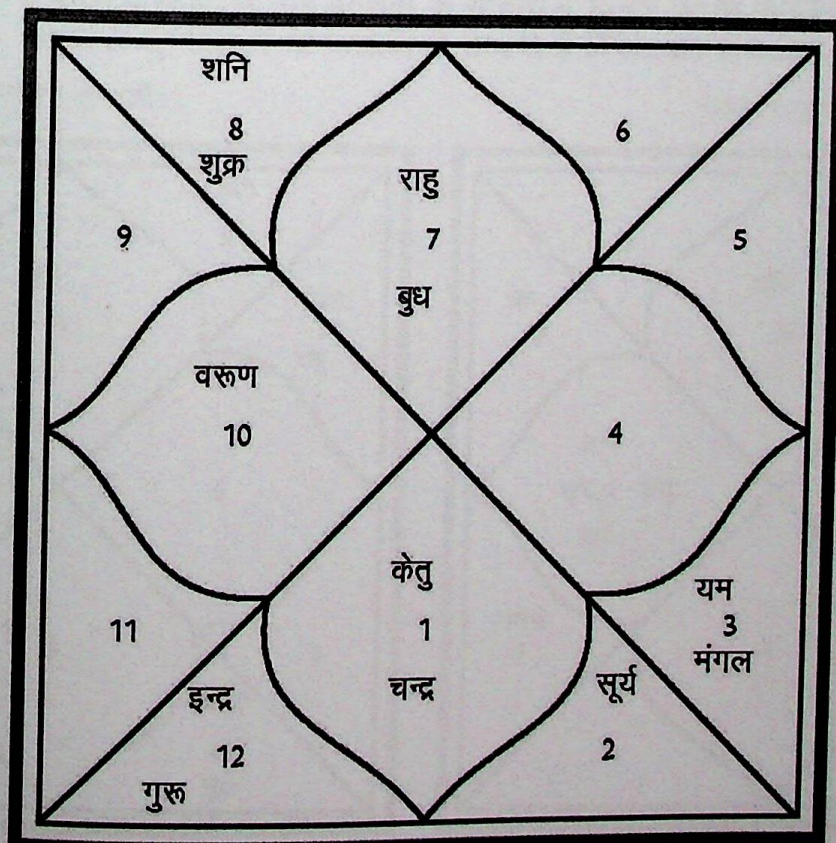


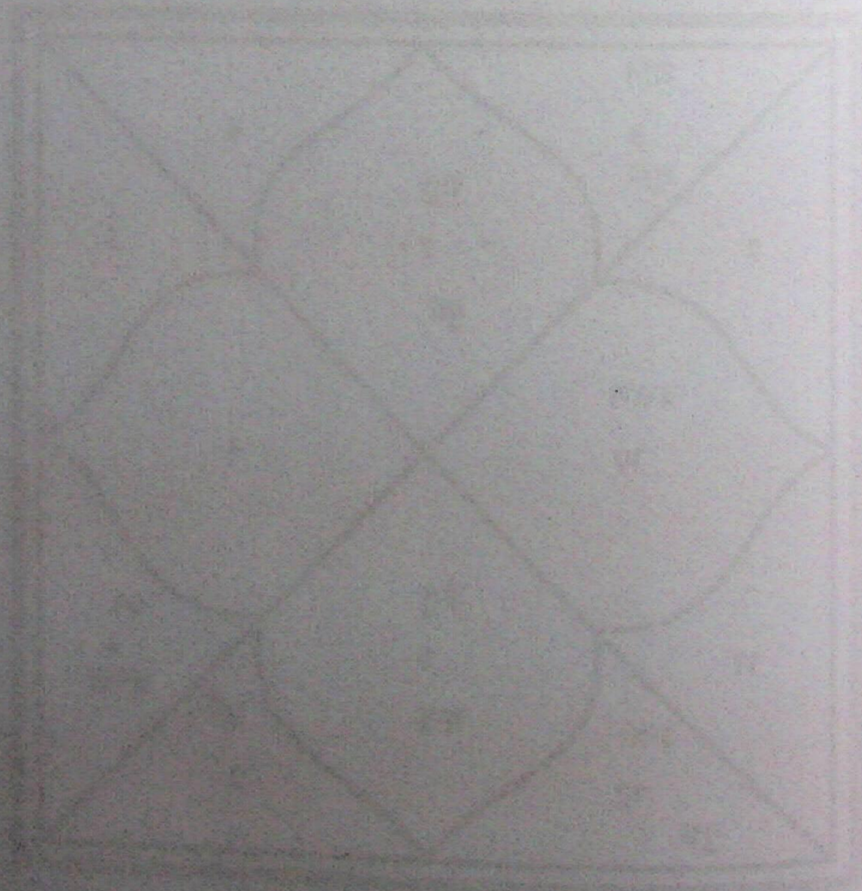
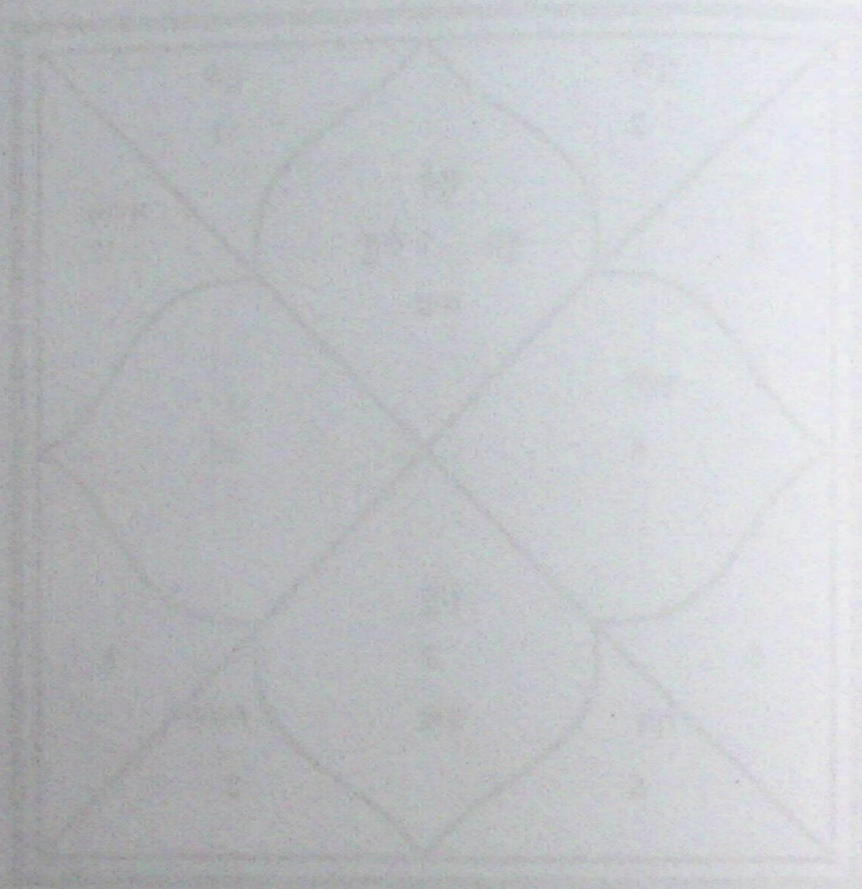
EESHAY

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



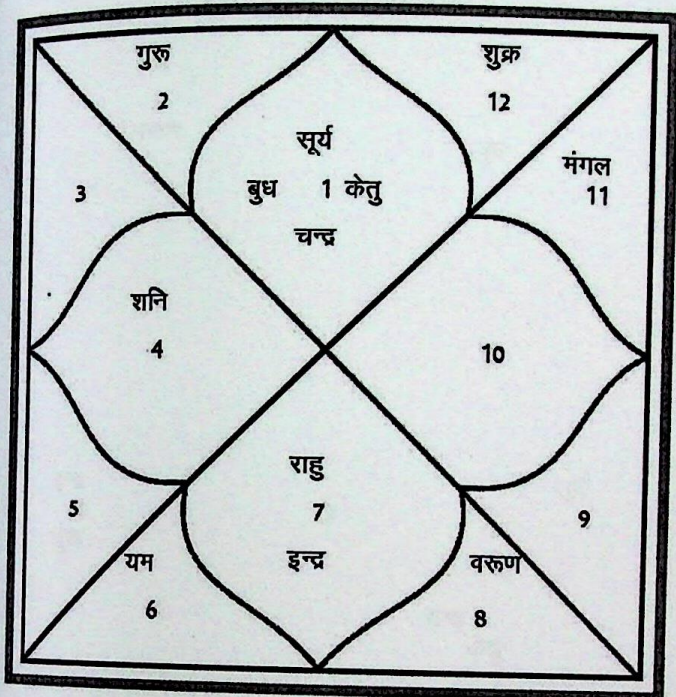


EESHAY

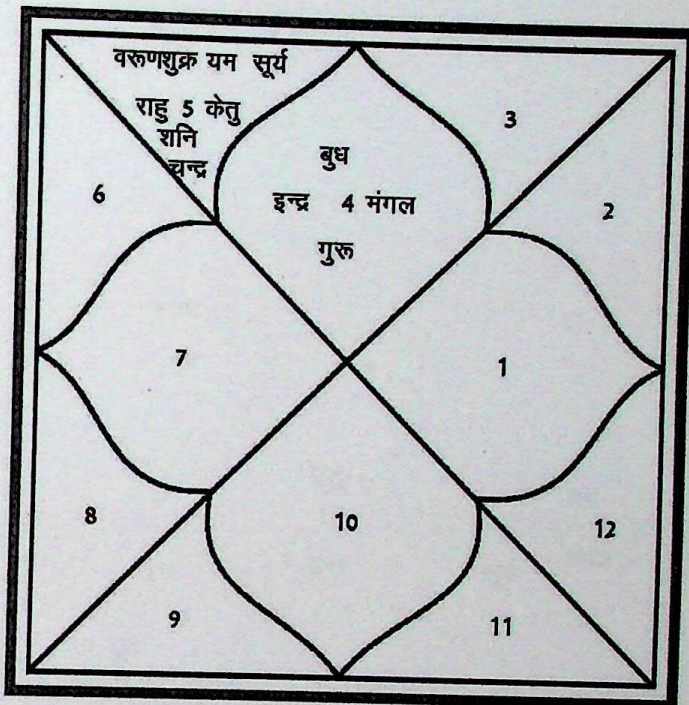
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



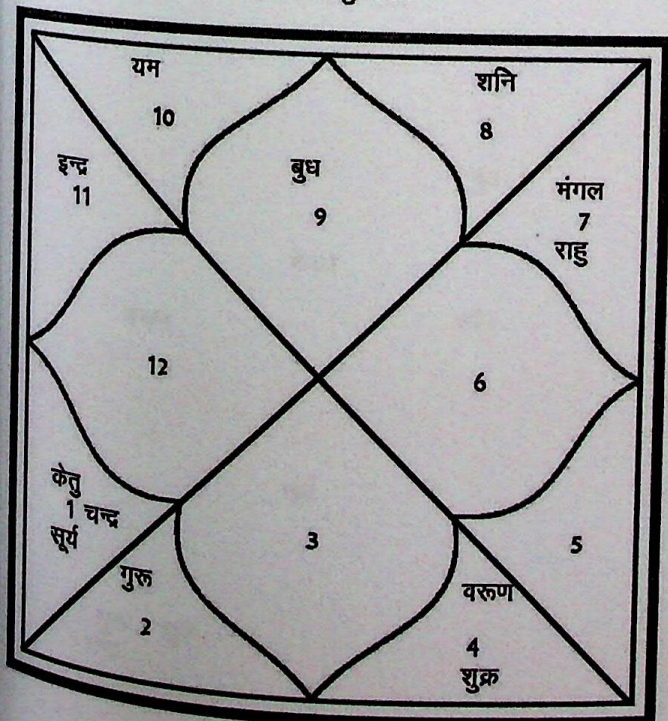
होरा कुण्डली



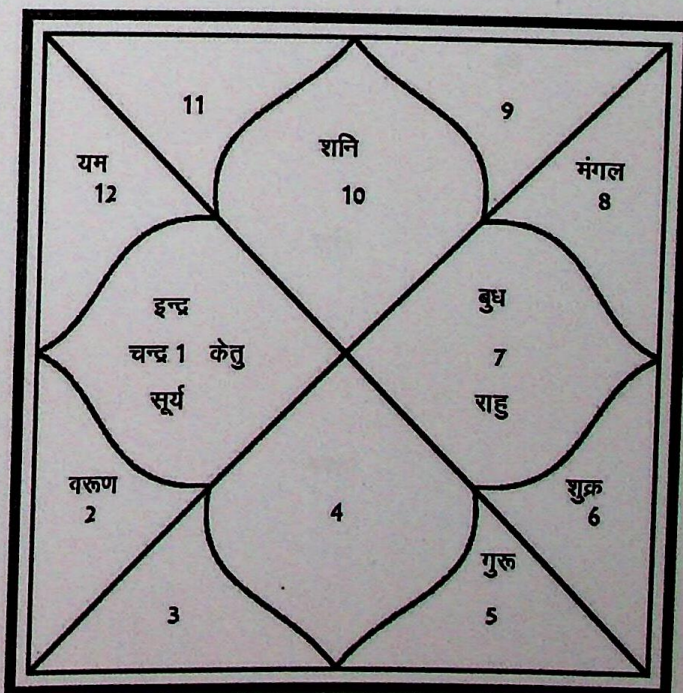
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

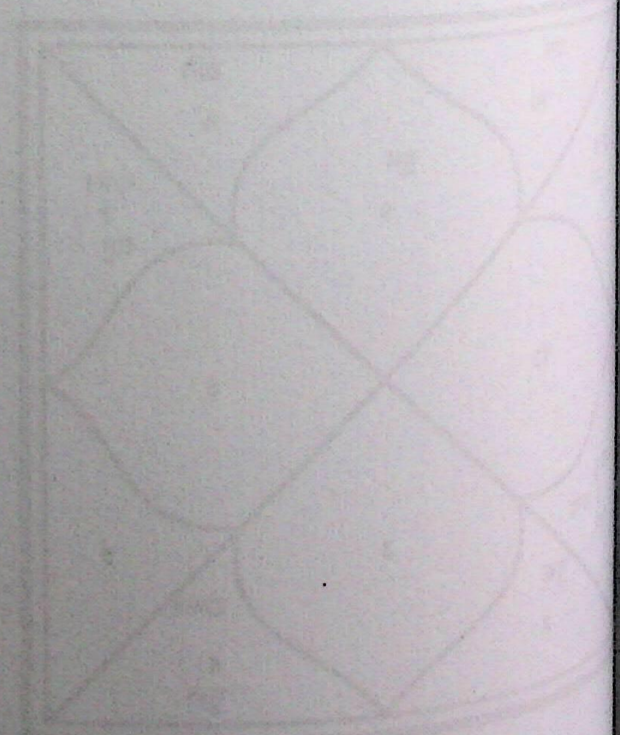
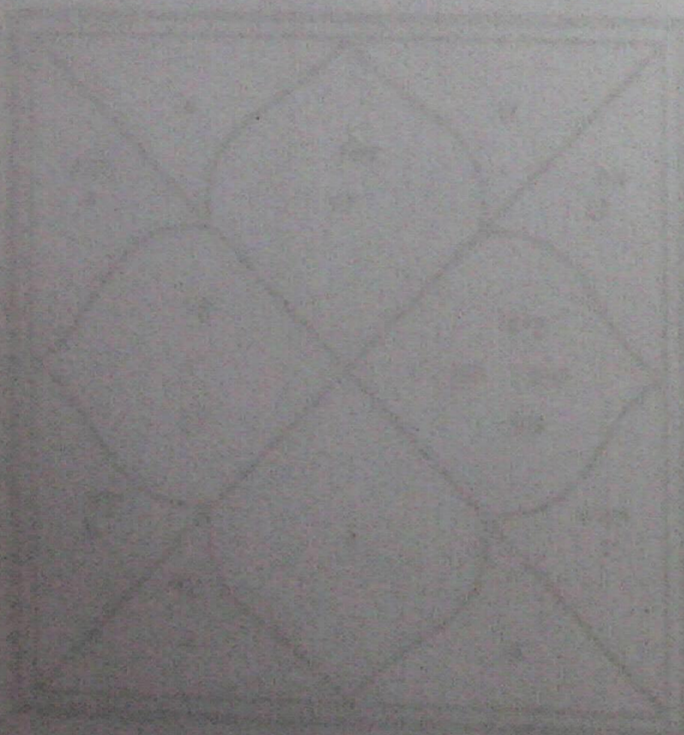
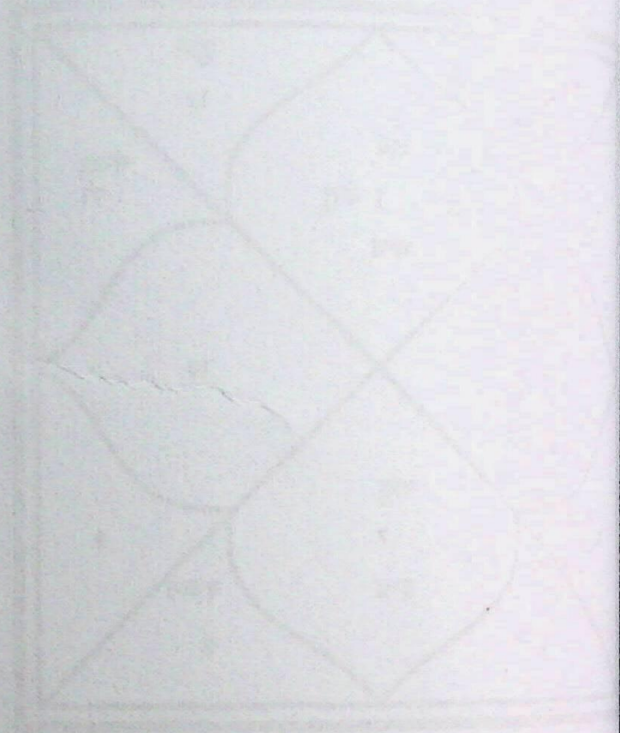
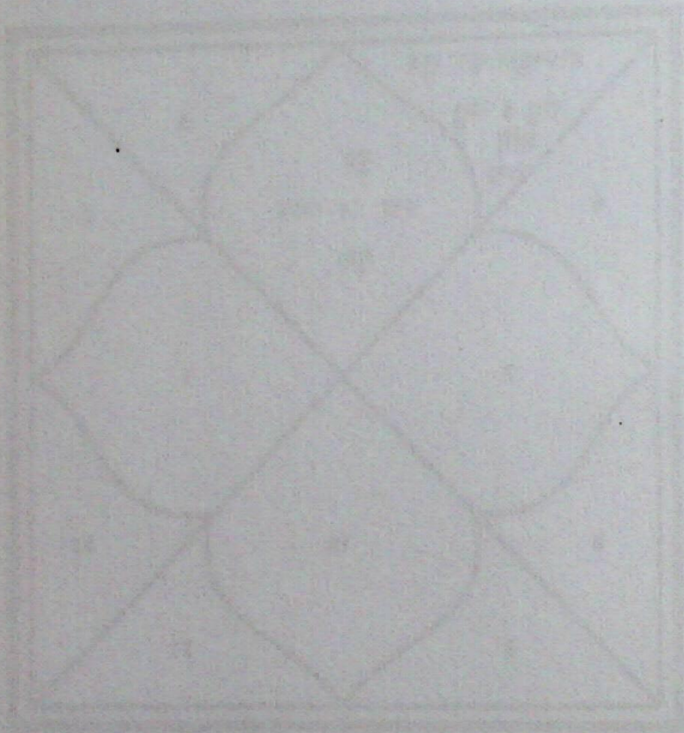
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली





EESHAY

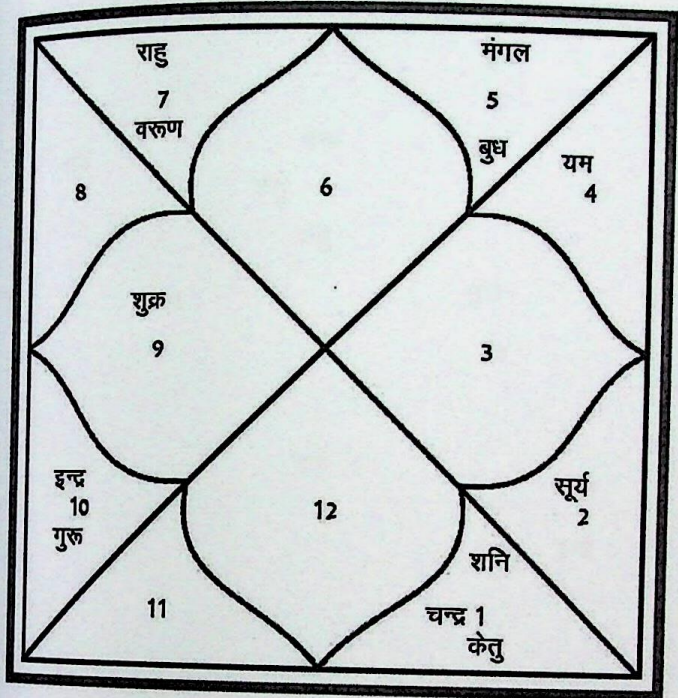
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥

॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

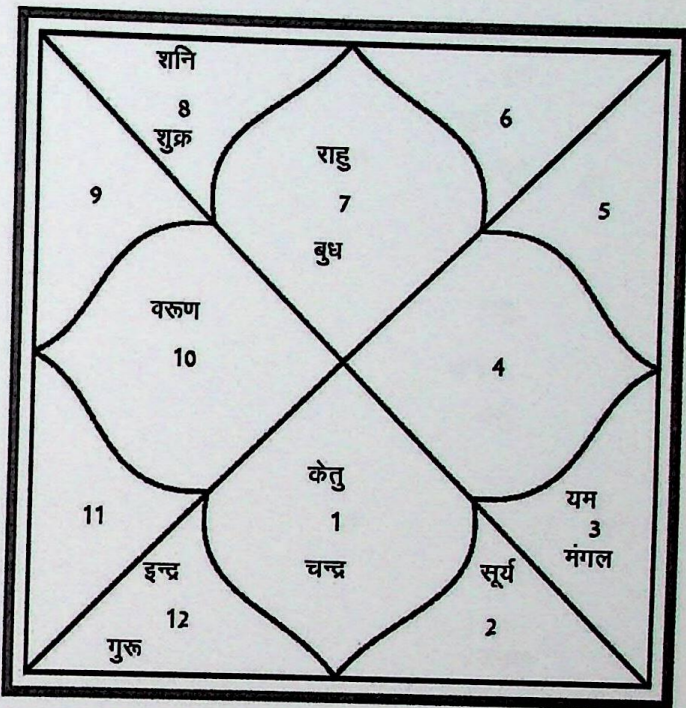
सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।

नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये।

सप्तमांश कुण्डली



नवमांश कुण्डली



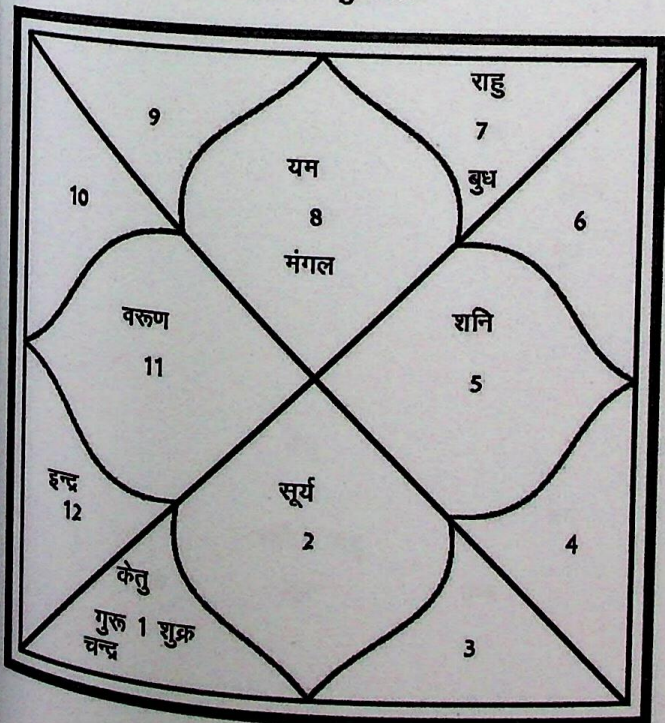
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥

॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

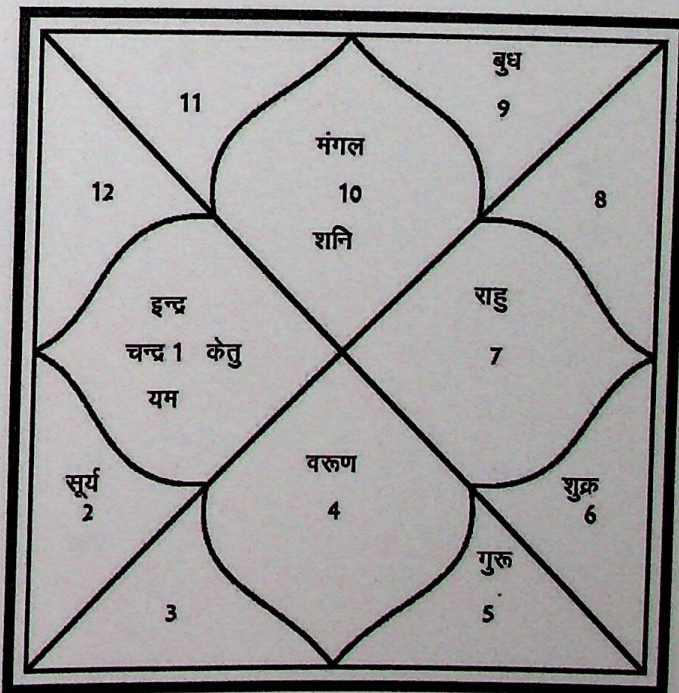
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।

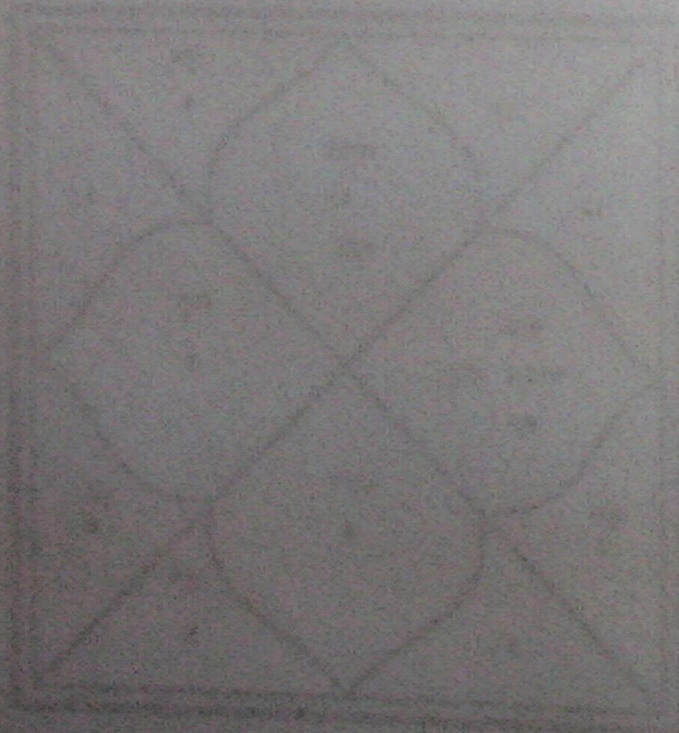
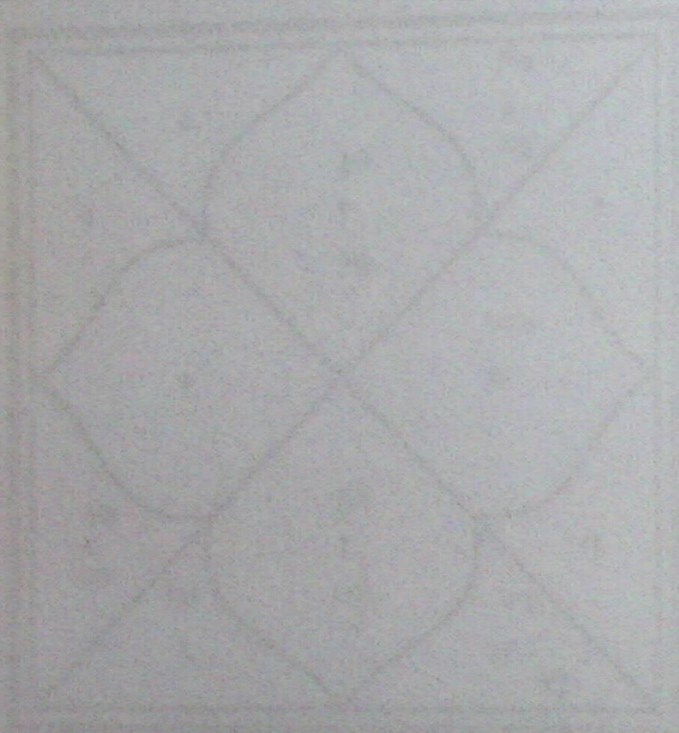
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली





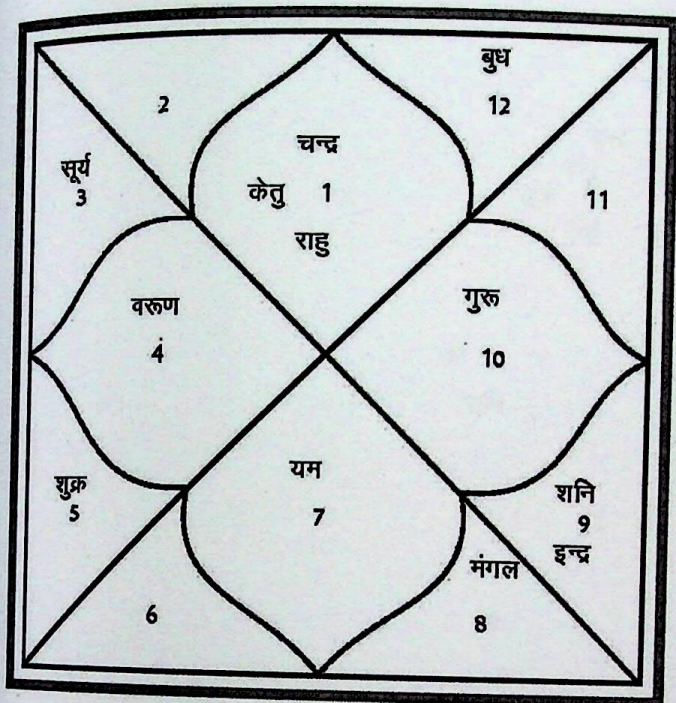
EESHAY

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

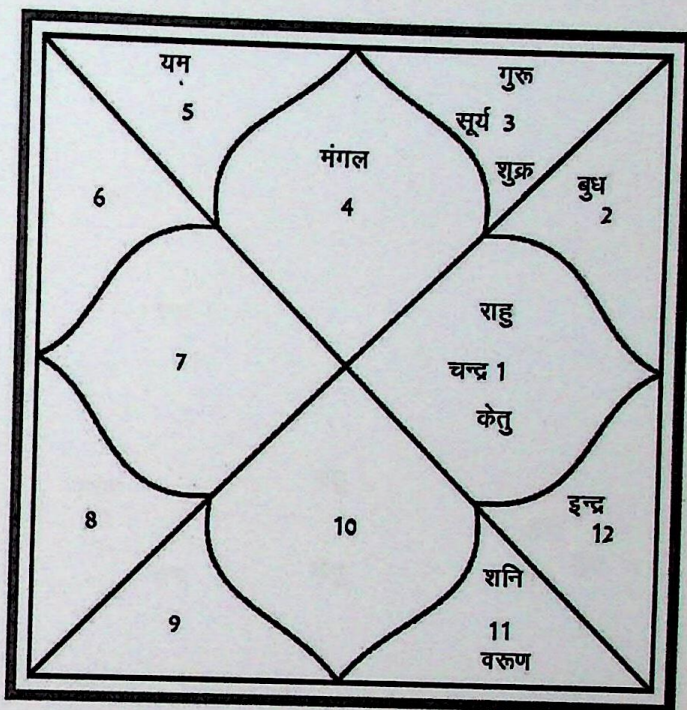
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



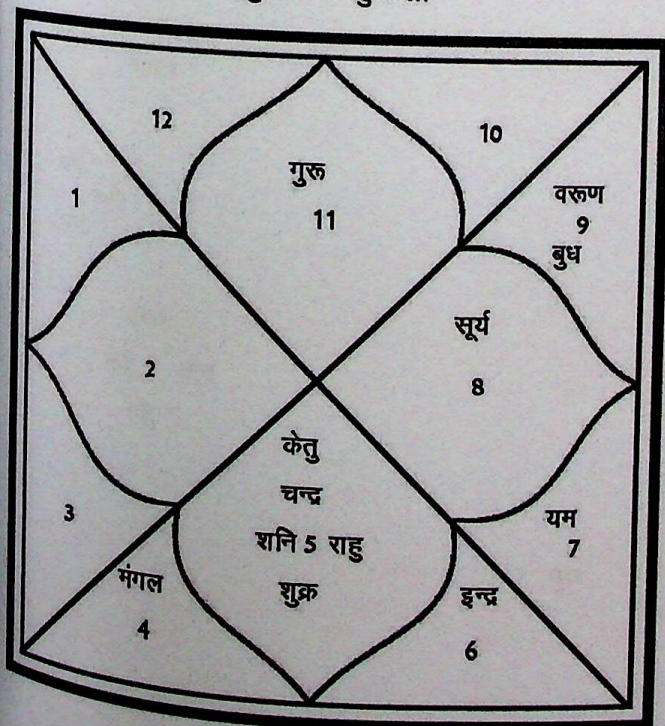
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

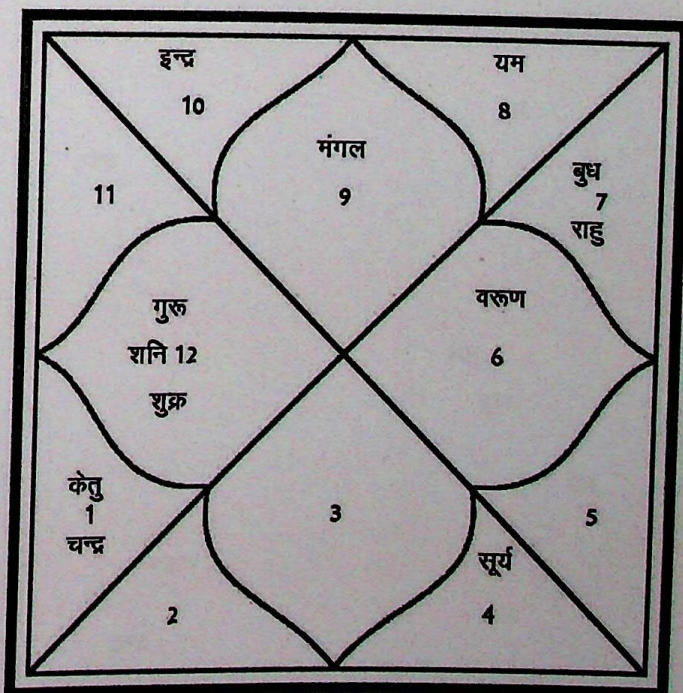
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

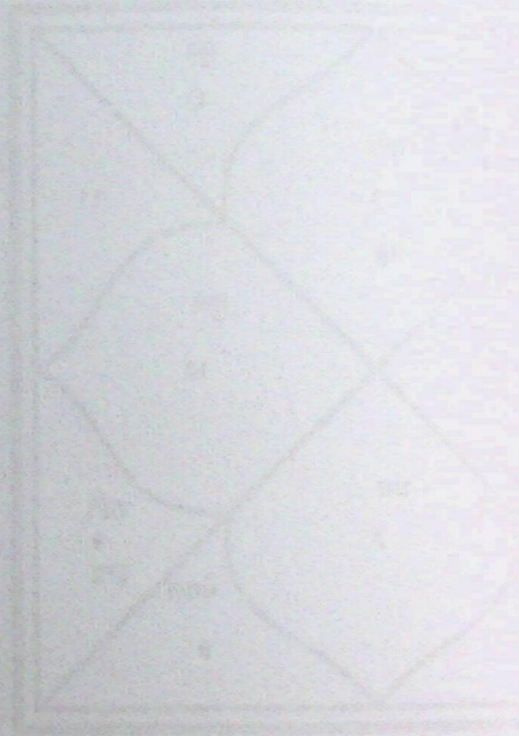
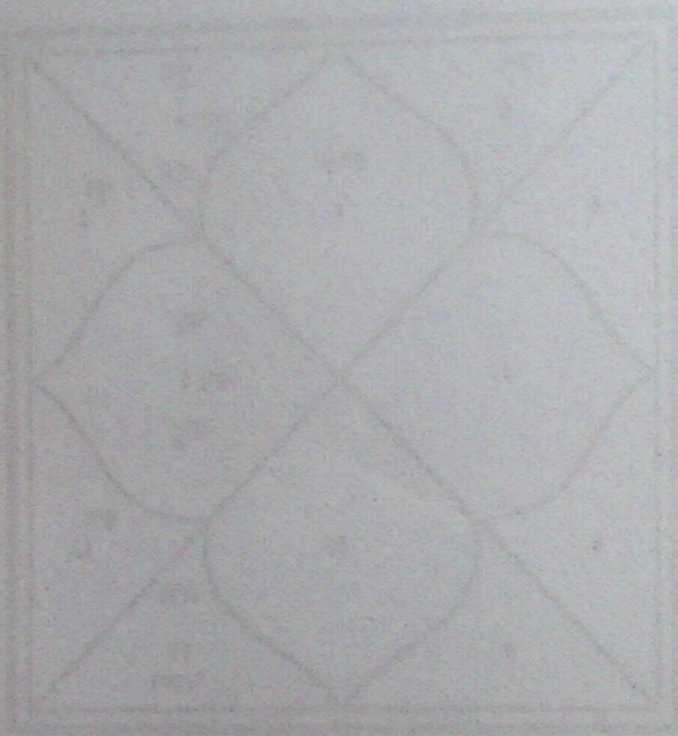
चतुर्विंशांश कुण्डली



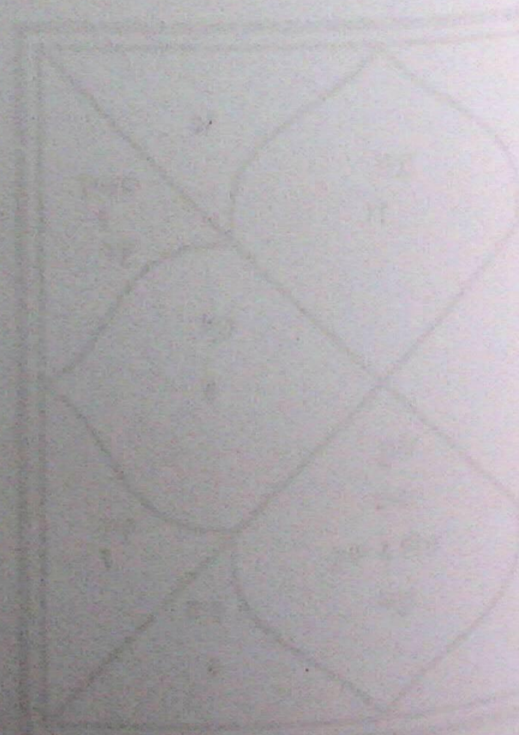
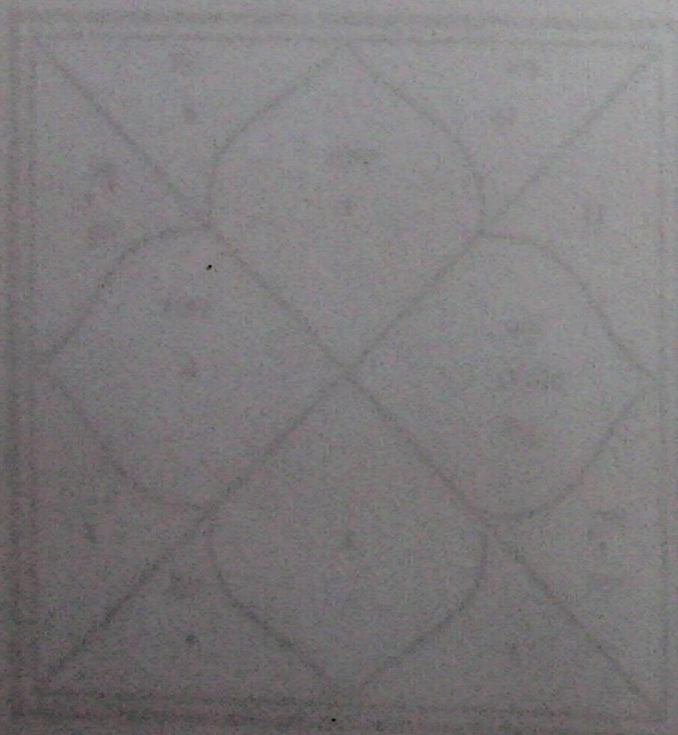
सप्तविंशांश कुण्डली



YANTRA



1. ...
2. ...



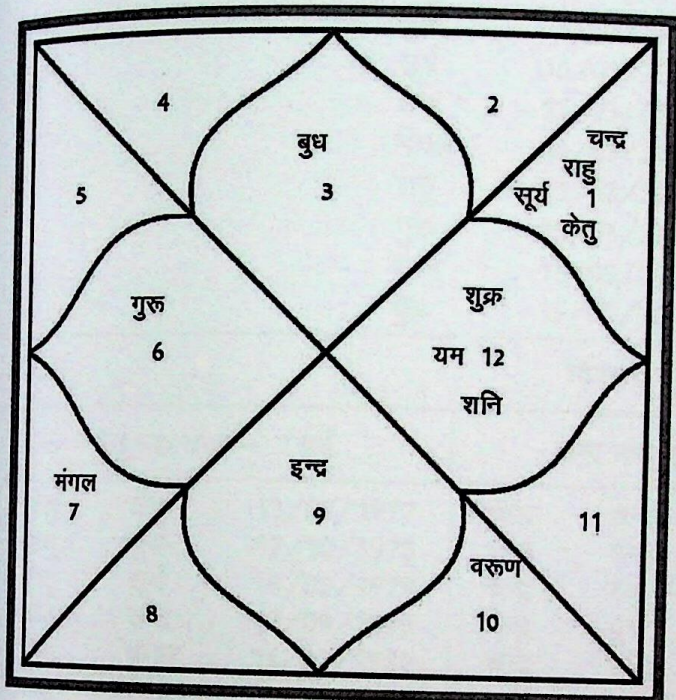
EESHAY

॥ त्रिशांशके अरिष्ट फलम् ॥

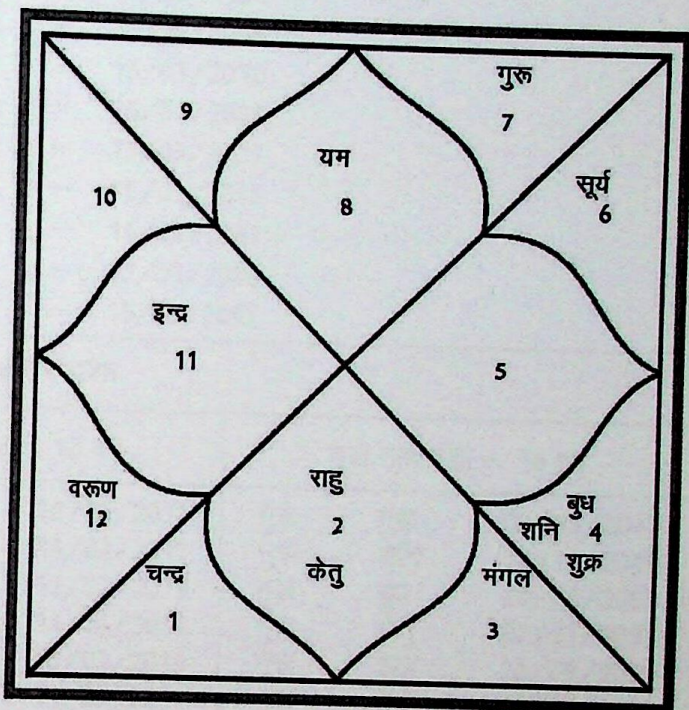
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिशांश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
 खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिशांश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

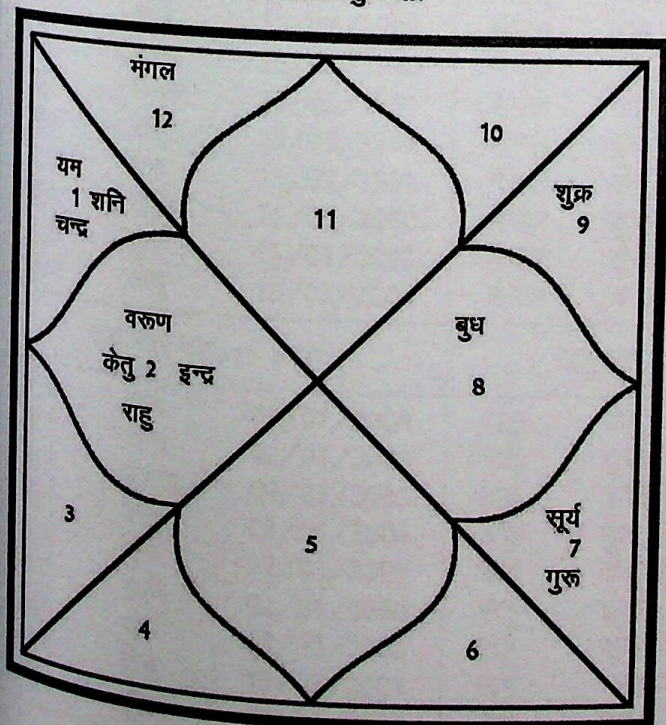


॥ अक्षवेदांशमागे च ॥

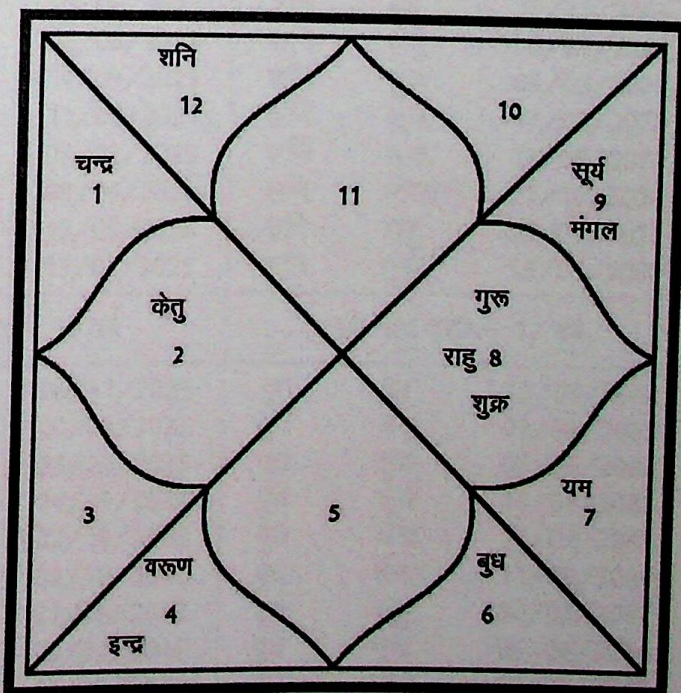
॥ षष्ठ्यंशोऽखिलमीक्षयेत् ॥

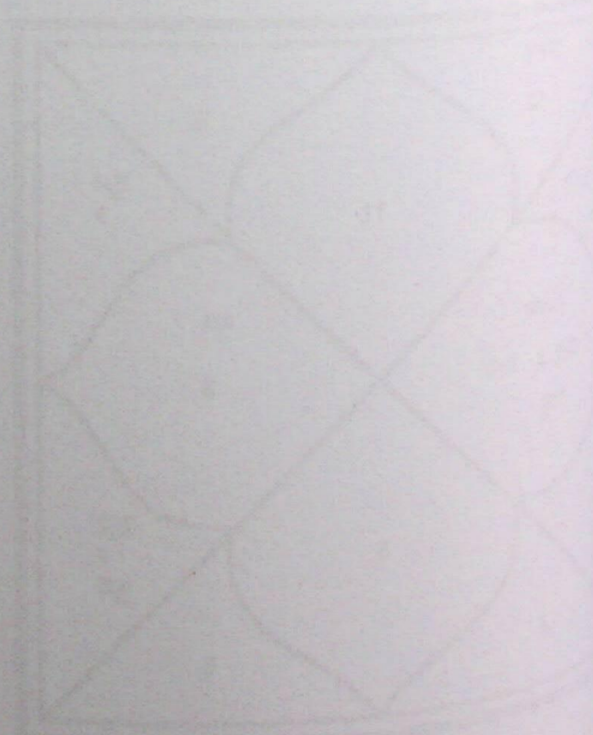
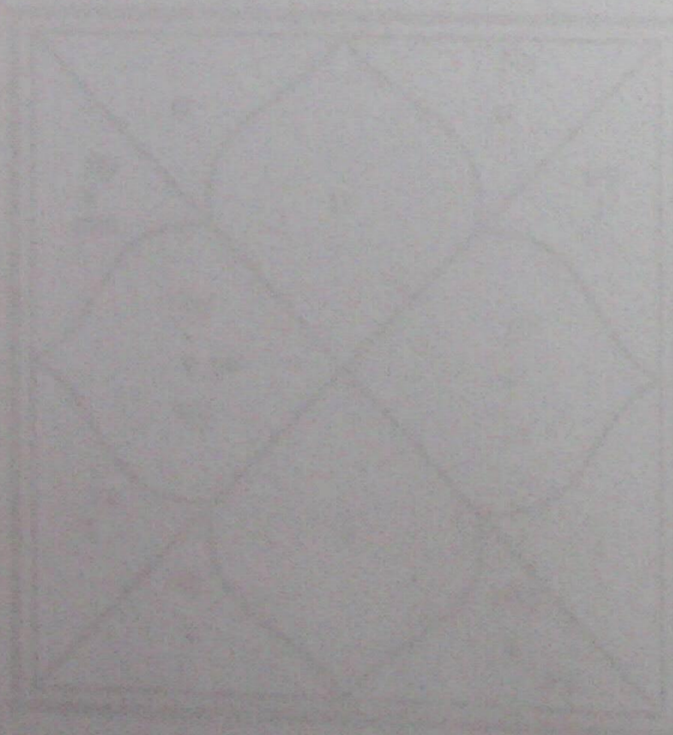
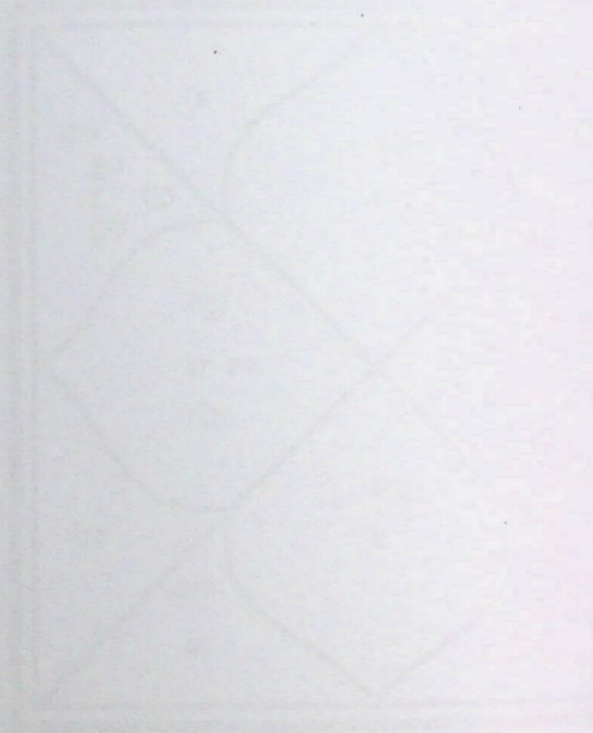
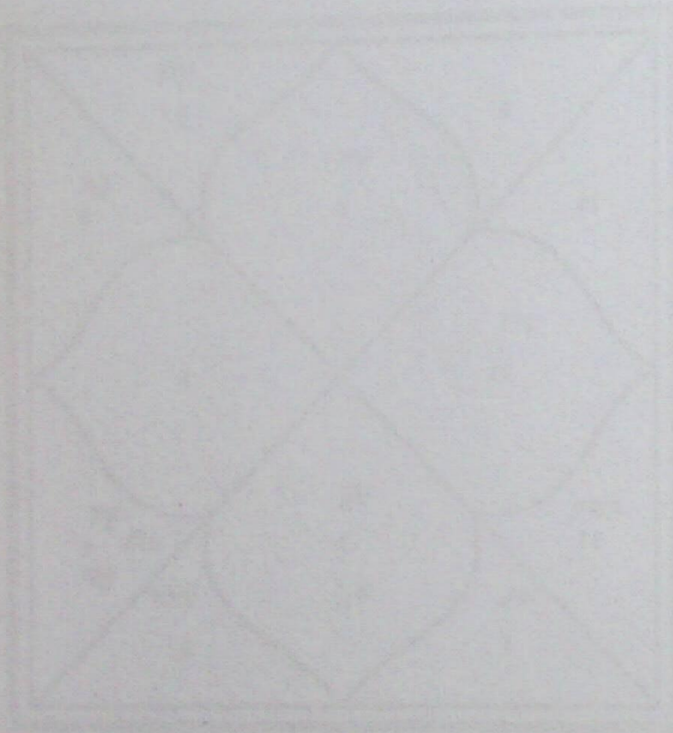
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्
 सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





EESHAY

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - केतु 6 वर्ष 10 मास 26 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

केतु	18/04/1977	-	15/03/1984
शुक्र	15/03/1984	-	15/03/2004
सूर्य	15/03/2004	-	15/03/2010
चन्द्र	15/03/2010	-	15/03/2020
मंगल	15/03/2020	-	15/03/2027
राहु	15/03/2027	-	15/03/2045
गुरु	15/03/2045	-	15/03/2061
शनि	15/03/2061	-	15/03/2080
बुध	15/03/2080	-	15/03/2097

विंशोत्तरी अन्तर दशा

केतु महा दशा - 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष			गुरु महा दशा - 16 वर्ष		
केतु	केतु	12/08/1977	चन्द्र	चन्द्र	15/01/2011	गुरु	गुरु	02/05/2047
केतु	शुक्र	12/10/1978	चन्द्र	मंगल	15/08/2011	गुरु	शनि	14/11/2049
केतु	सूर्य	16/02/1979	चन्द्र	राहु	13/02/2013	गुरु	बुध	20/02/2052
केतु	चन्द्र	17/09/1979	चन्द्र	गुरु	14/06/2014	गुरु	केतु	27/01/2053
केतु	मंगल	14/02/1980	चन्द्र	शनि	15/01/2016	गुरु	शुक्र	26/09/2055
केतु	राहु	02/03/1981	चन्द्र	बुध	14/06/2017	गुरु	सूर्य	15/07/2056
केतु	गुरु	08/02/1982	चन्द्र	केतु	15/01/2018	गुरु	चन्द्र	14/11/2057
केतु	शनि	18/03/1983	चन्द्र	शुक्र	14/09/2019	गुरु	मंगल	21/10/2058
केतु	बुध	15/03/1984	चन्द्र	सूर्य	15/03/2020	गुरु	राहु	15/03/2061
शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष			शनि महा दशा - 19 वर्ष		
शुक्र	शुक्र	15/07/1987	मंगल	मंगल	12/08/2020	शनि	शनि	18/03/2064
शुक्र	सूर्य	15/07/1988	मंगल	राहु	30/08/2021	शनि	बुध	26/11/2066
शुक्र	चन्द्र	15/03/1990	मंगल	गुरु	06/08/2022	शनि	केतु	06/01/2068
शुक्र	मंगल	15/05/1991	मंगल	शनि	14/09/2023	शनि	शुक्र	06/03/2071
शुक्र	राहु	15/05/1994	मंगल	बुध	11/09/2024	शनि	सूर्य	17/02/2072
शुक्र	गुरु	15/01/1997	मंगल	केतु	08/02/2025	शनि	चन्द्र	17/09/2073
शुक्र	शनि	15/03/2000	मंगल	शुक्र	08/04/2026	शनि	मंगल	27/10/2074
शुक्र	बुध	15/01/2003	मंगल	सूर्य	15/08/2026	शनि	राहु	02/09/2077
शुक्र	केतु	15/03/2004	मंगल	चन्द्र	15/03/2027	शनि	गुरु	15/03/2080
सूर्य महा दशा - 6 वर्ष			राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष		
सूर्य	सूर्य	02/07/2004	राहु	राहु	26/11/2029	बुध	बुध	12/08/2082
सूर्य	चन्द्र	02/01/2005	राहु	गुरु	20/04/2032	बुध	केतु	09/08/2083
सूर्य	मंगल	09/05/2005	राहु	शनि	25/02/2035	बुध	शुक्र	08/06/2086
सूर्य	राहु	02/04/2006	राहु	बुध	14/09/2037	बुध	सूर्य	14/04/2087
सूर्य	गुरु	21/01/2007	राहु	केतु	02/10/2038	बुध	चन्द्र	14/09/2088
सूर्य	शनि	02/01/2008	राहु	शुक्र	02/10/2041	बुध	मंगल	11/09/2089
सूर्य	बुध	08/11/2008	राहु	सूर्य	27/08/2042	बुध	राहु	30/03/2092
सूर्य	केतु	15/03/2009	राहु	चन्द्र	25/02/2044	बुध	गुरु	06/07/2094
सूर्य	शुक्र	15/03/2010	राहु	मंगल	15/03/2045	बुध	शनि	15/03/2097

EESHAY

लग्न विचार

मेष राशि, राशि चक्र की प्रथम राशि होती है। मंगल के इस राशि का स्वामी होने से मेष लग्न से प्रभावित व्यक्ति अर्थात् आपका स्वभाव उग्र रहेगा। आप आत्म विश्वास से परिपूर्ण, साहसी, कार्यशील तथा महत्त्वकांक्षी व्यक्ति होंगे। मेष लग्न से प्रभावित होने से आप औसत लम्बाई तथा गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे। आप सुगठित तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपके दाँत पुष्ट तथा दृष्टि तीव्र रहेगी। आप अनुशासन तथा व्यवस्था प्रिय व्यक्ति होंगे। स्वतंत्र निर्णय लेना आपको अधिक अच्छा लगेगा। विपरीत परिस्थितियों में भी आप नहीं घबरायेंगे तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना आपको आयेगा। योजनायें बनाने तथा उन्हें कार्यरूप में परिणित करने में आप कुशल रहेंगे। आपका स्वभाव तेज होगा। आप में अपनी बात मनवाने की प्रवृत्ति रहेगी तथा आत्म-प्रशंसा का भी आपका स्वभाव रहेगा। आपकी इच्छा के विपरीत बात होने पर आप क्रोधित हो जायेंगे, किन्तु आपका क्रोध प्रायः क्षणिक ही रहेगा।

मेष लग्न से प्रभावित होने के कारण आप प्रायः सेना, पुलिस, गुप्तचर विभाग, अस्पताल, यांत्रिक क्षेत्रों आदि में कार्यशील रहेंगे। आप में नेतृत्व का गुण रहेगा इस कारण आप किसी की अधीनता में कार्य करना पसन्द नहीं करेंगे। आपके स्वभाव से यदा-कदा आपके उच्चाधिकारी तथा मित्र भी आप से अप्रसन्न हो जायेंगे, किन्तु आपकी कार्य-कुशलता तथा परिश्रम की वे लोग भी प्रशंसा करेंगे। आपको पर्यटन में रुचि रहेगी तथा कभी-कभी यात्रा करना आपके कार्य क्षेत्र का ही अंग हो सकता है। आपको दुर्घटना, चोट, जलना आदि से सावधानी रखनी चाहिये। सिर दर्द, ज्वर, त्वचा सम्बन्धी बीमारियाँ, सूजन आदि रोग भी आपको यदा-कदा पीड़ित कर सकते हैं। सामान्यतः आप स्वस्थ रहेंगे।

आपका जन्म मेष लग्न में 20 अंश 00 कला से 23 अंश 20 कला के बीच में होने से आप अपने जीवन में न्याय व आदर्श को सर्वाधिक महत्त्व देंगे। आप ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, जो आपके आदर्श के विपरीत होगा। आपका कद मध्यम, रंग गेहुँआ तथा शारीरिक गठन सामान्य रहेगा। आप उन्नत ललाट वाले व्यक्ति होंगे। यद्यपि शारीरिक दृष्टि से आप अधिक बलशाली नहीं होंगे, किन्तु मानसिक स्तर पर आप काफी उन्नत रहेंगे। आप बातचीत करने में प्रवीण होंगे। विपक्षी पक्ष को अपनी बात समझाने में माहिर व हँसमुख स्वभाव के आप न्यायप्रिय भी होंगे। आपके मन की बात का पता लगाना कठिन होगा, आप अवसर की पहचान कर उसका लाभ उठाने में सक्षम रहेंगे।

आप कला, संगीत एवं चलचित्र में रुचि रखेंगे। राजनैतिक क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे। अपने परिश्रम, लगन, कार्य क्षमता व ईमानदारी के कारण आप समाज में प्रशंसा प्राप्त करेंगे। आप विशेषकर व्यापारिक कार्यों में सफल रहेंगे। आप स्टोर कीपर, मैनेजर, दलाल, नेता, आर्टिस्ट आदि बनेंगे। अर्थ संचय करने में आप प्रवीण होंगे तथा धन संचय करने में सफल भी रहेंगे। आप कफ सम्बन्धी रोग, ज्वर, उदर रोग आदि से पीड़ित होंगे। आपके लिये उचित खान-पान, व्यायाम तथा



EESHAY

लग्न विचार

संयमित जीवन रोगों से बचने के लिये उत्तम साधन होंगे।



EESHAY

ग्रह विचार

सूर्य

मेष राशि राशिचक्र की प्रथम राशि है। सूर्य इस राशि में उच्च का होता है। बलवान उच्च राशिस्थ सूर्य मेष राशि में होने से आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। मेष लग्न में प्रथम भाव में सूर्य होने से आप औसत से लम्बे, गौरवर्ण वाले तथा हृष्टपुष्ट एवं स्वस्थ होंगे। आपका विस्तृत ललाट तथा हंसमुख चेहरा आपके उज्ज्वल व्यक्तित्व का परिचायक होगा।

लग्न में मेष राशि का सूर्य आपको महत्वाकांक्षी तथा परिश्रमी बनायेगा। आपका आत्मबल प्रशंसनीय होगा। आप शारीरिक रूप से भी बलवान होंगे, अतः अपना कार्य बिना किसी की सहायता के स्वयं ही करना पसन्द करेंगे। आप स्वाभिमानी, तेजस्वी तथा विद्वान होंगे। तंत्र-मंत्र तथा अनेक विद्याओं के जानकार होंगे। मन से आप उदार होंगे। आप विश्वसनीय मित्र साबित होंगी। व्यक्तिगत रूप से भी आप राजशाही तरीके से रहना पसन्द करेंगे। निडर होने के कारण आप लड़ाई-झगड़ा होने पर भी पीछे हटना पसन्द नहीं करेंगे। पिता से भी आपके सम्बन्ध अधिक अच्छे नहीं रहेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। अपने परिश्रम तथा कुशलता से आप धीरे-धीरे समृद्ध हो जायेंगे। स्वभाव से आप तेज होंगे। थोड़ी सी बात पर शीघ्र क्रोधित हो जाने के कारण लोग आपको घमण्डी तथा दुराग्रही समझने लगेंगे। आप प्रभावशाली होने के कारण अपनी बात मनवाने में सक्षम होंगे। आपको दाम्पत्य जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आपके पत्नी के साथ विचार नहीं मिलने के कारण विवाद होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक तनाव होगा। सन्तान सुख अच्छा रहेगा है। सन्तान पक्ष के प्रबल होने से बच्चे बुद्धिमान, स्वस्थ, सद्गुणी तथा व्यवहार कुशल होंगे तथा आपको उनकी तरफ से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

आप किसी के अधीन रहकर कार्य करना पसन्द नहीं करेंगे। आप राजकीय या केन्द्रीय सेवाओं में उच्च पद, निजी क्षेत्र में प्रशासकीय पद या स्वतन्त्र व्यवसाय करना पसन्द करेंगे। सामान्यतः आपका जीवन सुखी रहेगा।

मेष लग्न में प्रथम भाव का सूर्य उच्च का होकर अपने मित्र मंगल की राशि पर बैठा हुआ है, अतः आप स्वस्थ शरीर वाले, मध्यम कद वाले, स्वाभिमानी, तेजस्वी एवं परम विद्वान् व्यक्ति होंगे। आपकी वाणी प्रभावशाली होगी, जिसे दूसरे लोग बड़े ध्यान और आदर के साथ सुना करेंगे। सन्तान पक्ष की प्रबलता, बुद्धिमत्ता, साहस, धैर्य, शक्ति, व्यवहार कुशलता, महत्वाकांक्षा आदि के गुण आपको सहज में प्राप्त होंगे, परन्तु स्त्री, व्यवसाय, स्वास्थ्य तथा झगड़े-टंटे के स्थान पर सूर्य की सातवीं नीच दृष्टि पड़ने से आपको दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी एवं क्लेश की प्राप्ति हो सकती है। इसी प्रकार आपको अपनी जीविकोपार्जन के क्षेत्र में भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते रहना होगा। सूर्य की ऐसी ग्रह स्थिति होने से आपकी पत्नी अधिक सुन्दर नहीं होगी तथा वह आपकी मर्जी के मुताबिक भी कुछ कम ही चल पायेगी।



EESHAY

ग्रह विचार

चन्द्र

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में अर्थात् जन्म लग्न में ही स्थित है। यह मेष राशि में है जिसका स्वामी मंगल चन्द्रमा का मित्र है। मेष लग्न में लग्नस्थ चन्द्र अच्छे फल देता है। अतः यह चन्द्र आपके लिये शुभ फल कारक रहेगा। यह चन्द्र आपको सुन्दर, दीर्घायु तथा विद्वान बनाता है। आप औसत से कुछ लम्बे कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, तथा आप अपरिचित को भी मित्र बनाने में सक्षम होंगे। ये शुभ फल आपके जन्म समय में पूर्ण तथा बली चन्द्रमा (शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक) होने पर अधिक तथा क्षीण चन्द्रमा (कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की नवमी तक) होने पर कम प्राप्त होंगे। आप स्वभाव से नम्र रहते हैं। आपको पर्यटन का शौक रहेगा। कला, साहित्य काव्य आदि में भी आपकी रुचि रहेगी।

आपको अपनी प्रतिभा के समुचित विकास के अवसर कम ही मिलते हैं। अपने माता-पिता से आपको स्नेह रहेगा। पैतृक सम्पत्ति के सहारे रहने के बजाय, स्व-परिश्रम से अर्जित सम्पत्ति पर आपका विश्वास रहेगा। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति में किन्हीं कारणों से बाधाएँ आ सकती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आपके पास भूमि, भवन, वाहन आदि सुख-सुविधाएँ रह सकती हैं। आपकी प्रकृति मितव्ययी रहेगी।

यह चन्द्र अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से, सप्तम् स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र की चन्द्र से शत्रुता है। आपके वैवाहिक सुख में कुछ कठिनाइयाँ आ सकती हैं। पत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद रहेंगे। आपको साझेदारी के व्यवसाय में भी, लाभ कम ही, प्राप्त हो सकता है।

मेष लग्न में प्रथम भाव के चन्द्रमा के शरीर, जाति, विवेक, आकृति, मस्तिष्क के घर तथा मुख्य केन्द्र और लग्न स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर बैठे होने से आपको घरेलू सुख तथा मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी। आप बुद्धिमान, विवेकी, सुन्दर शरीर वाले एवं भूमि-मकान तथा घरेलू सुख-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे। इस भाव में स्थित चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से स्त्री, व्यवसाय तथा विवाह के स्थान को अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में देखता है, अतः आपको स्त्री एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में भी सफलता एवं प्रसन्नता प्राप्त होगी।

मंगल

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में कुम्भ राशि में स्थित है, जिसका स्वामी शनि मंगल का शत्रु है। सामान्यतः एकादश स्थान में मंगल अच्छे फल



[The page contains several paragraphs of text in Devanagari script, which is extremely faint and mostly illegible due to the quality of the scan. The text appears to be a continuous narrative or a collection of verses.]

EESHAY

ग्रह विचार

प्रदान करता है। यहाँ लग्नेश मंगल एकादश स्थान में आपको प्रायः अच्छे फल देगा। यह मंगल आपको प्रतिष्ठित तथा सुखी व्यक्ति बनायेगा। आपका स्वभाव कठोर तथा राजसी होगा। आपके मित्रों की संख्या कम रहती है। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप रक्त विकार तथा पेट के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बचपन में आपका स्वास्थ्य खराब रह सकता है, किन्तु इसके बाद आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। आप कुशलवक्ता, धैर्यवान तथा कटु सत्यभाषी व्यक्ति हो सकते हैं। आपको गायन, वादन आदि का भी शौक रहता है। जीवन में आपको धन लाभ के अवसर मिलते रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप व्यापार में अच्छा लाभ कमा सकते हैं तथा निजी व्यवसाय भी आपके लिये लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत भी हो सकते हैं।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के लिये सम है। आपको परिश्रम का अच्छा फल प्राप्त होगा। कुटुम्बी लागों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी सूर्य मंगल का मित्र है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आप उच्च शिक्षित तथा पठन-पाठन में रुचि रखने वाले विद्वान व्यक्ति होंगे। आपको सन्तान सुख कम प्राप्त होगा। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपको यदा-कदा रोगों से कष्ट हो सकता है। शत्रुओं पर काबू पाने में आप समर्थ रहेंगे।

मेष लग्न में एकादश भाव के मंगल के लाभ भवन में अपने सम-मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित होने से आपको आय के साधनों में सफलता प्राप्त होती रहेगी, परन्तु अष्टमेश का दोष होने के कारण आमदनी के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहेंगी। मंगल अपनी चौथी दृष्टि से धन एवं कुटुम्ब के द्वितीय भाव को अपने शत्रु शुक्र की राशि में देख रहा है, अतः आपको धन तथा कुटुम्ब के पक्ष से असन्तोष बना रह सकता। मंगल अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से विद्या एवं सन्तान भवन को देख रहा है, अतः आपको सन्तान एवं विद्या के पथ में भी कुछ कमी बनी रहेगी और मंगल अपनी आठवीं मित्र-दृष्टि से छठे शत्रु भवन को भी देख रहा है, अतः आप शत्रु पक्ष में प्रभाव रखने वाले तथा अत्यन्त साहसी व्यक्ति होंगे।

बुध

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में, मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से बुध की शत्रुता है। सामान्यतः प्रथम स्थान में बुध मध्यम फल प्रदान करता है, यहाँ तृतीयेश तथा षष्ठेश बुध लग्न स्थान में स्थित होने से आपको मिश्रित फल प्राप्त होंगे। आप



[Faint, illegible text visible through the paper, likely bleed-through from the reverse side.]

EESHAY

ग्रह विचार

गौरवर्ण, ऊँचे कद, लम्बे चेहरे तथा विस्तृत भाल वाले व्यक्ति होते हैं। आपका शारीरिक गठन मध्यम, हाथ लम्बे, तथा आँखें तीक्ष्ण होती हैं। आपका स्वभाव गर्म रहेगा। व्यवहार में आप मनोविनोदी तथा रसिक होंगे। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। बाल्यावस्था में रुग्णता अधिक रह सकती है। युवावस्था में स्वास्थ्य में सुधार होता है, पर कभी-कभी वात रोग, मस्तिष्क रोग तथा नाडी तंत्र के रोगों से कष्ट हो सकता है।

आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी उल्लेखनीय प्रगति हो सकती है। गणित विषय में आपकी अधिक रुचि रहती है। आप धैर्यवान, शत्रुहन्ता, उत्तम वक्ता, तथा वाद-विवाद में कुशल हो सकते हैं। मित्रों तथा स्वजनों से आपका अधिक स्नेह नहीं रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी, आपकी आजीविका अध्यापन, लेखन, सम्पादन, प्रकाशन, पत्रकारिता अथवा सर्विस से हो सकती है। आपको राजकीय सेवा भी प्राप्त हो सकती है। आप "स्व-निर्मित व्यक्ति" (सेल्फ मेड मेन) होते हैं तथा अपने परिश्रम तथा बुद्धि से उन्नति कर सकते हैं।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, सप्तम् स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से बुध की मित्रता है। आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। आपकी पत्नी सुशिक्षित तथा गुणी होती है। सन्तान सुख में बाधा अथवा कन्या सन्तान की अधिकता हो सकती है। साझेदारी के व्यापार में लाभ की सम्भावना नहीं होगी।

मेष लग्न में प्रथम भाव के बुध के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आप पुरुषार्थी व्यक्ति होंगे, परन्तु षष्ठेश का दोष होने के कारण आपका शरीर रोग पीड़ित भी बना रह सकता है। आपको भाई-बहिनों के सुख सम्बन्ध में भी इसी कारण कुछ कमी आ सकती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से स्त्री एवं व्यवसाय के भवन को देखता है, अतः आपको पुरुषार्थ एवं परिश्रम के द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी, परन्तु स्त्री-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलेगी।

गुरु

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। देव गुरु आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः धन स्थान में स्थित गुरु अच्छे फल ही देता है। यहाँ भाग्येश तथा व्ययेश गुरु धन स्थान में आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको उद्यमी, विद्वान, जनप्रिय तथा व्ययशील प्रकृति का व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहता है। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहती है तथा मित्रों व परिजनों में आप लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित रहते हैं। आप समाज का नेतृत्व भी कर सकते हैं। उत्तम भोजन (मिष्ठान आदि) के आप शौकीन रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। आहार-विहार ठीक न रखने की स्थिति में अग्निमांद्य



EESHAY

ग्रह विचार

जैसे रोग आपको हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। साहित्य, चिकित्सा, विधि, कला आदि विषयों में आपका रुझान रहता है। संगीत, काव्य, नाट्य आदि विधाओं में भी आप पारंगत होते हैं। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आप आस्तिक व्यक्ति होते हैं तथा पूजा-पाठ में भी आपका मन लगता है। आपकी भाग्योन्नति 16वें वर्ष से हो सकती है। आपका सन्तान सुख कम रहता है, आपके कन्या सन्तान की अधिकता हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप साहित्यकार, चिकित्सक, कलाकार, वकील आदि बन सकते हैं। आपको व्यापार में भी धन लाभ हो सकता है। आपकी प्रकृति खर्चीली रहने से अर्थ संचय करने में आपको बाधा हो सकती है।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। यदा-कदा होने वाले रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। शत्रुओं की कुटिल चालों को विफल करने में आप समर्थ रहते हैं। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि सप्तम अष्टम स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। आप दीर्घायु होते हैं। आपको आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि, दशम स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है। अपने पिता से आपके सम्बन्ध साधारण रहते हैं। राज्य-पक्ष से आपके सम्बन्ध मध्यम रहेंगे।

मेष लग्न में द्वितीय भाव के गुरु के धन एवं कुटुम्ब के भवन में शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित होने से आप बाहरी स्थानों के सम्पर्क से धन एवं भाग्य की वृद्धि करेंगे, परन्तु कभी-कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। यहाँ से गुरु की पाँचवी दृष्टि शत्रु स्थान पर पड़ती है, अतः आप शत्रु-पक्ष में अपनी होशियारी से सफलता प्राप्त करेंगे। गुरु की सातवीं मित्र-दृष्टि आयु एवं पुरातत्व भवन में पड़ने से आपको आयु एवं पुरातत्व का लाभ प्राप्त होगा। गुरु की नवीं नीच-दृष्टि पिता एवं राज्य के स्थान में पड़ने से आपको पिता तथा राज्य के पक्ष में परेशानी एवं त्रुटि बनी रह सकती है तथा आपकी उन्नति के मार्ग में कठिनाइयाँ आ सकती हैं।

शुक्र

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में, मीन राशि में स्थित है, जो शुक्र की उच्च राशि है। सामान्यतः द्वादशस्थ शुक्र अच्छे फल नहीं देता, यहाँ धनेश तथा सप्तमेश शुक्र, द्वादश स्थान में आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह शुक्र आपको चतुर तथा व्यवहारकुशल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव गम्भीर तथा अस्थिर रहेगा किन्तु व्यवहारकुशलता से आप सबके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने में समर्थ हो सकते हैं। स्वजनों से आपका स्नेह रहेगा तथा मित्रों में भी आपकी लोकप्रियता रहेगी।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नेत्र विकार, कफज रोग आदि से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि



EESHAY

ग्रह विचार.

अच्छी रहती है। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, विधि, काव्य, संगीत, दर्शन आदि विषयों की ओर रहेगा। पठन-पाठन, चित्रकला, गायन, वादन, नृत्य आदि विधाओं तथा पर्यटन में भी आपकी रुचि रहती है। आपका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहता है। आपकी पत्नी सुन्दर, कला प्रिय होती है किन्तु वह लोभी, व्ययशील तथा आपकी बात का अनादर करने वाली हो सकती है। उसका स्वास्थ्य भी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपके साथ उसका स्नेह व सामंजस्य नहीं रहेगा।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। आप साहित्यकार, विधिवेत्ता, संगीतकार, इतिहासकार, लेखक, शिक्षक आदि बन सकते हैं। व्यापार में उतार-चढ़ाव रहेगा तथा लाभ कम रह सकता है। व्यय अधिक रहने से अर्थ संचय नहीं हो पाता। इस शुक्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, षष्ठ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जो शुक्र की नीच राशि है। यदा-कदा रोगों से कष्ट हो सकता है। शत्रु आपको आर्थिक हानि पहुँचाने के प्रयत्न करेंगे किन्तु उनके प्रयास अन्ततः विफल रहेंगे।

मेष लग्न में द्वादश भाव के शुक्र के उच्च का होकर व्यय स्थान में अपने सामान्य शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आप बहुत अधिक खर्चीले स्वभाव के व्यक्ति होंगे, परन्तु बाहरी सम्बन्धों के द्वारा बड़ी चतुराई से धन एवं व्यवसाय की शक्ति प्राप्त करेंगे। इस स्थान से शुक्र अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि वाले छठे शत्रु भाव को देखता है, अतः आपको शत्रु-पक्ष में भेद तथा गुप्त युक्ति के द्वारा कुछ कमजोरी के साथ काम निकालने की शक्ति प्राप्त होगी।

शनि

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से शनि की शत्रुता है। सामान्यतः चतुर्थस्थ शनि मिश्रित फल देता है। यहाँ दशमेश तथा एकादशेश शनि चतुर्थ स्थान में आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह शनि आपको दीर्घायु, सम्पन्न, पराक्रमी तथा विद्वान व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। उत्तर आयु में आपकी प्रवृत्ति एकान्तप्रिय हो सकती है, जो उन्नति के लिये प्रतिकूल भी हो सकती है।

आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। यदा-कदा शूल रोग से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान, साहित्य, गणित, चिकित्सा, विधि, दर्शन, रसायन आदि विषयों में रहता है। आपकी रुचि ज्योतिष, धर्म शास्त्रों आदि के अध्ययन में हो सकती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। अपनी माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि की सुविधायें भी प्राप्त होती हैं। अपने पिता से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। राज्य पक्ष



EESHAY

ग्रह विचार

की अनुकूलता से आपके कार्य सुगमता से पूरे होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप चिकित्सक, वकील, मजिस्ट्रेट, सरकारी अधिकारी, प्राध्यापक, लेखक आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको लाभ होता है। जन्म स्थान से दूरस्थ स्थानों में कार्य करना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि षष्ठम स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शत्रुओं के कुचक्रों को विफल करने में आप समर्थ रहेंगे। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से दशम स्थान में मकर राशि को देखता है, जो शनि की स्वराशि है। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। राज्य पक्ष से आपको धन लाभ भी सम्भव है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जो शनि की नीच राशि है। आप लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा कृष शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका व्यक्तित्व गम्भीर तथा स्वभाव शान्त रहेगा।

मेष लग्न में चतुर्थ भाव के शनि के केन्द्र, माता, सुख एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आपको माता एवं भूमि के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष युक्त सफलता प्राप्त होगी, परन्तु आपके सुख के साधनों में वृद्धि होती रहेगी। इस स्थान से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से शत्रु भवन को देखता है, अतः आपके द्वारा शत्रु-पक्ष से लाभ तथा उसमें प्रभाव रखने का योग बनता है। शनि की अपनी सातवीं दृष्टि दशम भाव में पड़ने से आपको राज्य एवं पिता के द्वारा व्यवसाय की वृद्धि एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी। शनि अपनी दसवीं नीच-दृष्टि से शरीर स्थान को देखता है, अतः आपके शारीरिक सौन्दर्य में कमी रह सकती है तथा आपको कुछ चिन्तायें भी बनी रहेगी।

राहु

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में, तुला राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु की मित्रता है। सामान्यतः सप्तमस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता, यहाँ तुला राशि का सप्तमस्थ राहु आपको अशुभफल देगा। यह राहु आपको रोगी, क्रोधी तथा कुटिल व्यक्ति बना सकता है। आपका स्वभाव अभिमानी रहेगा एवं आप हठी तथा झगड़ालू प्रकृति के होंगे। अपने व्यवहार से आप मित्र कम तथा शत्रु अधिक बना सकते हैं। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। प्रमेह, गुप्तरोग तथा वात रोगों से कष्ट हो सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान कला वर्ग के विषयों की ओर रहेगा। गायन, संगीत आदि विद्याओं में आपकी रुचि रह सकती है। पर्यटन का भी शौक रहेगा। आपका

EESHAY

ग्रह विचार

वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद की, गेहुँए वर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाली होगी, उसका स्वभाव तेज रहेगा वह हठी, झगड़ालू तथा कुटिल प्रकृति की हो सकती है। उसका स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। वह गुल्म, मधुमेह तथा वातादि रोगों से पीड़ित रह सकती है, उसके साथ वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपका द्विभार्या योग भी है किन्तु दूसरी पत्नी से भी आपको कष्ट ही प्राप्त हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, सम्पादक, रसायनविज्ञ आदि बन सकते हैं। साझेदारी का व्यवसाय हानिप्रद किन्तु निजी व्यवसाय लाभप्रद रह सकता है। वस्त्र व्यवसाय से भी पर्याप्त लाभ सम्भव है। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होने से अर्थ संग्रह करना कठिन होगा।

इस राहु की पंचम् पूर्ण दृष्टि, एकादश स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। आमदनी बढ़ाने के लिये आप कठोर पुरुषार्थ करेंगे। यह राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से, लग्न स्थान में मेष राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। आप लम्बे कद के, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा किन्तु कठोर स्वभाव के कारण मित्रों व स्वजनों में आप लोकप्रिय नहीं रहेंगे। इस राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि, तृतीय स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जो राहु की उच्च राशि है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होते हैं। भाई-बहिनों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं।

मेष लग्न में सप्तम भाव के राहु के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित होने से आप स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में चिन्ता, परेशानी एवं कष्टों का अनुभव कर सकते हैं, परन्तु राहु के मित्र राशिस्थ होने के कारण अपनी चतुराई एवं गुप्त युक्तियों से आप उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेंगे। राहु की ऐसी ग्रह स्थिति होने से आपको पारिवारिक जीवन में अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है तथा बड़े प्रयत्नों के बाद येन-केन प्रकारेण आपका जीवन निर्वाह हो पायेगा।

केतु

आपका जन्म मेष लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में मेष राशि में स्थित है जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। सामान्यतः लग्नस्थ केतु अशुभ फल प्रदान करता है, यहाँ प्रथम स्थान में मेष राशि का केतु आपके लिये अच्छे फल देने वाला नहीं होगा। यह केतु आपको शारीरिक व मानसिक कष्ट प्रदान कर सकता है। आप लम्बे कद के, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। आपका स्वभाव तेज रहेगा। बन्धु-बान्धवों से भी आपका मनमुटाव रह सकता है। समाज में आपका प्रभाव कम रहेगा। व्यसनों तथा कुसंगति से स्वास्थ्य



[The main body of the page contains several paragraphs of text in Devanagari script. Due to the extreme fading and bleed-through from the reverse side, the text is largely illegible. The visible fragments suggest a discussion of philosophical or religious concepts, possibly related to the Vedas or Upanishads.]

EESHAY

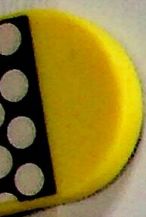
ग्रह विचार

तथा चारित्रिक हानि भी सम्भव है। चित्त में खिन्नता रहेगी। कार्यों के पूरा होने में अनावश्यक विलम्ब हो सकता है। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे। आपका स्वास्थ्य ठीक रहने की सम्भावनाएं कम हैं। वात रोग, दुर्घटना, हाथ में विकृति, शिरोरोग आदि बीमारियों से कष्ट हो सकता है। मानसिक रोग भी पीड़ित कर सकते हैं।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, विधि, इलेक्ट्रॉनिक्स, भाषा, विज्ञान, पुरातत्त्व आदि विषयों में रहेगा। तंत्र-मंत्र तथा रहस्यमय विद्याओं में आपकी रुचि रह सकती है। अध्ययन काल में आने वाली बाधाओं को आप पुरुषार्थ से दूर कर सकते हैं। पर्यटन का भी शौक रहेगा, यात्रा में कष्ट सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, गणितज्ञ, तकनीकी विशेषज्ञ, वकील, पुरातत्त्वशास्त्री, भाषाविद् आदि बन सकते हैं। सेना अथवा पुलिस की नौकरी में भी आपको सफलता मिल सकती है। व्यापार में लाभ सामान्य रहेगा। राजनीति में अपेक्षित सफलता मिलने की सम्भावना कम है। व्ययशील प्रकृति तथा आकस्मिक खर्चों के कारण यथेष्ट धनसंग्रह नहीं हो पाएगा।

इस केतु की पंचम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान में सिंह राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से केतु की मित्रता है। आपके लिये सन्तान सुख अल्प अथवा सन्तान को कष्ट भी सम्भव है। यह केतु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से, सप्तम् स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम है। आपका वैवाहिक जीवन कम सुखमय रहेगा। आपकी पत्नी मध्यम कद की, गेहुँए वर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाली महिला होगी, उसका स्वभाव तेज रहेगा जिससे आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। विवादों तथा मतभेदों के कारण आपसी सामंजस्य का अभाव रहेगा। इस केतु की नवम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में धनु राशि पर पड़ती है जो केतु की उच्च राशि है। धर्म में आपकी आस्था रहेगी। आपका भाग्योदय 46वें वर्ष में हो सकता है।

मेष लग्न में प्रथम भाव के केतु के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु मंगल को मेष राशि पर स्थित होने से आपको शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ताओं एवं अन्य प्रकार की परेशानियों का निरन्तर सामना करना पड़ सकता है तथा आपके शरीर में कोई चोट भी लग सकती है। केतु के प्रभाव से आपके शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी आ सकती है। आपको अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा गुप्त-युक्तियों एवं हिम्मत का आश्रय भी लेना पड़ेगा, फिर भी आपके जीवन में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ बनी रह सकती हैं।



EESHAY

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियाँ एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगेट)
मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। लग्नेश का यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, आयु, स्वास्थ्य का लाभ करवाने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— पुखराज (येलो सफायर) उपरत्न:— सुनैला(सिटरीन), पीला हकीक(येलो एगेट)
पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय कारक, धन वृद्धि कारक, व्यावसायिक उन्नति कारक रहेगा।

कारक रत्न:— माणिक्य (रूबी) उपरत्न:— सौगन्धिक(स्पाईनल रूबी), मैसूरी(स्टार रूबी)
माणिक्य तीन रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में रविवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद सूर्य के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय पूर्व धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, राज्य से मान प्रतिष्ठा एवं विद्या विवेक कारक रहेगा।

० ०
० ०
० ०
० ०
० ०
० ०

GANESH

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 12/09/1967	विक्रमी संवत्	: 2024
जन्म दिन	: मंगलवार	शक संवत्	: 1889
जन्म समय	: 17:13:35 घण्टे	ऋतु	: शरद
इष्टकाल	: 28:07:49 घटी	मास	: भाद्रपद
जन्म स्थान	: JABALPUR	पक्ष	: शुक्ल
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: नवमी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 18:51:47 घण्टे
अक्षांश	: 23:10:00 उत्तर		: 32:13:20 घटी
रेखांश	: 79:57:00 पूर्व	जन्म तिथि	: नवमी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:10:12 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: मूल
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 18:13:26 घण्टे
स्थानिक समय	: 17:03:23 घण्टे		: 30:37:27 घटी
साम्पातिक काल	: 16:26:34 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: मूल
वेलान्तर	: -00:03:27 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: आयुष्मान्
सूर्योदय	: 05:58:27 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 19:54:02 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:15:02 घण्टे		: 34:48:56 घटी
दिनमान	: 12:16:35 घण्टे	जन्म योग	: आयुष्मान्
रात्रिमान	: 11:43:25 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: बालव
सूर्य की स्थिति (अयन)	: दक्षिणायण	करण समाप्ति काल	: 07:19:10 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 03:21:46 घण्टे
अयनांश	: 23:24:14	जन्म करण	: कौलव



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com



1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12

GANESH

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥
॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	श्रावण	लग्न-लग्नाधिपति	:	कुम्भ-शनि
दिनांक	:	3,8,13	राशि-राशि स्वामी	:	धनु-गुरु
दिन	:	शुक्रवार	नक्षत्र-चरण	:	मूल-4
नक्षत्र	:	भरणी	नक्षत्र स्वामी	:	केतु
योग	:	वज्र	योग	:	आयुष्मान्
करण	:	तैत्ति	करण	:	कौलव
प्रहर	:	1	गण	:	राक्षस
वर्ग	:	बिलाव	योनि	:	श्वान
लग्न	:	सिंह	नाडि	:	अद्या
सूर्य	:	तुला	वर्ण	:	क्षत्रिय
चन्द्र	:	मीन	वश्य	:	मानव
मंगल	:	वृश्चिक	वर्ग	:	मूषक
बुध	:	सिंह	युंजा	:	पर
गुरु	:	धनु	हंसक (तत्व)	:	अग्नि
शुक्र	:	कुम्भ	जन्म नामाक्षर	:	भी
शनि	:	कन्या	पाया-राशी	:	रजत
राहु	:	कुम्भ	पाया-नक्षत्र	:	ताम्र
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	कन्या	भयात	:	57:12:59 घटी
सूर्य के अंश	:	सिंह 25:37:25	भभोग	:	59:42:34 घटी
लग्न के अंश	:	कुम्भ 06:03:11	भोग्य दशा काल	:	केतु 0 व 3 म 15 दिन

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्व जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं।

अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाषाढा	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध



GANESH

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

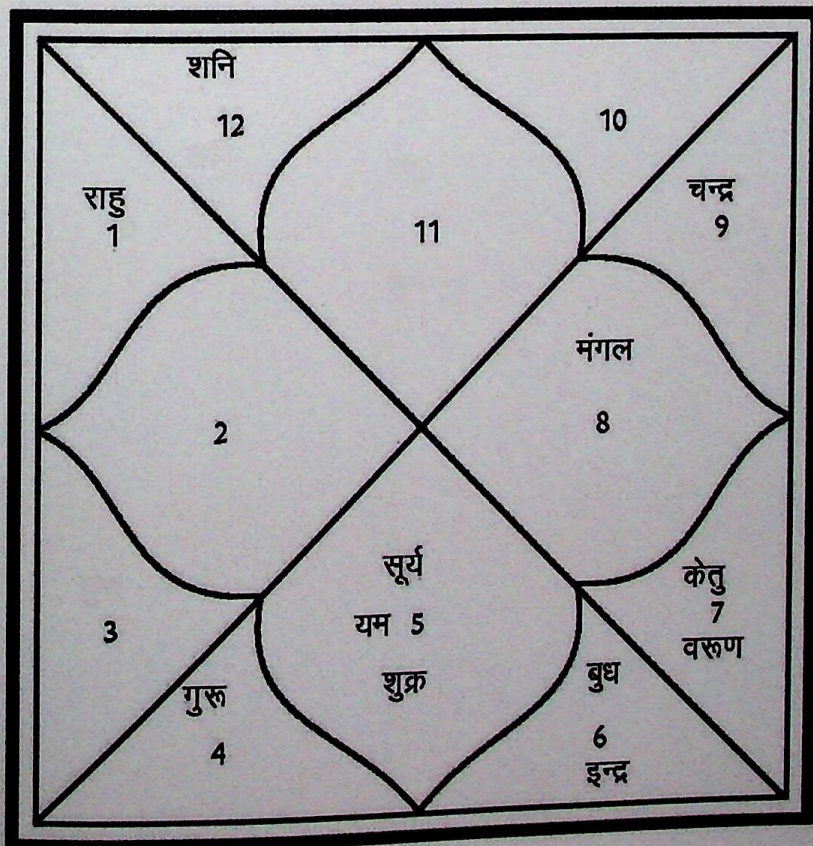
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

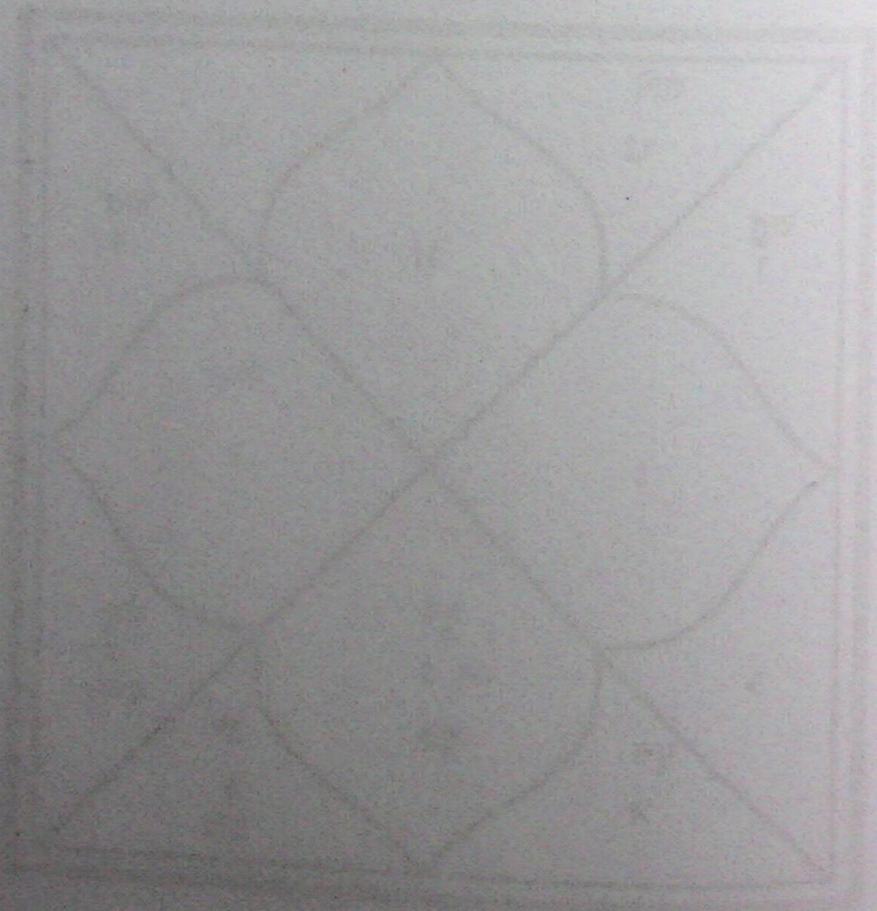
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	कुम्भ	06:03:11	—	धनिष्ठा	4	मंगल	—	—	—
सूर्य	सिंह	25:37:25	00:58:23	पू.फाल्गुनी	4	शुक्र	स्व राशी	—	मार्गी
चन्द्र	धनु	12:46:36	13:24:02	मूल	4	केतु	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	वृश्चिक	08:11:06	00:39:37	अनुराधा	2	शनि	स्व राशी	—	मार्गी
बुध	कन्या	11:08:50	01:36:29	हस्त	1	चन्द्र	उच्च स्थान	—	मार्गी
गुरु	कर्क	29:36:46	00:12:27	अश्लेषा	4	बुध	उच्च स्थान	—	मार्गी
शुक्र	सिंह	05:29:16	00:18:56	मघा	2	केतु	शत्रु स्थान	—	वक्री
शनि	मीन	17:09:24	00:04:11	रेवती	1	बुध	सम स्थान	—	वक्री
राहु	मेष	05:18:30	00:01:58	अश्विनी	2	केतु	स्व राशी	—	वक्री
केतु	तुला	05:18:30	00:01:58	चित्रा	4	मंगल	स्व राशी	—	वक्री
इन्द्र	कन्या	01:02:30	00:03:46	उ.फाल्गुनी	2	सूर्य	—	अस्त	मार्गी
वरुण	तुला	28:35:53	00:01:14	विशाखा	3	गुरु	—	—	मार्गी
यम	सिंह	26:59:17	00:02:11	उ.फाल्गुनी	1	सूर्य	—	अस्त	मार्गी
दशम भाव	वृश्चिक	14:58:49	—	अनुराधा	4	शनि	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:24:14

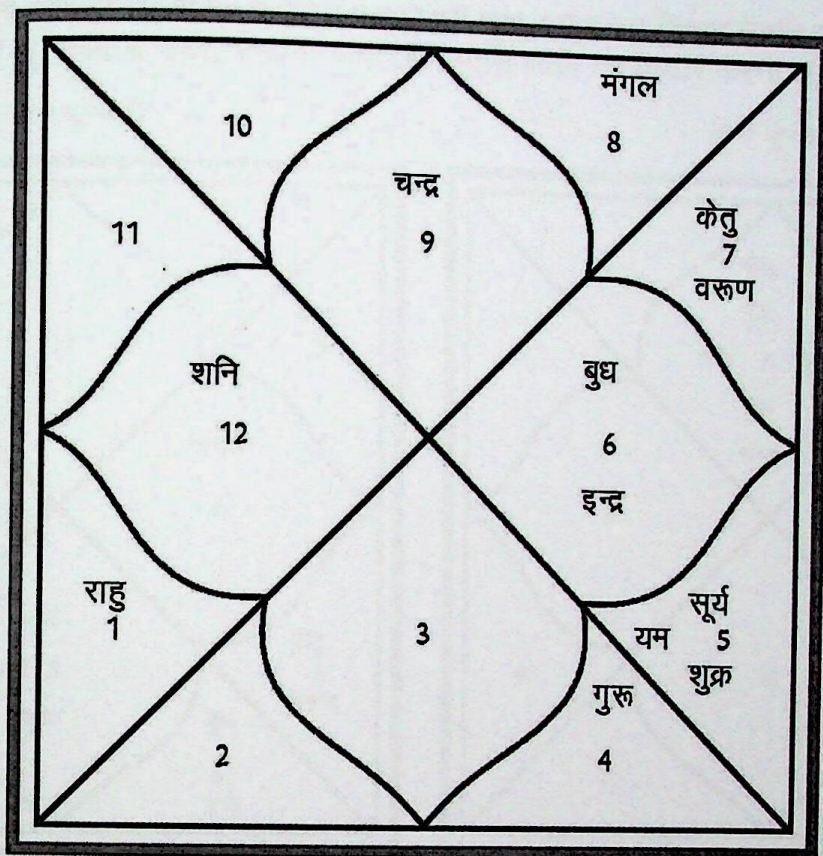
लग्न कुण्डली



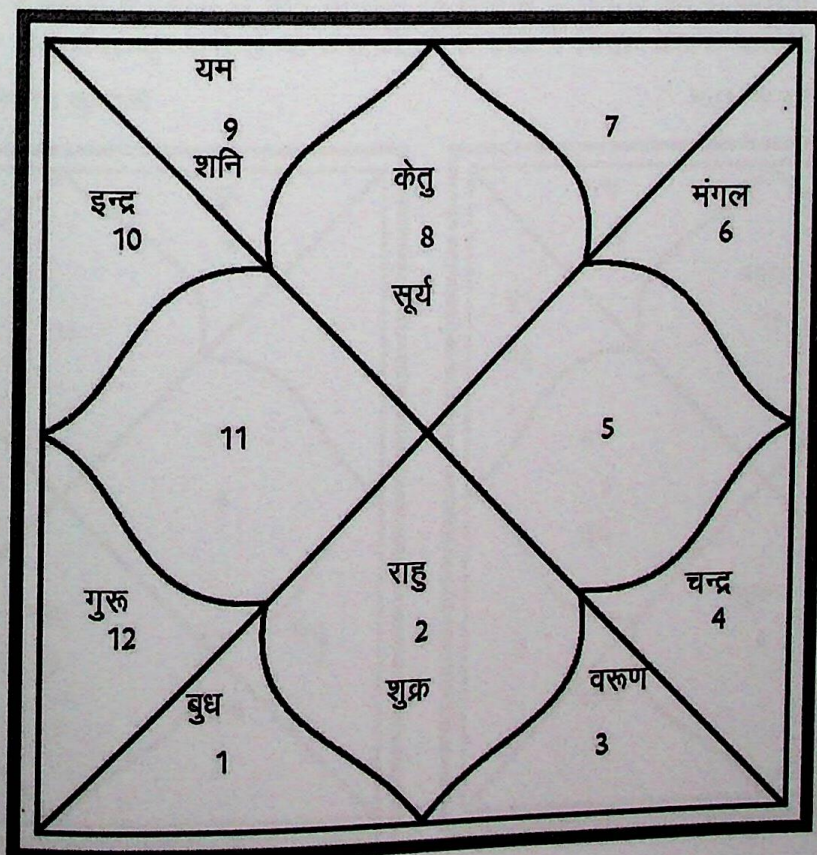


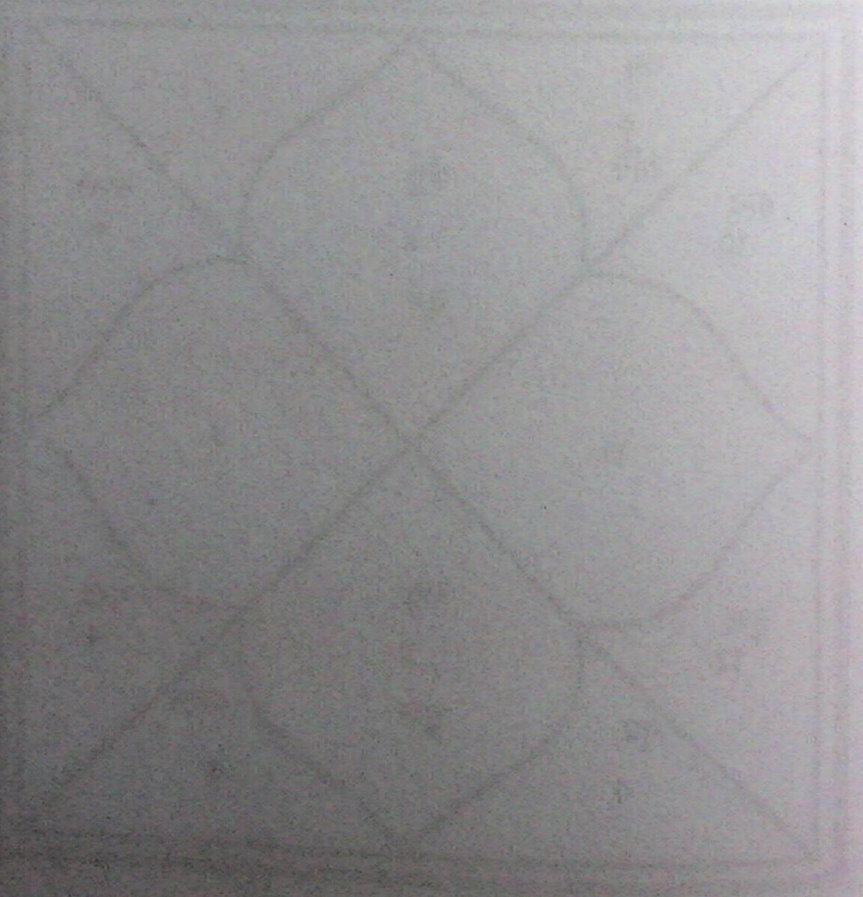
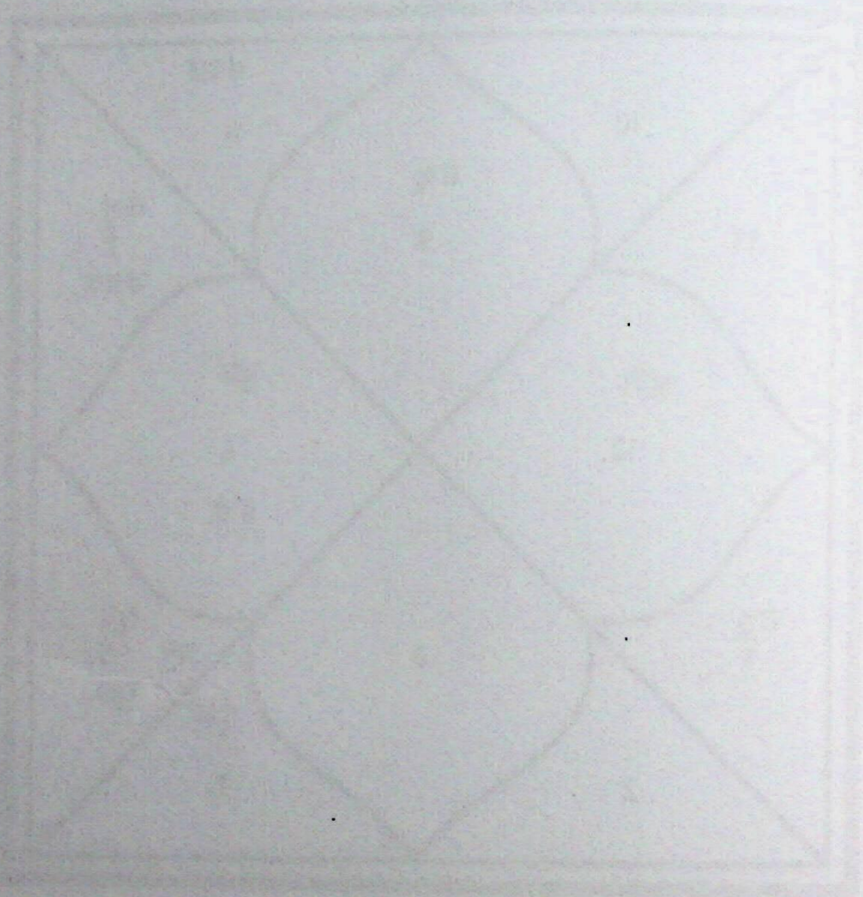
GANESH

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



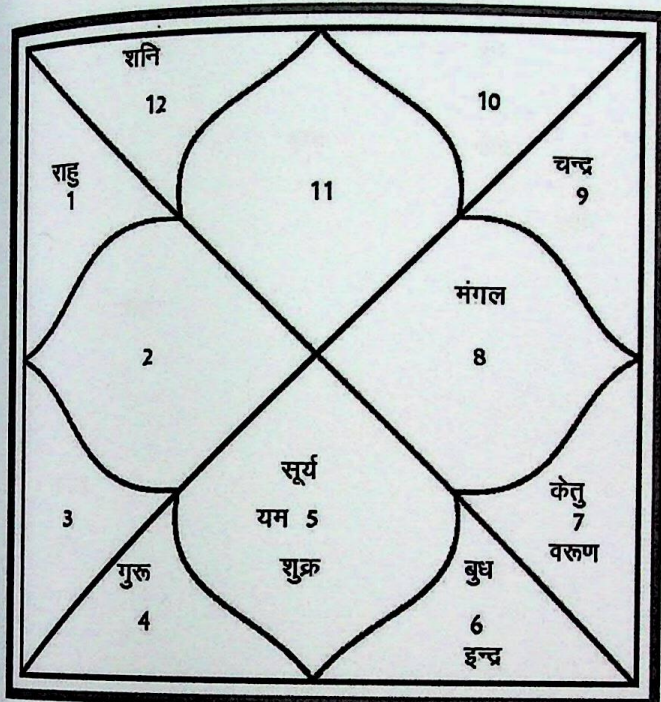


GANESH

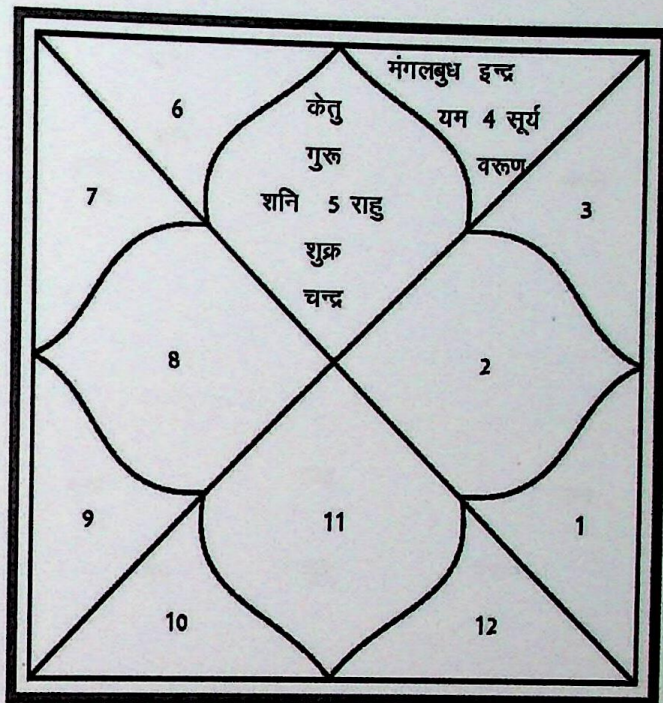
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



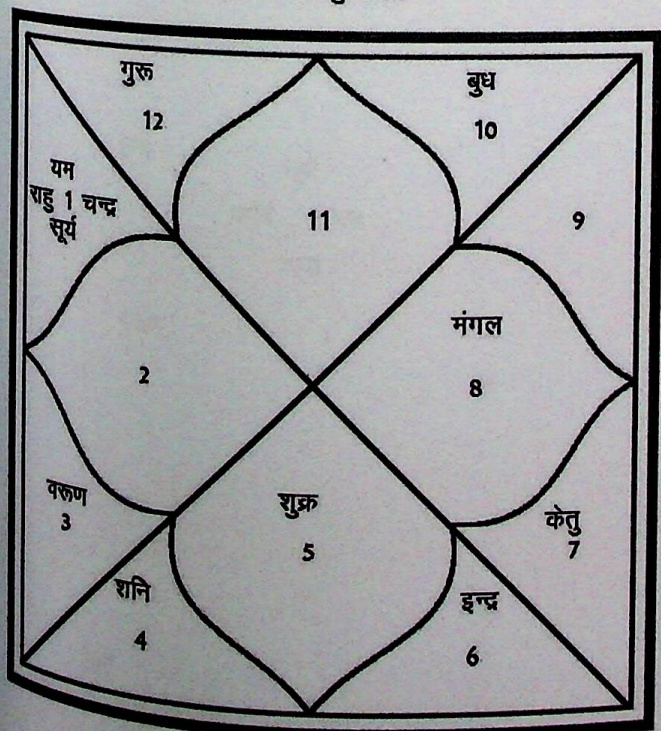
होरा कुण्डली



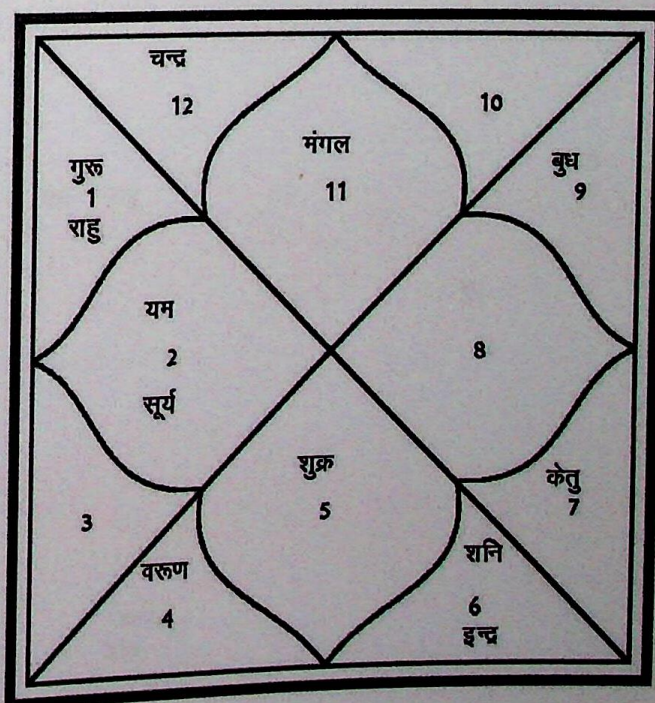
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

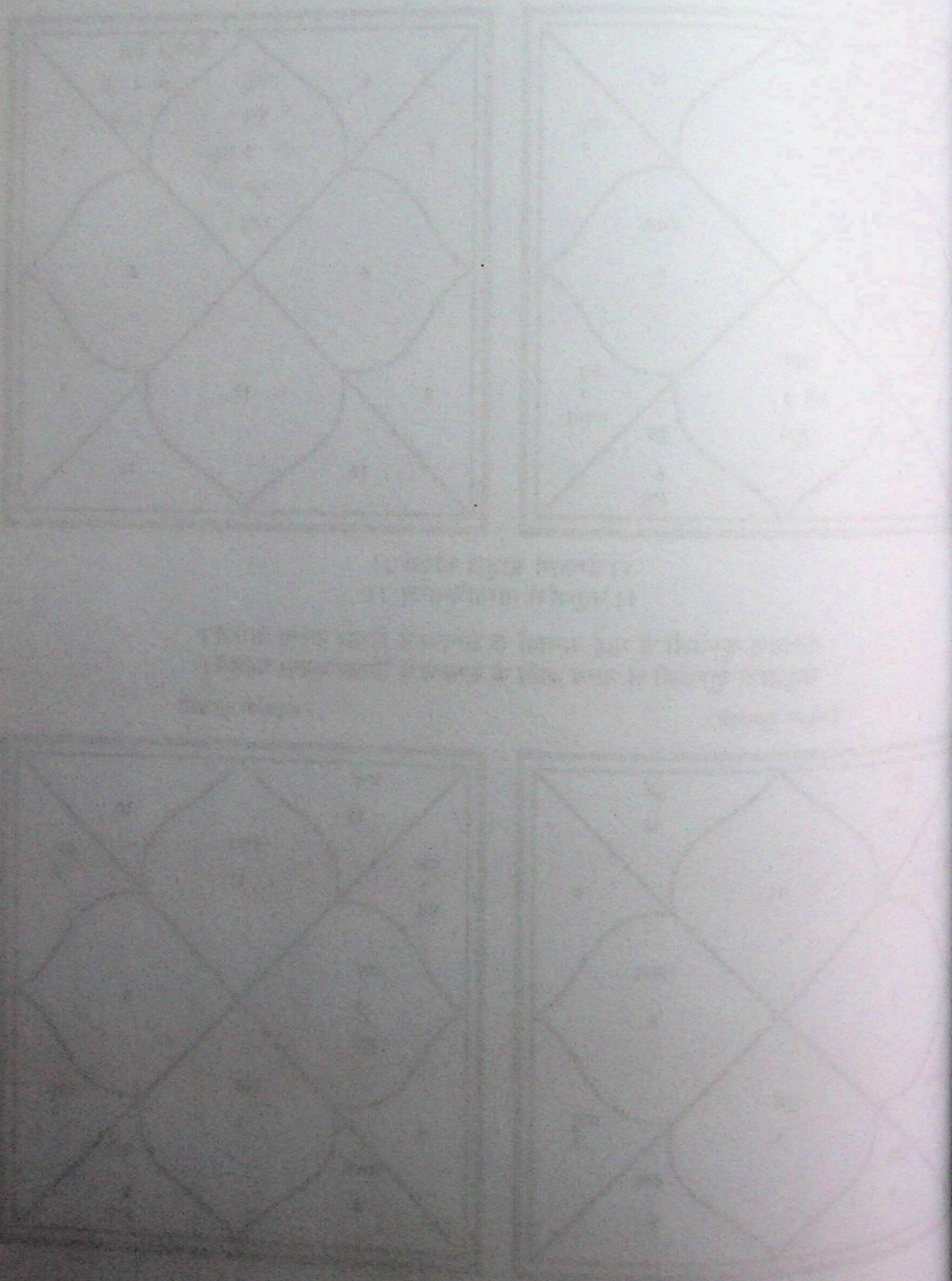
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली



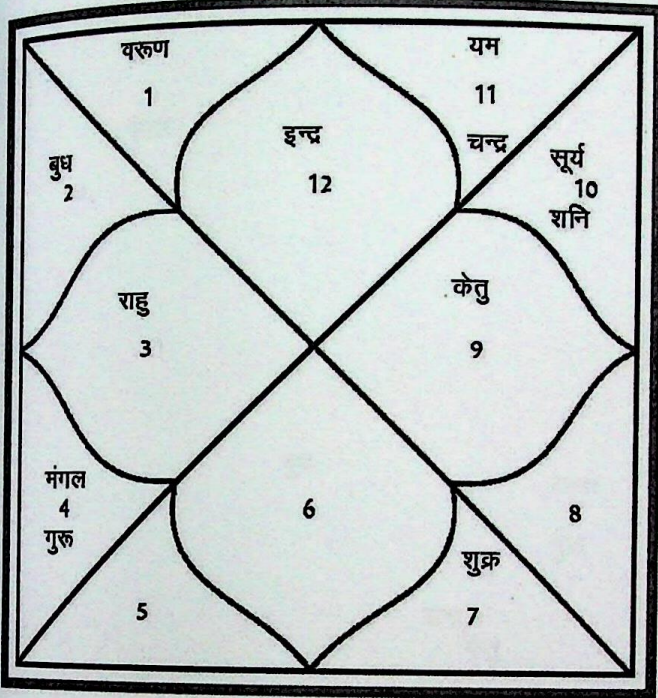


GANESH

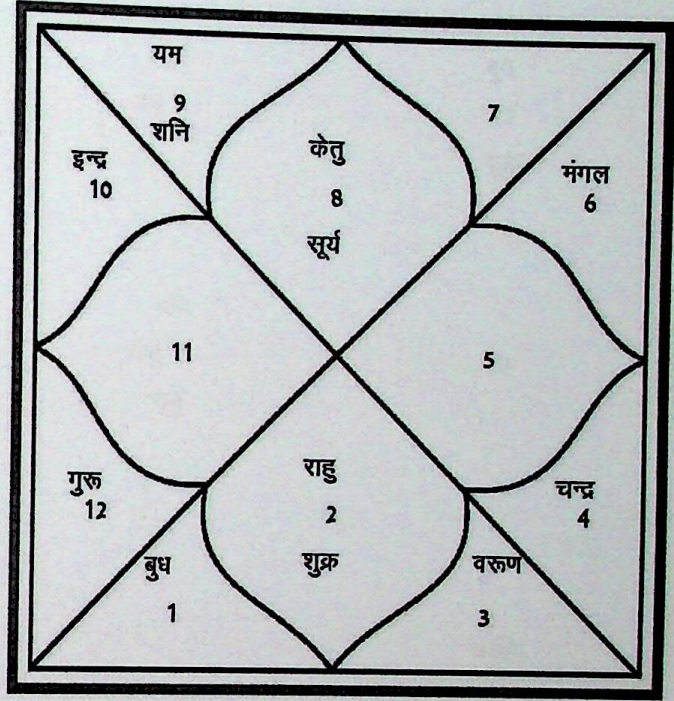
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



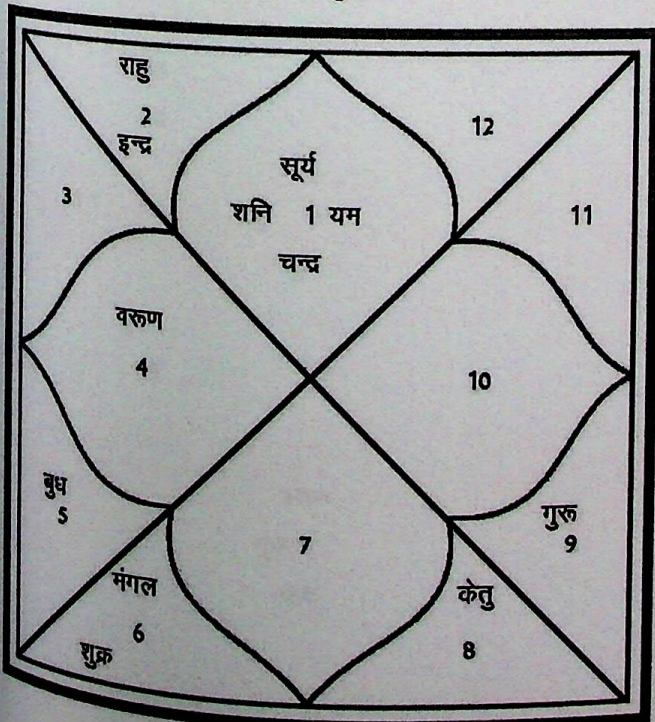
नवमांश कुण्डली



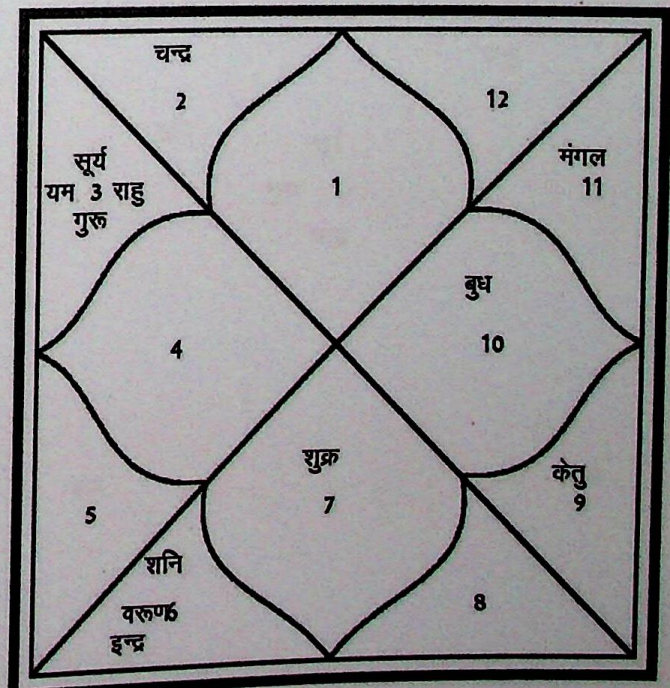
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

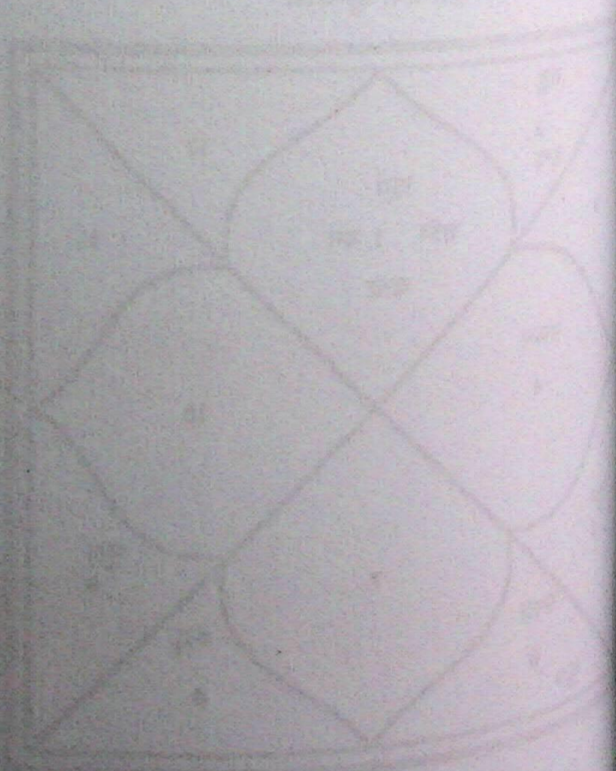
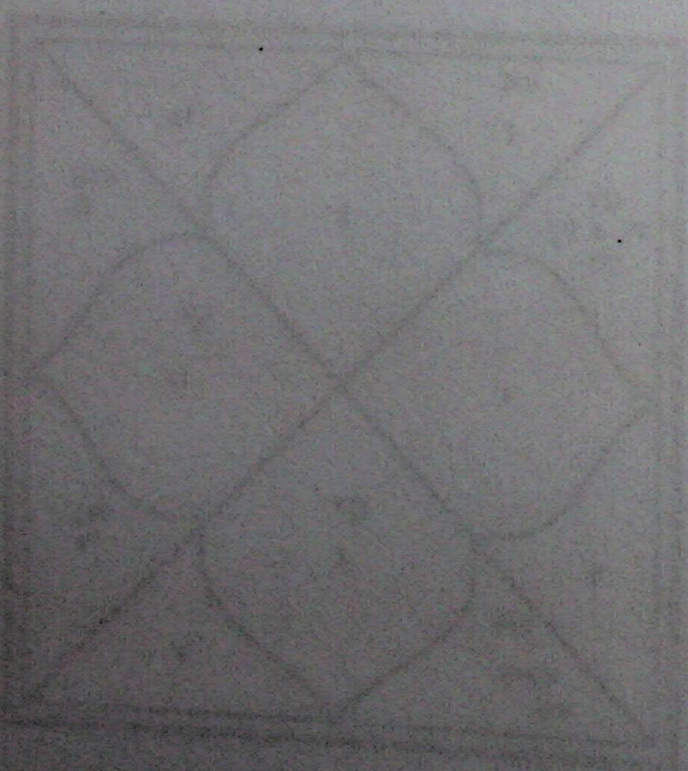
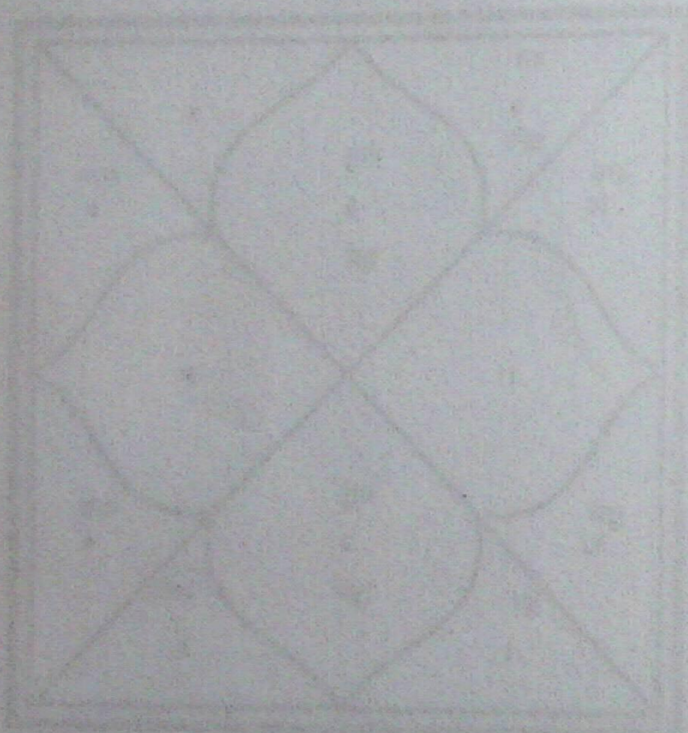
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली





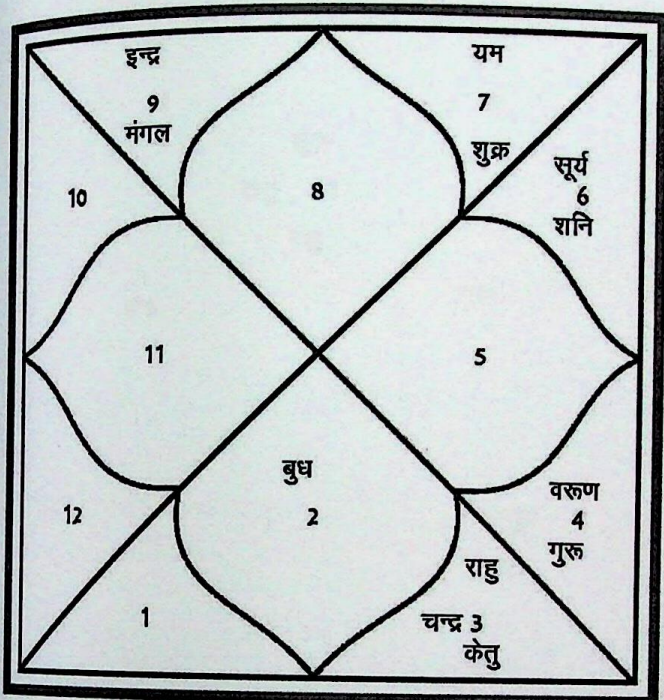
GANESH

॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥

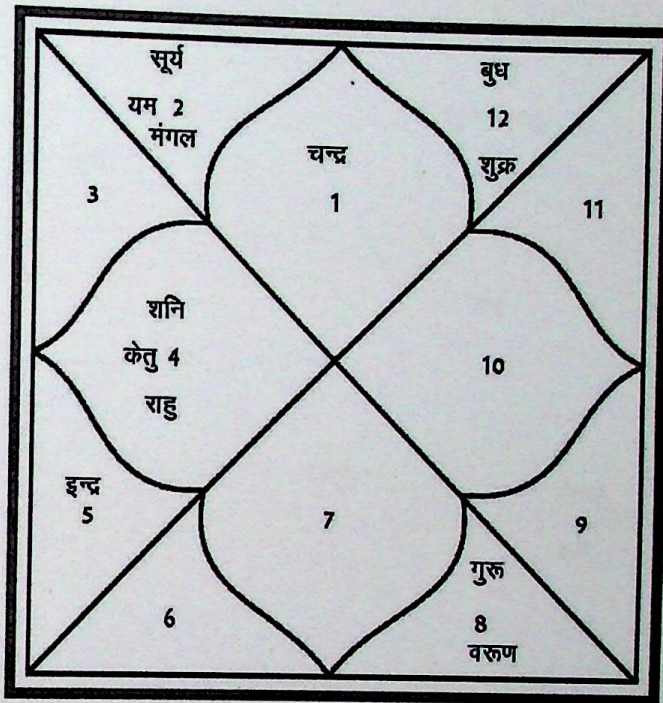
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



विंशांश कुण्डली



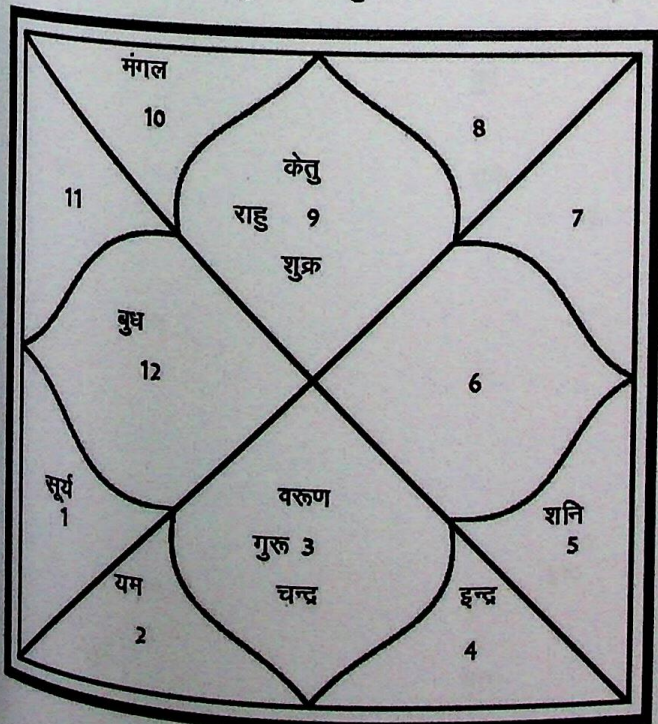
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥

॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

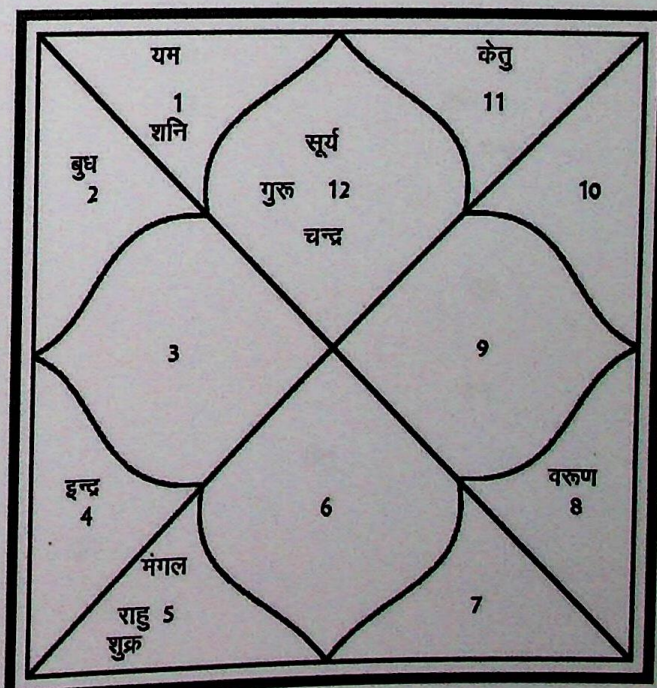
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

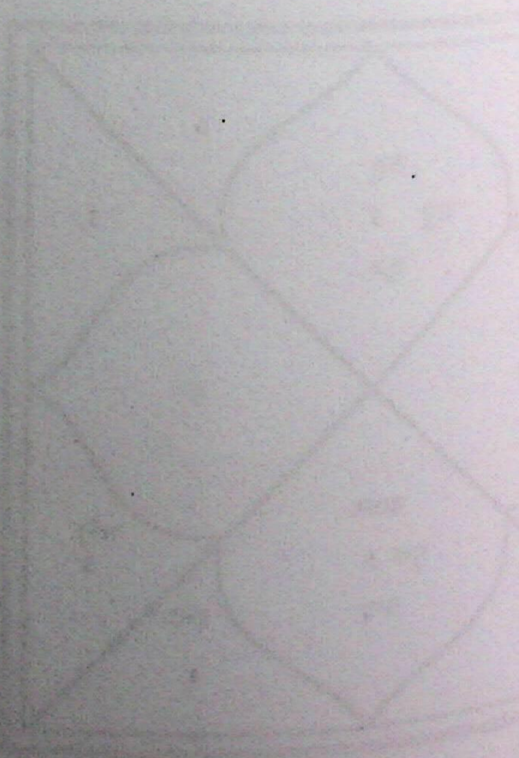
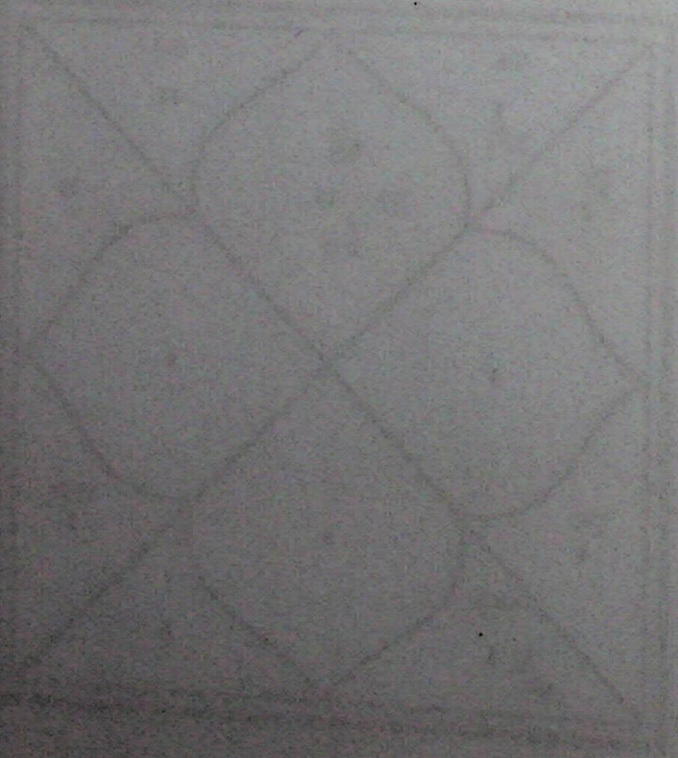
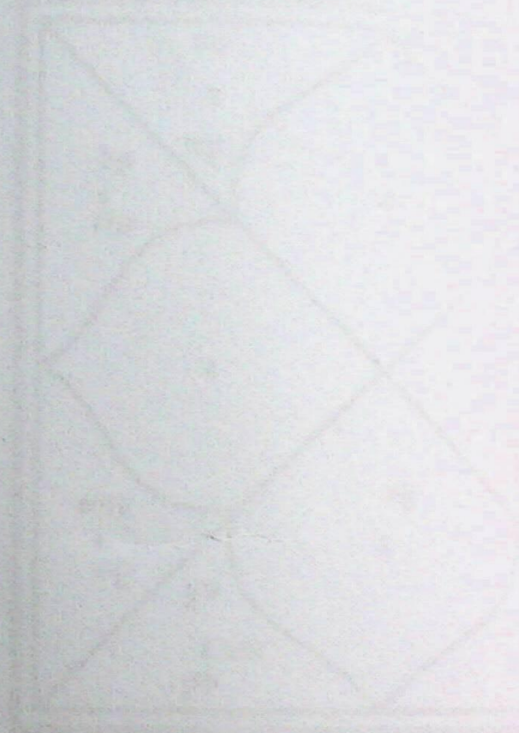
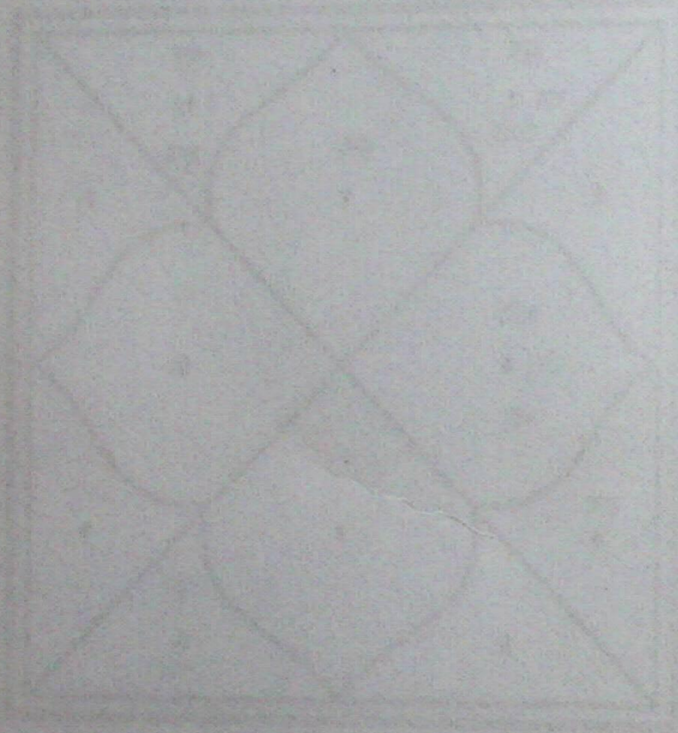
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





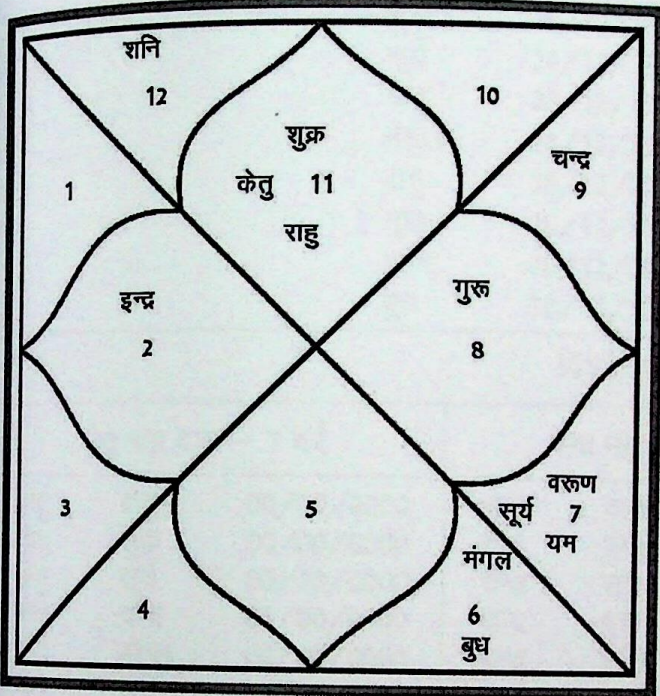
GANESH

॥ त्रिशांशके अरिष्ट फलम् ॥

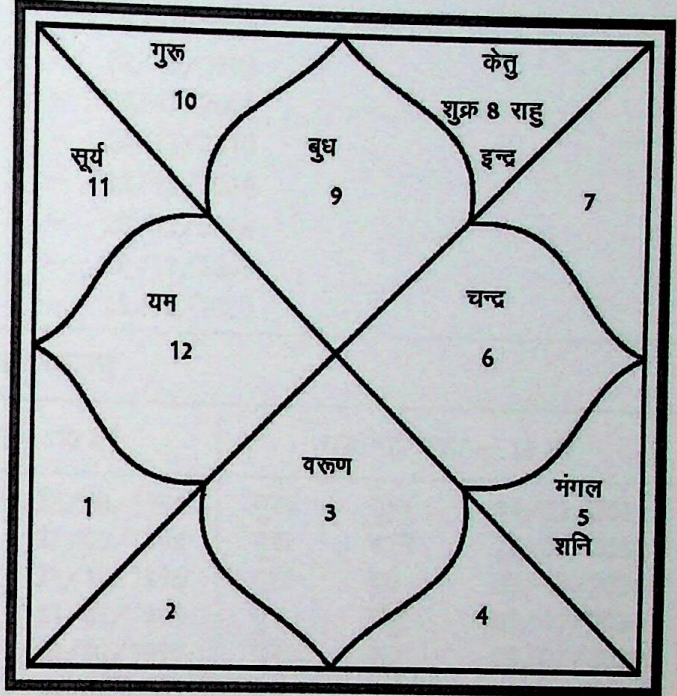
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिशांश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिशांश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

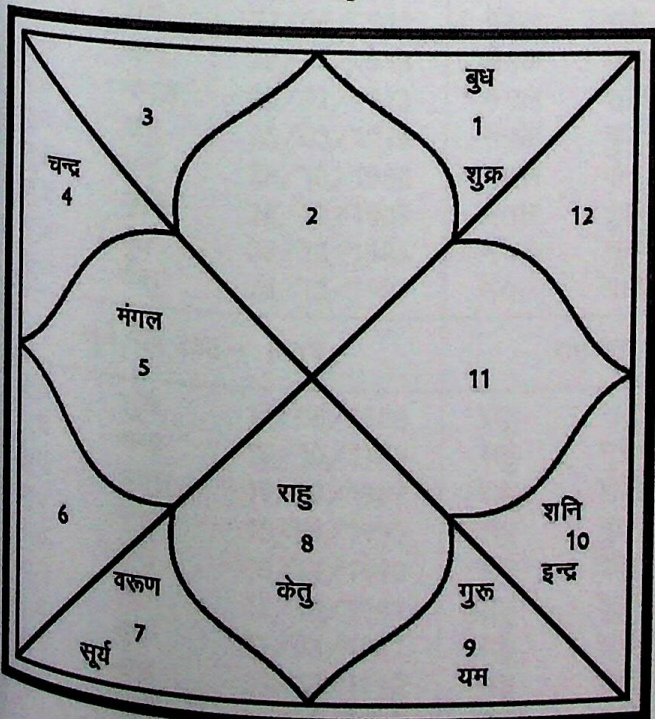


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

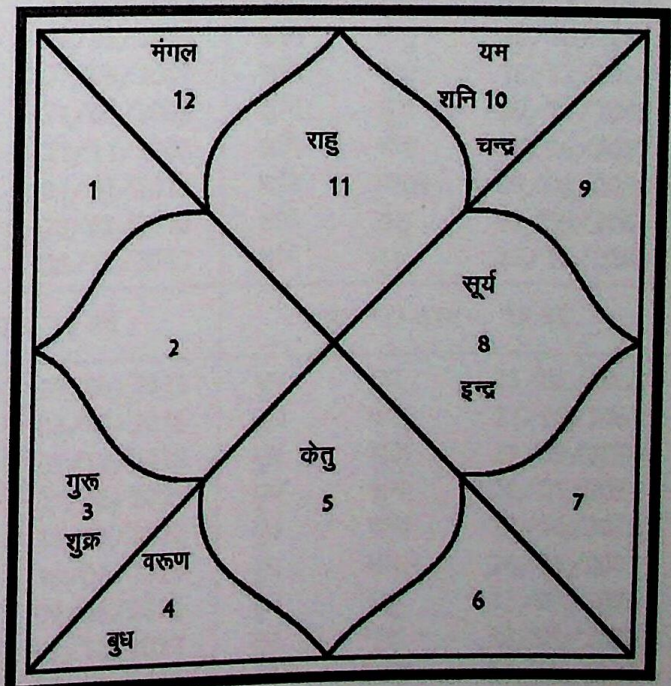
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

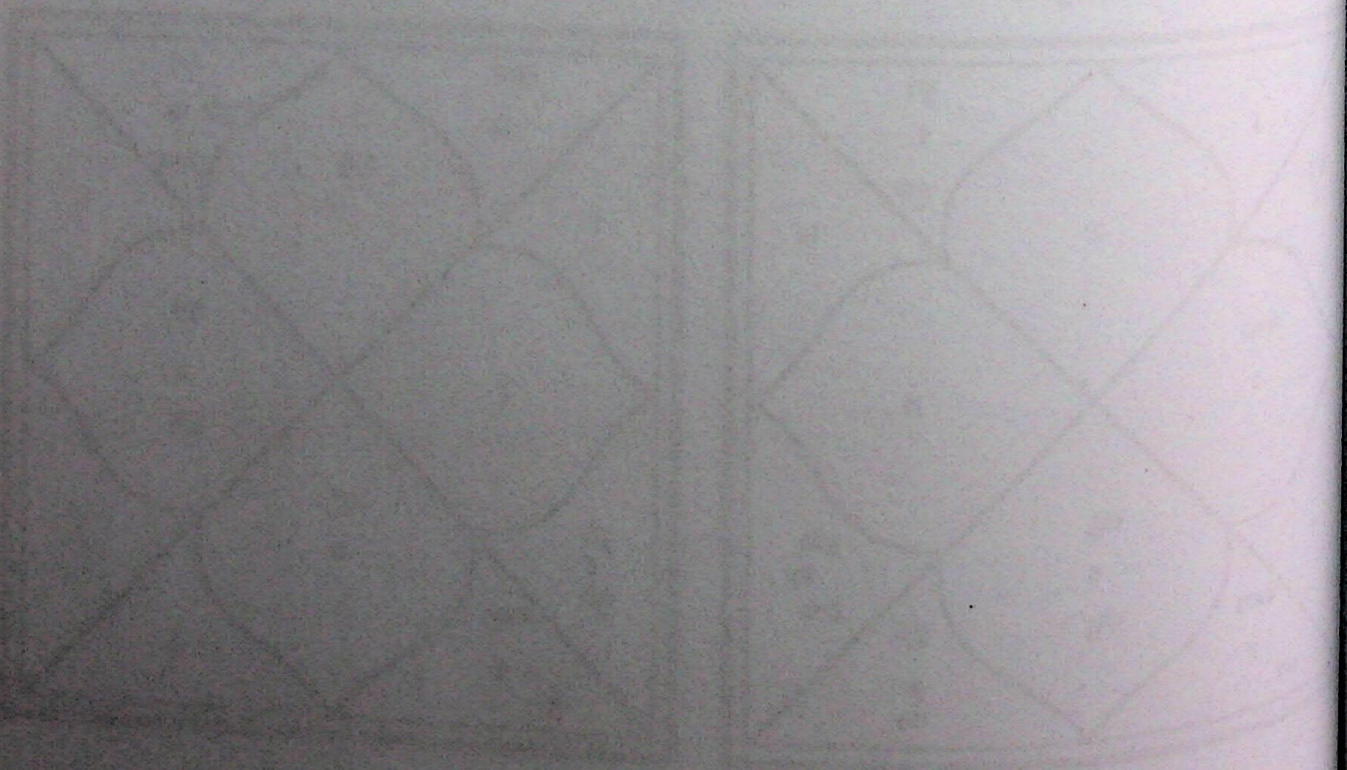
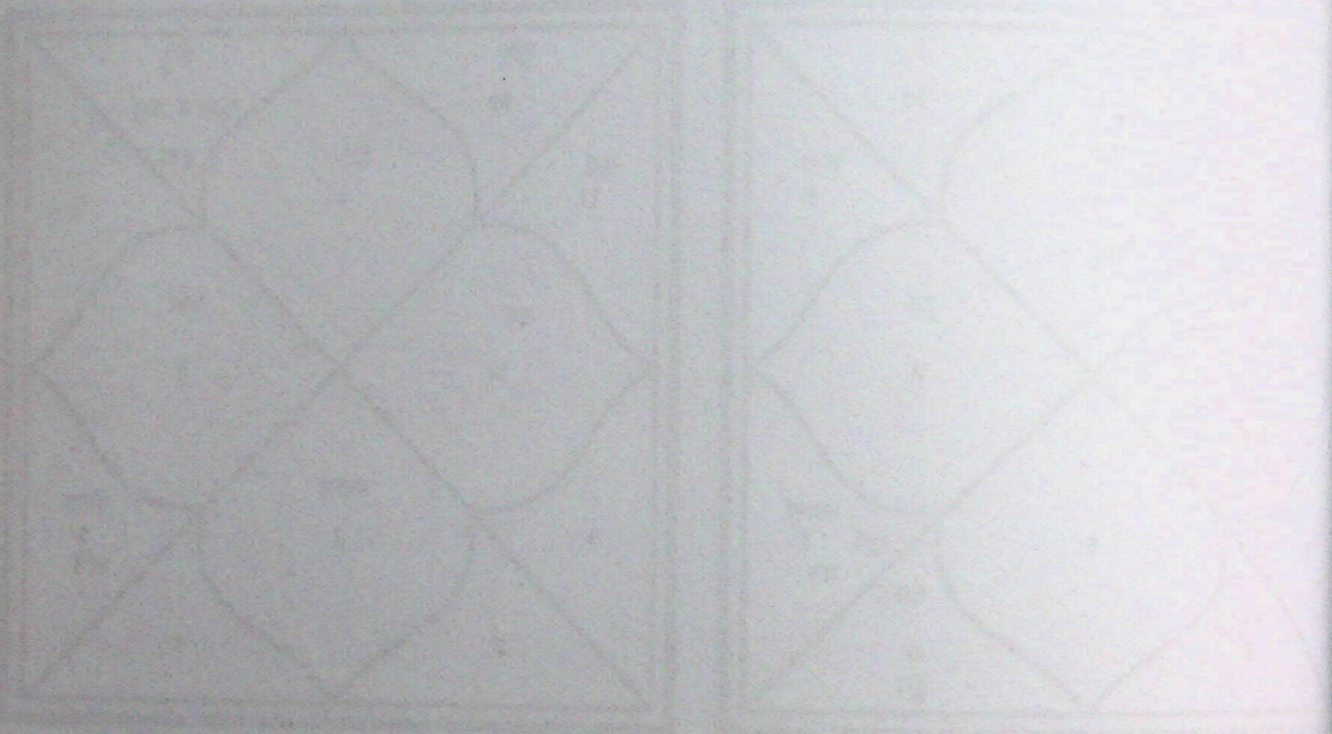
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्
सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





GANESH

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - केतु 0 वर्ष 3 मास 15 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

केतु	12/09/1967	-	28/12/1967
शुक्र	28/12/1967	-	28/12/1987
सूर्य	28/12/1987	-	28/12/1993
चन्द्र	28/12/1993	-	28/12/2003
मंगल	28/12/2003	-	28/12/2010
राहु	28/12/2010	-	28/12/2028
गुरु	28/12/2028	-	28/12/2044
शनि	28/12/2044	-	28/12/2063
बुध	28/12/2063	-	28/12/2080

विंशोत्तरी अन्तर दशा

केतु महा दशा - 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष			गुरु महा दशा - 16 वर्ष		
केतु	केतु	00/00/0000	चन्द्र	चन्द्र	28/10/1994	गुरु	गुरु	14/02/2031
केतु	शुक्र	00/00/0000	चन्द्र	मंगल	28/05/1995	गुरु	शनि	28/08/2033
केतु	सूर्य	00/00/0000	चन्द्र	राहु	27/11/1996	गुरु	बुध	03/12/2035
केतु	चन्द्र	00/00/0000	चन्द्र	गुरु	28/03/1998	गुरु	केतु	09/11/2036
केतु	मंगल	00/00/0000	चन्द्र	शनि	28/10/1999	गुरु	शुक्र	09/07/2039
केतु	राहु	00/00/0000	चन्द्र	बुध	28/03/2001	गुरु	सूर्य	27/04/2040
केतु	गुरु	00/00/0000	चन्द्र	केतु	28/10/2001	गुरु	चन्द्र	28/08/2041
केतु	शनि	00/00/0000	चन्द्र	शुक्र	27/06/2003	गुरु	मंगल	03/08/2042
केतु	बुध	28/12/1967	चन्द्र	सूर्य	28/12/2003	गुरु	राहु	28/12/2044
शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष			शनि महा दशा - 19 वर्ष		
शुक्र	शुक्र	27/04/1971	मंगल	मंगल	25/05/2004	शनि	शनि	31/12/2047
शुक्र	सूर्य	27/04/1972	मंगल	राहु	12/06/2005	शनि	बुध	09/09/2050
शुक्र	चन्द्र	28/12/1973	मंगल	गुरु	18/05/2006	शनि	केतु	18/10/2051
शुक्र	मंगल	25/02/1975	मंगल	शनि	27/06/2007	शनि	शुक्र	18/12/2054
शुक्र	राहु	25/02/1978	मंगल	बुध	24/06/2008	शनि	सूर्य	30/11/2055
शुक्र	गुरु	28/10/1980	मंगल	केतु	21/11/2008	शनि	चन्द्र	30/06/2057
शुक्र	शनि	28/12/1983	मंगल	शुक्र	21/01/2010	शनि	मंगल	09/08/2058
शुक्र	बुध	28/10/1986	मंगल	सूर्य	28/05/2010	शनि	राहु	15/06/2061
शुक्र	केतु	28/12/1987	मंगल	चन्द्र	28/12/2010	शनि	गुरु	28/12/2063
सूर्य महा दशा - 6 वर्ष			राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष		
सूर्य	सूर्य	15/04/1988	राहु	राहु	09/09/2013	बुध	बुध	25/05/2066
सूर्य	चन्द्र	15/10/1988	राहु	गुरु	03/02/2016	बुध	केतु	21/05/2067
सूर्य	मंगल	19/02/1989	राहु	शनि	09/12/2018	बुध	शुक्र	21/03/2070
सूर्य	राहु	15/01/1990	राहु	बुध	27/06/2021	बुध	सूर्य	28/01/2071
सूर्य	गुरु	03/11/1990	राहु	केतु	15/07/2022	बुध	चन्द्र	27/06/2072
सूर्य	शनि	15/10/1991	राहु	शुक्र	15/07/2025	बुध	मंगल	24/06/2073
सूर्य	बुध	21/08/1992	राहु	सूर्य	09/06/2026	बुध	राहु	12/01/2076
सूर्य	केतु	28/12/1992	राहु	चन्द्र	09/12/2027	बुध	गुरु	18/04/2078
सूर्य	शुक्र	28/12/1993	राहु	मंगल	28/12/2028	बुध	शनि	28/12/2080



GANESH

लग्न विचार

कुम्भ राशि, राशि चक्र की ग्यारहवीं राशि है। इस राशि में धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय व चतुर्थ चरण, शतभिषा नक्षत्र तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय चरण आते हैं। कुम्भ राशि का स्वामी शनि है। कुम्भ लग्न में जन्म होने से आप लम्बे कद, गेहुँए रंग तथा पतले शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका शरीर कृशकाय तथा ललाट भव्य होगा। आपका आकर्षक व्यक्तित्व होगा तथा आप मित्रों के प्रिय पात्र बनेंगे। मित्रों की आपके जीवन में कमी नहीं रहेगी। आप उनके लिये बड़े से बड़ा त्याग करने के लिये भी तैयार रहेंगे। आपको उन्नति के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि आपका भाग्य कुछ अस्थिर रहेगा। कठिनाइयों से आपका सहज ही पीछा नहीं छूटेगा। आप कल्पना प्रिय व्यक्ति होंगे। यथार्थ के स्थान पर भावनाओं का आपके जीवन में महत्त्व रहेगा। इसी प्रकार भौतिकता तथा व्यावहारिकता के स्थान पर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता का आप पर प्रभाव रहेगा। भीड़ से आप दूर ही रहेंगे। पार्टियों तथा सामाजिक सम्मेलनों में भाग लेना आपको पसन्द नहीं होगा।

आप सफल ज्योतिष का ज्ञान भी रखेंगे। अध्ययन में आपकी रुचि बचपन से रहेगी। इस कारण आप कई प्रकार के विषयों का अध्ययन करेंगे। कला और संस्कृति में आपकी रुचि रहेगी। इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिये आपको पुरस्कार भी प्राप्त हो सकते हैं। आपका आत्मविश्वास बहुत कमजोर रहेगा तथा आपकी निर्णय शक्ति भी सामान्य ही रहेगी। इस कारण नेतृत्व के कार्य में आप कम ही सफल हो पायेंगे। स्वभाव से आप बहमी प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा किसी पर भी आसानी से विश्वास नहीं करेंगे। आपका पारिवारिक जीवन साधारण रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। आपका सन्तान पक्ष सामान्य होगा। आपके लिये शैक्षिक क्षेत्र सर्वथा उपयुक्त होगा। प्रोफेसर, शिक्षा अधिकारी, दार्शनिक, लेखक, सम्पादक, डॉक्टर तथा निजी व्यवसाय में आप सफलता से कार्य करेंगे। आपका शरीर कमजोर रहेगा। आप छाती तथा फेफड़े के रोग, सर्दी-जुखाम, ज्वर, गले की बीमारियाँ, अपेन्डिक्स आदि से पीड़ित हो सकते हैं। घुटनों, पीठ में दर्द, चोट, मोच तथा रक्तचाप से भी आपको कष्ट होगा।

आपका जन्म कुम्भ लग्न में 03 अंश 20 कला से 06 अंश 40 कला के बीच में होने से आप मध्यम कद, गेहुँआ रंग तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आप प्रखर बुद्धि, आदर्शवादी, धैर्यवान, धार्मिक विचारों से सम्पन्न, उत्साही तथा क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आप मित्र बनाने में सिद्धहस्त होंगे इस कारण आपके मित्र अधिक तथा शत्रु कम होंगे। आपकी इच्छा शक्ति सबल होगी। इसके कारण आप कठिन कार्य भी आसानी से पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप कल्पना प्रिय व्यक्ति होंगे। किसी एक स्थान पर जमकर कार्य करना आपके बस की बात नहीं होगी, क्योंकि बार-बार कार्य क्षेत्र बदलते रहने से आपके पास यथेष्ट अर्थ संचय भी नहीं हो पायेगा। आप किसी भी कार्य को बहुत

GANESH

लग्न विचार

जोर-शोर से आरम्भ करेंगे, परन्तु कुछ समय पश्चात् आपका जोश ठंडा पड़ जायेगा फलस्वरूप वह कार्य बड़ी कठिनाई से पूरा होगा।

आप शैक्षिक क्षेत्र में सफल रहेंगे। विभिन्न विषयों के अध्ययन में आपकी रुचि रहेगी तथा गूढ़ विषयों के अध्ययन का भी आपको शौक रहेगा। आपको क्रोध अधिक आयेगा, कभी-कभी तो आप किसी-किसी के साथ स्थायी शत्रुता ही कर बैठेंगे। आप दूसरों की बात पर विश्वास करके कभी-कभी हानि भी उठायेंगे। कला, संगीत, काव्य, नाटक आदि में आपकी रुचि रहेगी तथा आप इन गतिविधियों में भाग भी लेंगे। आपका पारिवारिक जीवन साधारण रहेगा। आपका सन्तान सुख भी सामान्य ही रहेगा। आप प्रोफेसर, रीडर, दार्शनिक, लेखक, कवि, नाटककार, गायक, पत्रकार आदि बन सकते हैं। आपको राजनीति में भी सफलता मिलेगी। आपको ज्वर, सिरदर्द, स्नायु रोग, छाती और गले सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहेगी।



GANESH

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान पर सिंह राशि में स्थित है जो सूर्य की स्वराशि है। सूर्य सप्तम स्थान में सामान्यतः अच्छा फल नहीं देता है। अतः आपको यह सूर्य अच्छे फल प्रदान नहीं करेगा। यह सूर्य आपको क्रोधी तथा उतावले स्वभाव का बनायेगा। आपके स्वभाव से आपके परिजन भी रुष्ट रहेंगे तथा मित्रों की संख्या भी कम होगी।

आपको स्त्री सुख में भी बाधा रह सकती है। आपका स्वभाव कठोर होने से आपकी पत्नी भी आपसे प्रसन्न नहीं रहेगी। वह स्वयं अच्छे समृद्ध परिवार से सम्बन्धित तथा अभिमानी होगी। वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण हो सकता है। सूर्य के स्वराशिस्थ होने से परित्याग की सम्भावना तो नहीं होती पर आपके अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध हो सकते हैं। सन्तान सुख भी कम रहेगा।

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सूर्य अच्छे फल देगा। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। मध्य आयु पश्चात् हृदय तथा पेट सम्बन्धी बीमारियाँ कष्ट का कारण बन सकती है। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार करना पसन्द करेंगे। साझेदारी के व्यापार में आपको विशेष लाभ नहीं मिल सकता। आपके लिये स्वतन्त्र व्यापार ही उत्तम रहेगा। परिश्रमी तथा कार्य कुशल होने से आपके व्यापार की उन्नति शीघ्र होगी।

यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से लग्नस्थ कुम्भ राशि को देखता है। जिसका स्वामी शनि सूर्य का शत्रु है। आप औसत से कुछ लम्बे, गेहुँए या कुछ श्याम वर्ण तथा सामान्य शारीरिक क्षमता वाले होंगे। आपका स्वभाव क्रोधी होगा तथा पारिवारिक सुख कम मिलेगा। आपके सम्बन्ध अपने पिता से सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे।

कुम्भ लग्न में सप्तम भाव के सूर्य के केन्द्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी स्वराशि सिंह में स्थित होने से आपको स्त्री का सुख पर्याप्त मिलेगा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होगी। आपको ससुराल से सहयोग मिलेगा तथा आपका गृहस्थ-जीवन आनन्दपूर्ण बना रहेगा। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपके शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी रह सकती है। स्त्री-पक्ष से आपके सामान्य मतभेद बने रहने के बावजूद भी व्यावसायिक सफलता से आपका गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहेगा।

चन्द्र

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में, धनु राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु, चन्द्र के मित्र हैं। सामान्यतः एकादश स्थान में चन्द्र अच्छे फल प्रदान करता है, किन्तु यहाँ षष्ठेश चन्द्र, एकादशस्थ होने से मध्यम फल प्रदान करेगा। यह चन्द्र आपको समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है। आपका स्वभाव कठोर तथा अभिमानी होने से, आपके मित्रों की



GANESH

ग्रह विचार

संख्या कम तथा शत्रुओं की संख्या अधिक रहेगी।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदि चन्द्र निर्बल अथवा पापग्रहों से पीड़ित हो तो यह पेट, पाचन तंत्र तथा आँतों के रोगों से ग्रस्त करेगा। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। शैक्षणिक जीवन में अच्छी प्रगति हो सकती है। आपकी रुचि पर्यटन में भी होती है। आप ऐतिहासिक स्थानों में पर्यटन करना पसन्द करेंगे। आपको शत्रुओं के कारण भी कष्ट उठाना पड़ सकता है। आपके कुछ मित्र ही आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं, शत्रु-घात से शारीरिक कष्ट की भी सम्भावना हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपको व्यापार में पर्याप्त लाभ होगा। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत भी हो सकते हैं। वाहन सम्बन्धी कार्यों से अच्छा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। प्रकृति से कृपण होने के कारण आप धन का संग्रह करने में समर्थ रहते हैं।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्र की मित्रता है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा। आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। सन्तान सुख में न्यूनता रहेगी। अपनी माता के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त हो सकता है।

कुम्भ लग्न में एकादश भाव के चन्द्रमा के षष्ठेश होकर लाभ भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आप अपने मनोबल एवं परिश्रम के द्वारा आमदनी में वृद्धि करेंगे। आप शत्रु-पक्ष पर अपना प्रभाव बनाये रखेंगे तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ उठायेंगे, परन्तु आपको अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये दौड़-धूप अधिक करनी पड़ सकती है तथा लाभ के पक्ष से भी आपका कुछ असन्तोष बना रह सकता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः आपको विद्या, बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होगी, परन्तु सन्तान पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहेगी।

मंगल

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है जो मंगल की स्व-राशि है। सामान्यतः दशमस्थ मंगल शुभफल दायक होता है। यहाँ तृतीयेश तथा दशमेश मंगल स्वराशि में दशमस्थ होकर आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह मंगल आपके लिए उत्तम राजयोग बनायेगा। आपका स्वभाव कठोर रहेगा तथा आपके मित्रों में से अधिकांश लोग समाज के उच्च वर्गों से सम्बन्धित रहेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सामान्य बीमारियों की आप परवाह ही नहीं करेंगे।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आपकी विज्ञान विषय में विशेष अभिरुचि होगी। पर्यटन तथा गूढ़ विषयों के अध्ययन का भी आपको शौक रहेगा। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। राज्य पक्ष के



GANESH

ग्रह विचार

अनुकूल होने से आपके कार्य आसानी से पूरे होंगे। अपने भाई-बहिनों से भी आपको सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप सेना, पुलिस, होमगार्ड, गुप्तचर सेवा तथा औद्योगिक क्षेत्रों में भी उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कार्यकुशलता के लिये भी आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है जिसके स्वामी शनि से मंगल की शत्रुता है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा गम्भीर रहेगा। आपके कठोर स्वभाव से आपके परिजन पीड़ित रहेंगे। मित्रों के साथ आपका व्यवहार अच्छा रहेगा। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में वृष राशि में पड़ती है जिसके स्वामी शुक्र, मंगल के लिये सम हैं। अपनी माता के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधायें भी प्राप्त होंगी। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा। आपको सन्तान सुख में विलम्ब सम्भव है।

कुम्भ लग्न में दशम भाव के मंगल के केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपनी स्वराशि वृश्चिक पर स्थित होने से आपको पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। आपको भाई-बहिनों का सुख भी मिलेगा तथा आपके पराक्रम में भी अत्यधिक वृद्धि होगी। यहाँ से मंगल अपनी चौथी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः शारीरिक-सौन्दर्य में कमी रहते हुये भी आपके प्रभाव, स्वाभिमान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मंगल के अपनी सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के कारण आपको माता के सुख में सामान्य कमी महसूस हो सकती है, परन्तु भूमि, मकान आदि की भी प्राप्ति होगी। मंगल के अपनी आठवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से आपको सन्तान-पक्ष से सुख मिलेगा तथा आपकी विद्या एवं बुद्धि में भी विशेष वृद्धि होगी।

बुध

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में, कन्या राशि में स्थित है, जो बुध की स्व राशि तथा उच्च राशि है। सामान्यतः अष्टमस्थ बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, यहाँ पंचमेश तथा अष्टमेश बुध, अष्टम स्थान में आपको प्रायः अशुभ फल ही देगा। यह बुध आपको चारित्रिक रूप से दुर्बल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कठोर, परनिन्दक तथा कटुभाषी रहेगा। आपके मित्रों की संख्या कम रहेगी तथा वे भी आपकी मदद करने की बजाय कुसंगति की ओर ले जा सकते हैं। परिजनों से आपके वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बाल्यावस्था में कुछ कमजोर तथा बाद में मध्यम रहेगा। स्नायु दौर्बल्य, मस्तिष्क तथा नसों की बीमारियों से पीड़ा हो सकती है। युवावस्था में स्वास्थ्य में सुधार होगा।



GANESH

ग्रह विचार

आपकी बुद्धि मध्यम रहती है। शैक्षणिक जीवन में अस्वस्थता या अन्य कारणों से व्यवधान आ सकते हैं, कभी-कभी असफलता भी मिल सकती है। आपका रुझान साहित्य, ललितकला, रसायन विज्ञान आदि विषयों की ओर रहेगा। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विद्याओं में भी आपकी रुचि रह सकती है। सन्तान सुख कम रहेगा, सन्तान के स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रह सकती है। आपका आयु पक्ष अच्छा रहेगा। आपको आकस्मिक रूप से धनलाभ भी हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, रसायन विज्ञानी, साहित्य सेवी आदि बन सकते हैं। आप गूढ़ अथवा रहस्यमय विषयों के बारे में अत्यन्त कुशलता से लेखन कर सकते हैं। आपको सरकारी नौकरी भी मिल सकती है। व्यापार में आपको लाभ प्राप्त होता है।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जो बुध की नीच राशि है। आपको कभी-कभी अर्थाभाव का सामना भी करना पड़ सकता है। कुटुम्ब का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा।

कुम्भ लग्न में अष्टम भाव के बुध के उच्च का होकर आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी स्वराशि कन्या पर स्थित होने से आपको आयु एवं पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होगी। आपका दैनिक जीवन बड़ा प्रभावशाली रहेगा, परन्तु विद्या एवं सन्तान के क्षेत्र में आपको कुछ कमी रह सकती है, जबकि आपकी विवेक-शक्ति तीव्र होगी और वाणी में भी विशेष प्रभाव पाया जा सकता है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः आपको धन-संचय करने में कठिनाई हो सकती है तथा कुटुम्ब से भी आपको कुछ क्लेश प्राप्त होगा।

गुरु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जो गुरु की उच्च राशि है। सामान्यतः षष्ठस्थ गुरु अशुभ फल प्रदान करता है। यहाँ धनेश तथा एकादशेश गुरु षष्ठ स्थान में उच्च राशिस्थ होने से आपको मिश्रित फल दायक रहेगा। यह गुरु आपको परोपकारी तथा चतुर व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मृदु, परन्तु अस्थिर होता है। आपके विचित्र व्यवहार से मित्र तथा परिजन भी कभी-कभी विस्मय में पड़ जाते हैं। आपको शीघ्र ही आवेश आ जाता है, परन्तु शान्त भी जल्दी ही हो जाता है। आवेश उतरने पर कभी-कभी आप यह भी भूल जाते हैं, कि आपकी नाराजी का कारण क्या था। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। आप गुदा रोग अथवा आँत वृद्धि रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपको शारीरिक कमजोरी रहने के कारण आपका कोई भी रोग जल्दी ठीक नहीं होता है।



GANESH

ग्रह विचार

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, कला, संस्कृत, चिकित्सा, काव्य आदि क्षेत्रों में होता है। अध्ययन काल में आने वाली समस्याओं का हल आप अपने पुरुषार्थ से निकाल लेते हैं। ज्योतिष, धर्मशास्त्रों आदि में भी आपकी रुचि होती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। आपके सन्तान सुख में बाधा अथवा विलम्ब सम्भव है। शत्रुओं के कुचक्र आपको हानि पहुँचाने में सफल नहीं होते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप साहित्यकार, लेखक, प्राध्यापक, कवि, कलाकार, सरकारी कर्मचारी आदि बन सकते हैं। चिकित्सक बनकर आप धन के साथ-साथ यश भी प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार में भी आपको लाभ होता है।

यह गुरु अपनी पंचम पूर्ण दृष्टि से दशम स्थान में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में मकर राशि पर पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है। आप प्रकृति से कृपण रहेंगे। आयात-निर्यात के व्यापार में आपको लाभ नहीं होगा। यह गुरु अपनी नवम पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में मीन राशि को देखता है, जो गुरु की स्वराशि है। आप अपने पुरुषार्थ से धनार्जन करने में सफल रहेंगे। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

कुम्भ लग्न में षष्ठ भाव के गुरु के उच्च का होकर रोग एवं शत्रु भवन में अपने मित्र चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आप धन की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर बहुत प्रभाव रखेंगे तथा झगड़े-झंझट के मामलों से लाभ प्राप्त करेंगे। आपका ननिहाल पक्ष ऊँचा होगा। आपको कुटुम्ब से कुछ झंझट एवं धन प्राप्ति के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखता है, अतः आपको पिता से शक्ति, राज्य से सम्मान एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होगा। गुरु के अपनी सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को शत्रु राशि में देखने से आपको खर्च एवं बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से परेशानी हो सकती है। गुरु के अपनी नवीं-दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने के कारण कुछ परिश्रम एवं झंझटों के साथ आपके धन की वृद्धि होगी तथा आपको कुटुम्ब का सुख भी मिलेगा।

शुक्र

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से शुक्र की शत्रुता है। सामान्यतः सप्तमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा नवमेश शुक्र सप्तम स्थान में आपको उत्तम फलप्रद रहेगा। यह शुक्र आपको मितभाषी, विद्वान्, सुखी, सम्पन्न तथा आस्तिक व्यक्ति बनाता है। आप स्व-निर्मित पुरुष (सेल्फ

GANESH

ग्रह विचार

मेड मेन) होते हैं। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होता है किन्तु अपनी मिलनसार प्रवृत्ति के कारण आप अपरिचितों को भी मित्र बनाने में सफल रहते हैं। अपने परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा पित्त प्रकृति के रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, भाषा, साहित्य, ललित कला, अर्थशास्त्र, संगीत, विधि आदि विषयों में रहता है। गायन-वादन, नाटक आदि में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। शैक्षणिक क्षेत्र में आपकी उपलब्धियाँ सराहनीय रहती हैं। अपनी माता से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि सुख भी प्राप्त हो सकता है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं। पूजा, पाठ, तीर्थयात्रा आदि में आपका विश्वास रहेगा। आपका भाग्योदय 25वें वर्ष में हो सकता है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाली स्त्री होती है। उसका स्वभाव स्वाभिमानी रहता है। साहित्य, कला, संगीत आदि में उसकी रुचि हो सकती है। आपके साथ उसके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। विवाह के बाद आपकी भाग्योन्नति हो सकती है।

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, साहित्यकार, गणितज्ञ, संगीतकार, निर्देशक, वकील, भाषाविद् आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको लाभ उत्तम रहता है। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि प्रथम स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि की शुक्र से मित्रता है। आप लम्बे कद, गोहूँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका स्वभाव मिलनसार तथा व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा।

कुम्भ लग्न में सप्तम भाव के शुक्र के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आपको स्त्री-पक्ष से कुछ असन्तोष के साथ सुख मिलेगा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी। आपको माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होगा तथा धरेलू वातावरण भी आनन्दमय बना रहेगा। आप धर्म का पालन करने वाले तथा भाग्योन्नति के लिए प्रयत्नशील रहने वाले व्यक्ति होंगे। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपको शारीरिक सौन्दर्य, सुख, सौभाग्य, यश, सम्मान एवं प्रभाव की वृद्धि प्राप्त होगी।

शनि

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः द्वितीयस्थ शनि मिश्रित फल देता है। यहाँ लग्नेश तथा द्वादशेश शनि द्वितीय स्थान में आपको मध्यम फल प्रद रहेगा। यह शनि आपको

[Faint, illegible text visible through the paper, likely bleed-through from the reverse side.]

GANESH

ग्रह विचार

दीर्घायु, स्थूल, सम्पन्न तथा आस्तिक प्रकृति का व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होता है तथा अपनी गम्भीर प्रकृति के कारण आप समाज में अधिक घुल-मिल नहीं पाते हैं। फलतः लोग आपको अहंकारी भी समझ सकते हैं। आपके मित्र सीमित संख्या में होते हैं किन्तु ये आपके सहायक भी रहते हैं। अपने परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा नेत्र रोग तथा कफ सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विधि, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष, धर्मशास्त्रों आदि ग्रन्थों के अध्ययन तथा ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण में आपकी रुचि होती है। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। शनैः शनैः धन संग्रह करके आप सम्पन्न बनते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपका भाग्योदय अपने जन्म स्थान से दूरस्थ स्थानों में होता है। आप प्राध्यापक, लेखक, पुरातत्व विज्ञानी, वकील, साहित्यकार, मजिस्ट्रेट, सरकारी अधिकारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको लाभ उत्तम रहेगा। आपकी व्ययशील प्रकृति होने के कारण अर्थ संग्रह करने में आपको विलम्ब हो सकता है।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से शनि की मित्रता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होगा। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से अष्टम स्थान में कन्या राशि को देखता है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आप दीर्घायु होते हैं। आपको आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। वसीयत आदि से भी आपको लाभ होना सम्भव है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपकी आय में वृद्धि होगी। अपने पुरुषार्थ से आप आय बढ़ाने के नये स्रोतों का पता लगा सकते हैं।

कुम्भ लग्न में द्वितीय भाव के शनि के धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको धन-संचय करने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ सकता है, फिर भी धन एवं कुटुम्ब के सुख में कमी बनी रहेगी। आपका खर्च अधिक रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों में प्रतिष्ठा मिलेगी तथा आपका शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख भी त्रुटिपूर्ण बना रह सकता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख मिलेगा, परन्तु आपके घरेलू-सुख में कुछ कमी रह सकती है। शनि के अपनी दसवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आपकी आयु एवं पुरातत्व की शक्ति में वृद्धि होगी। शनि के अपनी दसवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आपको आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। आप अधिक मुनाफा कमाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति होंगे, परन्तु सफल नहीं हो पायेंगे।

GANESH

ग्रह विचार

राहु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में, मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। सामान्यतः तृतीयस्थ राहु शुभ फल देता है, यहाँ तृतीय स्थान में मेष राशि का राहु आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह राहु आपको पराक्रमी, यशस्वी, सुखी, दीर्घायु तथा पुरुषार्थी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव तेज तथा प्रकृति अभिमानी रहेगी। समाज सेवा तथा जनहितकारी कार्यों से लोगों में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। निर्भय होने तथा विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं घबराने से आपके कार्य सुगमता से पूरे होंगे। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यदा-कदा कर्ण रोग, गले व त्वचा की बीमारियाँ हो सकती हैं।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा। इसके अतिरिक्त विधि, भाषा, गणित, साहित्य आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहती है। परिश्रम से आप अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पर्यटन का भी शौक रहेगा। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होते हैं। भाईयों के लिये यह राहु शुभ नहीं होता है। बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप वैज्ञानिक, वकील, मजिस्ट्रेट, गणितज्ञ, प्राध्यापक, लेखक, भाषाविद्, सर्जन आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ हो सकता है। राजनीति में सफलता तथा उच्च पद भी पा सकते हैं।

इस राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि, सप्तम स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद की, गेहुँए वर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाली किन्तु तेज स्वभाव की हो सकती है। आपकी व्यवहारकुशलता से उसके साथ वैचारिक सामंजस्य बना रहेगा। यह राहु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से, नवम स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु की मित्रता है। धर्म में आपकी आस्था रहेगी। आपका भाग्योदय 42वें वर्ष में हो सकता है। इस राहु की नवम पूर्ण दृष्टि, एकादश स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जो राहु की नीच राशि है। अर्थ लाभ के लिए आपको कठोर पुरुषार्थ करना पड़ेगा, आपकी आय में किसी कारणवश व्यवधान आ सकता है।

कुम्भ लग्न में तृतीय भाव के राहु के भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आपके पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होगी, परन्तु भाई-बहिनों से आपका विरोध रह सकता है। आप अपनी गुप्त-युक्ति, बुद्धि-चातुर्य, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर सुख के साधन एवं सफलतायें प्राप्त करेंगे तथा समाज में अपना प्रभावपूर्ण सम्मान भी बना लेंगे। आप अपनी गुप्त कमजोरियों एवं चिन्ताओं को छिपायेंगे तथा प्रकट रूप में विजयी बने रहेंगे।

GANESH

ग्रह विचार

केतु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से नवम् स्थान में तुला राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः नवम् स्थान (भाग्य स्थान) में केतु मध्यम फल प्रदान करता है, यहाँ नवम् स्थान में तुला राशि का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह केतु आपको दयालु, पुरुषार्थी, कलाप्रेमी, उदार, बन्धु विरोधी तथा प्रवासी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। सुधारवादी विचारों तथा प्रचलित मान्यताओं के विरोधी होने के कारण मित्रों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। बन्धुओं के साथ भी आपका मेल नहीं रहता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में भागीदारी से समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहती है। कार्य कुशलता तथा कठोर परिश्रम से आपके कार्य आसानी से पूरे होते हैं। मित्रों तथा परिजनों के साथ आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। यदा-कदा वात तथा कफ सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान सहित्य, कला, रसायन, चिकित्सा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहेगा। काव्य, संगीत तथा दर्शन शास्त्र में आपकी रुचि रहती है। आपको पर्यटन का शौक रहता है तथा देश, विदेश में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। प्रवास से लाभ सम्भव है। आप धार्मिक व्यक्ति होते हैं किन्तु कर्मकाण्डों तथा रीतिरिवाजों के विरोधी होने से आपको धर्म विरोधी अथवा नास्तिक भी समझा जा सकता है। आपका भाग्योदय 46वें वर्ष में सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, कलाकार, रसायनशास्त्री, न्यायाधीश, वकील, चिकित्सक आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ हो सकता है। राजनीति में सफलता से आप लोकप्रिय जननेता भी बन सकते हैं।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से प्रथम स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप मध्यम कद के, गेहुँए वर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका व्यक्तित्व आकर्षक तथा स्वभाव मिलनसार रहेगा किन्तु सुधारवादी विचारधारा के कारण आपको मित्रों तथा परिजनों का विरोध भी सहन करना पड़ सकता है। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में मेष राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होंगे। भाई-बहनों से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से पंचम् स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो केतु की नीच राशि है। आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहेगा किन्तु मानसिक तनाव तथा अन्तर्द्वन्द्व रह सकता है। सन्तानसुख में विलम्ब अथवा बाधा से चिन्ता रहेगी।

कुम्भ लग्न में नवम भाव के केतु के त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि

GANESH

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— नीलम (ब्लू सफायर) उपरत्न:— काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली) नीलम चार रत्नी का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य, आयु आदि में वृद्धि करवाने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— हीरा (डायमण्ड) उपरत्न:— वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाइट एगेट) हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या—विवेक में वृद्धि तथा धनागम करवाने वाला रहेगा।

कारक रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगेट) मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्नी का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, वाहन सुख, पदोन्नति, व्यापार में वृद्धि करने वाला रहेगा।

HIMANSHU

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 10/07/2005	विक्रमी संवत्	: 2062
जन्म दिन	: रविवार	शक संवत्	: 1927
जन्म समय	: 13:45:57 घण्टे	ऋतु	: वर्षा
इष्टकाल	: 20:33:06 घटी	मास	: आषाढ़
जन्म स्थान	: KATNI	पक्ष	: शुक्ल
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: चतुर्थी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 27:01:10 घण्टे
अक्षांश	: 23:51:00 उत्तर		: 53:41:08 घटी
रेखांश	: 80:24:00 पूर्व	जन्म तिथि	: चतुर्थी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:08:24 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: मघा
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 28:09:14 घण्टे
स्थानिक समय	: 13:37:33 घण्टे		: 56:31:19 घटी
साम्पातिक काल	: 08:50:59 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: मघा
वेलान्तर	: 00:05:20 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: सिद्धि
सूर्योदय	: 05:32:43 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 19:08:18 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:54:45 घण्टे		: 33:58:59 घटी
दिनमान	: 13:22:02 घण्टे	जन्म योग	: सिद्धि
रात्रिमान	: 10:37:58 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: वणिज
सूर्य की स्थिति (अयन)	: दक्षिणायण	करण समाप्ति काल	: 13:49:11 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: उत्तर		: 20:41:10 घण्टे
अयनांश	: 23:56:01	जन्म करण	: वणिज



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com

HIMANSHU

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥
॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र	
मास	:	ज्येष्ठ	लग्न-लग्नाधिपति	: तुला-शुक्र
दिनांक	:	3,8,13	राशि-राशि स्वामी	: सिंह-सूर्य
दिन	:	शनिवार	नक्षत्र-चरण	: मघा-2
नक्षत्र	:	मूल	नक्षत्र स्वामी	: केतु
योग	:	धृति	योग	: सिद्धि
करण	:	बव	करण	: वणिज
प्रहर	:	1	गण	: राक्षस
वर्ग	:	बिलाव	योनि	: मूषक
लग्न	:	मेष	नाडि	: अन्त्या
सूर्य	:	धनु	वर्ण	: क्षत्रिय
चन्द्र	:	मकर	वश्य	: वनचर
मंगल	:	मकर	वर्ग	: मूषक
बुध	:	तुला	युंजा	: मध्य
गुरु	:	कुम्भ	हंसक (तत्व)	: अग्नि
शुक्र	:	मीन	जन्म नामाक्षर	: मी
शनि	:	वृश्चिक	पाया-राशी	: रजत
राहु	:	मेष	पाया-नक्षत्र	: रजत
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	कर्क	भयात	: 31:28:56 घटी
सूर्य के अंश	:	मिथुन 24:14:43	भभोग	: 67:28:15 घटी
लग्न के अंश	:	तुला 14:41:08	भोग्य दशा काल	: केतु 3 व 8 म 24 दिन

॥ जन्म संपद्विपक्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्व जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत, विपत, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं।
अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध

HIMANSHU

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥
॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

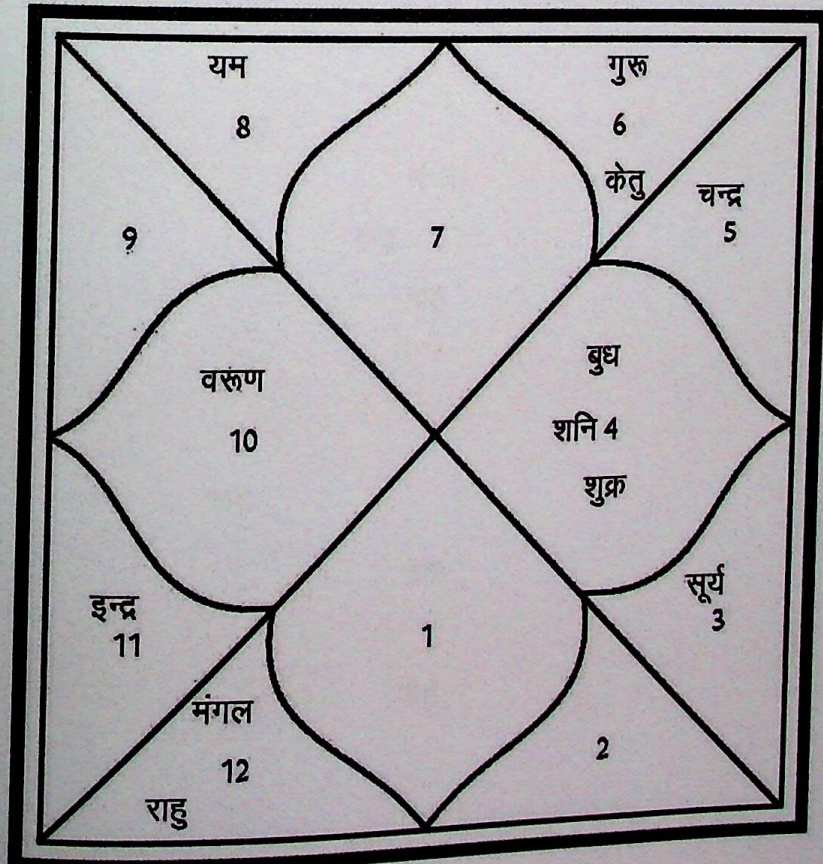
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

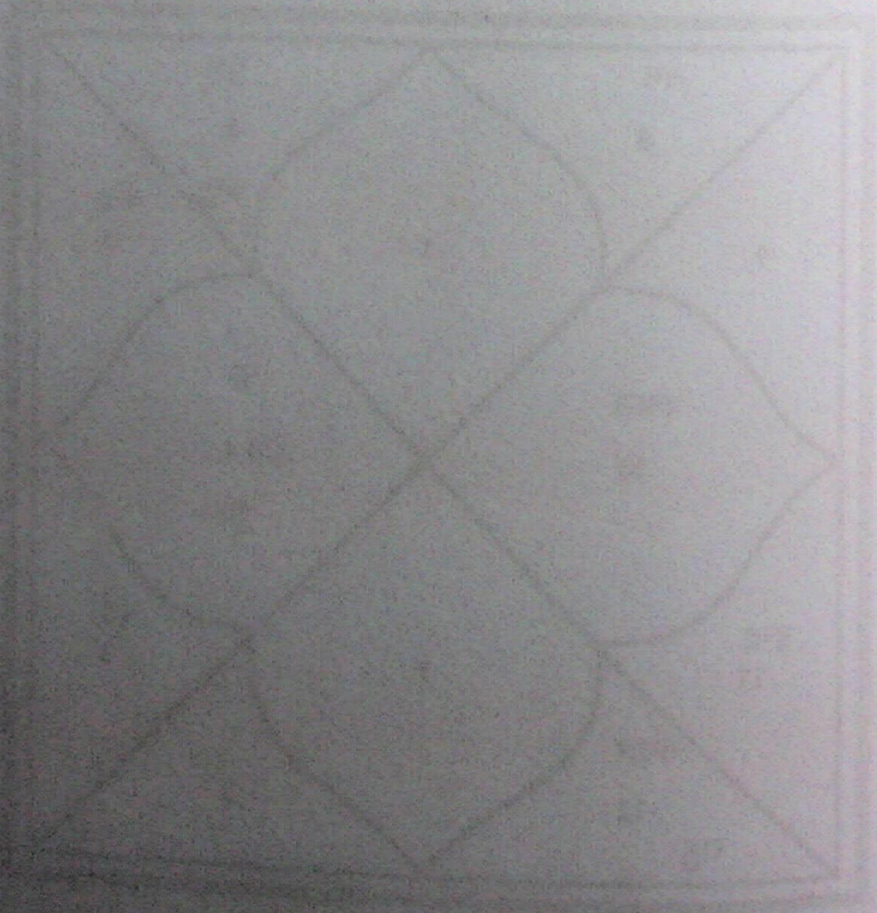
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	तुला	14:41:08	—	स्वाति	3	राहु	—	—	—
सूर्य	मिथुन	24:14:43	00:57:14	पुनर्वसु	2	गुरु	सम स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	सिंह	06:13:17	11:50:52	मघा	2	केतु	मित्र स्थान	—	मार्गी
मंगल	मीन	25:04:06	00:38:33	रेवती	3	बुध	मित्र स्थान	—	मार्गी
बुध	कर्क	20:27:34	00:53:14	अश्लेषा	2	बुध	शत्रु स्थान	—	मार्गी
गुरु	कन्या	16:45:33	00:05:49	हस्त	3	चन्द्र	शत्रु स्थान	—	मार्गी
शुक्र	कर्क	20:44:22	01:12:37	अश्लेषा	2	बुध	शत्रु स्थान	—	मार्गी
शनि	कर्क	05:16:26	00:07:40	पुष्य	1	शनि	शत्रु स्थान	अस्त	मार्गी
राहु	मीन	23:57:25	00:07:34	रेवती	3	बुध	सम स्थान	—	वक्री
केतु	कन्या	23:57:25	00:07:34	चित्रा	1	मंगल	सम स्थान	—	वक्री
इन्द्र	कुम्भ	16:34:46	00:01:10	शतभिषा	3	राहु	—	—	वक्री
वरुण	मकर	23:01:32	00:01:23	श्रवण	4	चन्द्र	—	—	वक्री
यम	वृश्चिक	28:35:01	00:01:23	ज्येष्ठा	4	बुध	—	—	वक्री
दशम भाव	कर्क	16:21:44	—	पुष्य	4	शनि	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:56:01

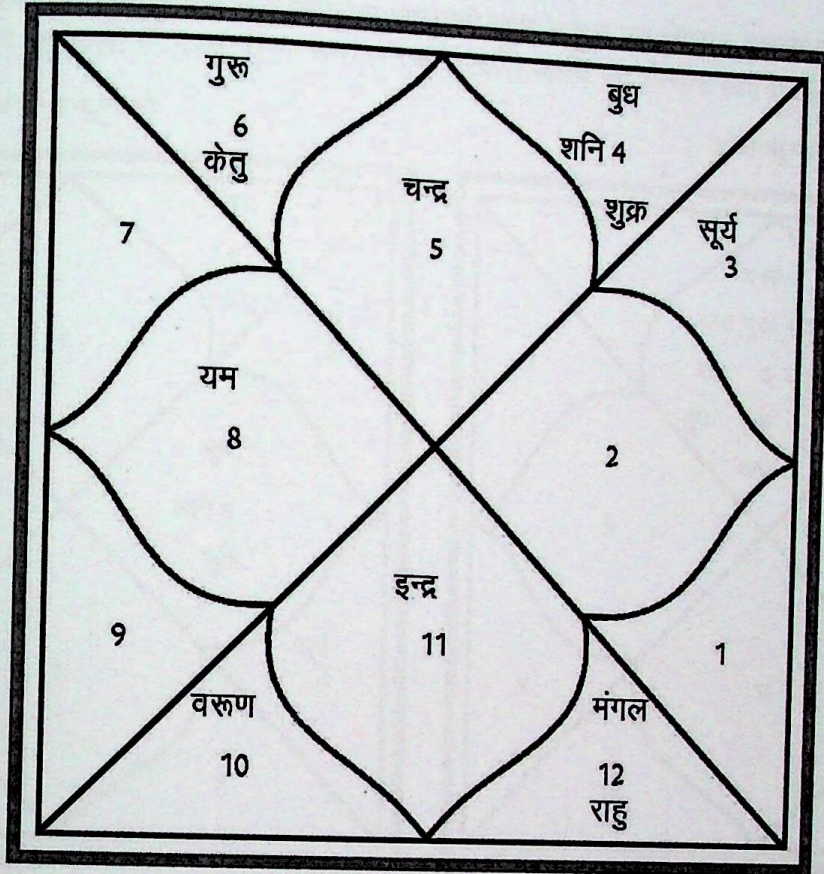
लग्न कुण्डली



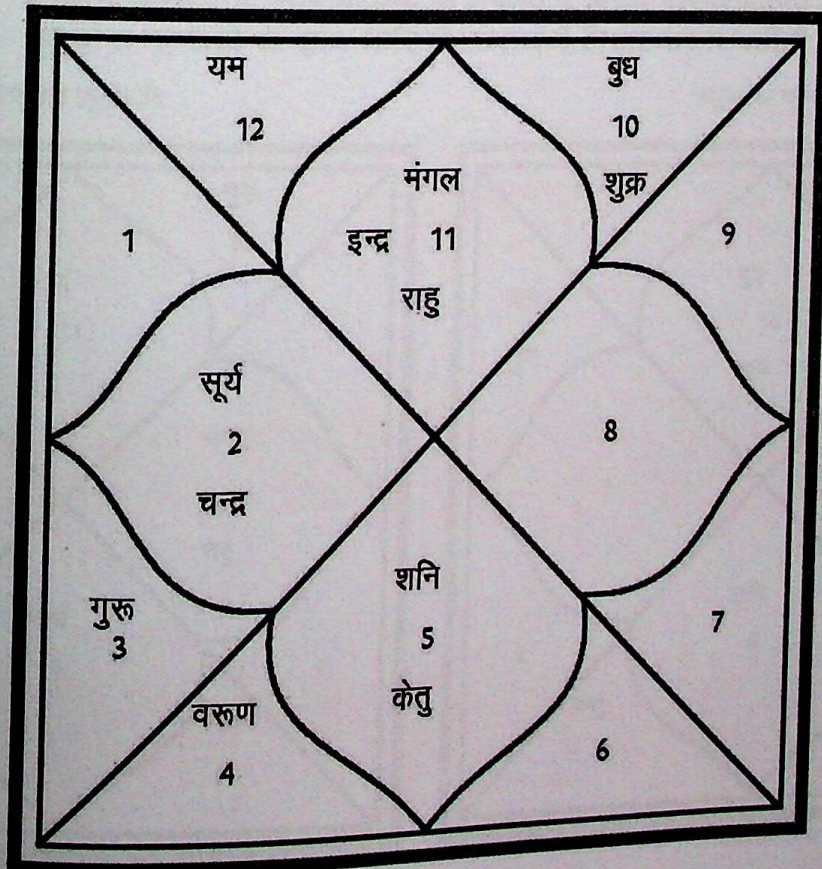


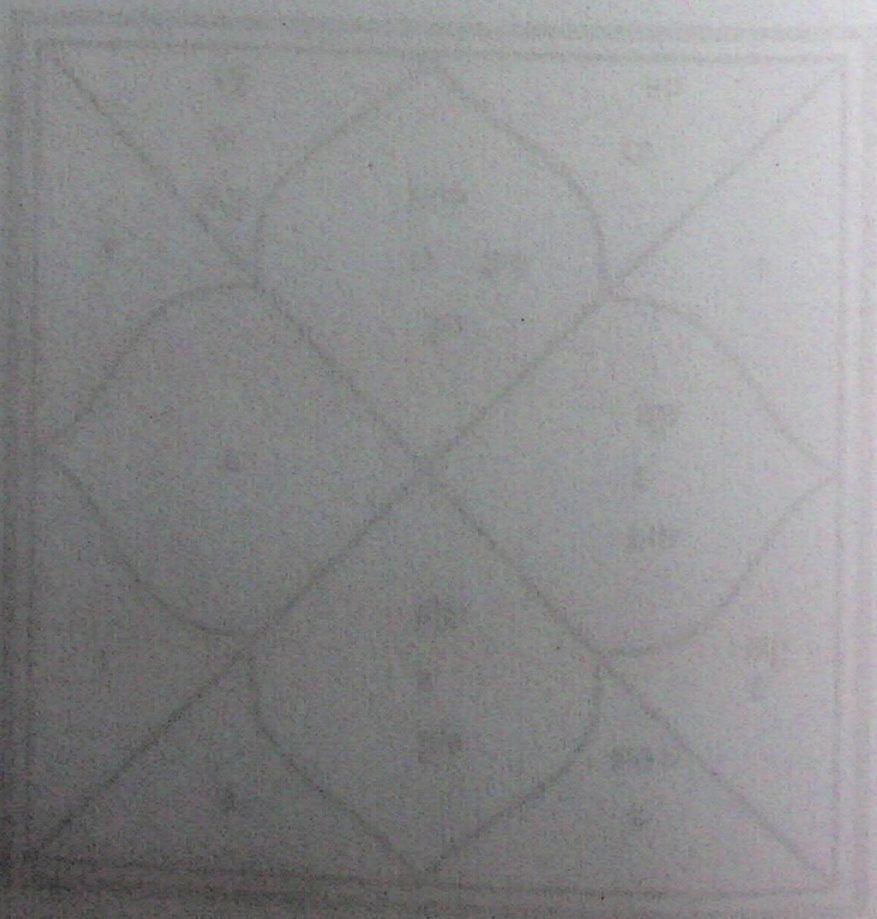
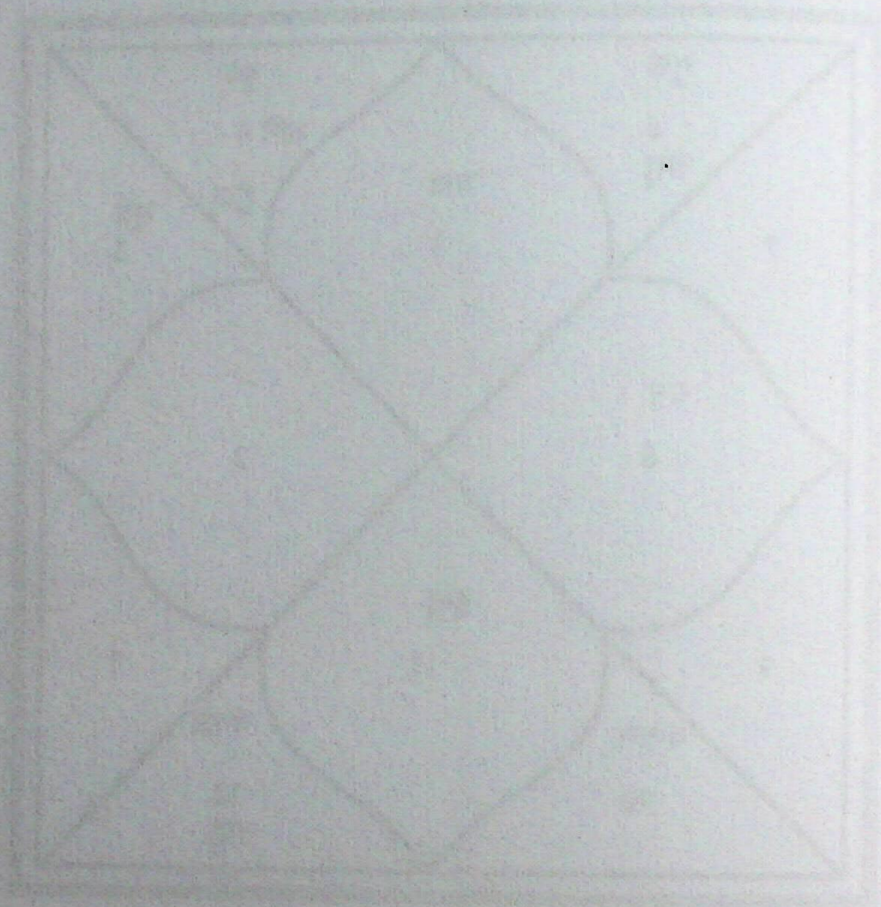
HIMANSHU

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली

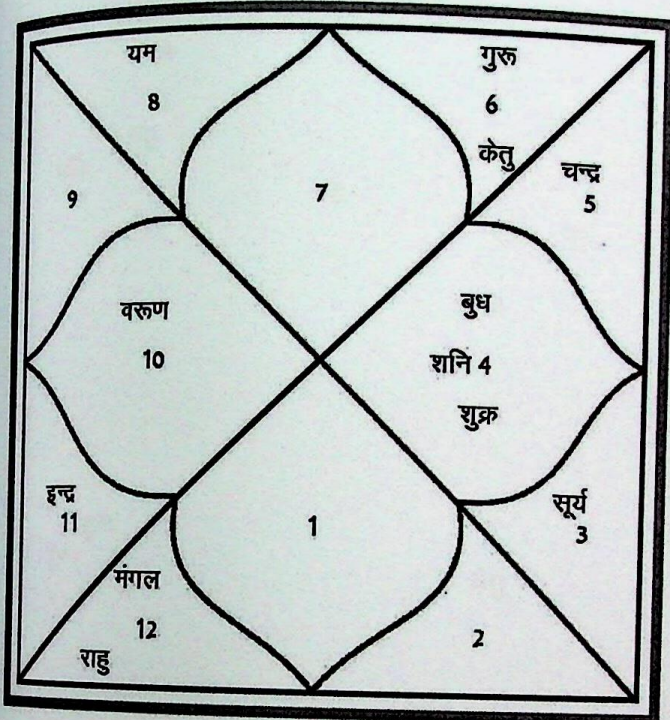




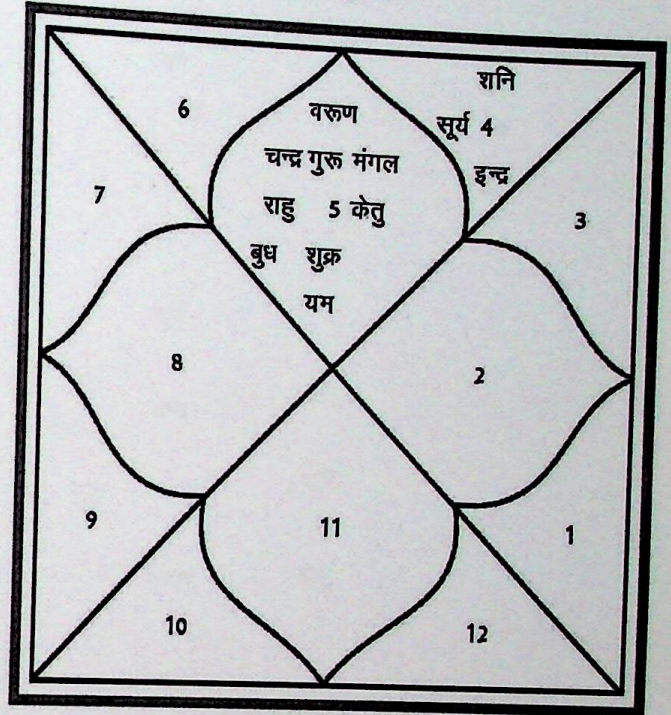
HIMANSHU

॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥
जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



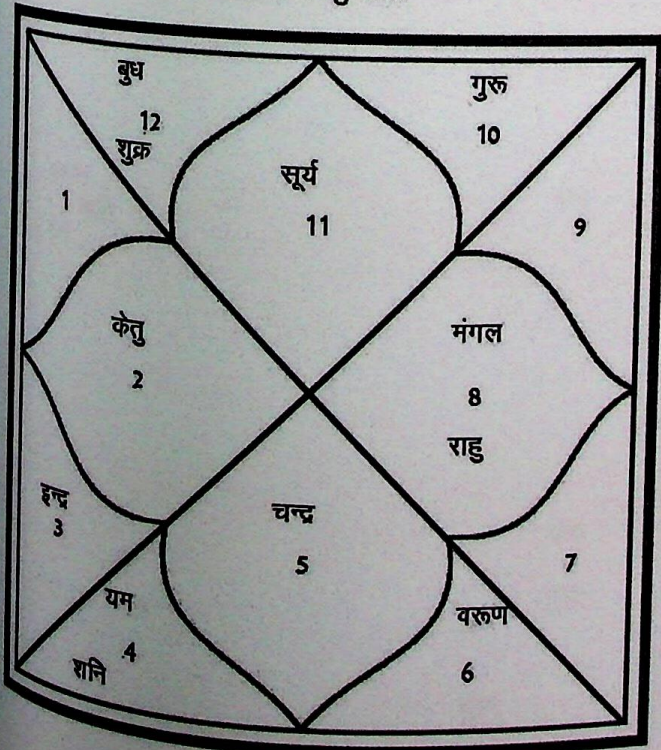
होरा कुण्डली



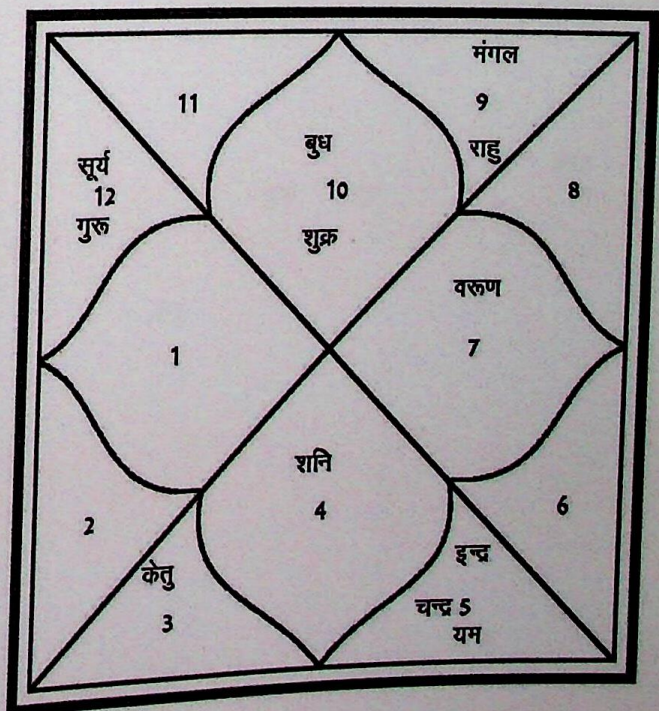
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

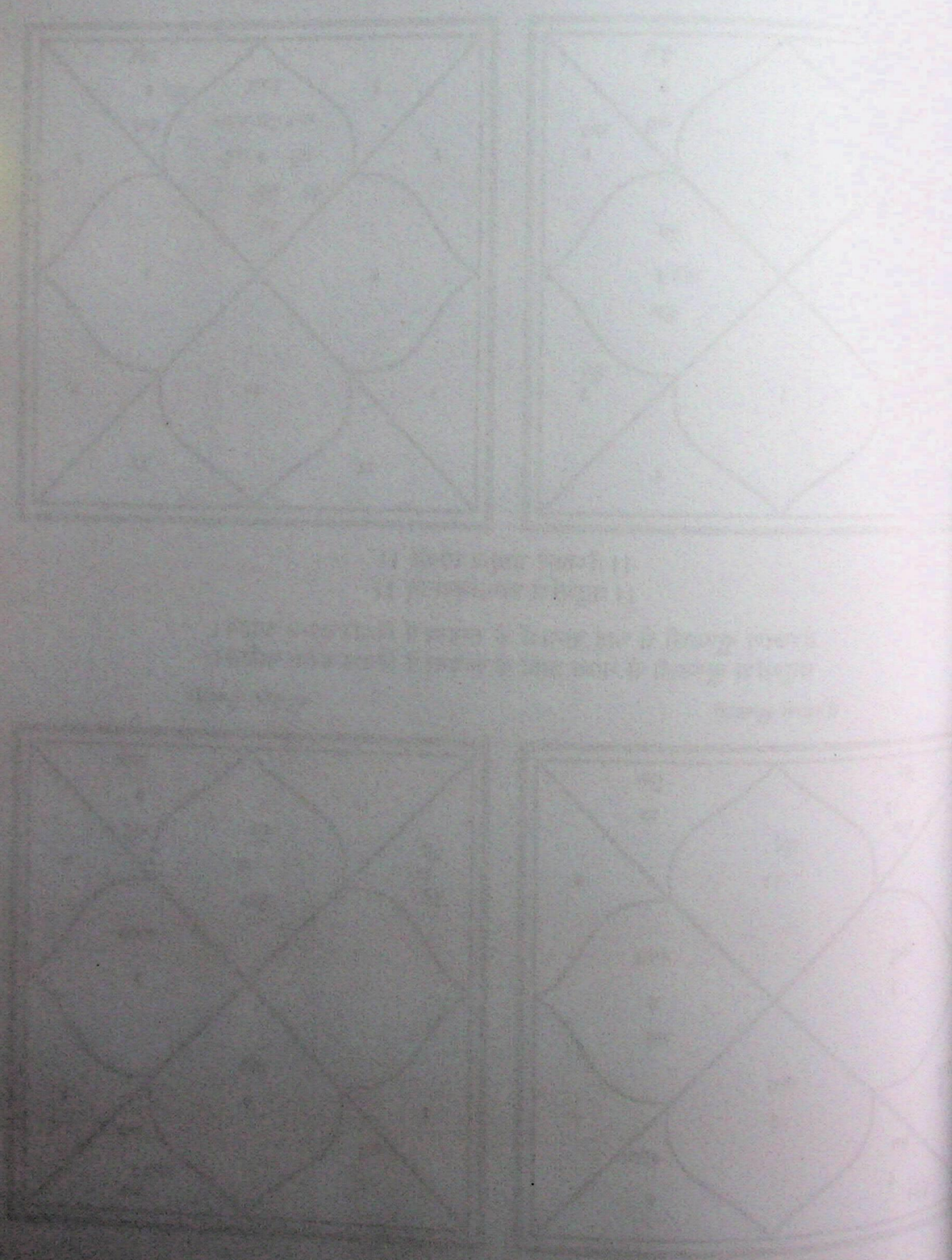
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली



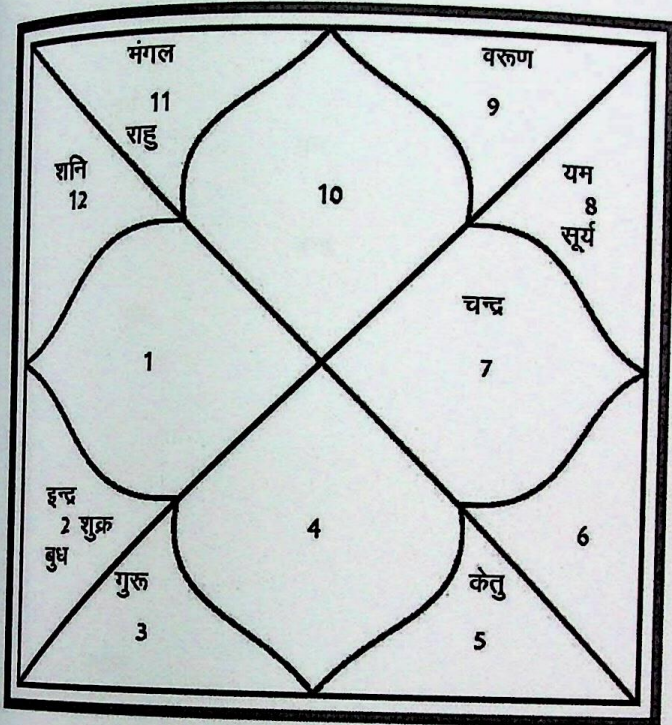


HIMANSHU

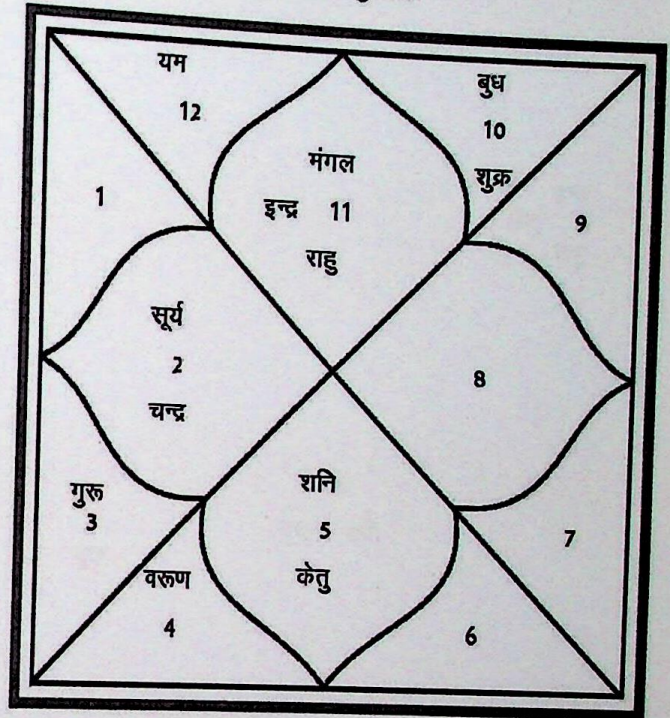
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



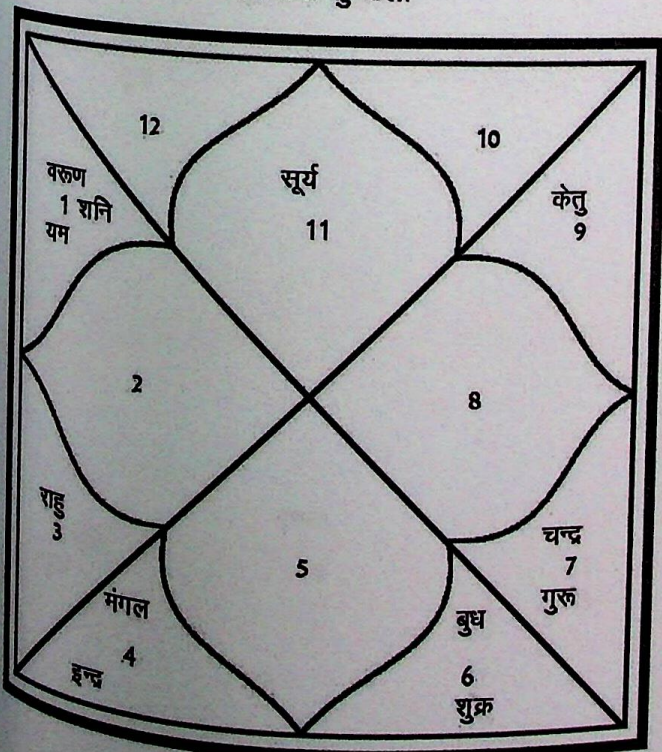
नवमांश कुण्डली



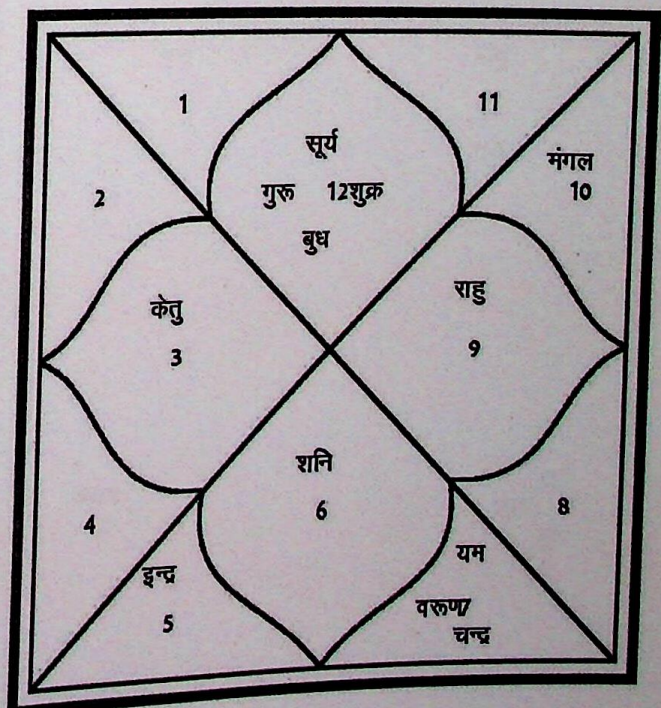
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

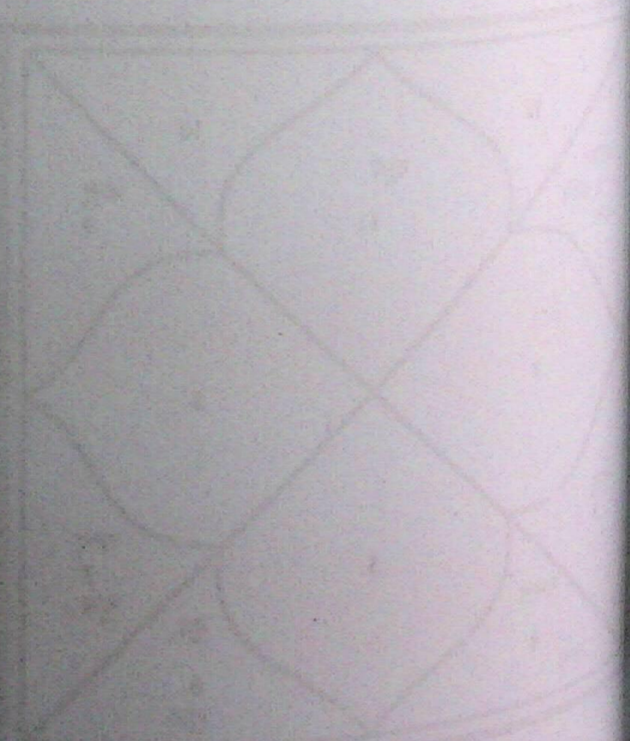
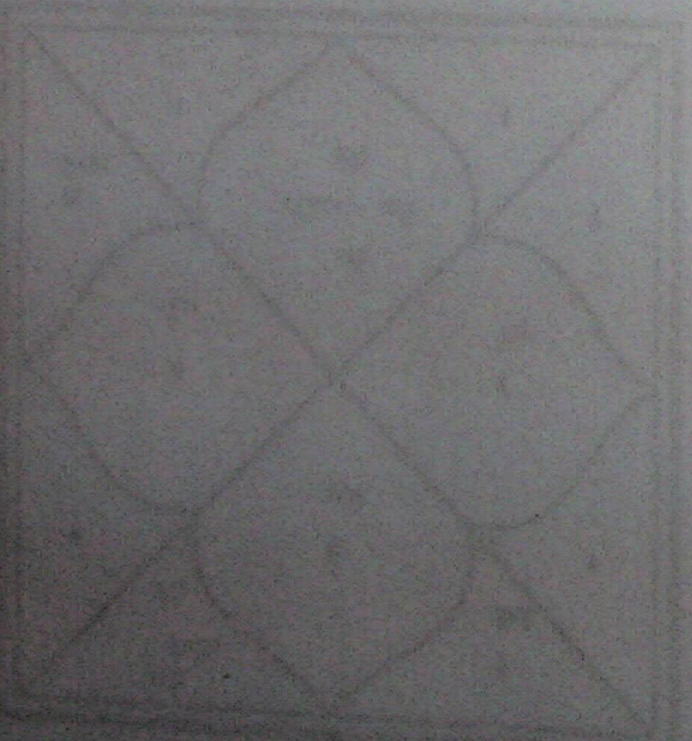
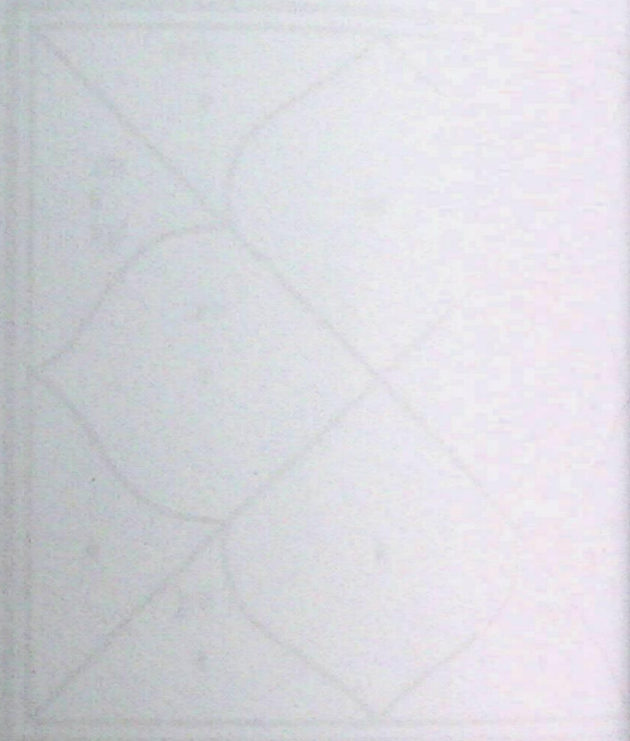
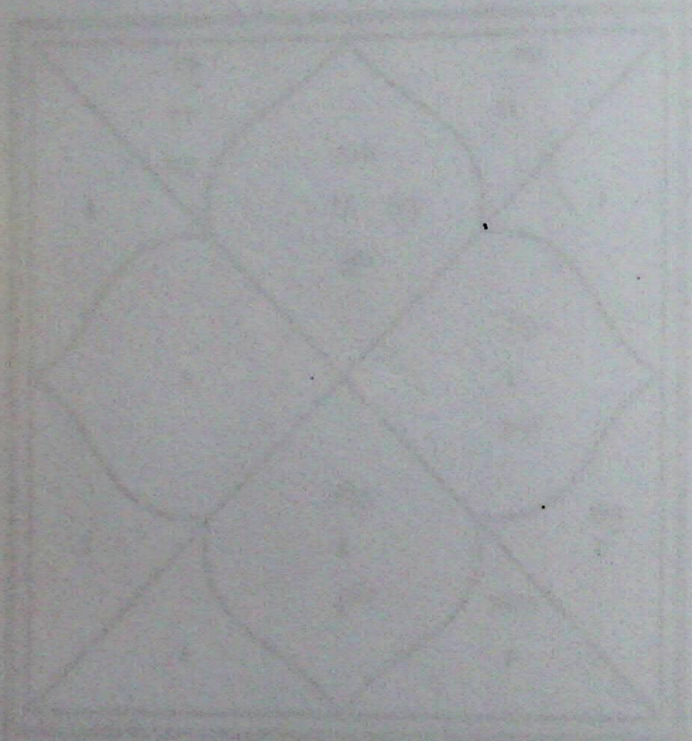
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली



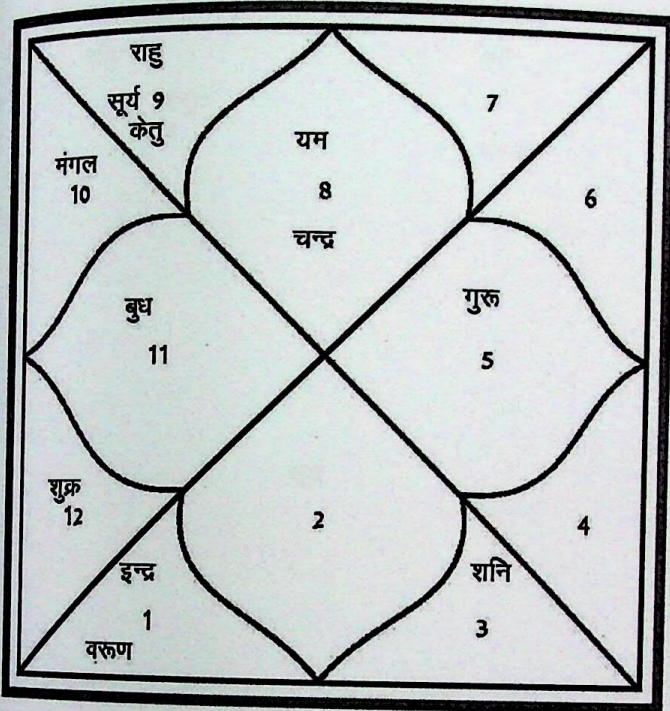


HIMANSHU

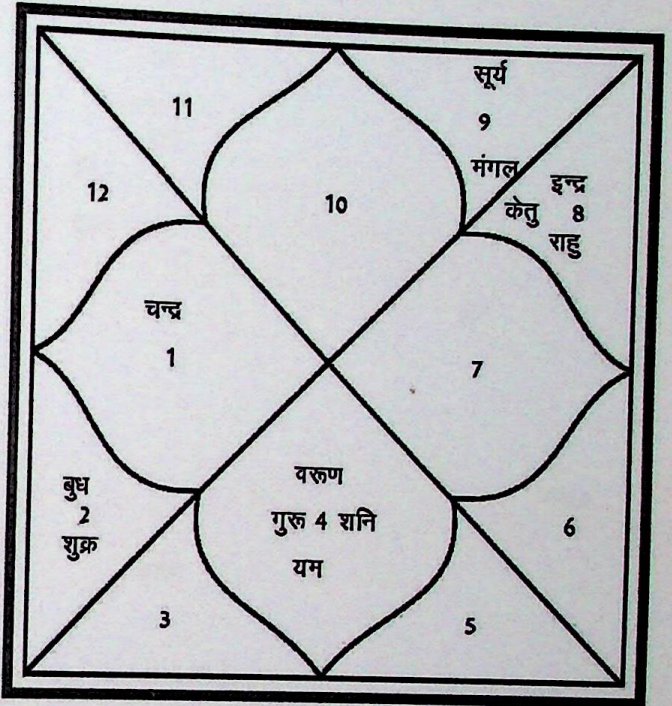
॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

षोडशांश कुण्डली



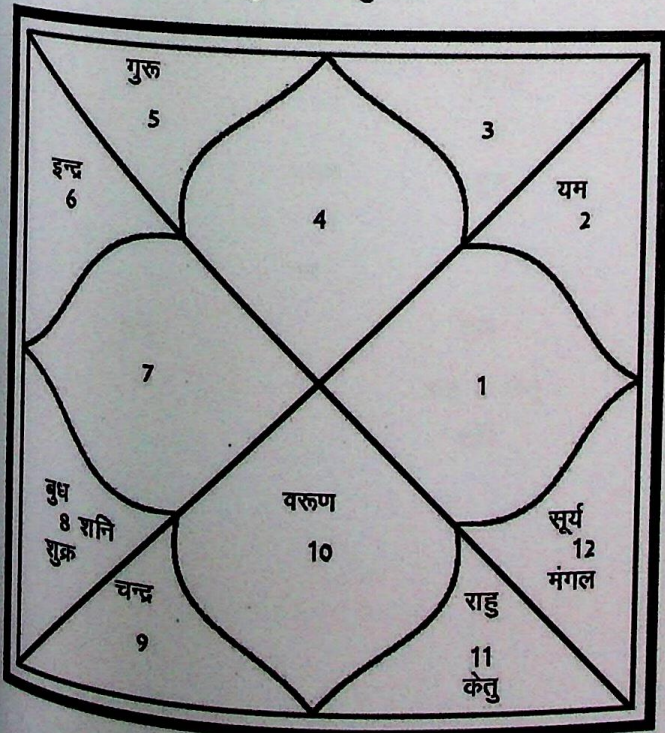
विंशांश कुण्डली



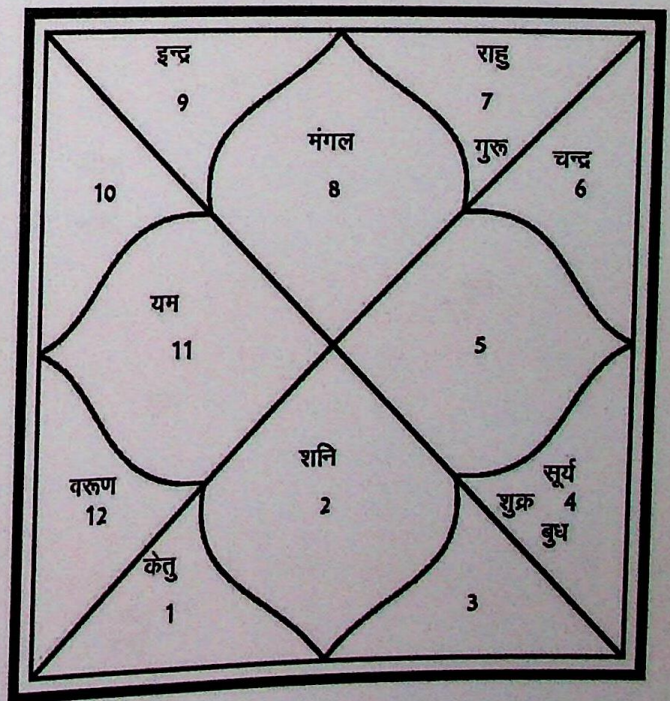
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥
॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

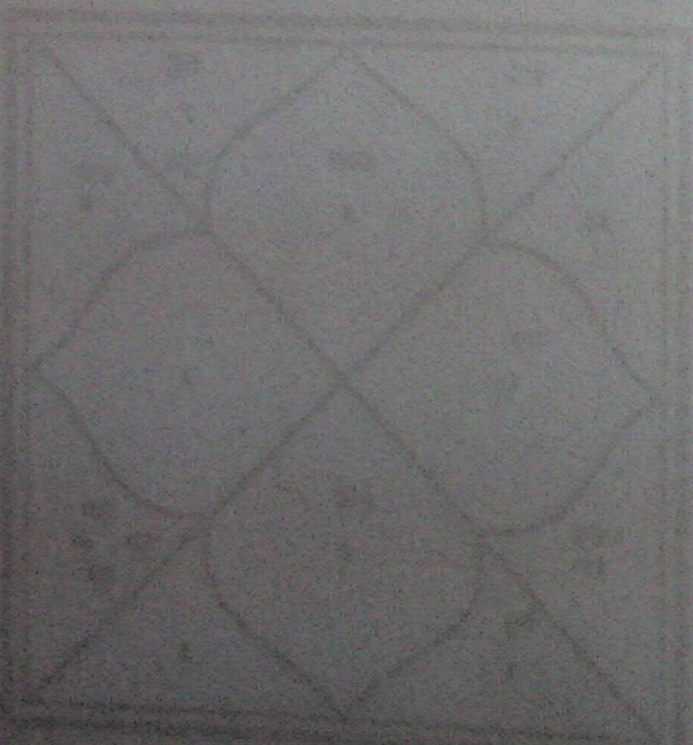
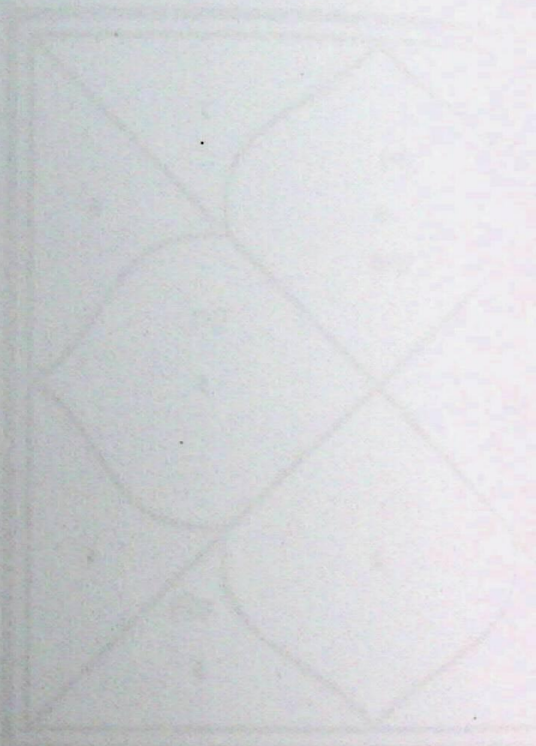
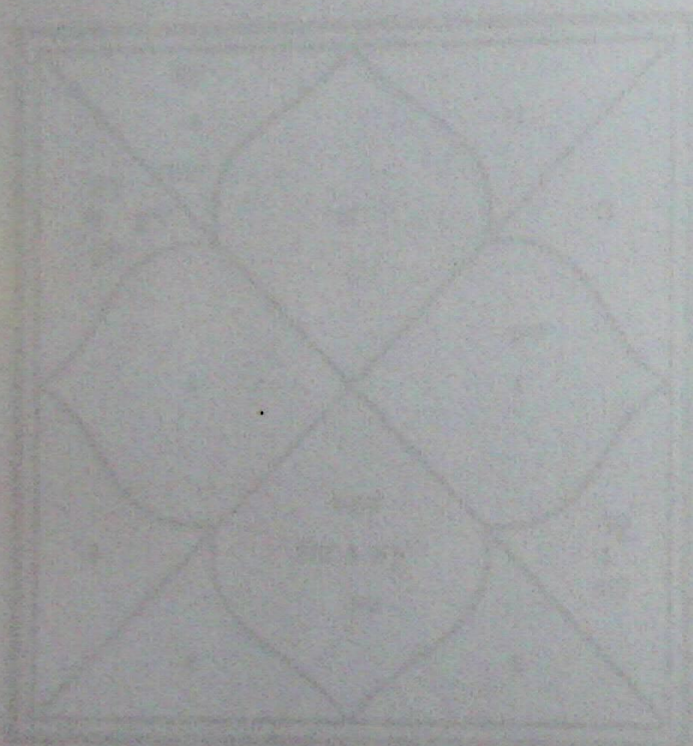
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





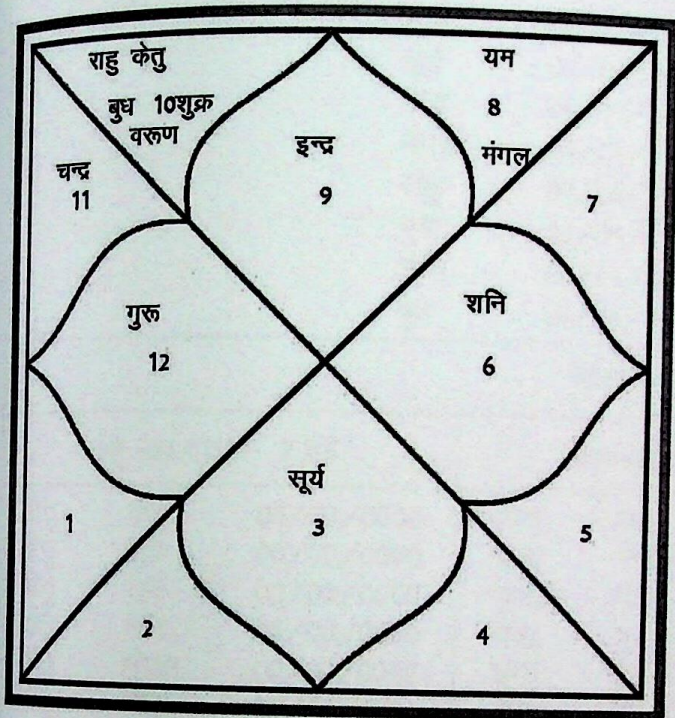
HIMANSHU

॥ त्रिंशदंशके अरिष्ट फलम् ॥

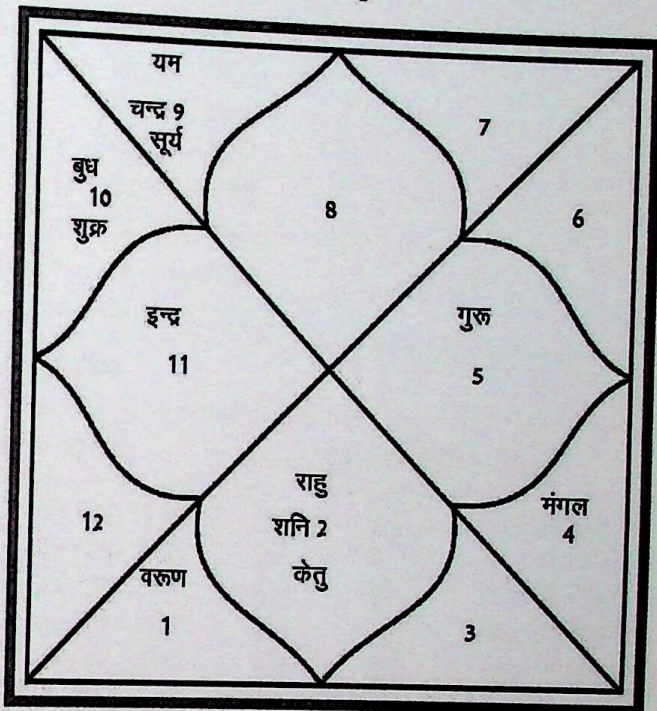
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिंशदंश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।
खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।

त्रिंशदंश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

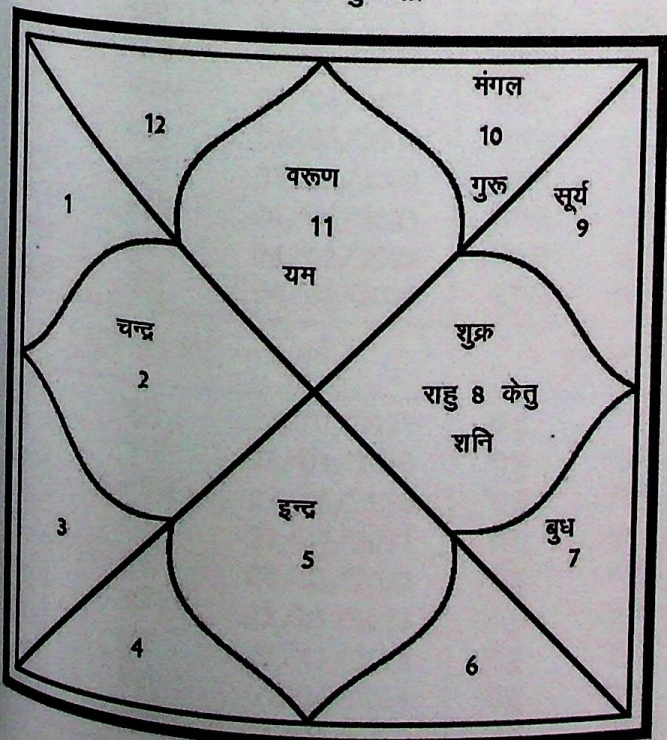


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

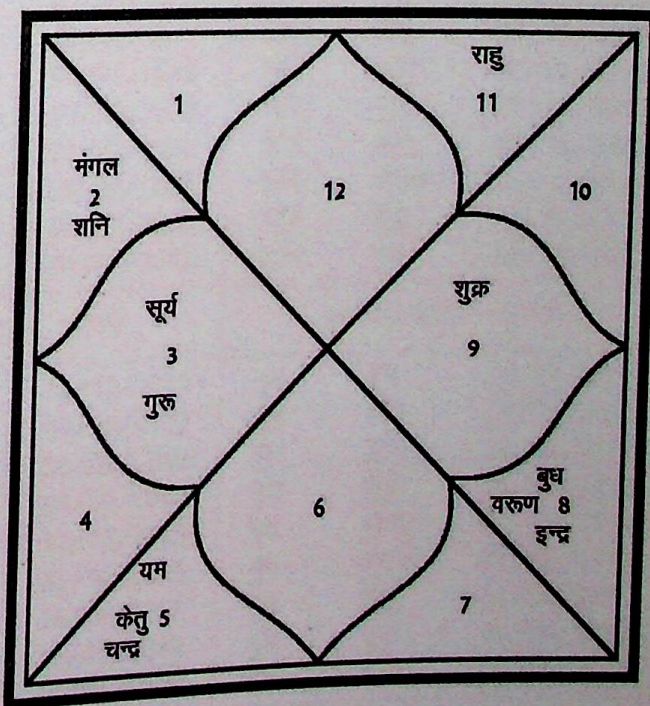
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

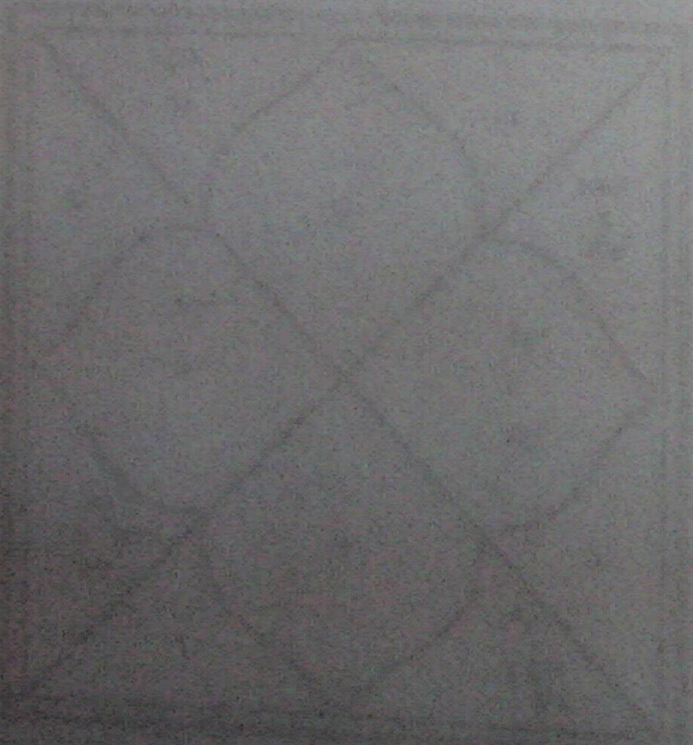
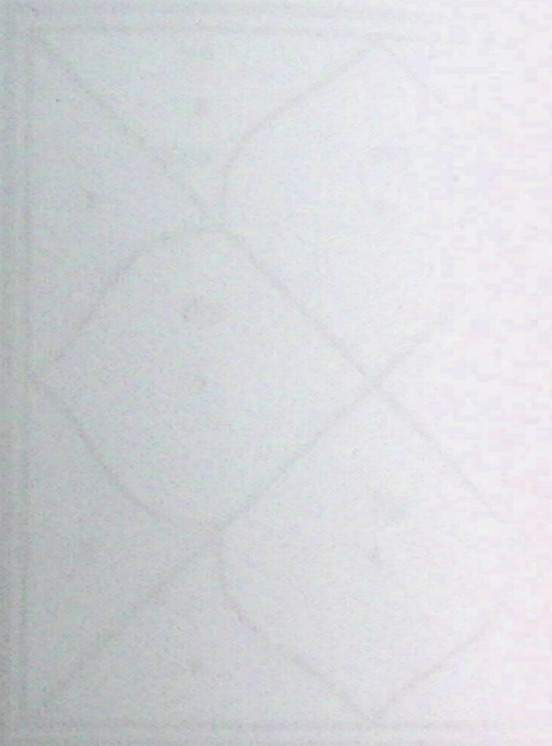
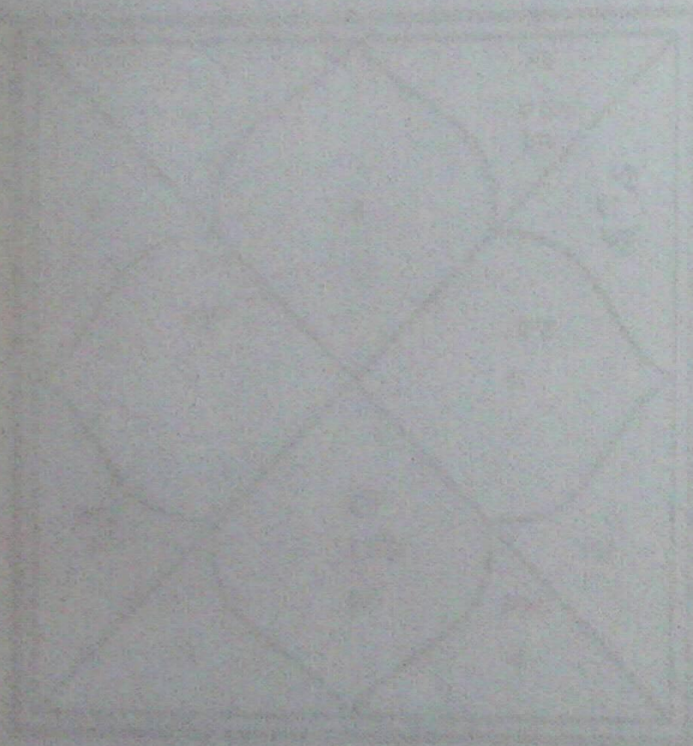
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात् सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





HIMANSHU

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - केतु 3 वर्ष 8 मास 24 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

केतु	10/07/2005	-	04/04/2009
शुक्र	04/04/2009	-	04/04/2029
सूर्य	04/04/2029	-	04/04/2035
चन्द्र	04/04/2035	-	04/04/2045
मंगल	04/04/2045	-	04/04/2052
राहु	04/04/2052	-	04/04/2070
गुरु	04/04/2070	-	04/04/2086
शनि	04/04/2086	-	04/04/2105
बुध	04/04/2105	-	04/04/2122

विंशोत्तरी अन्तर दशा

केतु महा दशा - 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष			गुरु महा दशा - 16 वर्ष		
केतु	केतु	00/00/0000	चन्द्र	चन्द्र	04/02/2036	गुरु	गुरु	22/05/2072
केतु	शुक्र	00/00/0000	चन्द्र	मंगल	04/09/2036	गुरु	शनि	04/12/2074
केतु	सूर्य	00/00/0000	चन्द्र	राहु	04/03/2038	गुरु	बुध	10/03/2077
केतु	चन्द्र	00/00/0000	चन्द्र	गुरु	04/07/2039	गुरु	केतु	15/02/2078
केतु	मंगल	00/00/0000	चन्द्र	शनि	03/02/2041	गुरु	शुक्र	16/10/2080
केतु	राहु	22/03/2006	चन्द्र	बुध	04/07/2042	गुरु	सूर्य	04/08/2081
केतु	गुरु	26/02/2007	चन्द्र	केतु	03/02/2043	गुरु	चन्द्र	04/12/2082
केतु	शनि	07/04/2008	चन्द्र	शुक्र	04/10/2044	गुरु	मंगल	10/11/2083
केतु	बुध	04/04/2009	चन्द्र	सूर्य	04/04/2045	गुरु	राहु	04/04/2086
शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष			शनि महा दशा - 19 वर्ष		
शुक्र	शुक्र	04/08/2012	मंगल	मंगल	01/09/2045	शनि	शनि	07/04/2089
शुक्र	सूर्य	04/08/2013	मंगल	राहु	19/09/2046	शनि	बुध	16/12/2091
शुक्र	चन्द्र	04/04/2015	मंगल	गुरु	25/08/2047	शनि	केतु	25/01/2093
शुक्र	मंगल	04/06/2016	मंगल	शनि	04/10/2048	शनि	शुक्र	25/03/2096
शुक्र	राहु	04/06/2019	मंगल	बुध	01/10/2049	शनि	सूर्य	07/03/2097
शुक्र	गुरु	03/02/2022	मंगल	केतु	26/02/2050	शनि	चन्द्र	07/10/2098
शुक्र	शनि	04/04/2025	मंगल	शुक्र	28/04/2051	शनि	मंगल	16/11/2099
शुक्र	बुध	04/02/2028	मंगल	सूर्य	04/09/2051	शनि	राहु	22/09/2102
शुक्र	केतु	04/04/2029	मंगल	चन्द्र	04/04/2052	शनि	गुरु	04/04/2105
सूर्य महा दशा - 6 वर्ष			राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष		
सूर्य	सूर्य	22/07/2029	राहु	राहु	16/12/2054	बुध	बुध	01/09/2107
सूर्य	चन्द्र	22/01/2030	राहु	गुरु	10/05/2057	बुध	केतु	29/08/2108
सूर्य	मंगल	29/05/2030	राहु	शनि	16/03/2060	बुध	शुक्र	28/06/2111
सूर्य	राहु	22/04/2031	राहु	बुध	04/10/2062	बुध	सूर्य	04/05/2112
सूर्य	गुरु	09/02/2032	राहु	केतु	22/10/2063	बुध	चन्द्र	04/10/2113
सूर्य	शनि	22/01/2033	राहु	शुक्र	22/10/2066	बुध	मंगल	01/10/2114
सूर्य	बुध	28/11/2033	राहु	सूर्य	16/09/2067	बुध	राहु	19/04/2117
सूर्य	केतु	04/04/2034	राहु	चन्द्र	16/03/2069	बुध	गुरु	25/07/2119
सूर्य	शुक्र	04/04/2035	राहु	मंगल	04/04/2070	बुध	शनि	04/04/2122

HIMANSHU

लग्न विचार

तुला राशि, राशि चक्र की सातवीं राशि है। इस राशि का स्वामी शुक्र है। इस राशि में चित्रा नक्षत्र का तृतीय तथा चतुर्थ चरण, स्वाती नक्षत्र तथा विशाखा नक्षत्र का पहला, दूसरा तथा तीसरा चरण आता है। तुला लग्न में जन्म होने से आप मध्यम कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ भुजाओं वाले व्यक्ति होंगे। आप मित्र बनाने में माहिर होंगे तथा आप हँसमुख एवं व्यवहार कुशल भी होंगे। आप अपने जीवन में न्याय व आदर्श को सर्वोपरि महत्त्व देंगे। आप ऐसे कार्य से दूर रहेंगे जो अनीतियुक्त या अधार्मिक हो तथा जिसमें कपट या धोखे की सम्भावना हो। रचनात्मक कार्यों में आपकी रुचि अधिक रहेगी। सामाजिक सेवा के कार्यों में भी आप अपना योगदान देंगे। आप कल्पनाशील व्यक्ति होंगे। आप कल्पना के क्षेत्र में रम जायेंगे तथा व्यावहारिकता से दूर हो जायेंगे। ऐसी स्थिति में जब भी आपकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य होगा, आप निराश हो जायेंगे। कला, संगीत, चलचित्र, नाटक आदि में आपकी रुचि रहेगी। आप इस क्षेत्र से अर्थ प्राप्ति भी करेंगे।

आप स्व-निर्मित पुरुष (सेल्फ मेड मेन) होंगे। आप अपने परिवार या सम्बन्धियों से कोई विशेष सहायता लिये बिना ही अपने परिश्रम, लगन, ईमानदारी तथा कुशलता से लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। आपका पारिवारिक जीवन सफल रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में सद्भाव रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य होगा। आप नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक उन्नति करेंगे। आप आयात-निर्यात, सम्पदा की खरीद-बेचान, स्टोर कीपर, जनरल मैनेजर, व्यवसायी, दुकानदार, कलाकार आदि व्यवसायों से धन कमायेंगे। आप राजनीति के क्षेत्र में बहुत प्रवीण होंगे तथा इस क्षेत्र में आप सफल रहेंगे। आपको ज्वर, सिरदर्द, स्नायु रोग, गले तथा फेफड़े के रोग पीड़ित करेंगे। आपको वात तथा कफ प्रधान रोगों, सर्दी-जुखाम तथा रक्तचाप से भी कष्ट हो सकता है।

आपका जन्म तुला लग्न में 13 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला के बीच में होने से आप लम्बे कद, गेहुँए या कुछ श्याम रंग वाले, कृशकाय व्यक्ति होंगे। शारीरिक रूप से निर्बल होने से आपका स्वास्थ्य तो प्रभावित होगा, परन्तु इससे आपके गुणों पर अन्तर नहीं पड़ेगा। आप अन्तर्मुखी व्यक्ति होंगे तथा दूसरों के दुःख से शीघ्र ही द्रवित हो जायेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक हो अथवा न हो पर दूसरों की मदद करने के लिए आप हर समय तत्पर रहेंगे। आपको क्रोध तो कम आयेगा, परन्तु स्पष्टवादी होने से आपकी अपने मित्रों से अनबन भी हो जायेगी। इस गुण के कारण लोग आपको अहंकारी भी समझने लगेंगे। आपको अर्थ संचय में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। इसका मुख्य कारण यह रहेगा कि आपकी अस्थिर मति होने के कारण आप अपना कारोबार बदलते रहेंगे तथा भाग्य का उतार-चढ़ाव आपको मजबूत व दृढ़ करने की बजाय कमजोर करने लगेगा। यदि आप अपना आत्मविश्वास दृढ़ कर लेंगे, तो सफलता अवश्य मिलेगी। आप पर्यटन के शौकीन रहेंगे। कला, संगीत तथा अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपका



HIMANSHU

लग्न विचार

पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी के विचारों में अन्तर रहने से आपसी मतभेद रहेंगे। आपका सन्तान सुख भी सामान्य रहेगा। आप अध्यापन, लेखन, कला क्षेत्र, सम्पादन, पत्रकारिता तथा स्वतन्त्र व्यवसाय करना पसन्द करेंगे। आपको रक्तचाप तथा पित्त सम्बन्धी बीमारियाँ होंगी। उदर विकार तथा फेफड़ों की बीमारियों से भी आपको पीड़ित होना पड़ सकता है।



HIMANSHU

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से नवें स्थान पर मिथुन में स्थित है जिसका स्वामी बुध सूर्य का मित्र है। अतः सूर्य आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। आप चतुर, विद्वान, विवेकी तथा दीर्घायु होंगे। बचपन में स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। आप पुरुषार्थी होंगे तथा स्वपुरुषार्थ से उन्नति करेंगे। अध्ययन में आपकी रुचि रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में भी आपका रिकार्ड उत्तम रहेगा।

धर्म में आपकी रुचि कम ही रहेगी तथा धार्मिक कर्मकाण्डों पर तो आप कदापि विश्वास नहीं करेंगे। स्वभाव से आप हठी होंगे। आपको ननिहाल से सुख प्राप्त होगा। आपको भ्रातृ सुख कम ही प्राप्त होगा। अपने भाईयों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपको भाग्य की मदद मिलती रहेगी। धन की कमी महसूस नहीं होगी। आप शनैः शनैः धन संचय करने में सफल होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

इस सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान पर पड़ती है। यहाँ धनु राशि है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। यह तृतीय स्थान सम्बन्धी शुभ फल प्रदान करेगा। आपके पराक्रम की वृद्धि होगी। आपको अपने कार्य से सम्बन्धित यात्राएं लाभदायक सिद्ध होगी। आपकी कार्य कुशलता बढ़ेगी। अपने पिता के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष से सम्बन्धों में प्रतिकूलता सम्भव है। तुला लग्न में नवम भाव के सूर्य के त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपके भाग्य में वृद्धि होगी तथा आप धर्म का भी यथाविधि पालन करेंगे। आप ईश्वर-भक्त, न्यायी तथा सौभाग्यवान व्यक्ति होंगे। आपको स्वयंमेव धन, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीय भाव को देखता है, अतः आपको भाई-बहिन का सुख मिलेगा तथा आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी।

चन्द्र

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में, सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य, चन्द्र के मित्र हैं। सामान्यतः एकादशस्थ चन्द्र अच्छे फल देता है, अतः यह चन्द्र आपको शुभफल प्रदान करेगा। यह चन्द्र आपको सदाचारी तथा सुखी बनाता है। आपका स्वभाव राजसी तथा अभिमानी होगा, जिससे आपके मित्रों की संख्या सीमित रह सकती है। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यदि चन्द्रमा क्षीण अथवा पापाक्रान्त हो तो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है, जिससे पेट के रोग, अपाचन, संग्रहणी आदि से पीड़ा हो सकती है। आपकी बुद्धि अच्छी रहती है। शैक्षणिक जीवन में उत्तम प्रगति हो सकती है। आपको विज्ञान, गणित, भौतिक विज्ञान आदि विषयों में अधिक रुचि रहती है। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहती है। आप विशेषतः पर्वतीय

HIMANSHU

ग्रह विचार

तथा वन क्षेत्रों में भ्रमण करना अधिक पसन्द करते हैं। समाज में आपको सम्मान प्राप्त हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहती है। व्यापार की अपेक्षा सर्विस में आपकी अधिक उन्नति हो सकती है। आपको राज्य शासन में भी उच्च पद प्राप्त हो सकता है। आपकी आय के एक से अधिक स्रोत भी हो सकते हैं। स्वभाव से कृपण प्रकृति के होने से, आप अर्थ संचय करने में समर्थ हो सकते हैं।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, पंचम् स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से चन्द्र की शत्रुता है। आपको सन्तान सम्बन्धी कोई चिन्ता हो सकती है। आपको पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक प्राप्त हो सकती है। आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहता है। आप विदेशी भाषाओं तथा गूढ़ विद्याओं का ज्ञान भी अर्जित कर सकते हैं। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

तुला लग्न में एकादश भाव के चन्द्रमा के लाभ स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में स्थित होने से आपको लाभ के अवसर निरन्तर प्राप्त होंगे। आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय तीनों ही पक्षों से लाभ, यश, प्रतिष्ठा तथा सफलता की प्राप्ति होगी। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि में पंचम भाव को देखता है, अतः आपको सन्तान पक्ष से सामान्य असन्तोष के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या एवं वाणी की शक्ति आपको खूब प्राप्त होती है। आप चतुर, चालाक, स्वार्थी एवं समझदार व्यक्ति होंगे।

मंगल

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। सामान्यतः षष्ठस्थ मंगल शुभफल कारक होता है, किन्तु धनेश तथा सप्तमेश मंगल षष्ठ स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। यह मंगल आपको हठी तथा दुराग्रही प्रकृति का व्यक्ति बना सकता है। आपका स्वभाव कठोर होगा तथा आपकी अभिमानी प्रकृति से मित्र भी आपके शत्रु बन जायेंगे।

आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। नेत्र रोग, सिर दर्द, चर्म रोग, विष भय आदि से आपको कष्ट रहेगा तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। अपने कुचक्रों से शत्रु आपके विरुद्ध कठिनाईयाँ उपस्थित करेंगे। जिससे आपको आर्थिक हानि तथा मानसिक पीड़ा भुगतनी पड़ेगी। अन्ततः आप उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहेगा। आपकी पत्नी तेज स्वभाव की तथा रोगी होगी। अपनी पत्नी से आपके मतभेद रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी। आपको सर्विस में निराशा तथा व्यापार में हानि उठानी पड़ेगी। आपके क्रोधी स्वभाव तथा गुप्त शत्रुओं के कारण आपके बनते काम भी बिगड़ सकते हैं। बीमारी

HIMANSHU

ग्रह विचार

तथा शत्रुओं के कुचक्रों से भी आपको धन हानि हो सकती है।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आप में आस्तिकता कम होगी। आपके भाग्योदय में विलम्ब सम्भव है। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपका व्ययभार बढ़ेगा। व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव तथा हानि भी प्राप्त हो सकती है। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के साथ सम व्यवहार रखता है। आपको कोई शारीरिक विकार हो सकता है। आपके स्वभाव में अहंकार रहने से आपके मित्र तथा हितचिन्तक भी आप से असन्तुष्ट रहेंगे।

तुला लग्न में षष्ठ भाव के मंगल के शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आप शत्रु-पक्ष में बड़ा प्रभाव रखेंगे। आपके द्वारा धन-संचय करने में कमी रहेगी तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपको कठिनाइयों के बाद सफलता मिलेगी। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य की वृद्धि होगी तथा अपने स्वार्थ के लिए आप धर्म का पालन करेंगे। मंगल के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से आपका खर्च अधिक रहेगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होगा। मंगल के अपनी आठवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण आपके शारीरिक सौन्दर्य में कमी रह सकती है, परन्तु आपको झगड़ो-झंझटों के मार्ग से लाभ प्राप्त होगा।

बुध

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में, कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से बुध की शत्रुता है। सामान्यतः दशमस्थ बुध अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ नवमेश तथा द्वादशेश बुध, दशम स्थान में आपको शुभफल कारक रहेगा। यह बुध आपको परोपकारी, सम्पन्न तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा तथा अपने व्यवहार से आप अपरिचितों को भी मित्र बनाने में समर्थ रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा आप परिजनों से भी प्रशंसित होंगे।

आपकी बुद्धि उत्तम रहती है। ललित कला, साहित्य, काव्य, भाषाशास्त्र, संस्कृत आदि विषयों की ओर आपका रुझान रहेगा। शैक्षणिक जीवन में आप कला व साहित्य के क्षेत्र में सृजनात्मक कार्य भी कर सकते हैं। आपकी रुचि ज्योतिष, कला, साहित्य तथा पर्यटन में रहेगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा नेत्र रोग या वात रोगों से कष्ट हो सकता है। आप धार्मिक मनोवृत्ति के व्यक्ति होते हैं। आपका भाग्योदय 32वें वर्ष में सम्भव है। पिता के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष के अनुकूल रहने से आपको कार्यपूर्ति में आसानी हो सकती है। आपकी

HIMANSHU

ग्रह विचार

आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आप साहित्यकार, सम्पादक, प्रकाशक, गणितज्ञ, प्रोफेसर, लेखक, कलाकार आदि बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी मिल सकती है। व्यापार में भी आपको लाभ होना सम्भव है।

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, चतुर्थ स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि की बुध से मित्रता है। माता के साथ आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि भौतिक सुख-सुविधायें भी प्राप्त हो सकती हैं।

तुला लग्न में दशम भाव के बुध के व्ययेश होकर केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आ सकती हैं तथा कुछ कमजोरी भी रह सकती है। आपके द्वारा धर्म का पालन भी थोड़ा ही हो पाता है, इसी कारण आपकी भाग्योन्नति भी कम ही होती है। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपको माता, भूमि एवं मकान का सुख प्राप्त होगा, जिसके कारण आप धनवान् भी समझे जायेंगे।

गुरु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः द्वादशस्थ गुरु अशुभफल दायक रहता है। यहाँ तृतीयेश तथा षष्ठेश गुरु द्वादश स्थान में आपको अनिष्ट फल प्रदान करेगा। यह गुरु आपको भ्रमणप्रिय, उद्यमी तथा व्ययशील व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव कटु रहने से परिजनों तथा मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा नहीं रहती है।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नेत्र रोग, आँतों की बीमारियों तथा वात दोष आपको से पीड़ा हो सकती है। बाल्यावस्था में आपका स्वास्थ्य अधिक खराब रह सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, विधि आदि विषयों की ओर रहता है। यदा-कदा किसी कारण से अवरोध अथवा असफलता से आपको शिक्षा में बाधा आ सकती है किन्तु अपने साहस तथा परिश्रम से आप शिक्षा पूर्ण करते हैं। आप भ्रमणप्रिय व्यक्ति होते हैं तथा आपको दूरस्थ स्थानों में भ्रमण के अवसर भी प्राप्त होते हैं। अपने भाई-बहनों से आपके वैचारिक मतभेद रहते हैं। आपके शत्रु अधिक होते हैं। गुप्त शत्रु आपके सम्मान को क्षति पहुँचा सकते हैं तथा कोर्ट-कचहरी में भी आपके धन का व्यय होना सम्भव है। अन्ततः आप शत्रुओं का शमन करने में सफल रहेंगे। आपको सन्तान सुख अल्प अथवा आपकी सन्तान को कष्ट होना भी सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, चिकित्सक, विधि विशेषज्ञ, लेखक, सरकारी कर्मचारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ नहीं मिलेगा, यदा-कदा

HIMANSHU

ग्रह विचार

हानि होना भी सम्भव है। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होने से आपको अर्थ संग्रह करने में बाधा रहेगी। इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है। अपनी माता से आपके मतभेद रह सकते हैं। भूमि, भवन, वाहनादि भौतिक सुख-सुविधायें प्राप्त करने में आपको विलम्ब अथवा बाधाएँ आ सकती हैं। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जो गुरु की स्वराशि है। आपको रोगों से कष्ट हो सकता है। शत्रुओं के कुचक्रों को नष्ट करने में आप सफल रहेंगे। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहता है। यदा-कदा आपको आकस्मिक धन-हानि भी हो सकती है।

तुला लग्न में द्वादश भाव के गुरु के व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से आपका खर्च अधिक होगा, परन्तु आपको बाहरी स्थानों से लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति होगी। गुरु के षष्ठेश होने के कारण आपको भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी प्राप्त हो सकती है तथा आपके पुरुषार्थ पर भी उसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवी नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपके माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी आ सकती है। गुरु के अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने के कारण गुप्त-युक्तियों के द्वारा आप शत्रु-पक्ष में सफलता प्राप्त करेंगे, परन्तु आपको कुछ दबना भी पड़ सकता है। गुरु के अपनी नवीं दृष्टि से अष्टम भाव को शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में देखने से आपको कुछ कठिनाइयों के साथ आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलेगी तथा गुरु के षष्ठेश होने के कारण भाई-बहिनों से भी कुछ परेशानी रह सकती है।

शुक्र

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से शुक्र की शत्रुता है। सामान्यतः दशमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ लग्नेश तथा अष्टमेश शुक्र दशम स्थान में आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह शुक्र आपको विद्वान्, सम्पन्न तथा सुखी व्यक्ति बनायेगा। आपका स्वभाव मृदु रहेगा तथा आपकी प्रकृति उदार होगी। अपरिचितों को भी मित्र बनाने की कला आपको आती है। अपने मित्रों और परिजनों में आप लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा आपको कफ सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान कला तथा साहित्य के क्षेत्र में अधिक रहता है। इसके अलावा काव्य, संगीत, दर्शन, आयुर्वेद आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आप दीर्घायु होते हैं। आपको आकस्मिक धन लाभ के

HIMANSHU

ग्रह विचार

योग भी बनते हैं। आपके सम्बन्ध अपने पिता से सामान्य रहते हैं। राज्य पक्ष की अनुकूलता आपके लिये लाभप्रद रहेगी। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहता है। आपकी पत्नी मध्यम कद, गौरवर्ण तथा सामान्य शारीरिक गठन वाली स्त्री होती है। उसका स्वभाव अस्थिर होता है तथा वह कला, संगीत, साहित्य आदि क्षेत्रों में अत्याधिक रुचि रख सकती है। आपके साथ उसके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। विवाह के बाद आपके जीवन में स्थिरता तथा भाग्योदय सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप साहित्यकार, कवि, कलाकार, प्राध्यापक, संगीतकार, चिकित्सक, रसायनशास्त्री आदि बन सकते हैं। आपको नौकरी की अपेक्षा निजी व्यवसाय में अधिक धन प्राप्ति हो सकती है। समुद्र पारीय व्यापार आपको लाभदायक रहता है। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है। तुला लग्न में दशम भाव के शुक्र के अष्टमेश होकर केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। आपको शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं आयु की शक्ति भी मिलेगी। शारीरिक परिश्रम एवं चातुर्य के द्वारा आपको विशेष सफलता मिलेगी। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होगा।

शनि

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से शनि की शत्रुता है। सामान्यतः दशमस्थ शनि अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा पंचमेश शनि दशम स्थान में आपको शुभ फल कारक रहेगा। यह शनि आपको आस्तिक, सुखी, सम्पन्न तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव सौम्य रहेगा तथा अपने गुणों से समाज में आपकी लोकप्रियता अधिक रहती है। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। मित्रों और परिजनों से भी आपको अपने कार्यों में सहायता प्राप्त होती है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कफ सम्बन्धी रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान कला, साहित्य, रसायन, चिकित्सा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष, धर्मशास्त्रों के अध्ययन आदि में आपकी रुचि रहती है। आप पर्यटन प्रिय व्यक्ति होंगे तथा भ्रमण के लिये आप विदेश यात्रा पर भी जा सकते हैं। अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। अपनी माता से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होगा। आपको

HIMANSHU

ग्रह विचार

सन्तान सुख कम रहता है अथवा सन्तान से आपको सुख नहीं मिलाता है तथा उससे आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप साहित्यकार, प्राध्यापक, लेखक, रसायन विज्ञानी, चिकित्सक, वकील, कलाकार आदि बन सकते हैं। व्यापार में भी आपको पर्याप्त लाभ हो सकता है।

इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आपका व्यय भार अधिक रहेगा। आपको आयात-निर्यात के व्यापार में लाभ हो सकता है। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ स्थान में मकर राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि देव स्वयं ही हैं। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त होता है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जो शनि की नीच राशि है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहता है। आपकी पत्नी का स्वभाव तेज रहेगा। आपके साथ उसके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। उसका स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है।

तुला लग्न में दशम भाव के शनि के केन्द्र, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होगी। आप विद्वान व्यक्ति होंगे, परन्तु सन्तान के साथ आपका मतभेद बना रह सकता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः आप खूब खर्चीले स्वभाव के व्यक्ति होंगे, परन्तु आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति प्राप्त होगी। शनि के अपनी सातवीं दृष्टि से स्वराशि मकर में चतुर्थ भाव को देखने के कारण आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होगा। शनि के अपनी दसवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से आपको स्त्री के सुख में कुछ कमी मिल सकती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

राहु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से षष्ठम् स्थान में, मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः षष्ठ्य राहु शुभफल देता है, यहाँ षष्ठम् स्थान में मीन राशि का राहु आपको उत्तम फल प्रदान करेगा। यह राहु आपको बहादुर, शत्रुनाशक, विद्वान तथा विख्यात व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। आप व्यवहारकुशल तथा अपरिचितों को भी मित्र बनाने की कला में माहिर होते हैं। राजनीति में आपकी रुचि रहेगी तथा समाज सेवा व सार्वजनिक कार्यों में आप अग्रणी रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा कफ सम्बन्धी बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं।

HIMANSHU

ग्रह विचार

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, इतिहास, विधि, पुरातत्व, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, धर्मशास्त्र तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि रहती है। आप पर्यटन प्रिय होते हैं, आपका विदेश यात्रा का योग भी है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। अपनी व्यवहार कुशलता से आप शत्रुओं को मित्र बनाने में सफल रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, इतिहासकार, वकील, मजिस्ट्रेट, तकनीकी अधिकारी, भाषाविद् आदि बन सकते हैं। व्यापार में भी आपको सफलता मिल सकती है तथा आप उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं।

इस राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि, दशम स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्र से राहु की शत्रुता है। पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यह राहु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से, द्वादश स्थान में कन्या राशि को देखता है, जो राहु की स्वराशि है। आपका व्यय भार बढ़ेगा। आयात-निर्यात के व्यापार में उत्तम लाभ सम्भव है। इस राहु की नवम पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। अपने परिश्रम से आप अर्थसंचय करने में समर्थ रहेंगे। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

तुला लग्न में षष्ठ भाव के राहु के शत्रु एवं झगड़े के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको शत्रु-पक्ष से परेशानियाँ तो उठानी पड़ सकती हैं, परन्तु आप उन पर विजय प्राप्त करके अपना प्रभाव स्थापित करेंगे। आप बड़े हिम्मतवान एवं बहादुर व्यक्ति होंगे तथा गुप्त-युक्तियों के बल पर शत्रु, झंझट एवं विपक्षियों पर सफलता प्राप्त करते रहेंगे।

केतु

आपका जन्म तुला लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः द्वादश स्थान (व्यय स्थान) में केतु मिश्रित फल देता है, यहाँ द्वादश स्थान में कन्या राशि का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह केतु आपको खर्चीला, उदार, प्रवासी, चंचल तथा उद्यमी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। मित्रों के कारण भी धन का व्यय होता है। कुसंगति तथा व्यसनों से हानि हो सकती है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में सहयोग से समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहती है। आपके कार्य पूर्ण होने में विलम्ब हो सकता है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नेत्र, वस्ति तथा गुदा रोंगों से कष्ट हो सकता है। वात रोगों का भी भय रह सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स,

HIMANSHU

ग्रह विचार

भाषा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा ज्योतिष विज्ञान, आध्यात्मिक तथा दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों के अध्ययन में भी आपकी रुचि हो सकती है। पर्यटन का शौक रहेगा। आप प्रवास भी कर सकते हैं। आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी। धार्मिक तथा सद्कार्यों में भी धन खर्च होता है। आयात-निर्यात के व्यापार में सामान्य लाभ हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, अर्थशास्त्री, तकनीकी विशेषज्ञ, वकील, भाषाविद्, बैंक, बीमा कर्मचारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ सामान्य रहता है। राजनीति में सफलता के लिए परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। आय पर्याप्त होते हुए भी खर्च की अधिकता से अर्थसंग्रह में बाधा हो सकती है।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ स्थान में मकर राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। माता का सुख आपको कम ही प्राप्त होता है अथवा उनके साथ आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त होगा। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि षष्ठम् स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जो केतु की स्वराशि है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। व्यवहारकुशलता से आप शत्रुओं को भी मित्र बनाने में सफल रहेंगे। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से अष्टम् स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप दीर्घायु व्यक्ति होंगे। आपको विवाह, वसीयत आदि से आकस्मिक लाभ भी हो सकता है।

तुला लग्न में द्वादश भाव के केतु के व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित होने से आप खूब खर्चीले स्वभाव के व्यक्ति होंगे, साथ ही आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ भी प्राप्त होगा। आप अपने खर्च को चलाते रहने के लिए विवेक-बुद्धि से काम लेंगे तथा कठिन परिश्रम भी करेंगे। इतने पर भी आपको कभी-कभी संकटों एवं परेशानियों का शिकार बनना पड़ सकता है। आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कभी-कभी कठिनाइयाँ उठानी पड़ सकती है, परन्तु अन्त में सफलता मिलेगी।

HIMANSHU

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियाँ एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— हीरा (डायमण्ड) उपरत्न:— वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाइट एगेट)
हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, आयु, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि करने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— पन्ना (एमरल्ड) उपरत्न:— बैरूज(एक्वामेरीन), मरगज(नेफ्ताइट)
पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या—विवेक एवं बुद्धि कारक तथा व्यापार एवं नौकरी हेतु उन्नतिकारक रहेगा।

कारक रत्न:— नीलम (ब्लू सफायर) उपरत्न:— काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली)
नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, धन लाभ एवं व्यापार हेतु समृद्धिकारक रहेगा।

HIREN

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 19/03/1965	विक्रमी संवत्	: 2021
जन्म दिन	: शुक्रवार	शक संवत्	: 1886
जन्म समय	: 17:02:05 घण्टे	ऋतु	: बसन्त
इष्टकाल	: 25:33:45 घटी	मास	: चैत्र
जन्म स्थान	: AHMEDABAD	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: द्वितीया
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 13:37:56 घण्टे
अक्षांश	: 23:2:00 उत्तर		: 17:03:23 घटी
रेखांश	: 72:37:00 पूर्व	जन्म तिथि	: तृतीया
स्थानिक समय संस्कार	: -00:39:32 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: चित्रा
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 27:05:28 घण्टे
स्थानिक समय	: 16:22:33 घण्टे		: 50:42:13 घटी
साम्पातिक काल	: 04:09:47 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: चित्रा
वेलान्तर	: 00:07:54 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: ध्रुव
सूर्योदय	: 06:48:35 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 23:07:21 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:46:16 घण्टे		: 40:46:57 घटी
दिनमान	: 11:57:42 घण्टे	जन्म योग	: ध्रुव
रात्रिमान	: 12:02:18 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: गर
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 13:37:56 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: दक्षिण		: 17:03:23 घण्टे
अयनांश	: 23:22:00	जन्म करण	: वणिज



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com

HIREN

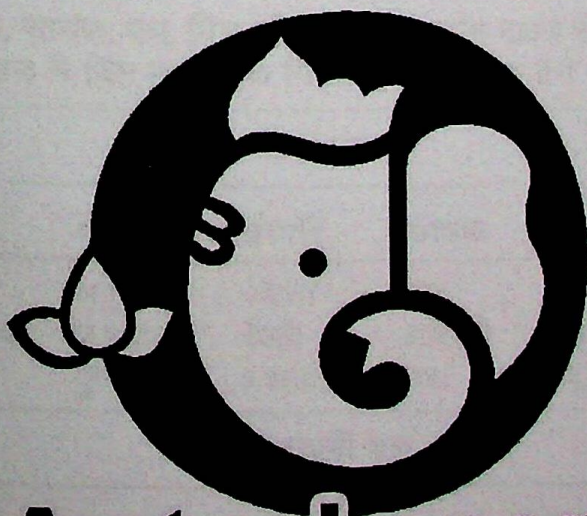
॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥

॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 19/03/1965	विक्रमी संवत्	: 2021
जन्म दिन	: शुक्रवार	शक संवत्	: 1886
जन्म समय	: 17:02:05 घण्टे	ऋतु	: बसन्त
इष्टकाल	: 25:33:45 घटी	मास	: चैत्र
जन्म स्थान	: AHMEDABAD	पक्ष	: कृष्ण
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: द्वितीया
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 13:37:56 घण्टे
अक्षांश	: 23:2:00 उत्तर		: 17:03:23 घटी
रेखांश	: 72:37:00 पूर्व	जन्म तिथि	: तृतीया
स्थानिक समय संस्कार	: -00:39:32 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: चित्रा
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 27:05:28 घण्टे
स्थानिक समय	: 16:22:33 घण्टे		: 50:42:13 घटी
साम्पातिक काल	: 04:09:47 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: चित्रा
वेलान्तर	: 00:07:54 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: ध्रुव
सूर्योदय	: 06:48:35 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 23:07:21 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:46:16 घण्टे		: 40:46:57 घटी
दिनमान	: 11:57:42 घण्टे	जन्म योग	: ध्रुव
रात्रिमान	: 12:02:18 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: गर
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 13:37:56 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: दक्षिण		: 17:03:23 घण्टे
अयनांश	: 23:22:00	जन्म करण	: वणिज



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com

HIREN

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	माघ	लग्न-लग्नाधिपति	:	सिंह-सूर्य
दिनांक	:	4,9,14	राशि-राशि स्वामी	:	तुला-शुक्र
दिन	:	बृहस्पतिवार	नक्षत्र-चरण	:	चित्रा-3
नक्षत्र	:	शतभिषा	नक्षत्र स्वामी	:	मंगल
योग	:	सुकर्मा	योग	:	ध्रुव
करण	:	तैत्ति	करण	:	वणिज
प्रहर	:	4	गण	:	राक्षस
का	:	सिंह	योनि	:	व्याघ्र
तान	:	मीन	नाडि	:	मध्या
सूर्य	:	कन्या	वर्ण	:	शूद्र
चन्द्र	:	धनु	वश्य	:	मानव
मंगल	:	तुला	वर्ग	:	मृग
बुध	:	कर्क	युंजा	:	मध्य
गुरु	:	वृश्चिक	हंसक (तत्व)	:	वायु
शुक्र	:	धनु	जन्म नामाक्षर	:	रा
शनि	:	सिंह	पाया-राशी	:	ताम्र
राहु	:	मकर	पाया-नक्षत्र	:	रजत
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	मीन	भयात	:	34:26:51 घटी
सूर्य के अंश	:	मीन	भभोग	:	59:26:49 घटी
तान के अंश	:	सिंह	भोग्य दशा काल	:	मंगल 2 व 11 म 9 दिन
		05:17:12			
		11:24:58			

॥ जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्च जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं।
अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
वित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
घनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
शुभशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र

सं. क्र.		सं. क्र.	
१	१	१	१
२	२	२	२
३	३	३	३
४	४	४	४
५	५	५	५
६	६	६	६
७	७	७	७
८	८	८	८
९	९	९	९
१०	१०	१०	१०
११	११	११	११
१२	१२	१२	१२
१३	१३	१३	१३
१४	१४	१४	१४
१५	१५	१५	१५
१६	१६	१६	१६
१७	१७	१७	१७
१८	१८	१८	१८
१९	१९	१९	१९
२०	२०	२०	२०
२१	२१	२१	२१
२२	२२	२२	२२
२३	२३	२३	२३
२४	२४	२४	२४
२५	२५	२५	२५
२६	२६	२६	२६
२७	२७	२७	२७
२८	२८	२८	२८
२९	२९	२९	२९
३०	३०	३०	३०
३१	३१	३१	३१
३२	३२	३२	३२
३३	३३	३३	३३
३४	३४	३४	३४
३५	३५	३५	३५
३६	३६	३६	३६
३७	३७	३७	३७
३८	३८	३८	३८
३९	३९	३९	३९
४०	४०	४०	४०
४१	४१	४१	४१
४२	४२	४२	४२
४३	४३	४३	४३
४४	४४	४४	४४
४५	४५	४५	४५
४६	४६	४६	४६
४७	४७	४७	४७
४८	४८	४८	४८
४९	४९	४९	४९
५०	५०	५०	५०
५१	५१	५१	५१
५२	५२	५२	५२
५३	५३	५३	५३
५४	५४	५४	५४
५५	५५	५५	५५
५६	५६	५६	५६
५७	५७	५७	५७
५८	५८	५८	५८
५९	५९	५९	५९
६०	६०	६०	६०
६१	६१	६१	६१
६२	६२	६२	६२
६३	६३	६३	६३
६४	६४	६४	६४
६५	६५	६५	६५
६६	६६	६६	६६
६७	६७	६७	६७
६८	६८	६८	६८
६९	६९	६९	६९
७०	७०	७०	७०
७१	७१	७१	७१
७२	७२	७२	७२
७३	७३	७३	७३
७४	७४	७४	७४
७५	७५	७५	७५
७६	७६	७६	७६
७७	७७	७७	७७
७८	७८	७८	७८
७९	७९	७९	७९
८०	८०	८०	८०
८१	८१	८१	८१
८२	८२	८२	८२
८३	८३	८३	८३
८४	८४	८४	८४
८५	८५	८५	८५
८६	८६	८६	८६
८७	८७	८७	८७
८८	८८	८८	८८
८९	८९	८९	८९
९०	९०	९०	९०
९१	९१	९१	९१
९२	९२	९२	९२
९३	९३	९३	९३
९४	९४	९४	९४
९५	९५	९५	९५
९६	९६	९६	९६
९७	९७	९७	९७
९८	९८	९८	९८
९९	९९	९९	९९
१००	१००	१००	१००

HIREN

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥

॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

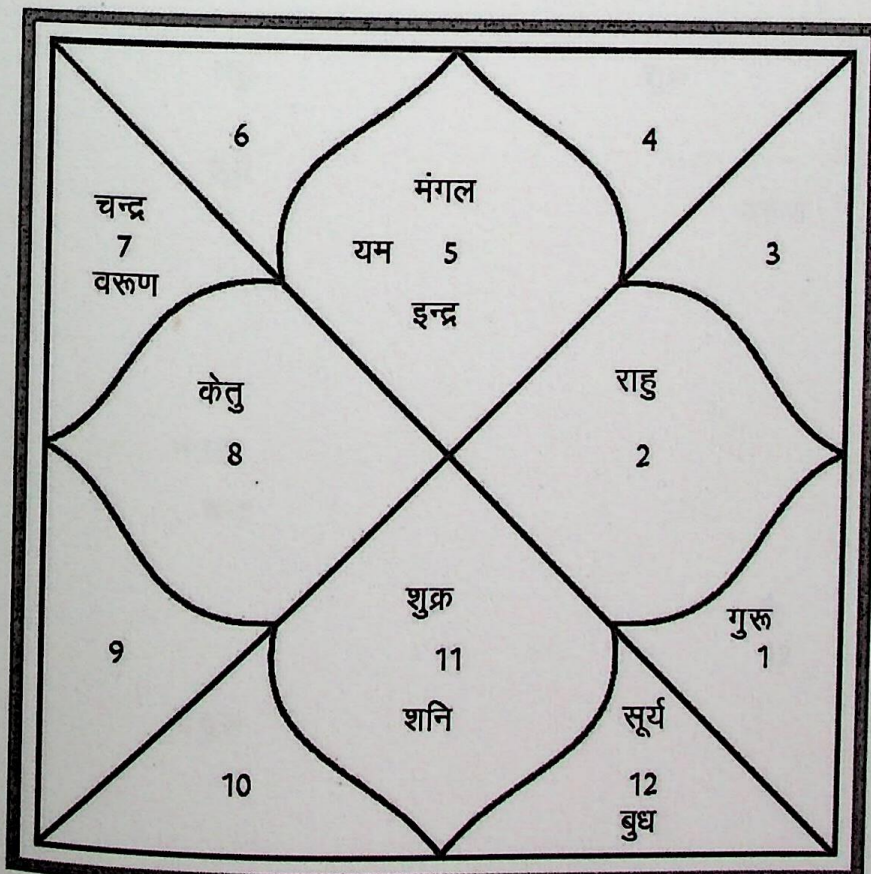
उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

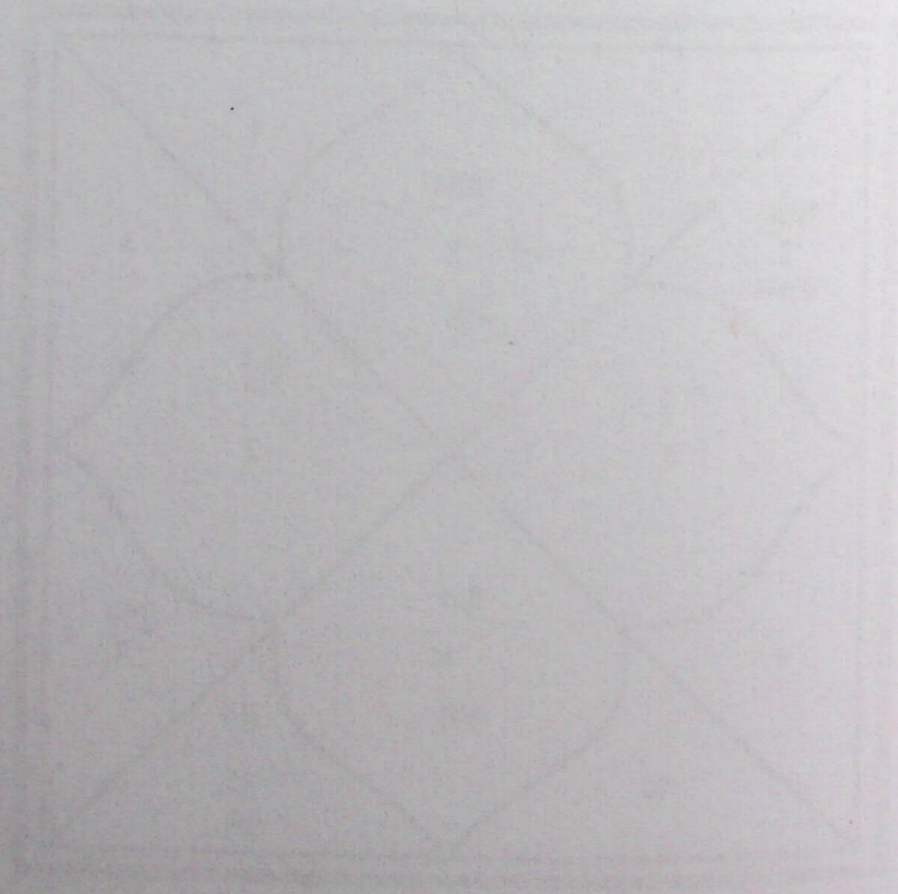
निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	सिंह	11:24:58	—	मघा	4	केतु	—	—	—
सूर्य	मीन	05:17:12	00:59:36	उ.भाद्रपद	1	शनि	मित्र स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	तुला	01:03:34	13:27:57	चित्रा	3	मंगल	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	सिंह	21:31:43	00:21:50	पू.फाल्गुनी	3	शुक्र	मित्र स्थान	—	वक्री
बुध	मीन	23:29:33	01:13:35	रेवती	3	बुध	नीच स्थान	—	मार्गी
गुरु	मेष	29:40:51	00:10:53	कृतिका	1	सूर्य	मित्र स्थान	—	मार्गी
शुक्र	कुम्भ	29:15:20	01:14:39	पू.भाद्रपद	3	गुरु	मित्र स्थान	अस्त	मार्गी
शनि	कुम्भ	16:46:05	00:07:04	शतभिषा	4	राहु	मूल त्रिकोण	—	मार्गी
राहु	वृष	23:41:42	00:09:11	मृगशिरा	1	मंगल	उच्च स्थान	—	वक्री
केतु	वृश्चिक	23:41:42	00:09:11	ज्येष्ठा	3	बुध	उच्च स्थान	—	वक्री
इन्द्र	सिंह	18:45:12	00:02:29	पू.फाल्गुनी	2	शुक्र	—	—	वक्री
वरुण	तुला	26:26:15	00:00:52	विशाखा	2	गुरु	—	—	वक्री
यम	सिंह	21:18:24	00:01:32	पू.फाल्गुनी	3	शुक्र	—	—	वक्री
दशम भाव	वृष	11:02:49	—	रोहिणी	1	चन्द्र	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:22:00

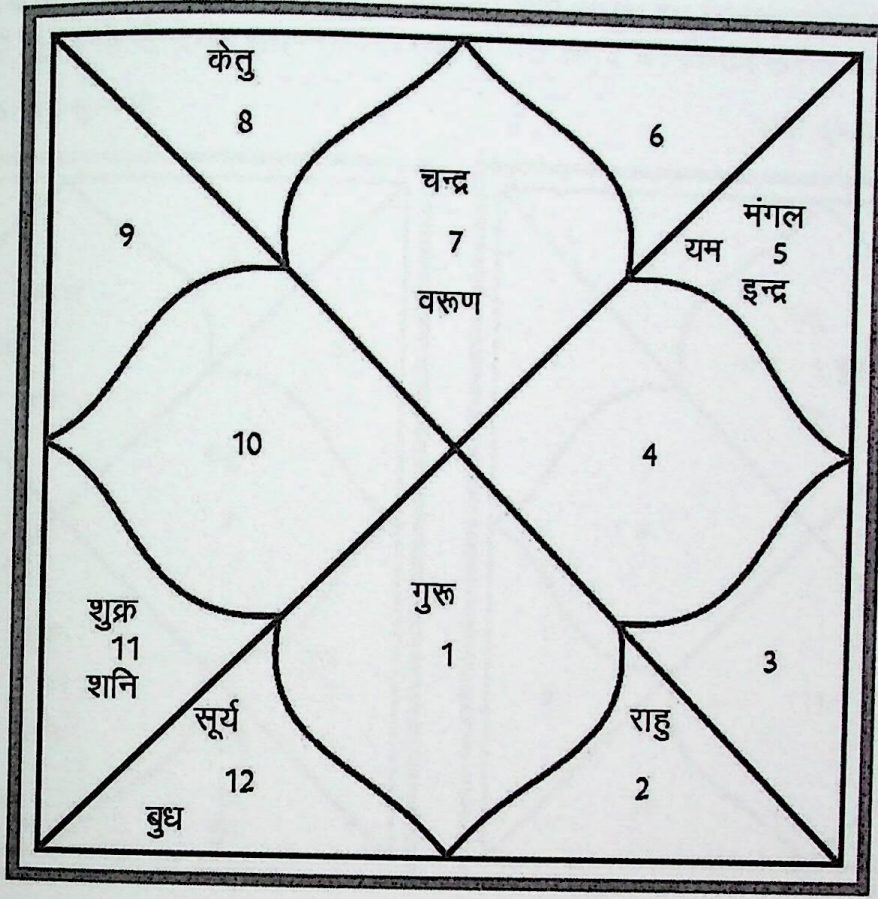
लग्न कुण्डली



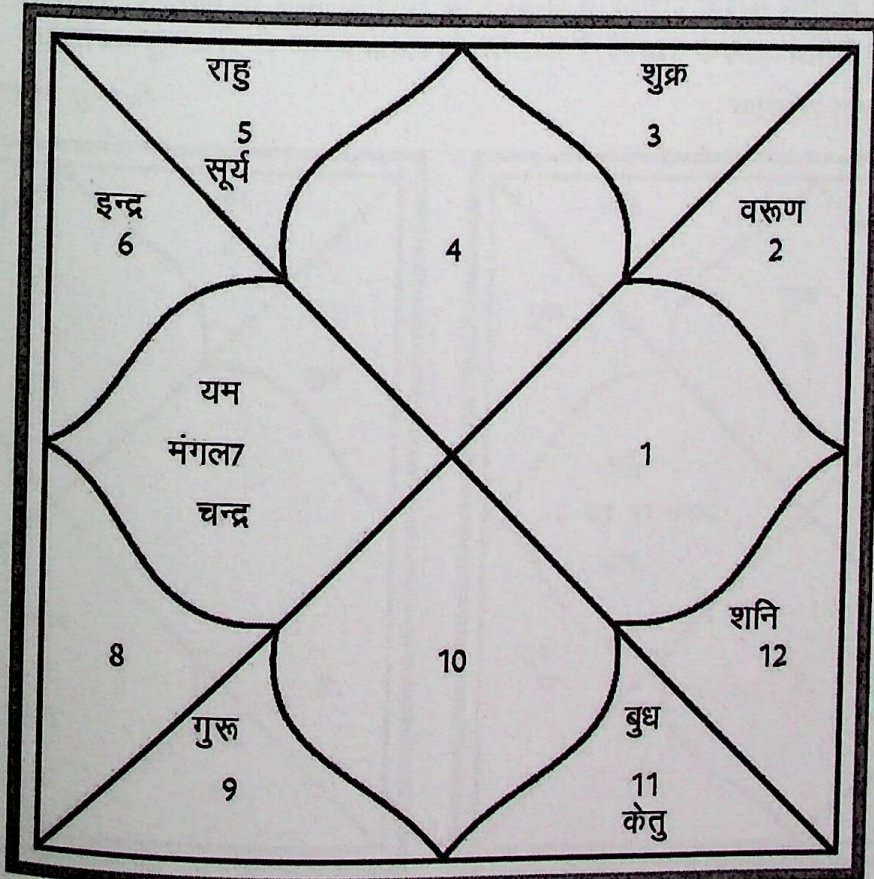


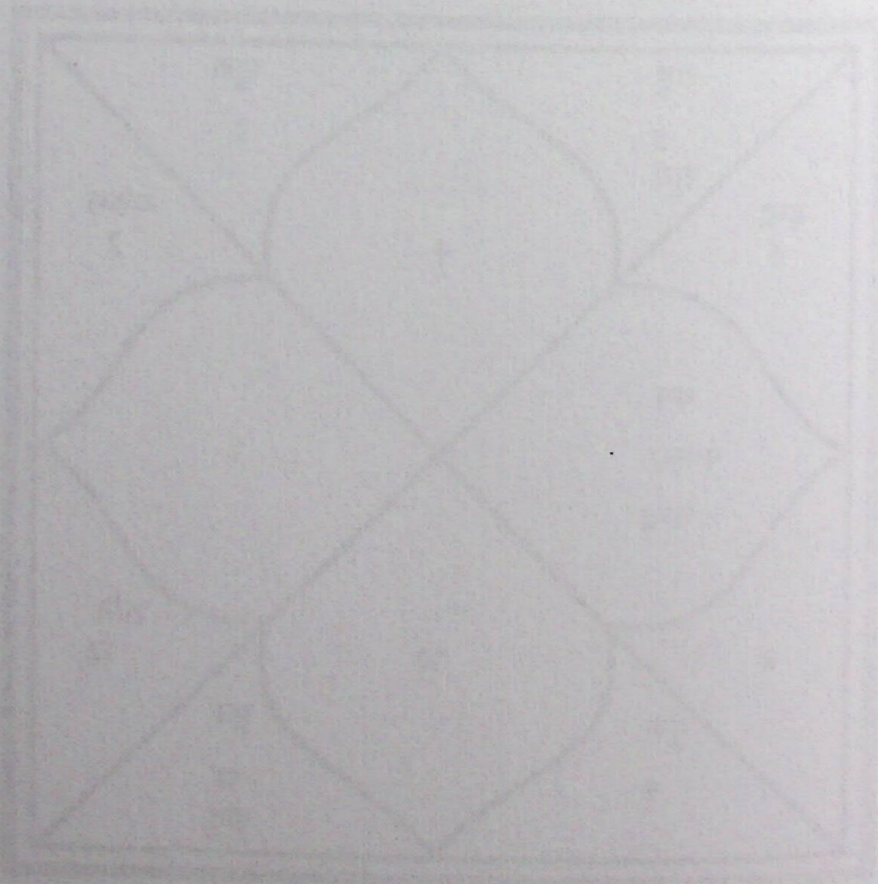
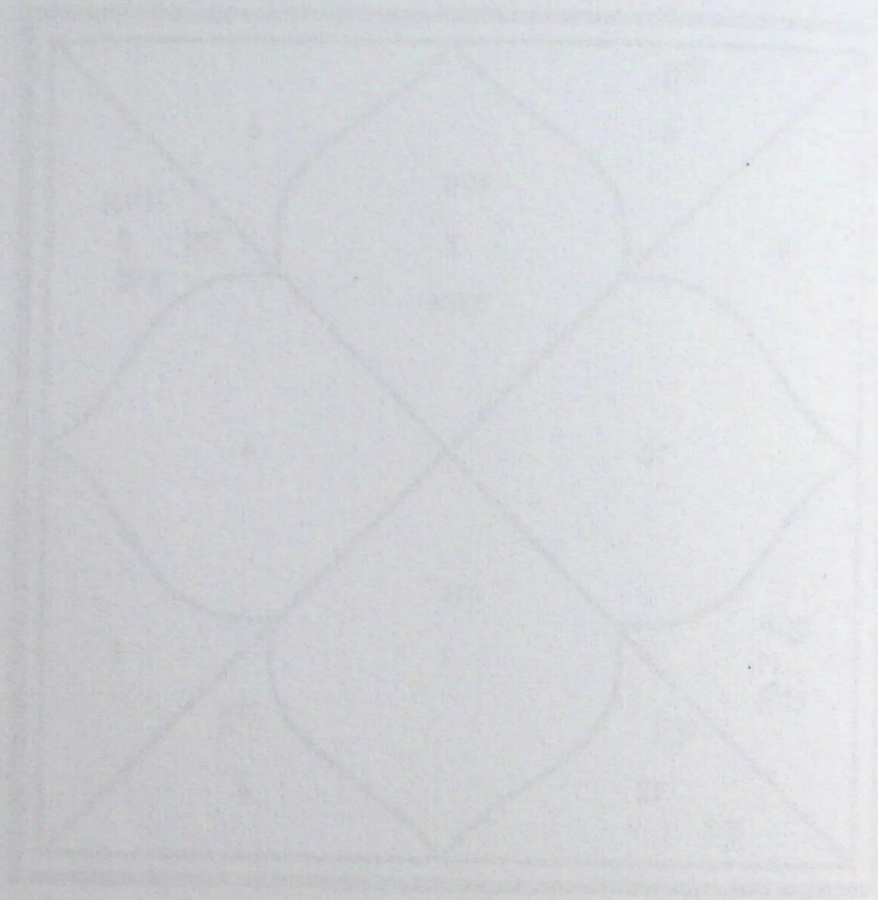
HIREN

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



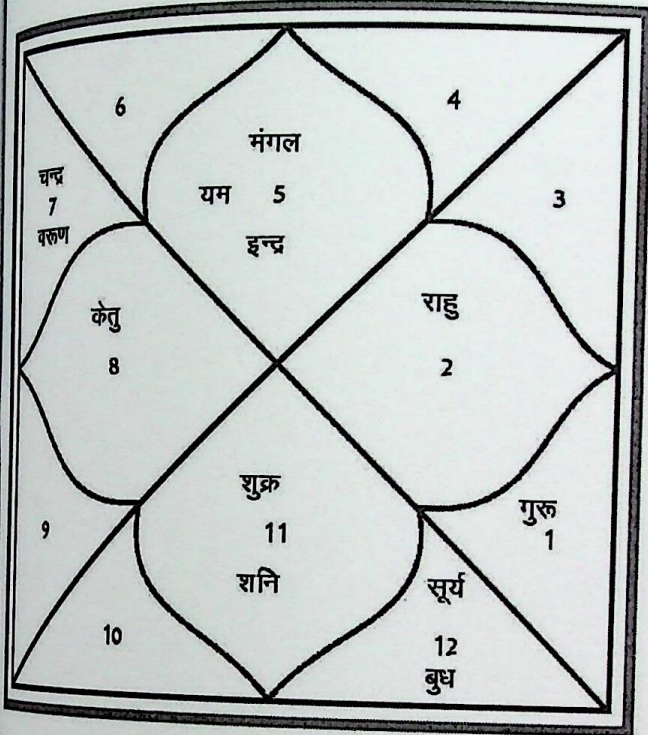


HIREN

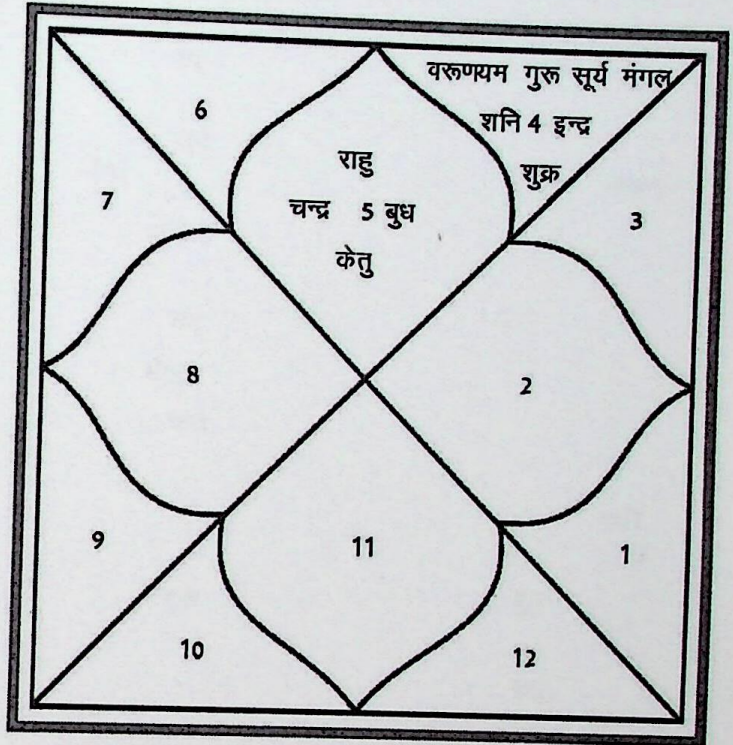
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञान् होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



होरा कुण्डली

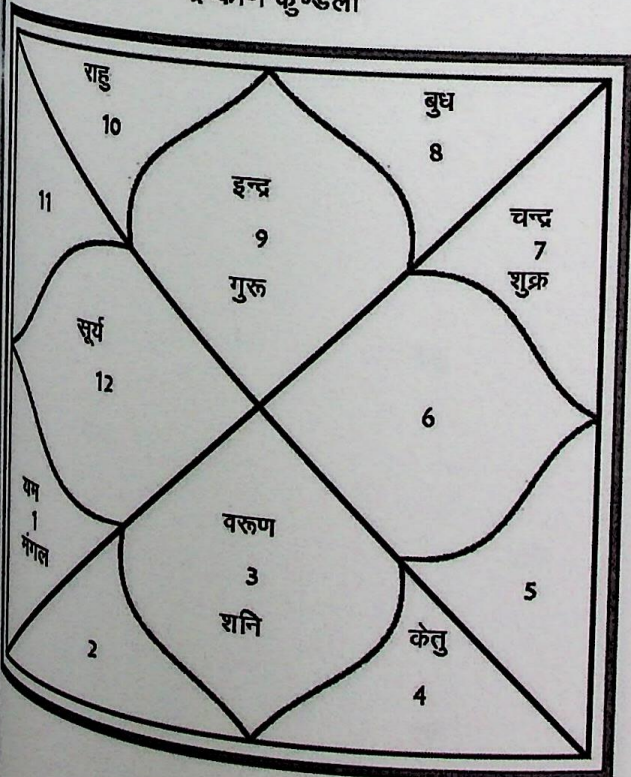


॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥

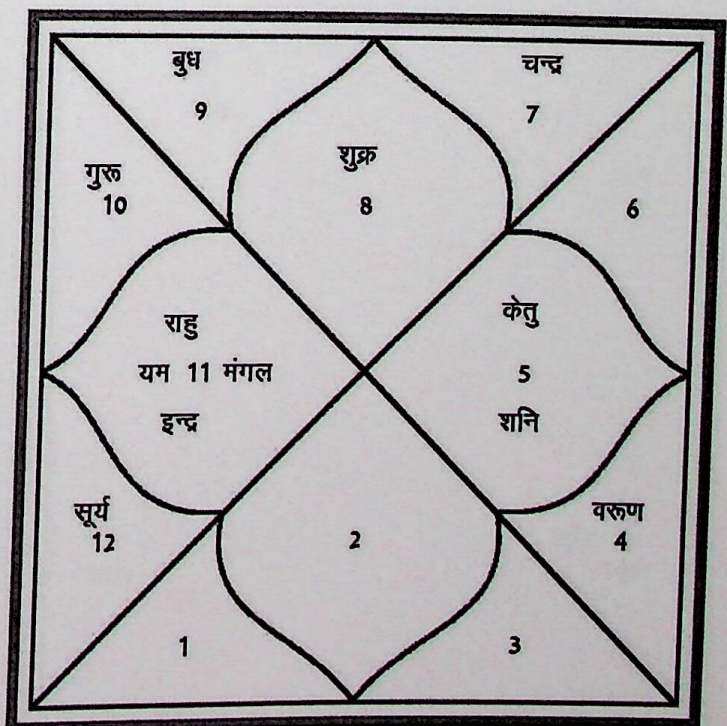
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

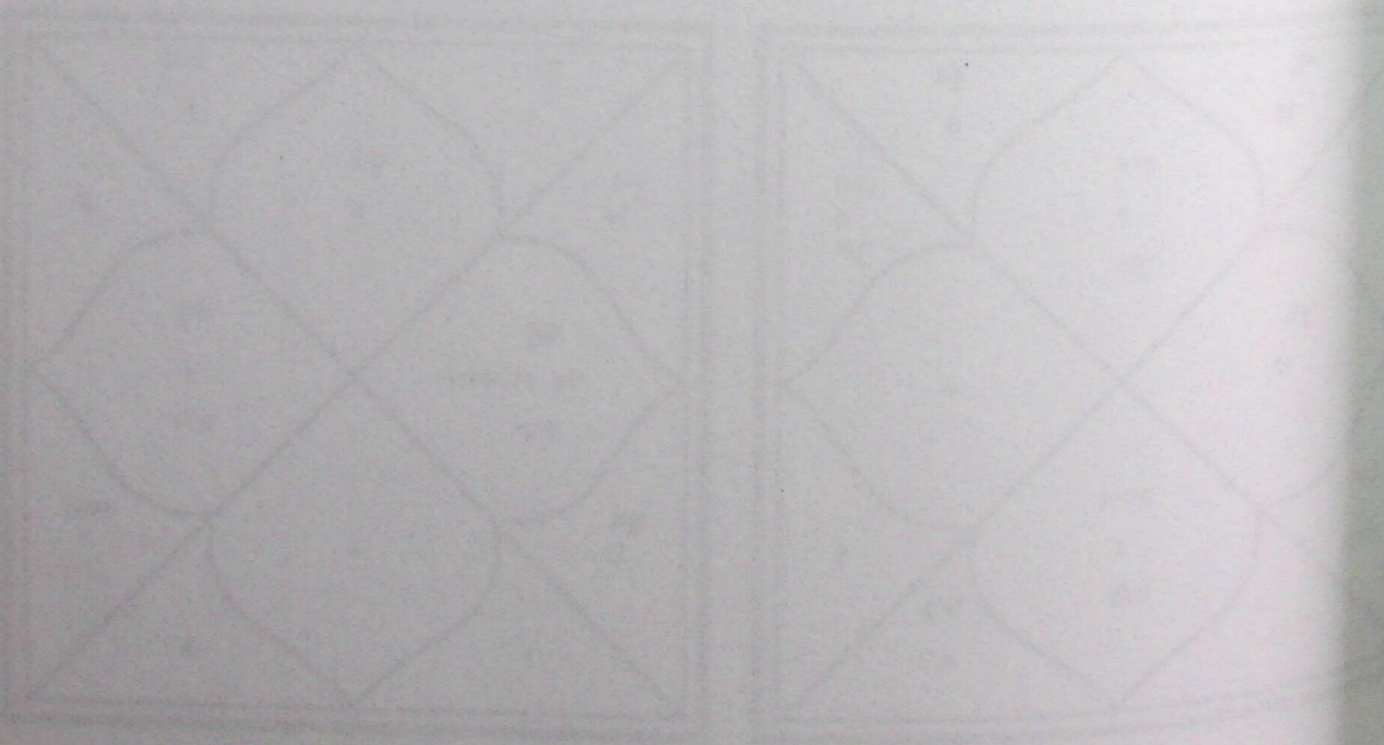
द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली





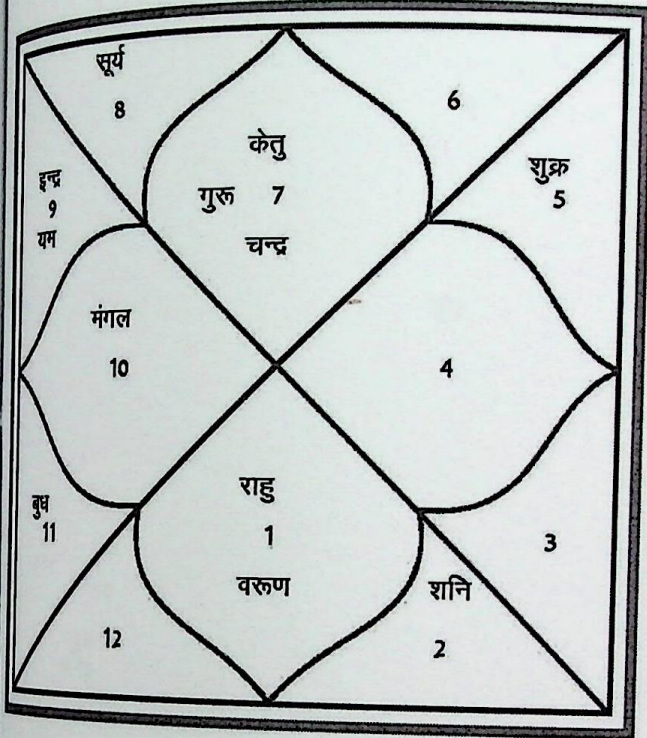
HIREN

॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥

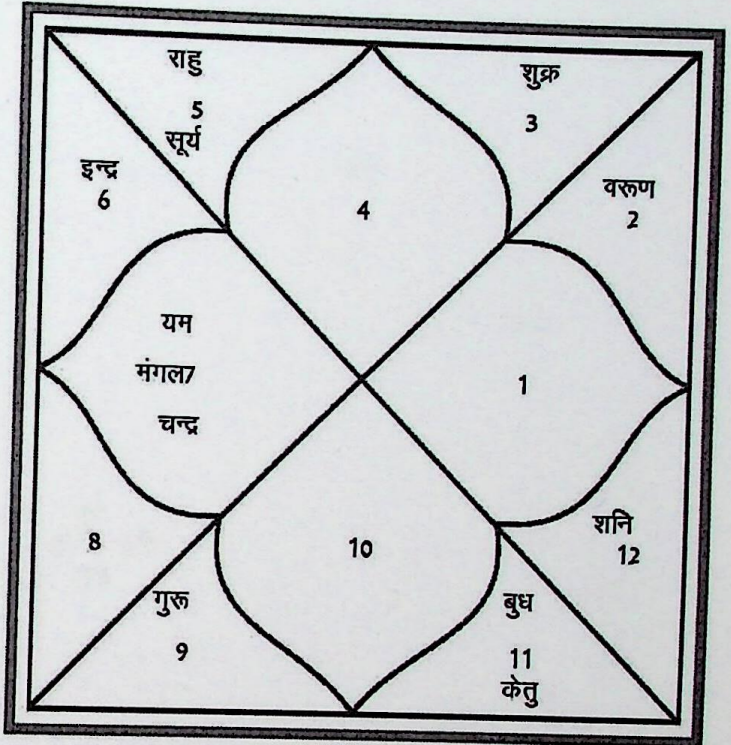
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



नवमांश कुण्डली

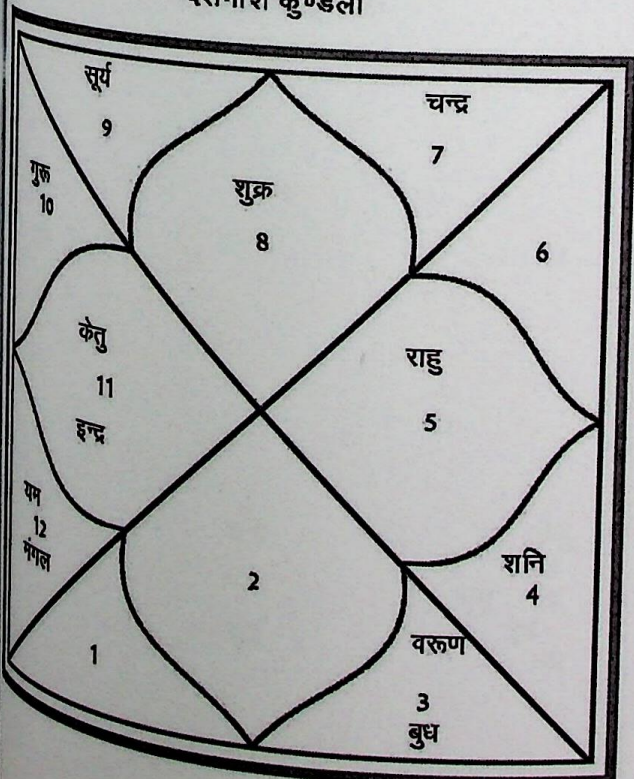


॥ दशमांशे महत्फलम् ॥

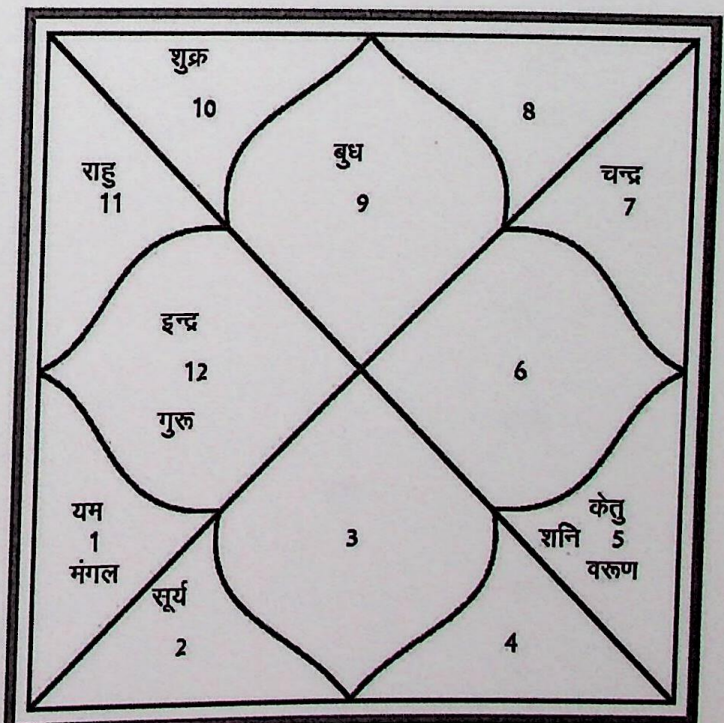
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

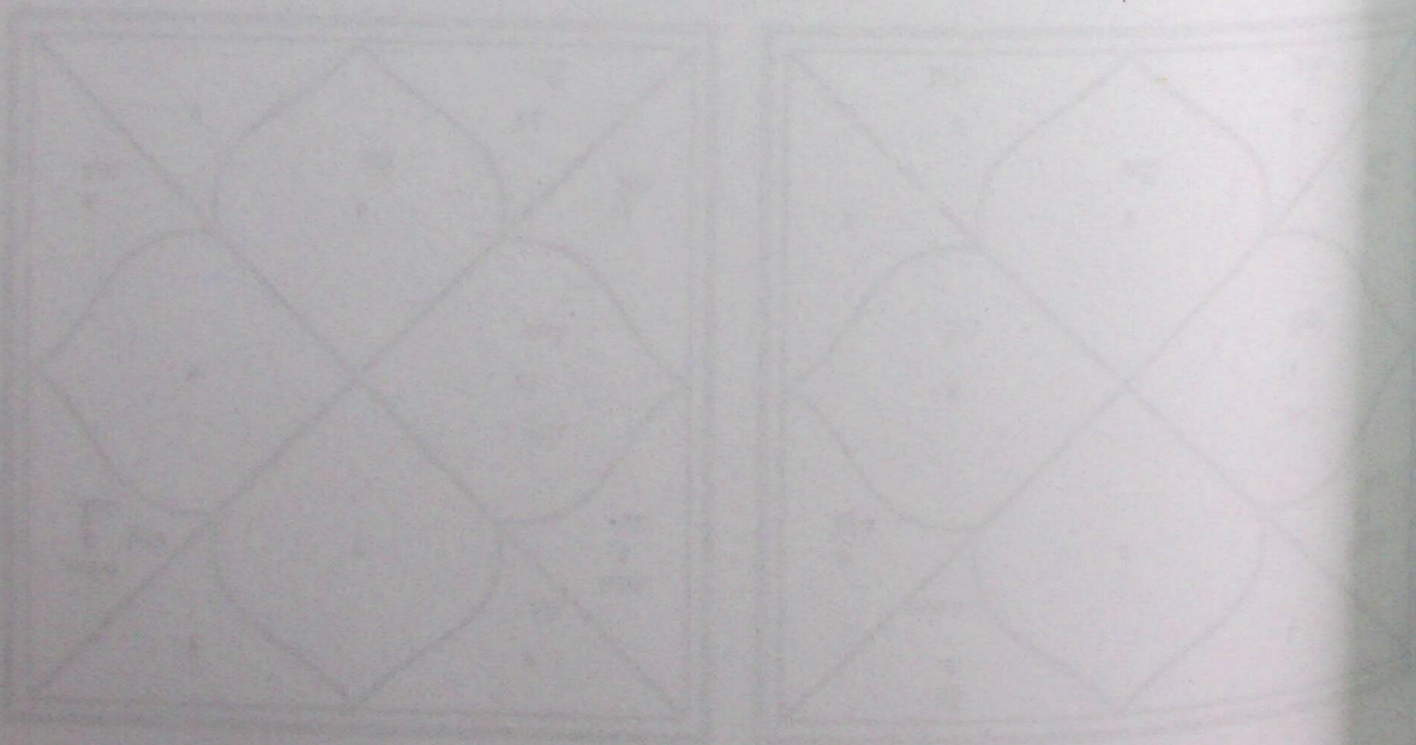
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

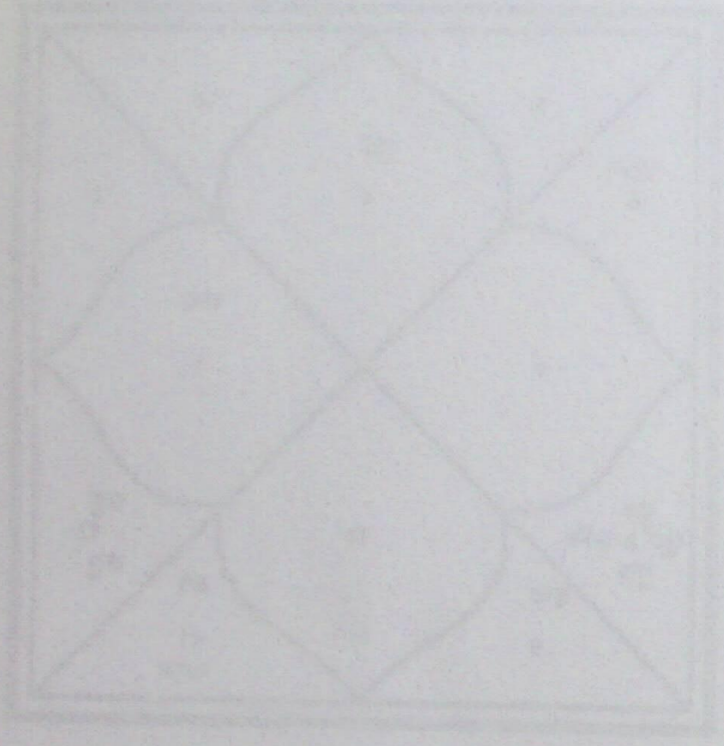
दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली

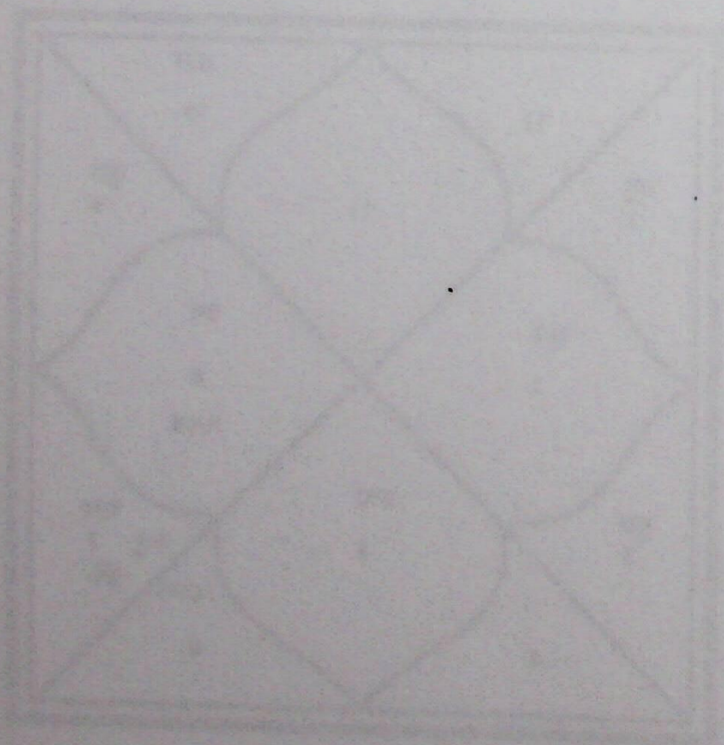






॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



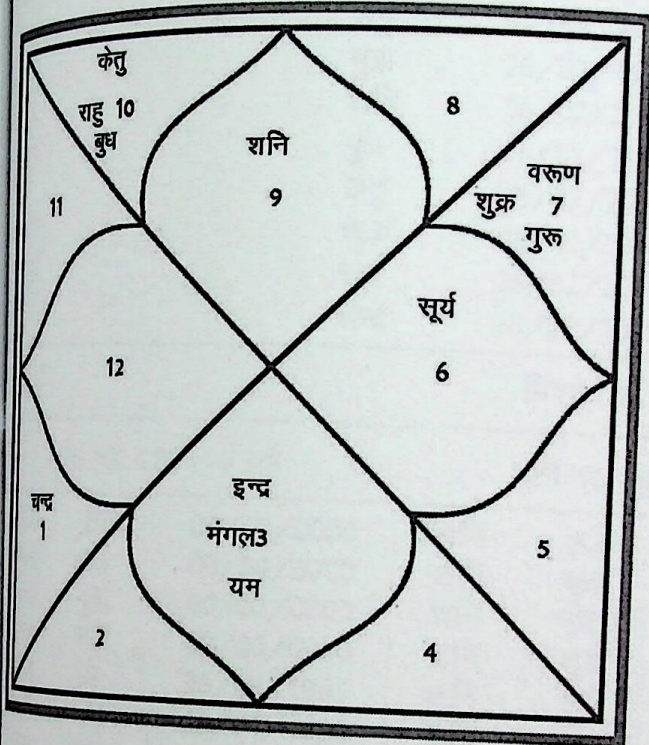
HIREN

॥ त्रिंशदंशके अरिष्ट फलम् ॥

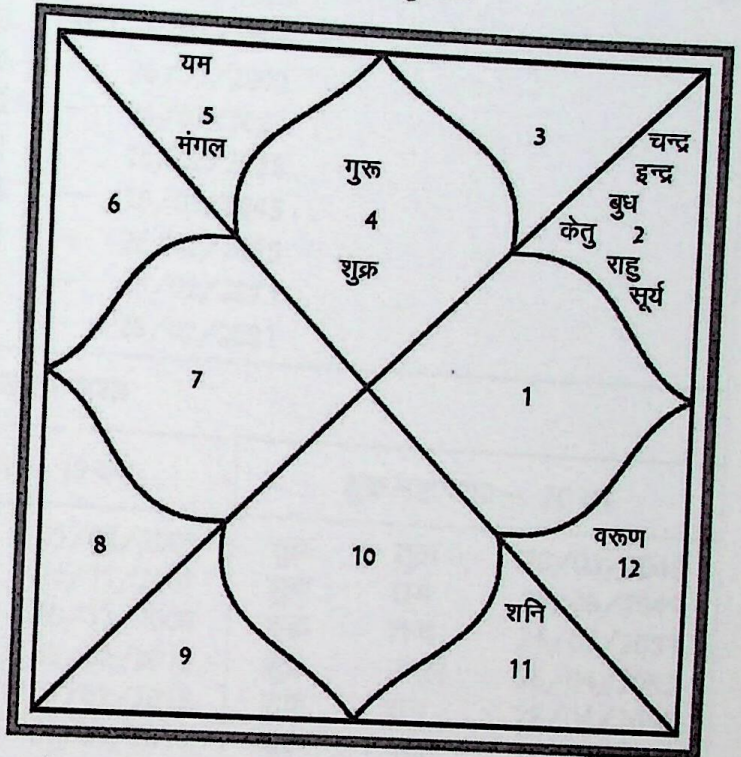
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिंशदंश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
 खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिंशदंश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

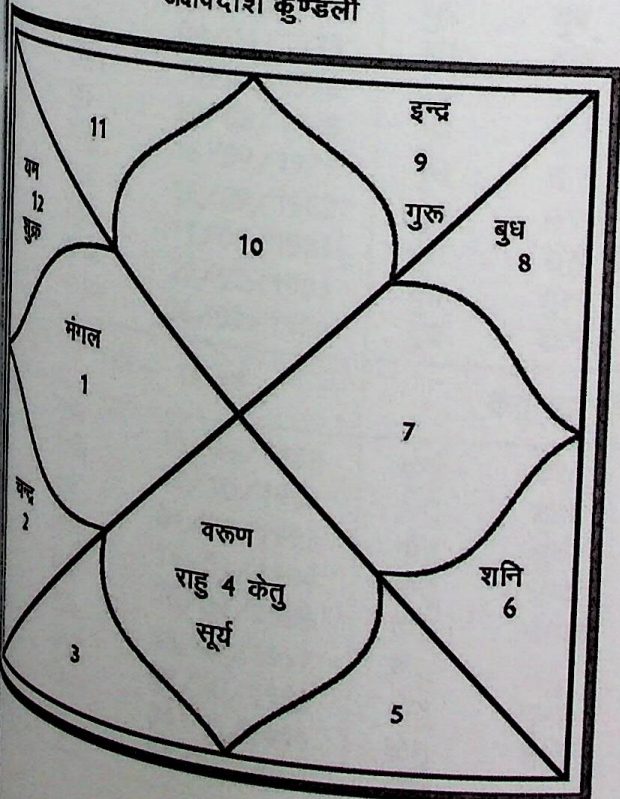


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

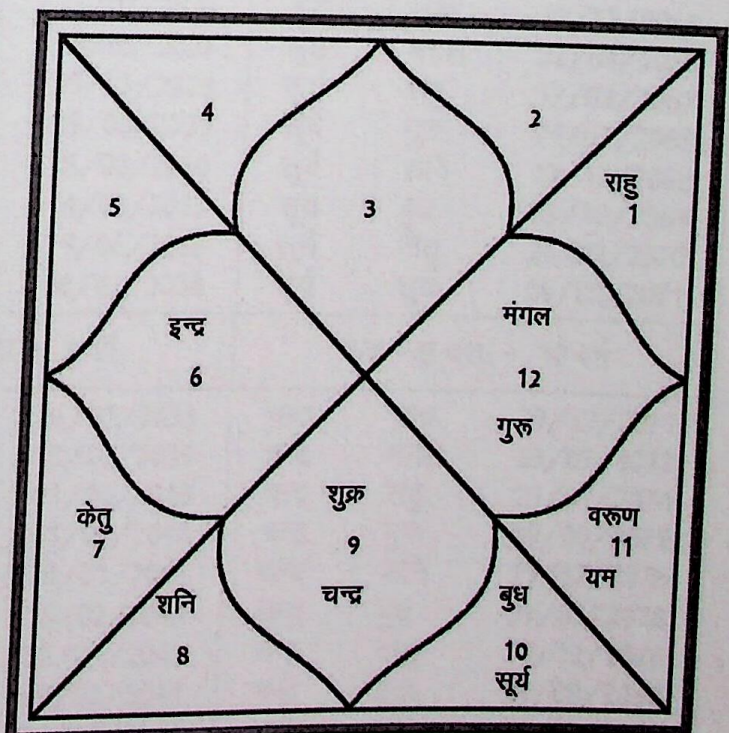
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्
 सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

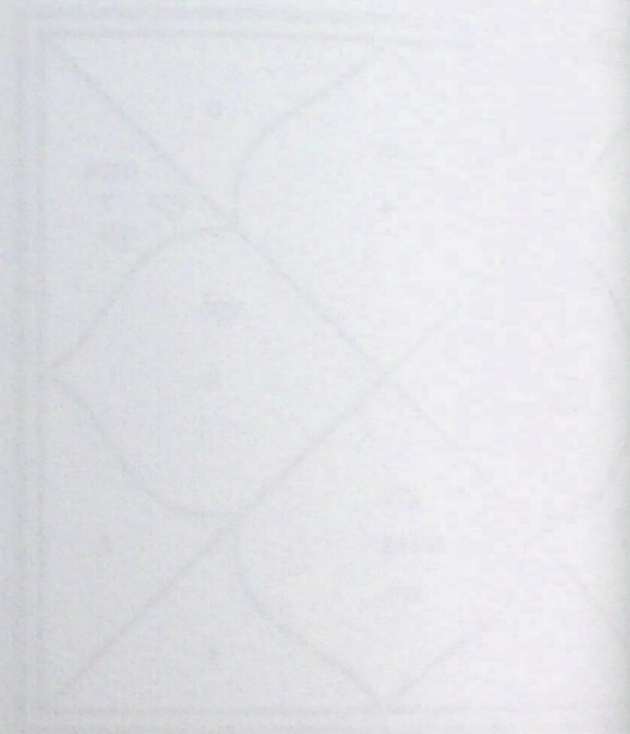
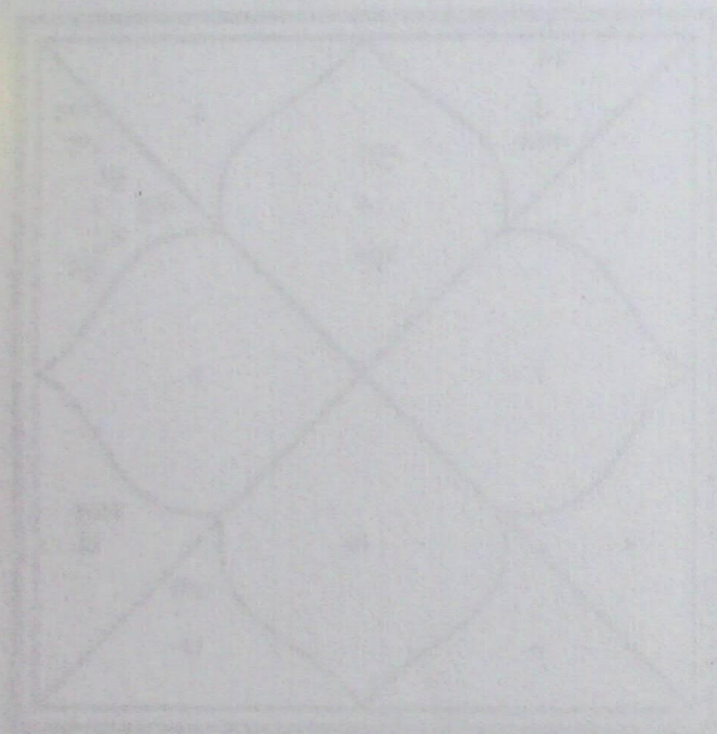
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



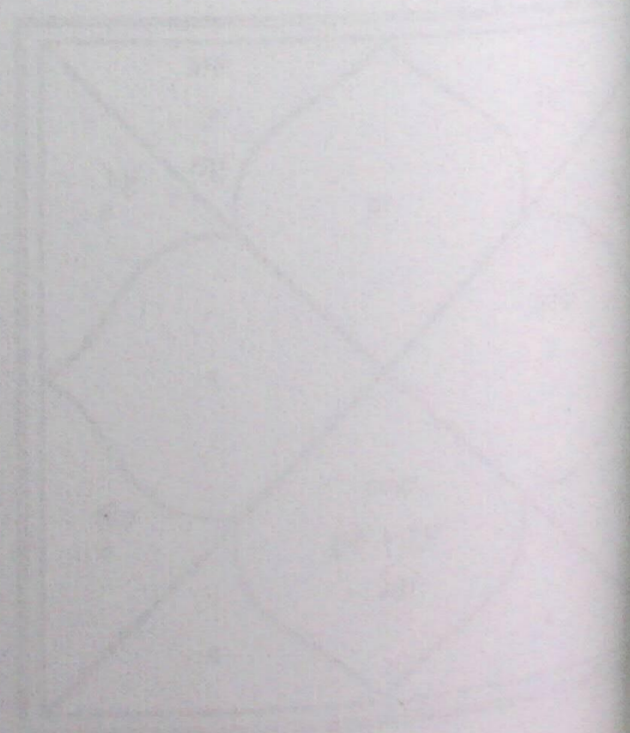
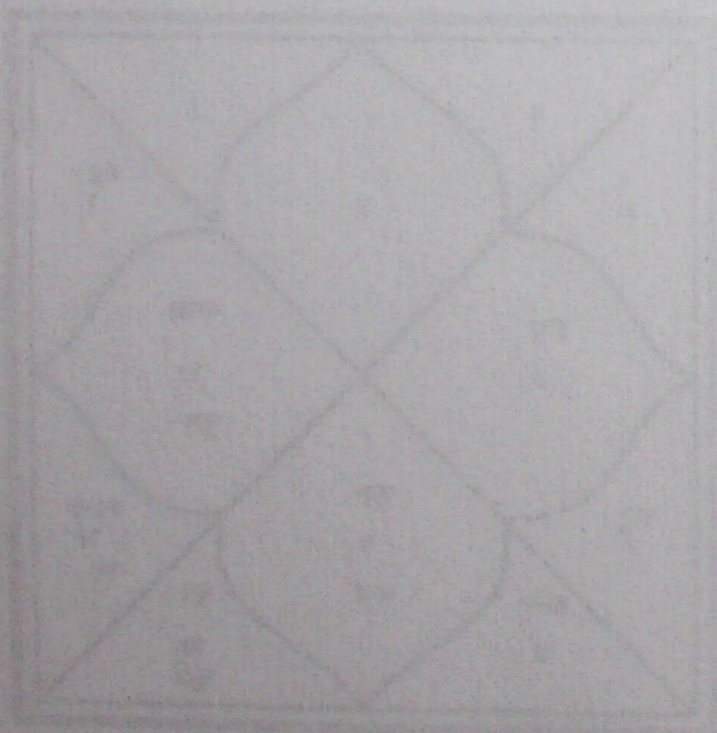
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



HIREN

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल — मंगल 2 वर्ष 11 मास 9 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

मंगल	19/03/1965	—	27/02/1968
राहु	27/02/1968	—	26/02/1986
गुरु	26/02/1986	—	26/02/2002
शनि	26/02/2002	—	26/02/2021
बुध	26/02/2021	—	26/02/2038
केतु	26/02/2038	—	26/02/2045
शुक्र	26/02/2045	—	26/02/2065
सूर्य	26/02/2065	—	26/02/2071
चन्द्र	26/02/2071	—	26/02/2081

विंशोत्तरी अन्तर दशा

मंगल महा दशा — 7 वर्ष			शनि महा दशा — 19 वर्ष			शुक्र महा दशा — 20 वर्ष		
मंगल	मंगल	00/00/0000	शनि	शनि	01/03/2005	शुक्र	शुक्र	28/06/2048
मंगल	राहु	00/00/0000	शनि	बुध	10/11/2007	शुक्र	सूर्य	28/06/2049
मंगल	गुरु	00/00/0000	शनि	केतु	20/12/2008	शुक्र	चन्द्र	26/02/2051
मंगल	शनि	00/00/0000	शनि	शुक्र	19/02/2012	शुक्र	मंगल	28/04/2052
मंगल	बुध	26/08/1965	शनि	सूर्य	01/02/2013	शुक्र	राहु	28/04/2055
मंगल	केतु	23/01/1966	शनि	चन्द्र	01/09/2014	शुक्र	गुरु	29/12/2057
मंगल	शुक्र	23/03/1967	शनि	मंगल	11/10/2015	शुक्र	शनि	26/02/2061
मंगल	सूर्य	29/07/1967	शनि	राहु	17/08/2018	शुक्र	बुध	29/12/2063
मंगल	चन्द्र	27/02/1968	शनि	गुरु	26/02/2021	शुक्र	केतु	26/02/2065
राहु महा दशा — 18 वर्ष			बुध महा दशा — 17 वर्ष			सूर्य महा दशा — 6 वर्ष		
राहु	राहु	10/11/1970	बुध	बुध	26/07/2023	सूर्य	सूर्य	16/06/2065
राहु	गुरु	04/04/1973	बुध	केतु	23/07/2024	सूर्य	चन्द्र	17/12/2065
राहु	शनि	10/02/1976	बुध	शुक्र	23/05/2027	सूर्य	मंगल	22/04/2066
राहु	बुध	29/08/1978	बुध	सूर्य	29/03/2028	सूर्य	राहु	17/03/2067
राहु	केतु	16/09/1979	बुध	चन्द्र	29/08/2029	सूर्य	गुरु	04/01/2068
राहु	शुक्र	16/09/1982	बुध	मंगल	26/08/2030	सूर्य	शनि	17/12/2068
राहु	सूर्य	11/08/1983	बुध	राहु	14/03/2033	सूर्य	बुध	23/10/2069
राहु	चन्द्र	10/02/1985	बुध	गुरु	19/06/2035	सूर्य	केतु	26/02/2070
राहु	मंगल	26/02/1986	बुध	शनि	26/02/2038	सूर्य	शुक्र	26/02/2071
गुरु महा दशा — 16 वर्ष			केतु महा दशा — 7 वर्ष			चन्द्र महा दशा — 10 वर्ष		
गुरु	गुरु	16/04/1988	केतु	केतु	26/07/2038	चन्द्र	चन्द्र	29/12/2071
शुक्र	शनि	29/10/1990	केतु	शुक्र	25/09/2039	चन्द्र	मंगल	29/07/2072
शुक्र	बुध	04/02/1993	केतु	सूर्य	01/02/2040	चन्द्र	राहु	29/01/2074
शुक्र	केतु	11/01/1994	केतु	चन्द्र	01/09/2040	चन्द्र	गुरु	29/05/2075
शुक्र	शुक्र	10/09/1996	केतु	मंगल	29/01/2041	चन्द्र	शनि	29/12/2076
शुक्र	सूर्य	28/06/1997	केतु	राहु	15/02/2042	चन्द्र	बुध	29/05/2078
शुक्र	चन्द्र	29/10/1998	केतु	गुरु	23/01/2043	चन्द्र	केतु	29/12/2078
शुक्र	मंगल	04/10/1999	केतु	शनि	01/03/2044	चन्द्र	शुक्र	29/08/2080
शुक्र	राहु	26/02/2002	केतु	बुध	26/02/2045	चन्द्र	सूर्य	26/02/2081

HIREN

लग्न विचार

सिंह राशि, राशि चक्र की पाँचवी राशि है। इसका स्वामी सूर्य है जो सब ग्रहों का राजा माना जाता है। इस राशि में मघा, पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण आता है। इस लग्न में जन्म होने से आप कद में लम्बे, सुन्दर, चौड़े ललाट तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका व्यक्तित्व सूर्य से प्रभावित होने के कारण आप राजसी, अनुशासन प्रिय तथा साहस युक्त व्यक्ति होंगे। आप उदार व्यक्ति होंगे तथा दूसरों की सहायता करने में सदा तत्पर रहेंगे। स्वभाव के आप उग्र होंगे, किन्तु आपका क्रोध अल्पकालिक ही रहेगा। कभी-कभी तो आपको यह बात भी विस्मृत नहीं रहेगी कि कुछ समय पूर्व आप किस बात पर क्रोधित हुए थे। आत्मप्रशंसा आपका स्वभाव रहेगा। आप विरोध सहन नहीं करेंगे। मनोरंजन के साधन यथा नाच, गाने, नाटक, चलचित्र आदि में आप रुचि रखेंगे, किन्तु यह रुचि सीमित ही होगी अर्थात् अपने कार्य के अतिरिक्त जो समय शेष बचेगा उसी समय में आप इन गतिविधियों में सम्मिलित होंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी के बीच में वैचारिक मतभेद से अनबन बनी रहेगी। आपका सन्तान सुख भी सामान्य रहेगा। आपकी रुचि प्रशासनिक सेवाओं में रहेगी। उच्च प्रशासनिक सेवाओं, प्रबन्धक, संयोजक, अधिकारी वर्ग, पुलिस सेवाओं आदि में भी आप सफलता से कार्य कर सकेंगे। राजनीतिक क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे। आपकी विशेषता रहेगी कि आप अपने उच्चाधिकारियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों सभी के विश्वासपात्र होंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहेगा, परन्तु मध्य आयु पश्चात् हृदय रोग से कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, रक्तचाप, सूजन, वात, ज्वर तथा आँखों की बीमारियों से भी आपको पीड़ित होना पड़ेगा।

आपका जन्म सिंह लग्न में 10 अंश 00 कला से 13 अंश 20 कला के बीच में होने से आप संवेदनशील व्यक्ति होंगे। आप मनोभावनाओं से अधिक प्रभावित होने के कारण कभी-कभी निराशावादी भी हो जायेंगे, हालांकि मानवीय भावनायें आप में प्रबल रहेंगी। आप मध्यम कद तथा गौरवर्ण के व्यक्ति होंगे तथा आपका शरीर अधिक बलिष्ठ नहीं रहेगा। आप विचारशील अधिक होने से कल्पनाप्रिय व्यक्ति होंगे, किन्तु वास्तविकता को नहीं भुलायेंगे। आप कठिनाइयों से घबरायेंगे नहीं, बल्कि उनका सफलतापूर्वक सामना करेंगे। आप स्वभाव से कुछ हठी होंगे। आपको कई माध्यमों से आय प्राप्त होगी। मानवीय भावनाओं के कारण आप सबकी मदद करने में अग्रणी रहेंगे। आप अनेक प्रकार की संरचनाओं से जुड़े रहकर सेवा कार्य करेंगे। आप स्वभाव से प्रायः शान्त रहने के कारण दूसरों के दुःखों से जल्दी ही प्रभावित होंगे तथा उनकी यथासम्भव मदद भी करेंगे। आपका पारिवारिक जीवन मध्यम रहेगा। आपका सन्तान सुख भी साधारण ही रहेगा। आप व्यापार करना अधिक पसन्द करेंगे। होटल मालिक, दुकानदार, चिकित्सा संस्थान, औषधि निर्माण तथा

HIREN

लग्न विचार

विक्रेता एवं जलीय वस्तुओं के व्यापार में आप सफलता प्राप्त करेंगे। आप सर्दी—जुखाम, टॉसिल, गले के रोगों आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा पित्त सम्बन्धी रोग भी आपको कष्ट देंगे। अधिक चिन्तित होने तथा संवेदनशील होने के कारण आप रक्तचाप से भी पीड़ित हो सकते हैं।

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान पर मीन राशि में स्थित है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। साधारणतः सूर्य अष्टम स्थान में शुभ नहीं माना जाता। इसलिये आपको यह सूर्य मध्यम फल प्रदान करेगा। शारीरिक दृष्टि से यह सूर्य आपको कष्टदायक हो सकता है। आपको कई प्रकार के रोग हो सकते। आप दीर्घायु रहेंगे किन्तु आपके जीवन में कठिनाईयाँ आती रहेंगी। आपका स्वभाव झगड़ालू रहेगा। क्रोध की अधिकता से परिवार के सदस्य भी आपको पसन्द नहीं करेंगे।

आप स्वभाव से कंजूस होंगे किन्तु धन संग्रह अधिक नहीं हो पाएगा। जुए या सट्टे से हानि उठानी पड़ सकती है। आपकी पर्यटन में रुचि रहेगी। विदेश प्रवास भी कर सकते हैं। व्यवसाय में कभी-कभी आकस्मिक धन लाभ की सम्भावना भी है। आप कठोर परिश्रमी होंगे। आपके जीवन में उतार-चढ़ाव अधिक आयेंगे। आपके द्वारा किये गये अच्छे कार्यों से यश भी प्राप्त होगा।

यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से द्वितीय भाव को देखता है। द्वितीय भाव में कन्या राशि है जिसका स्वामी बुध सूर्य का मित्र है। अतः यह सूर्य द्वितीय भाव से सम्बन्धित फलों में वृद्धि करेगा। आपको धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कुटुम्ब का आपको सहयोग मिल सकता है। नेत्र सम्बन्धि रोग होने की सम्भावना है। पिता के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। राज्य पक्ष के साथ सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

सिंह लग्न में अष्टम भाव के सूर्य के आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ प्राप्त होगा, परन्तु शारीरिक शक्ति एवं कुछ कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ सकता है। साथ ही आपको बाहरी सथानों के सम्बन्धों से भी सहयोग प्राप्त होगा। यहाँ से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीय भाव को देखता है, अतः आप धन-वृद्धि के लिये कठिन परिश्रम करेंगे। आपको धन तथा कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होगा, परन्तु आप क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं।

चन्द्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में, तुला राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र चन्द्र के शत्रु हैं। चन्द्रमा तृतीय स्थान में सामान्यतः अच्छे फल देता है, किन्तु यहाँ द्वादशेश चन्द्र, तृतीय स्थान पर शत्रु राशि में, शुभफल कारक नहीं होगा। यह चन्द्र आपको स्वार्थी तथा अस्थिर मनोवृत्ति का बनाता है। फलतः आपके मित्र कम तथा शत्रु अधिक रहते हैं। आपके स्वभाव से पीड़ित आपके मित्र भी, यदि शत्रुभाव धारण कर लें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। ज्वर, सर्दी तथा वात सम्बन्धी रोगों से पीड़ा रहेगी। यदि चन्द्र क्षीण

HIREN

ग्रह विचार

अथवा पापाक्रान्त हो तो ये रोग अधिक पीड़ादायक हो सकते हैं। भाई-बहिनों से सुख, आपको कम ही मिलता है। आप भ्रमणशील रहते हैं। नाटक, सिनेमा, संगीत आदि में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी। प्रकृति से आप कृपण होते हैं, किन्तु आय कम होने से धन का संचय नहीं हो पायेगा जो कि आवश्यकता पड़ने पर काम आ सके। कुसंगति में भी, धन बर्बाद होगा। आपके लिये नौकरी की अपेक्षा व्यापार अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान पर, मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से चन्द्र की मित्रता है। दान पुण्य में, आपकी भावना, मात्र लोक दिखावा होगी। व्यापार में भी उतार चढ़ाव होता रहेगा। कभी अच्छा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। अपनी माता के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते। आपको भूमि, भवन, वाहनादि की प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

सिंह लग्न में तृतीय भाव के चन्द्रमा के व्ययेश होकर भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित होने से आपके भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कमजोरी रह सकती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से आपको लाभ प्राप्त होगा। यहाँ से चन्द्रमा सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवम भाव को देखता है, अतः कुछ कमी के साथ आपके भाग्य एवं धर्म में उन्नति होगी। आप खर्च को सुन्दर तरीके से चलायेंगे, अतः आप सुखी एवं धनी व्यक्ति समझे जायेंगे।

मंगल

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य मंगल के मित्र हैं। सामान्यतः लग्नस्थ मंगल सामान्य फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा नवमेश मंगल प्रथम स्थान में आपको अच्छे फल प्रदान करेगा।

यह मंगल आपकी कुण्डली को मंगलीक बनाता है। आप गुणवान, आचारशील, पराक्रमी तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे। आपका स्वभाव गर्म तथा राजसी रहेगा। यह मंगल आपको गौरवर्ण, ऊँचे कद का तथा शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ व्यक्ति बनायेगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक तथा प्रभावशाली रहेगा। आपके मित्रों की संख्या कम होगी, किन्तु वे मित्र समाज के उच्च वर्गों से सम्बन्धित होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यदा-कदा आपको सिरदर्द, नेत्ररोग जैसे आदि रोग हो सकते हैं। आत्मविश्वास प्रबल रहने से आप सामान्य बीमारियों की परवाह ही नहीं करेंगे। आप स्व-पुरुषार्थ से प्रगति करने वाले स्वनिर्मित पुरुष (सेल्फ मेड मेन) होंगे। आपकी बुद्धि प्रखर होगी। समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप सर्विस करना पसन्द करेंगे। राजकीय क्षेत्र में अथवा निजी क्षेत्र में आप उच्च प्रशासनिक पद प्राप्त कर सकते हैं। इलेक्ट्रिक, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल क्षेत्रों में इन्जीनियर, मैकेनिक, फायरमैन, सुपरवाइजर आदि के कार्य भी

HIREN

ग्रह विचार

आप सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो मंगल की स्वराशि है। अपनी माता से आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे तथा भौतिक सुख-सुविधायें भी आपको प्राप्त होंगी। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शनि मंगल का शत्रु है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपकी पत्नी का उग्र स्वभाव आप दोनों के बीच विवाद तथा मतभेदों का कारण बनेगा। आपके द्वि-विवाह के योग भी बनते हैं। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि, अष्टम स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। आप दीर्घायु होंगे। आपको आकस्मिक रूप से धन लाभ हो सकता है।

सिंह लग्न में प्रथम भाव के मंगल के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित होने से आप शारीरिक रूप से प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। आप भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा भाग्य पर भरोसा करने वाले व्यक्ति होंगे। यहाँ से मंगल अपनी चौथी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखता है, अतः आपको माता, भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होगा। मंगल के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण आपको स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सुख मिलेगा। मंगल के अपनी आठवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आपकी आयु तथा आपके पुरातत्त्व में वृद्धि होगी।

बुध

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में, मीन राशि में स्थित है, जो बुध की नीच राशि है। सामान्यतः अष्टम स्थान में बुध मिश्रित फल देता है किन्तु यहाँ धनेश तथा एकादशेश बुध, अष्टम स्थान में आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको अहंकारी प्रकृति का व्यक्ति बना सकता है। आपका स्वभाव अभिमानी तथा कठोर रहेगा। आपके व्यवहार से परिजन पीड़ित रहेंगे तथा मित्र भी विरोधी बन सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। स्नायु दौर्बल्य, मस्तिष्क तथा नेत्र रोगों से कष्ट हो सकता है। बाल्यावस्था में कष्ट अधिक रह सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में साहित्य, प्राचीन इतिहास, विधि शिक्षा आदि में आपका रुझान रहता है। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रह सकती है। आपको पर्यटन का शौक रहेगा, आप प्रवास भी कर सकते हैं। आपका आयु पक्ष दीर्घ रहता है। आपको गुप्त धन प्राप्त हो सकता है या आकस्मिक धन लाभ भी सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता, इतिहासकार आदि बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है। व्यापार में भी आपको पर्याप्त लाभ हो सकता है।

HIREN

ग्रह विचार

इस बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जो बुध की स्व तथा उच्च राशि है। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। कुटुम्ब का सुख भी आपको यदा-कदा प्राप्त हो सकता है।

सिंह लग्न में अष्टम भाव के बुध के नीच का होकर आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको आयु के पक्ष में कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ सकता है तथा आप पुरातत्त्व के सम्बन्ध में भी चिन्तित एवं परेशान रहेंगे। यहाँ से बुध अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि कन्या में द्वितीय भाव को देखता है, इसलिए धन की कमी रहते हुए भी आप अपने दैनिक खर्चों की पूर्ति करते रहेंगे।

गुरु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से नवम् स्थान में मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। सामान्यतः नवमस्थ गुरु शुभ फल प्रदान करता है। यहाँ पंचमेश तथा अष्टमेश गुरु नवम स्थान में आपको शुभफल दायक रहेगा। यह गुरु आपको तर्कशास्त्र का ज्ञाता, समाज में विख्यात, विद्वान, सम्पन्न तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी रहता है किन्तु अपनी व्यवहारकुशलता के कारण अपने मित्रों और परिजनों के साथ आप अच्छा व्यवहार करते हैं। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहती है तथा ये मित्र आपके सहायक भी सिद्ध होते हैं।

आपका स्वस्थ सामान्य रहता है। यदा-कदा बवासीर अथवा गुप्त रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। दुर्घटना अथवा किसी बीमारी की वजह से आपके चेहरे पर कुछ विकृति भी हो सकती है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। आपका रुझान विज्ञान, विधि, तर्कशास्त्र, दर्शन, अर्थशास्त्र आदि विषयों की ओर रहता है। आपकी रुचि विभिन्न क्षेत्रों में (बहुमुखी) होती है। नाट्य, अभिनय, खेलों, पर्यटन आदि का आपको शौक रहेगा। शैक्षिक जीवन में आपकी उपलब्धियों के लिये आपको पुरस्कृत भी किया जा सकता है। आपका रुझान धर्म की ओर रहता है किन्तु कर्मकाण्डों पर आप विश्वास नहीं करते हैं। आपका भाग्योदय 16 वर्ष की आयु में होता है। आप दीर्घायु होते हैं। आपको वसीयत आदि माध्यम से आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। आपके सन्तान सुख में बाधा पड़ सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप वैज्ञानिक, विधि विशेषज्ञ, प्राध्यापक, शिक्षा विभाग अथवा राजकीय क्षेत्र में उच्च पदासीन अधिकारी हो सकते हैं। व्यापार में भी आपको लाभ प्राप्त होता है। आप धन कमाने के लिये अनैतिक तरीकों का उपयोग भी कर सकते हैं। जो अन्ततः आपके लिये कष्टप्रद हो सकता है।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से गुरु की

HIREN

ग्रह विचार

मित्रता है। आप स्वाभिमानी, व्यवहारकुशल तथा प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के धनी होते हैं। आपको अपने परिजनों तथा मित्रों से स्नेह व सहायता प्राप्त होगी। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपके सम्बन्ध अपने भाई-बहनों से सामान्य रहते हैं, आपको अपने पुरुषार्थ का अनैतिक कार्यों में दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जो गुरु की स्वराशि है। आपका बौद्धिक स्तर उच्च रहता है। आपको सन्तान सुख कम रहता है।

सिंह लग्न में नवम भाव के गुरु के त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आप अपनी बुद्धि के द्वारा भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलेगी। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखता है, अतः आपको शरीर में प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति होगी। गुरु के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहनों से आपका सम्बन्ध असन्तोषजनक रह सकता है, परन्तु आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। गुरु के अपनी नवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से आपको सन्तान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट उपलब्धि प्राप्त होगी, परन्तु गुरु के अष्टमेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव भी होगा।

शुक्र

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः सप्तम शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ तृतीयेश तथा दशमेश शुक्र सप्तम स्थान में आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह शुक्र आपको सम्पन्न, उदार तथा परोपकारी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहती है तथा आप उनमें लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित रहते हैं। अपने परिजनों से भी आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य बाल्यावस्था में कमजोर तथा बाद में सामान्य रहता है। आपको वात-विकार तथा कफ सम्बन्धी बीमारियाँ होने का भय रहता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान चिकित्सा, रसायन, संगीत, कला, विधि, इतिहास, पुरातत्त्व आदि विषयों में रहता है। गायन-वादन, नाटक, सिनेमा तथा पर्यटन आदि में आपकी रुचि रहती है। अध्ययन काल में स्वास्थ्य आदि कारणों से आपको कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आ सकती हैं। आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होते हैं। अपने भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहता है। आपकी पत्नी मध्यम कद, गेहुँए वर्ण तथा गम्भीर स्वभाव की स्त्री

HIREN

ग्रह विचार

होती है। आपके साथ उसके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको उसके साथ आपसी सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई हो सकती है। आप में किसी प्रकार का चारित्रिक दोष भी हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, पुरातत्ववेत्ता, संगीतकार, वकील, चिकित्सक, रसायनज्ञ, निर्देशक आदि बन सकते हैं। व्यापार में आपको लाभ प्राप्त होता है। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से शुक्र की शत्रुता है। आप लम्बे कद, गेहुँए रंग तथा कृष शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। अपने मधुर स्वभाव से आप अपरिचितों को भी मित्र बना लेते हैं।

सिंह लग्न में सप्तम भाव के शुक्र के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित होने से आप स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपको भाई-बहिन एवं पिता का सुख भी मिलेगा। आप गृहस्थ जीवन के कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करेंगे तथा यशस्वी बनेंगे। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में प्रथम भाव को देखता है, अतः आपको शारीरिक शक्ति, प्रभाव, हिम्मत, पुरुषार्थ एवं मनोबल की प्राप्ति होगी। आप हुकुमत करने वाले, न्यायवान, हिम्मतवान एवं बहादुर व्यक्ति होंगे।

शनि

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में कुम्भ राशि में स्थित है, जो शनि की स्वराशि है। सामान्यतः सप्तमस्थ शनि मिश्रित फल देता है। यहाँ षष्ठेश तथा सप्तमेश शनि सप्तम स्थान में आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। यह शनि आपको दीर्घायु, सम्पन्न तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहेगा। आप शीघ्र ही क्रोधित भी हो जाते हैं किन्तु क्रोध उतरने पर अपने व्यवहार पर आपको पश्चाताप भी होता है। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वात रोग, बवासीर तथा सांसर्गिक रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान, गणित, साहित्य, रसायन, विधि, पुरातत्व, दर्शन आदि विषयों में रहता है। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में आपकी रुचि होती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। शत्रु आपको पीड़ित करने के प्रयत्न कर सकते हैं किन्तु आप उनके प्रयासों को विफल कर देंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा। आपकी पत्नी, लम्बे कद, गेहुँए या कुछ श्याम वर्ण, गोल चेहरे तथा दुबले शारीरिक गठन वाली स्त्री होती है। उसका स्वभाव क्रोधी हो सकता है। आपके साथ उसके यदा-कदा वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप गणितज्ञ, पुरातत्ववेत्ता, रसायनशास्त्री, प्राध्यापक, सम्पादक आदि बन सकते हैं किन्तु सर्वाधिक सफलता आपको न्यायिक क्षेत्र (मजिस्ट्रेट, वकील

[The text in this section is extremely faint and illegible, appearing as a series of light grey lines across the page.]

HIREN

ग्रह विचार

आदि) में मिलती है। धन के साथ आपको यश भी प्राप्त होता है। व्यापार में भी लाभ प्राप्त होगा। इस शनि की तृतीय पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जो शनि की नीच राशि है। आपकी धर्म में आस्था कम रहेगी। आपके भाग्योदय में विलम्ब हो सकता है। यह शनि अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से लग्न स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आप लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा स्वभाव तेज रहेगा। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से शनि की शत्रुता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। आपको भूमि, भवन, वाहनादि सुख-सुविधायें भी प्राप्त हो सकती हैं।

सिंह लग्न में सप्तम भाव के शनि के केन्द्र, स्त्री एवं व्यवसाय के भवन में अपनी स्वराशि कुम्भ पर स्थित होने से आपको स्त्री-पक्ष से कुछ परेशानी रह सकती है तथा व्यवसाय में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु-पक्ष में आपका प्रभाव रहेगा। यहाँ से शनि अपनी तीसरी नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य एवं धर्म की कुछ हानि हो सकती है तथा यश में भी कमी आती है। शनि के अपनी सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से आपके शारीरिक सौन्दर्य एवं शान्ति का ह्रास हो सकता है। शनि के अपनी दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से आपको माता, भूमि एवं भवन आदि के सुख में भी कमी बनी रहेगी।

राहु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में, वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु की मित्रता है। सामान्यतः दशमस्थ राहु अच्छे फल देता है, यहाँ दशम स्थान में वृष राशिस्थ राहु आपको शुभ फल देगा। यह राहु आपको अधिकार सम्पन्न, विद्वान, धैर्यवान, कलारसिक, स्नेहशील, परोपकारी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। आपकी विद्वता से समाज में आपका सम्मान रहेगा। आपको आकस्मिक संकटों से जूझना पड़ सकता है। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। यदा कदा कफ सम्बन्धी रोगों से कष्ट रह सकता है। पशुओं तथा वाहनों से आपको सावधानी रखनी चाहिए।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, कला, विधि, रसायन, चिकित्सा, भाषा आदि विषयों में रहेगा। काव्य, संगीत आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी शौक रहेगा। व्यवसाय की उन्नति अथवा पर्यटन के लिये आप विदेश यात्रा भी कर सकते हैं। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज पक्ष की अनुकूलता से लाभ सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वकील, न्यायाधीश, कलाकार,

॥ १ ॥

॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥

॥ १९ ॥

॥ २० ॥

॥ २१ ॥

॥ २२ ॥

॥ २३ ॥

॥ २४ ॥

॥ २५ ॥

॥ २६ ॥

॥ २७ ॥

॥ २८ ॥

॥ २९ ॥

॥ ३० ॥

॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

॥ ३३ ॥

॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥

॥ ३६ ॥

॥ ३७ ॥

॥ ३८ ॥

॥ ३९ ॥

॥ ४० ॥

॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥

॥ ४३ ॥

॥ ४४ ॥

॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥

॥ ४७ ॥

॥ ४८ ॥

॥ ४९ ॥

॥ ५० ॥

॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥

॥ ५३ ॥

॥ ५४ ॥

॥ ५५ ॥

॥ ५६ ॥

॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥

॥ ५९ ॥

॥ ६० ॥

॥ ६१ ॥

॥ ६२ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६४ ॥

॥ ६५ ॥

॥ ६६ ॥

॥ ६७ ॥

॥ ६८ ॥

॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥

॥ ७१ ॥

॥ ७२ ॥

॥ ७३ ॥

॥ ७४ ॥

॥ ७५ ॥

॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

॥ ७८ ॥

॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥

॥ ८१ ॥

॥ ८२ ॥

॥ ८३ ॥

॥ ८४ ॥

॥ ८५ ॥

॥ ८६ ॥

॥ ८७ ॥

॥ ८८ ॥

॥ ८९ ॥

॥ ९० ॥

॥ ९१ ॥

॥ ९२ ॥

॥ ९३ ॥

॥ ९४ ॥

॥ ९५ ॥

॥ ९६ ॥

॥ ९७ ॥

॥ ९८ ॥

॥ ९९ ॥

॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥

॥ १०२ ॥

॥ १०३ ॥

॥ १०४ ॥

॥ १०५ ॥

॥ १०६ ॥

॥ १०७ ॥

॥ १०८ ॥

॥ १०९ ॥

॥ ११० ॥

॥ १११ ॥

॥ ११२ ॥

॥ ११३ ॥

॥ ११४ ॥

॥ ११५ ॥

॥ ११६ ॥

॥ ११७ ॥

॥ ११८ ॥

॥ ११९ ॥

॥ १२० ॥

॥ १२१ ॥

॥ १२२ ॥

॥ १२३ ॥

॥ १२४ ॥

॥ १२५ ॥

॥ १२६ ॥

॥ १२७ ॥

॥ १२८ ॥

॥ १२९ ॥

॥ १३० ॥

॥ १३१ ॥

॥ १३२ ॥

॥ १३३ ॥

॥ १३४ ॥

॥ १३५ ॥

॥ १३६ ॥

॥ १३७ ॥

॥ १३८ ॥

॥ १३९ ॥

॥ १४० ॥

॥ १४१ ॥

॥ १४२ ॥

॥ १४३ ॥

॥ १४४ ॥

॥ १४५ ॥

॥ १४६ ॥

॥ १४७ ॥

॥ १४८ ॥

॥ १४९ ॥

॥ १५० ॥

॥ १५१ ॥

॥ १५२ ॥

॥ १५३ ॥

॥ १५४ ॥

॥ १५५ ॥

॥ १५६ ॥

॥ १५७ ॥

॥ १५८ ॥

॥ १५९ ॥

॥ १६० ॥

॥ १६१ ॥

॥ १६२ ॥

॥ १६३ ॥

॥ १६४ ॥

॥ १६५ ॥

॥ १६६ ॥

॥ १६७ ॥

॥ १६८ ॥

॥ १६९ ॥

॥ १७० ॥

॥ १७१ ॥

॥ १७२ ॥

॥ १७३ ॥

॥ १७४ ॥

॥ १७५ ॥

॥ १७६ ॥

॥ १७७ ॥

॥ १७८ ॥

॥ १७९ ॥

॥ १८० ॥

॥ १८१ ॥

॥ १८२ ॥

॥ १८३ ॥

॥ १८४ ॥

॥ १८५ ॥

॥ १८६ ॥

॥ १८७ ॥

॥ १८८ ॥

॥ १८९ ॥

॥ १९० ॥

॥ १९१ ॥

॥ १९२ ॥

॥ १९३ ॥

॥ १९४ ॥

॥ १९५ ॥

॥ १९६ ॥

॥ १९७ ॥

॥ १९८ ॥

॥ १९९ ॥

॥ २०० ॥

HIREN

ग्रह विचार

चिकित्सक, औषधी निर्माता, राज्य कर्मचारी आदि बन सकते हैं।

इस राहु की पंचम पूर्ण दृष्टि, द्वितीय स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जो राहु की स्वराशि है। आपको अर्थ संचय में सफलता मिलेगी। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। यह राहु अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से, चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है। इस राहु की नवम पूर्ण दृष्टि, षष्ठम स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। शत्रुओं के कुचक्रों को ध्वस्त करने में आपको सफलता मिलेगी।

सिंह लग्न में दशम भाव के राहु के केन्द्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित होने से आपको अपने पिता के सुख में कमी मिल सकती है तथा आपकी व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। आपको राज्य के द्वारा भी परेशानी का योग प्राप्त होता है, परन्तु राहु के मित्र राशिस्थ होने के कारण आप अनेक कठिनाइयों के बाद गुप्त-युक्तियों के बल पर व्यवसाय में थोड़ी बहुत उन्नति भी कर लेंगे।

केतु

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। सामान्यतः चतुर्थ स्थान में केतु अशुभ फल प्रदान करता है, यहाँ चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशि का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह केतु आपको कठोर, व्यग्र, सम्पन्न, चिन्ताग्रस्त तथा प्रवासी व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहेगा तथा आप शीघ्र ही क्रोधित हो जाते हैं। आपकी प्रवृत्ति कुछ हद तक हठी अथवा दुराग्रही होती है। मित्रों का सहयोग कम मिल पाता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका रुझान नहीं रहता है। आपके कार्य पूर्ण होने में कोई न कोई बाधा लगी रहती है। कुसंगति तथा व्यसनों से हानि पहुँच सकती है। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। वात पित्त रोग, गुदा रोग आदि से कष्ट हो सकता है। अपघात तथा विषप्रयोग का भय भी रहेगा।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, विधि, इलेक्ट्रॉनिक्स, भाषा, दर्शन, रसायन आदि विषयों में रहेगा। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विषयों में आपकी रुचि रह सकती है। पर्यटन का शौक होगा किन्तु यात्रा में कष्ट हो सकता है। आप प्रवास भी कर सकते हैं। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप गणितज्ञ, वकील, तकनीकी विशेषज्ञ, भाषाविद्,

HIREN

ग्रह विचार

प्राध्यापक, लेखक, रेल्वे कर्मचारी आदि बन सकते हैं। व्यापार में लाभ सामान्य हो सकता है। राजनीति के क्षेत्र में कठोर परीश्रम से सफलता मिल सकती है। व्ययशील प्रवृत्ति होने के बावजूद शनैः शनैः अर्थसंचय में आप सफल रहेंगे।

यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से अष्टम् स्थान में मीन राशि को देखता है, जो केतु की स्व राशि है। आप दीर्घायु व्यक्ति होंगे। आपको विवाह, वसीयत आदि से आकस्मिक धनलाभ हो सकता है। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि दशम् स्थान में वृष राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राज्य पक्ष से किसी विशेष लाभ की सम्भावना नहीं है। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से केतु की शत्रुता है।

आपका व्ययभार बढ़ेगा। आयात-निर्यात के व्यापार से लाभ कम हो सकता है। धन प्राप्त करने के लिए अनैतिक साधनों का सहारा लेने पर आपको हानि हो सकती है।

सिंह लग्न में चतुर्थ भाव के केतु के केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से आपको माता के सुख में कमी मिल सकती है तथा अपनी मातृ-भूमि से अलग हट कर परदेश में जाकर रहने का योग भी बनता है। आपके घरेलू-सुख में भी अशान्ति बनी रह सकती है। आप कठिन परिश्रम एवं गुप्त-युक्तियों के बल पर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु अधिकतर परेशान ही बने रहेंगे।

HIREN

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियों एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— माणिक्य (रूबी) उपरत्न:— सौगन्धिक (स्पाईनल रूबी), मैसूरी (स्टार रूबी)
माणक तीन रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में रविवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद सूर्य के तांत्रिक मन्त्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय पूर्व धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, आयु, स्वास्थ्य आदि में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्य रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता (सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक (रेड एगेट)
मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मन्त्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या—विवेक तथा व्यापार में वृद्धि एवं नौकरी में उन्नति कारक रहेगा।

कारक रत्न:— पुखराज (येलो सफायर) उपरत्न:— सुनैला (सिटरीन), पीला हकीक (येलो एगेट)
पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मन्त्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, व्यापार व्यवसाय में प्रगति तथा रोग एवं शत्रु नाशक रहेगा।

JUHI

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ॥
॥ विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं न सिद्ध्यति ॥

वेदांग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र चक्षु के रूप में मान्य है। ग्रहों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता के ज्ञान हेतु ज्योतिषशास्त्र ही एकमात्र आधार है। वैदिक युग से मानव मात्र के कल्याणार्थ ग्रहों की पूजा की जाती है। वैदिक जनों की ग्रहों एवं नक्षत्रों की गतिविधियों के बारे में जिज्ञासा ने ज्योतिषशास्त्र को जन्म दिया।

जन्म विवरण

जन्म दिनांक	: 12/02/2000	विक्रमी संवत्	: 2056
जन्म दिन	: शनिवार	शक संवत्	: 1921
जन्म समय	: 07:53:00 घण्टे	ऋतु	: शिशिर
इष्टकाल	: 02:11:38 घटी	मास	: माघ
जन्म स्थान	: BHOPAL	पक्ष	: शुक्ल
देश	: INDIA	सूर्योदय कालीन तिथि	: सप्तमी
मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व	तिथि समाप्ति काल	: 17:42:29 घण्टे
अक्षांश	: 23:16:00 उत्तर		: 26:45:20 घटी
रेखांश	: 77:24:00 पूर्व	जन्म तिथि	: सप्तमी
स्थानिक समय संस्कार	: -00:20:24 घण्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	: भरणी
युद्ध/ग्रीष्म समय संस्कार	: 00:00:00 घण्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	: 23:38:31 घण्टे
स्थानिक समय	: 07:32:36 घण्टे		: 41:35:25 घटी
साम्पातिक काल	: 16:58:27 घण्टे	जन्म नक्षत्र	: भरणी
वैलान्तर	: 00:14:14 घण्टे	सूर्योदय कालीन योग	: शुक्ल
सूर्योदय	: 07:00:21 घण्टे	योग समाप्ति काल	: 13:44:20 घण्टे
सूर्यास्त	: 18:08:55 घण्टे		: 16:49:58 घटी
दिनमान	: 11:08:34 घण्टे	जन्म योग	: शुक्ल
रात्रिमान	: 12:51:26 घण्टे	सूर्योदय कालीन करण	: विष्टि
सूर्य की स्थिति (अयन)	: उत्तरायण	करण समाप्ति काल	: 17:42:28 घण्टे
सूर्य की स्थिति (गोल)	: दक्षिण		: 26:45:18 घण्टे
अयनांश	: 23:51:20	जन्म करण	: वणिज



Astrologer

08818881888

www.eeshay.com

JUHI

॥ तिथेश्च श्रियमाप्नोति वारादायुष्यवर्द्धनम् नक्षत्राद्धरते पापं ॥

॥ योगाद्रोगनिवारणम् करणात्कार्यसिद्धिश्च पंचांगफलमुच्यते ॥

तिथि के उच्चारण से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वार के स्मरण से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र का नाम लेने से पाप की निवृत्ति होती है। योग के उच्चारण से रोग का निवारण होकर शरीर स्वस्थ रहता है और करण के उच्चारण से सभी शुभ कार्य सफल होते हैं।

घात चक्र			अवहकड़ा चक्र		
मास	:	कार्तिक	लग्न-लग्नाधिपति	:	कुम्भ-शनि
दिनाँक	:	1,6,11	राशि-राशि स्वामी	:	मेष-मंगल
दिन	:	रविवार	नक्षत्र-चरण	:	भरणी-2
नक्षत्र	:	मघा	नक्षत्र स्वामी	:	शुक्र
योग	:	विष्कम्भ	योग	:	शुक्ल
करण	:	बव	करण	:	वणिज
प्रहर	:	1	गण	:	मनुष्य
वर्ग	:	सिंह	योनि	:	गज
लग्न	:	मेष	नाडि	:	मध्या
सूर्य	:	कर्क	वर्ण	:	क्षत्रिय
चन्द्र	:	मेष	वश्य	:	चतुष्पाद
मंगल	:	सिंह	वर्ग	:	मृग
बुध	:	वृष	युंजा	:	पूर्व
गुरु	:	कन्या	हंसक (तत्व)	:	अग्नि
शुक्र	:	तुला	जन्म नामाक्षर	:	लू
शनि	:	मिथुन	पाया-राशी	:	स्वर्ण
राहु	:	वृश्चिक	पाया-नक्षत्र	:	स्वर्ण
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	:	कुम्भ	भयात	:	18:18:58 घटी
सूर्य के अंश	:	मकर 28:48:55	भभोग	:	57:39:51 घटी
लग्न के अंश	:	कुम्भ 15:44:33	भोग्य दशा काल	:	शुक्र 13 व 7 म 23 दिन

॥ जन्म संपद्धिपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः ॥

॥ मैत्रं चैवातिमैत्रण्व जन्मभात्तारकाः स्मृताः ॥

जन्म, सम्पत्, विपत्, साधक, वध, मित्र और अतिमित्र जन्म नक्षत्र से ये नव तारा होती हैं। अपने नाम नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर नौ का भाग देने से तारा आती है।

तारा चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा
पूर्वाषाढा	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
तारा स्वामी चक्र								
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु



JUHI

॥ एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम् ॥
॥ कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ॥

उत्पत्ति के समय जिन जिन रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव एवं शारीरिक बनावट वैसी ही बन जाती है। संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है।

निरयण ग्रह स्पष्ट एवं ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	चरण	स्वामी	स्थिति	अस्त	वक्री/मार्गी
लग्न	कुम्भ	15:44:33	—	शतभिषा	3	राहु	—	—	—
सूर्य	मकर	28:48:55	01:00:42	धनिष्ठा	2	मंगल	शत्रु स्थान	—	मार्गी
चन्द्र	मेष	17:34:06	13:46:48	भरणी	2	शुक्र	सम स्थान	—	मार्गी
मंगल	मीन	06:11:10	00:45:46	उ.भाद्रपद	1	शनि	मित्र स्थान	—	मार्गी
बुध	कुम्भ	16:29:24	01:18:42	शतभिषा	3	राहु	सम स्थान	—	मार्गी
गुरु	मेष	05:41:45	00:09:25	अश्विनी	2	केतु	मित्र स्थान	—	मार्गी
शुक्र	धनु	28:37:27	01:13:58	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	सम स्थान	—	मार्गी
शनि	मेष	17:18:38	00:03:20	भरणी	2	शुक्र	नीच स्थान	—	मार्गी
राहु	कर्क	09:41:11	00:00:51	पुष्य	2	शनि	मूल त्रिकोण	—	वक्री
केतु	मकर	09:41:11	00:00:51	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	मूल त्रिकोण	—	वक्री
इन्द्र	मकर	23:16:48	00:03:29	श्रवण	4	चन्द्र	—	अस्त	मार्गी
वरुण	मकर	10:53:25	00:02:11	श्रवण	1	चन्द्र	—	—	मार्गी
यम	वृश्चिक	18:44:53	00:01:05	ज्येष्ठा	1	बुध	—	—	मार्गी
दशम भाव	वृश्चिक	21:58:13	—	ज्येष्ठा	2	बुध	—	—	—

चैत्रपक्षीय अयनांश : 23:51:20

लग्न कुण्डली

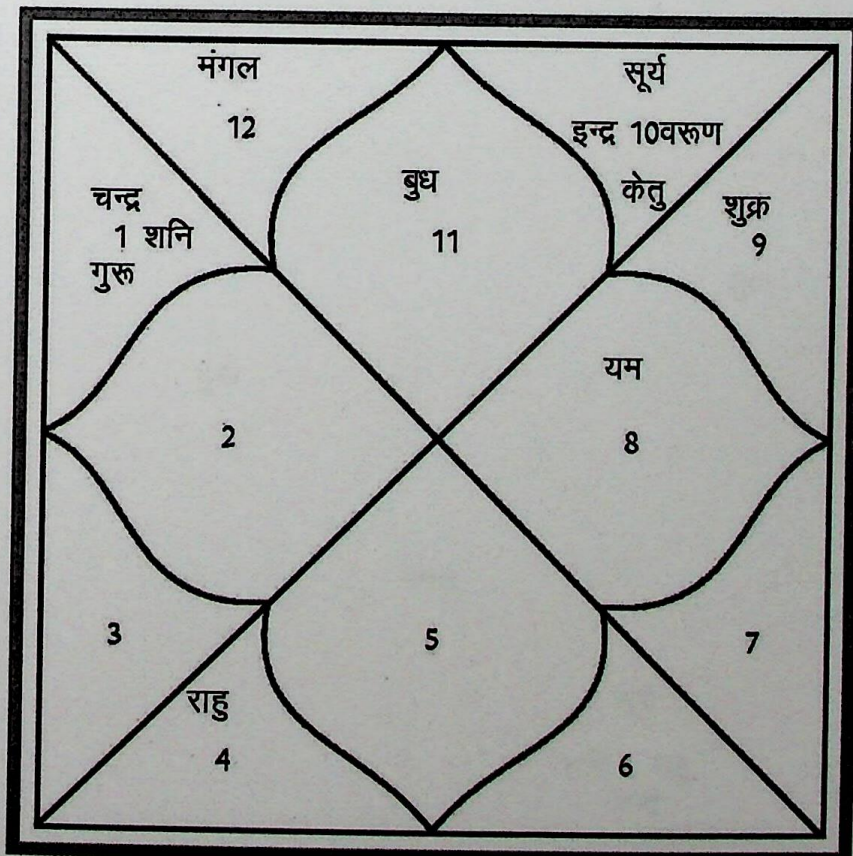
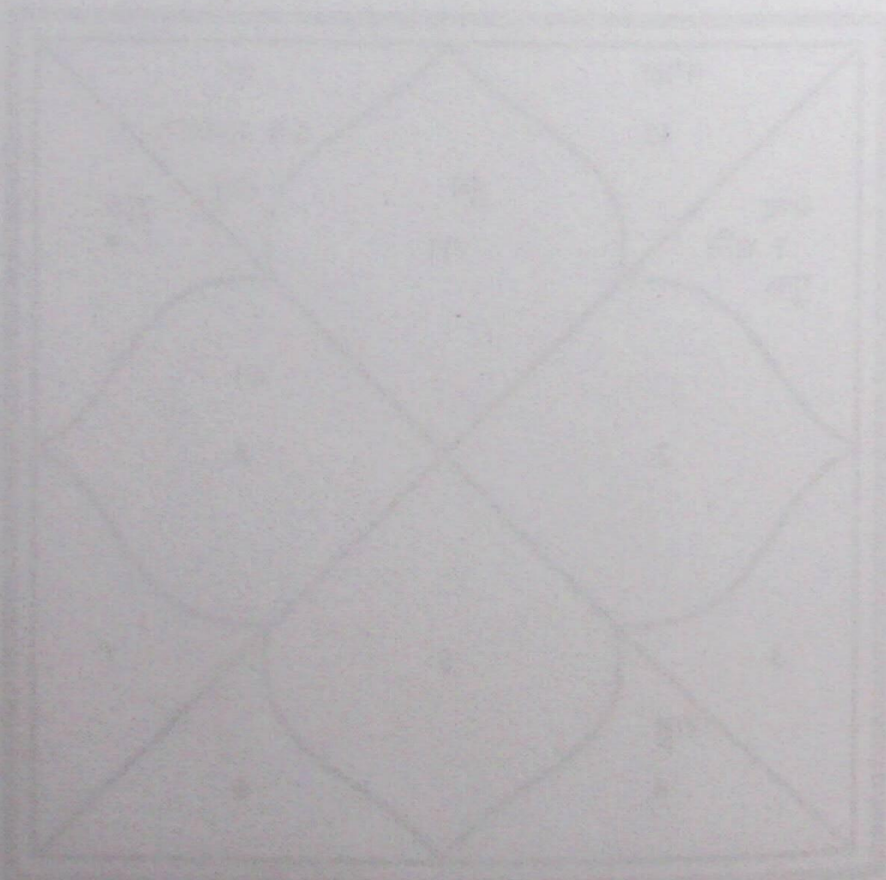


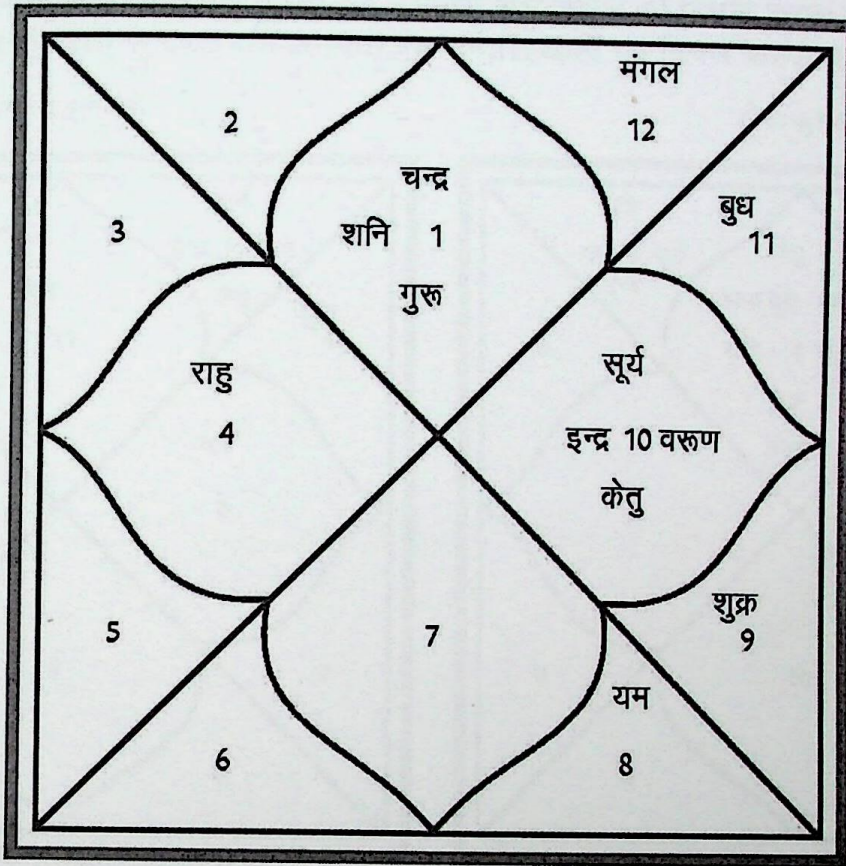


Table with 4 columns and 10 rows. The text is extremely faint and illegible.

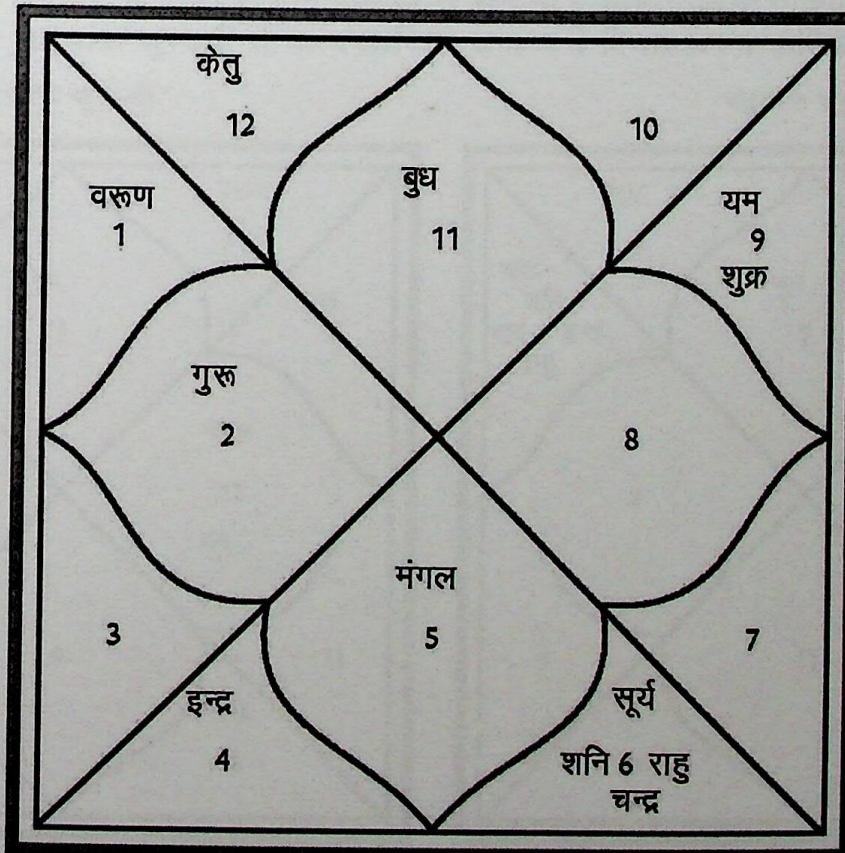


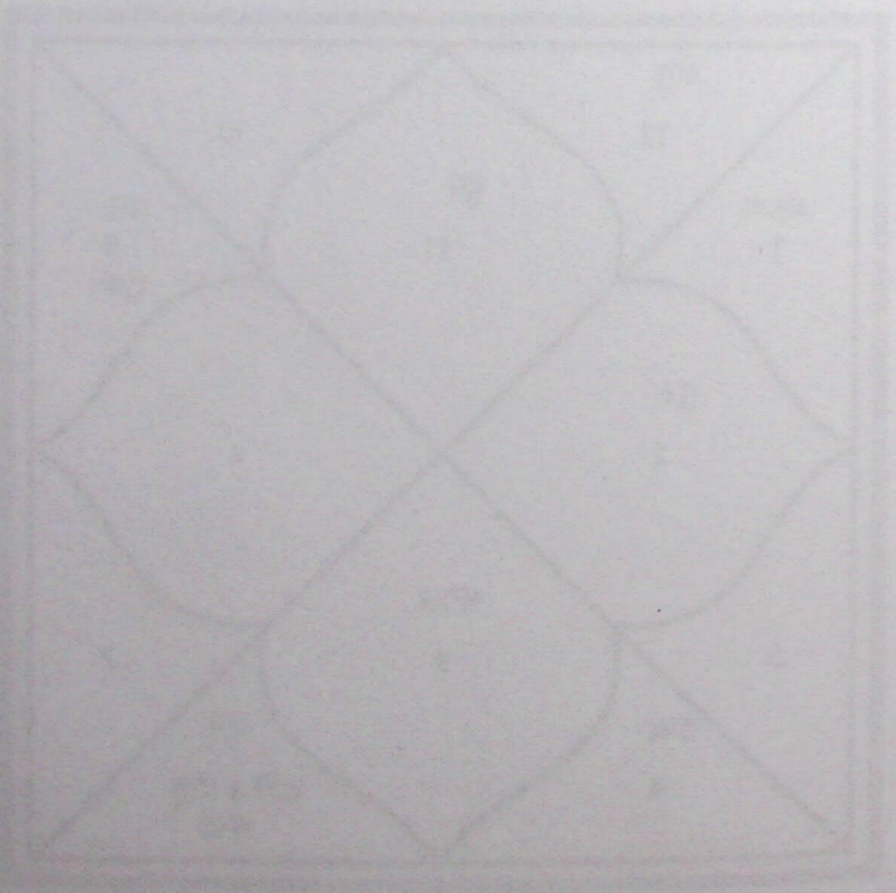
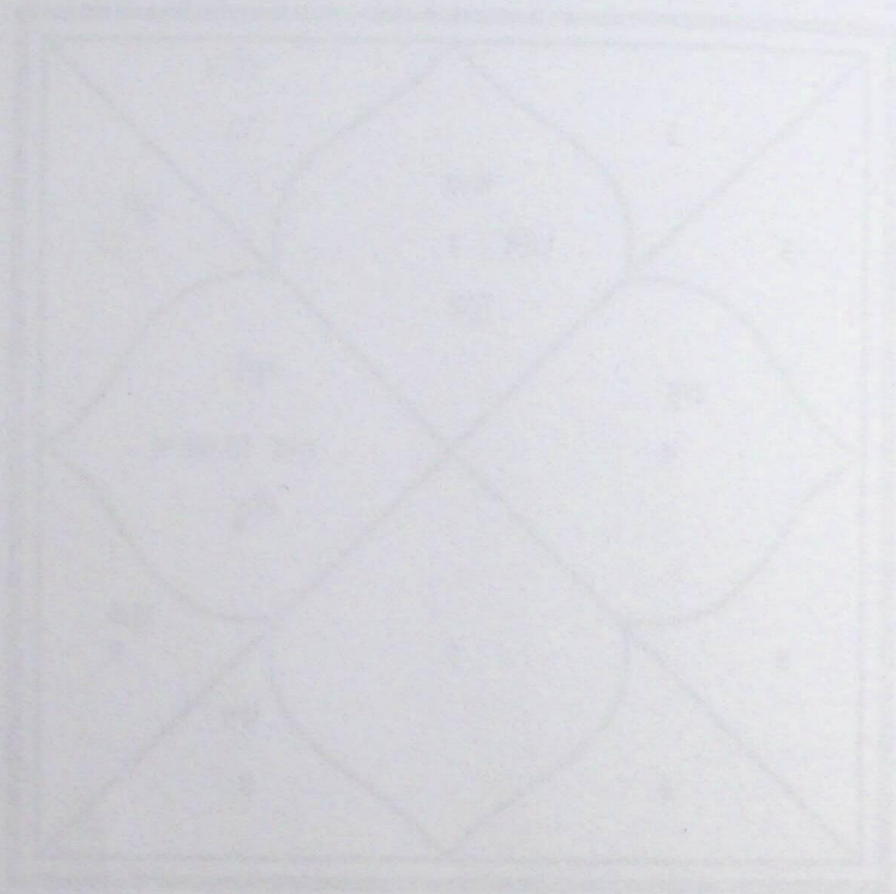
JUHI

चन्द्र कुण्डली



नवमांश कुण्डली



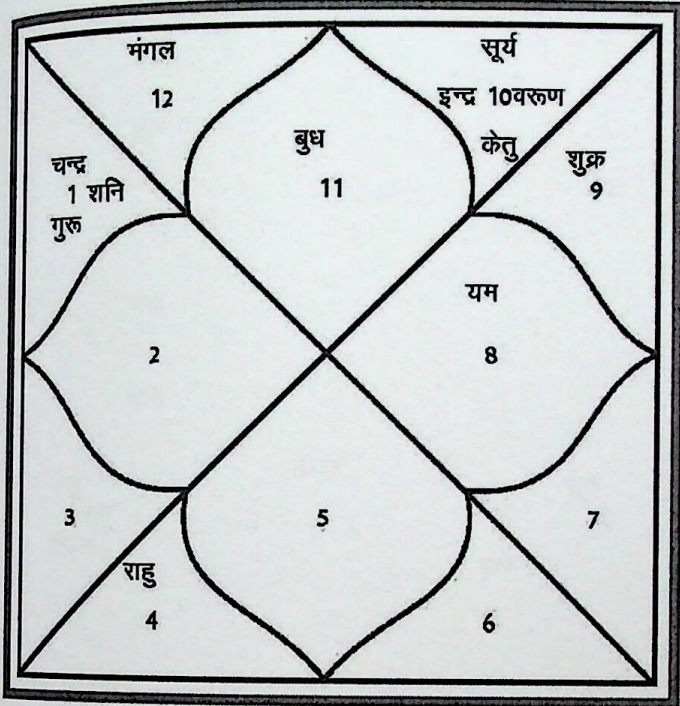


JUHI

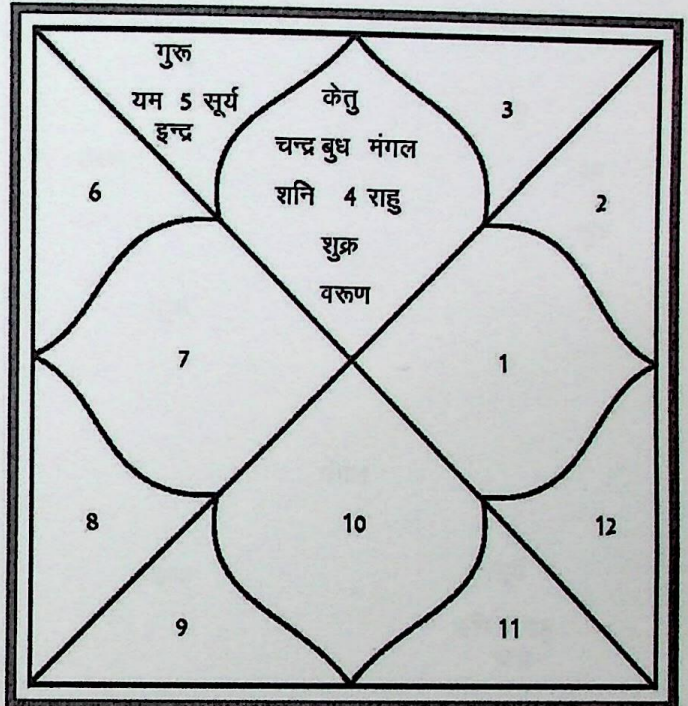
॥ अथ षोडशवर्गेषु चिन्ता लग्नं वदाम्यहम् ॥
॥ लग्नं देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम् ॥

जन्मांग कुण्डली से शरीर व स्वास्थ्य सम्बन्धी शुभ अशुभ का विचार करना चाहिये ।
होरा कुण्डली से द्रव्य, धन-सम्पदा एवं सम्पत्ति आदि का विचार करना चाहिये ।

जन्मांग कुण्डली



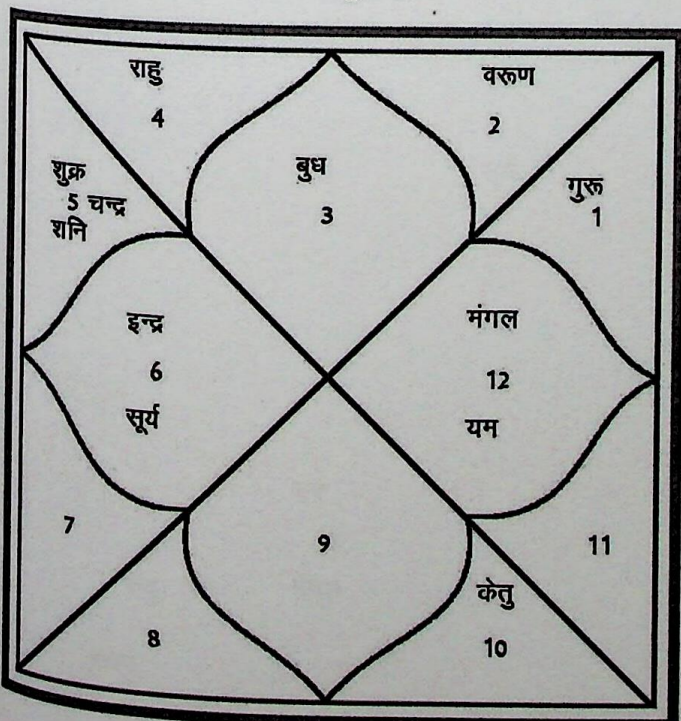
होरा कुण्डली



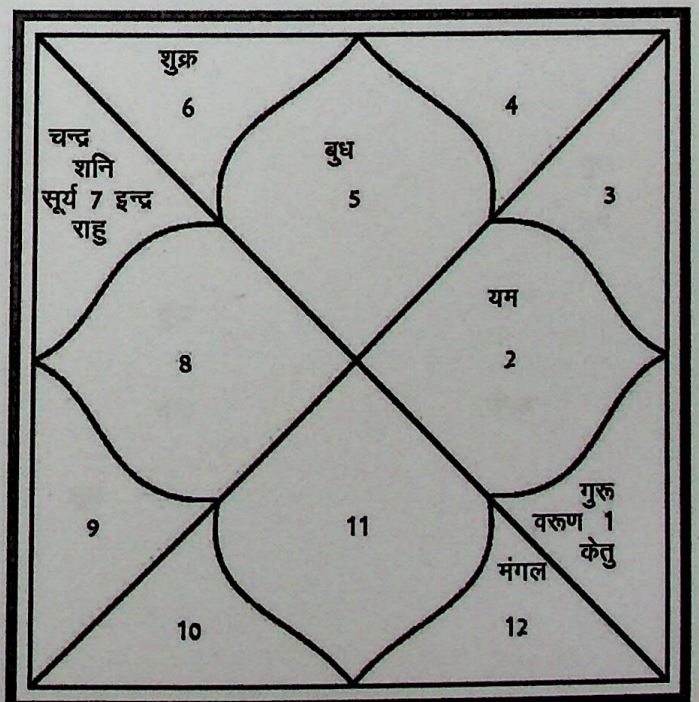
॥ द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं ॥
॥ चतुर्थांशे भाग्यचिन्तनम् ॥

द्रेष्काण कुण्डली से भाई बान्धवों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
चतुर्थांश कुण्डली से भाग्य आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

द्रेष्काण कुण्डली



चतुर्थांश कुण्डली

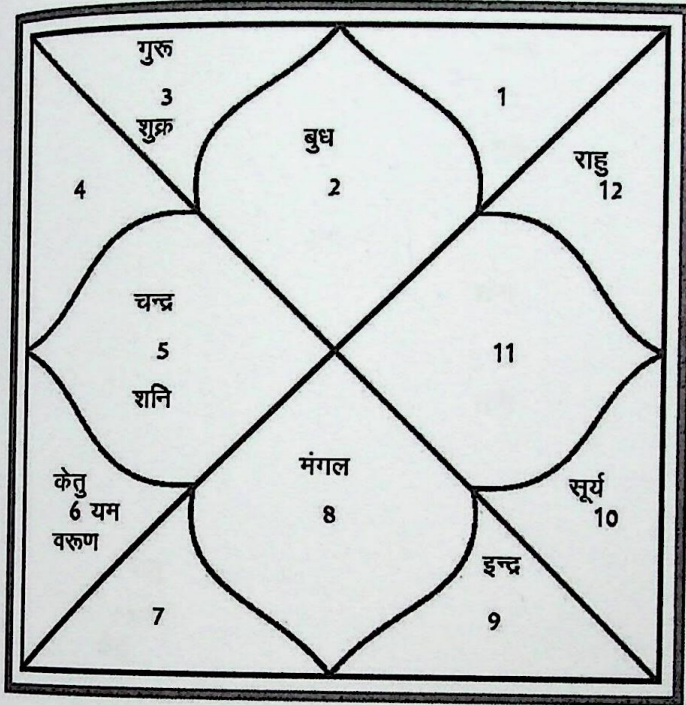


JUHI

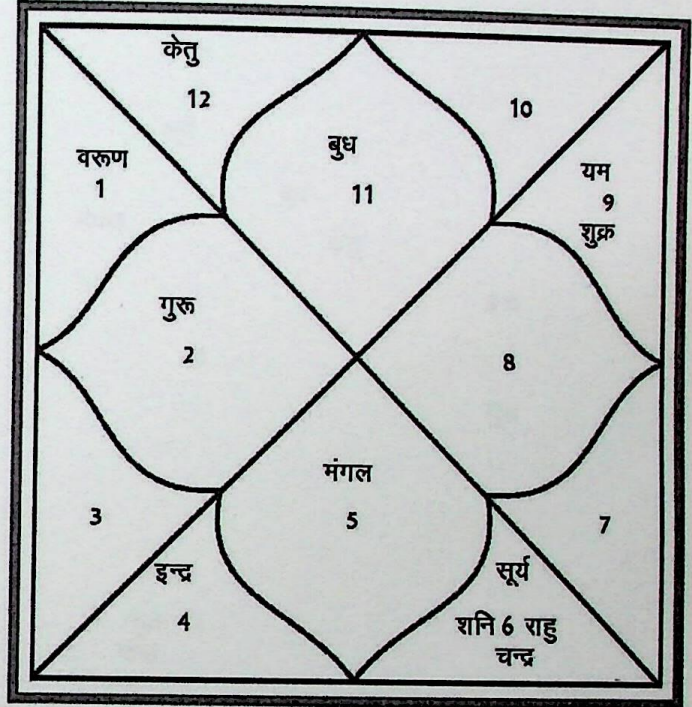
॥ पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके ॥
॥ नवमांशे कलत्रानां ॥

सप्तमांश कुण्डली से पुत्रों एवं पौत्रों के विषय में विचार करना चाहिये ।
नवमांश कुण्डली से पत्नी के विषय में विचार करना चाहिये ।

सप्तमांश कुण्डली



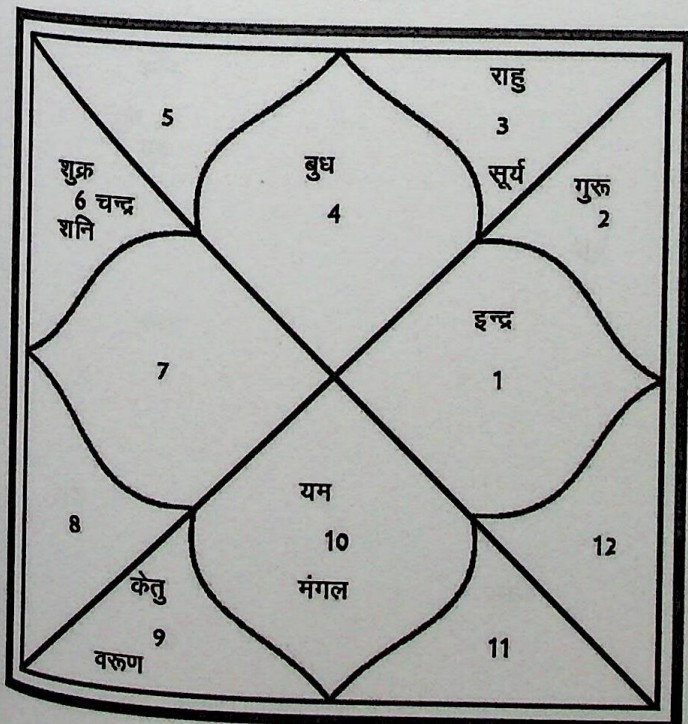
नवमांश कुण्डली



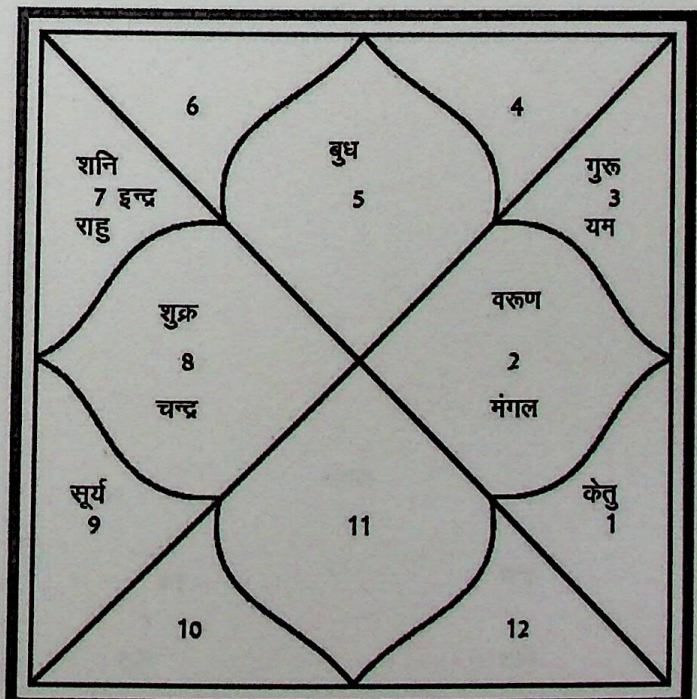
॥ दशमांशे महत्फलम् ॥
॥ द्वादशांशे पित्रोश्चिन्तनं ॥

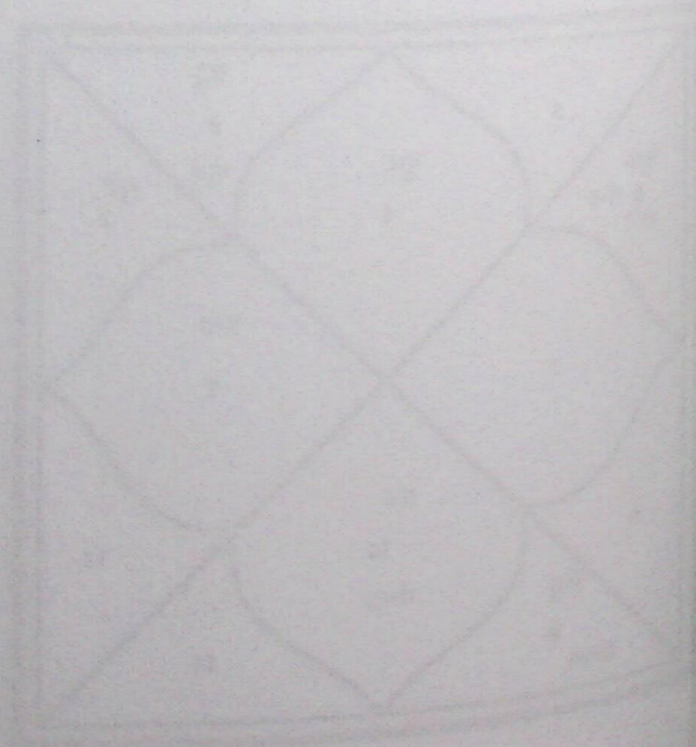
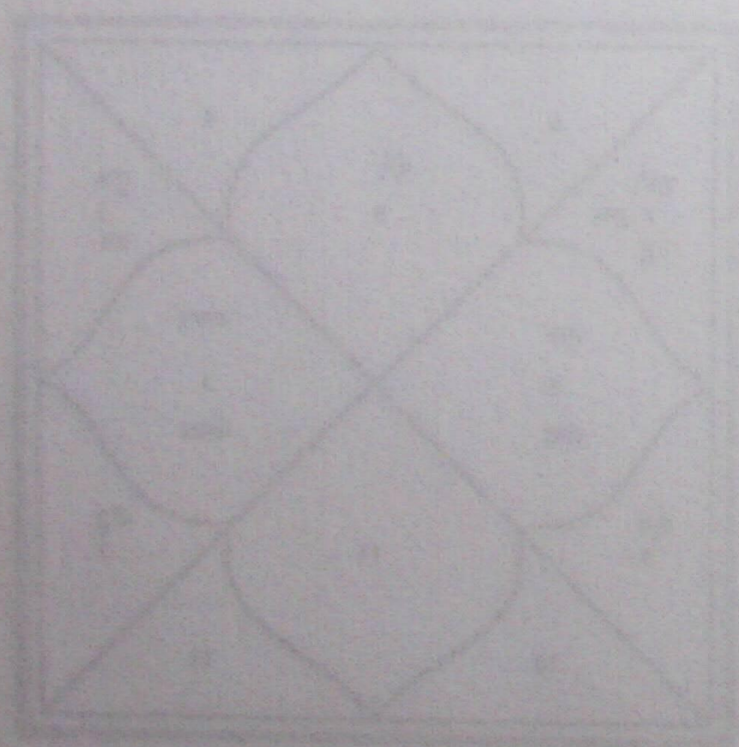
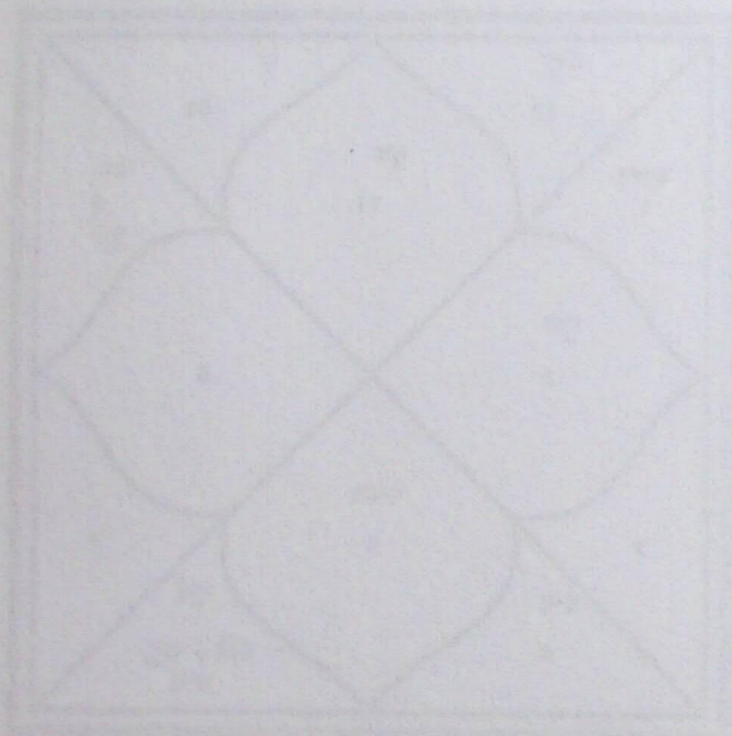
दशमांश कुण्डली से महत्त्वपूर्ण विषयों अर्थात् राज्य सम्बन्धी विषयों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
द्वादशांश कुण्डली से माता पिता के विषय में विचार करना चाहिये ।

दशमांश कुण्डली



द्वादशांश कुण्डली



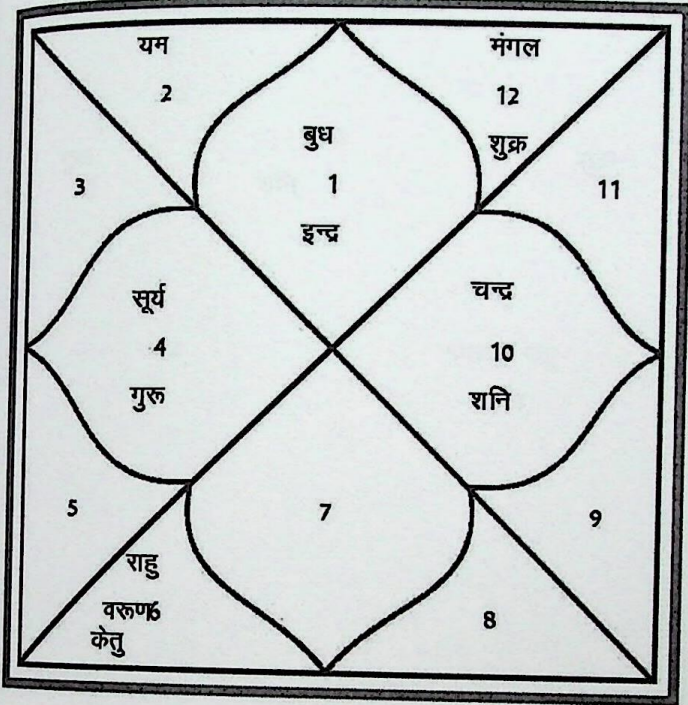


JUHI

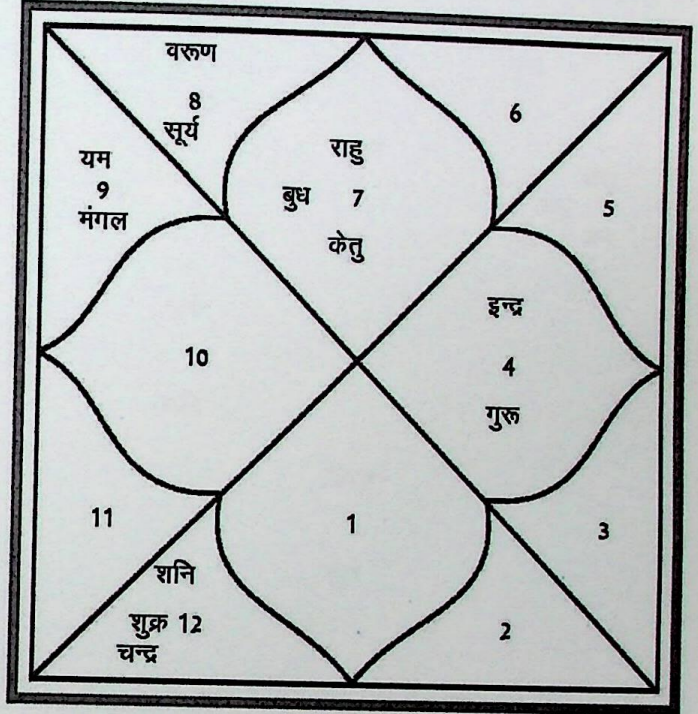
॥ षोडशांशके सुखासुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च ॥
॥ उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके ॥

षोडशांश कुण्डली से वाहन आदि के सुख के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।
विंशांश कुण्डली से उपासना एवं साधना (तप) के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।

षोडशांश कुण्डली



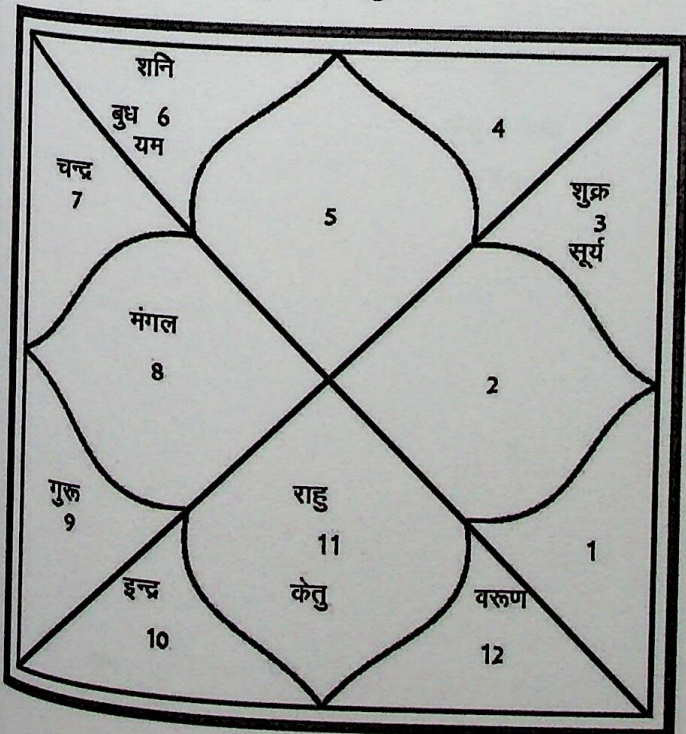
विंशांश कुण्डली



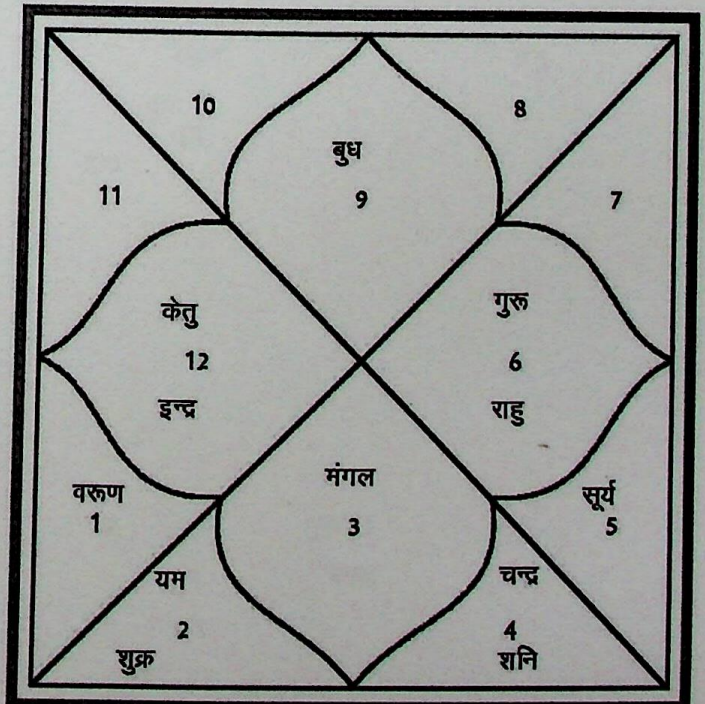
॥ विद्याया वेदचतुर्विंशांशे ॥
॥ सप्तविंशांशे चैव बलाबलम् ॥

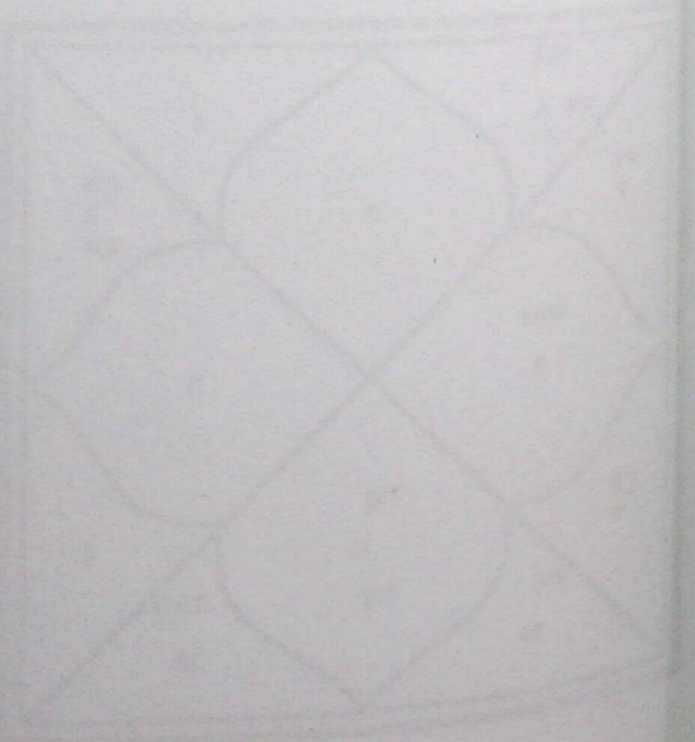
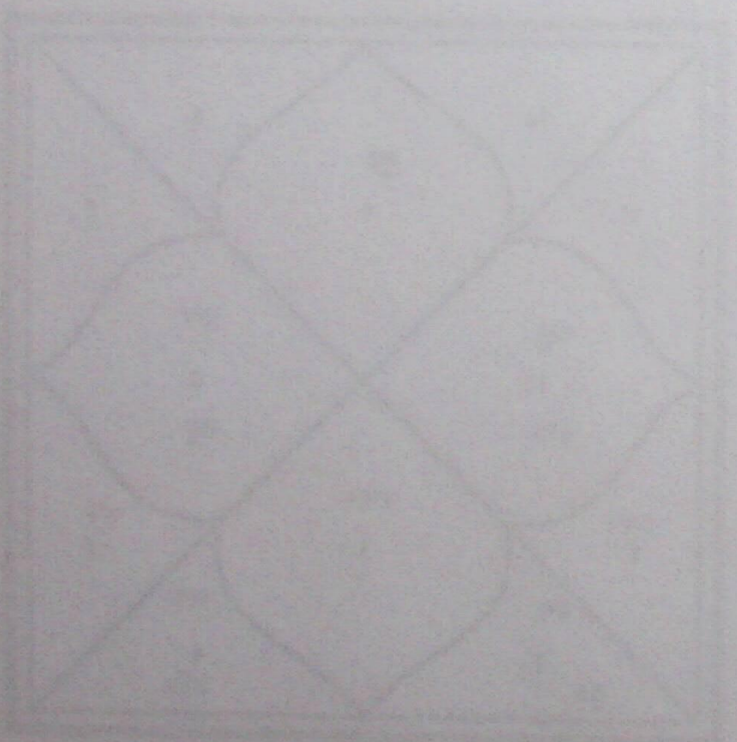
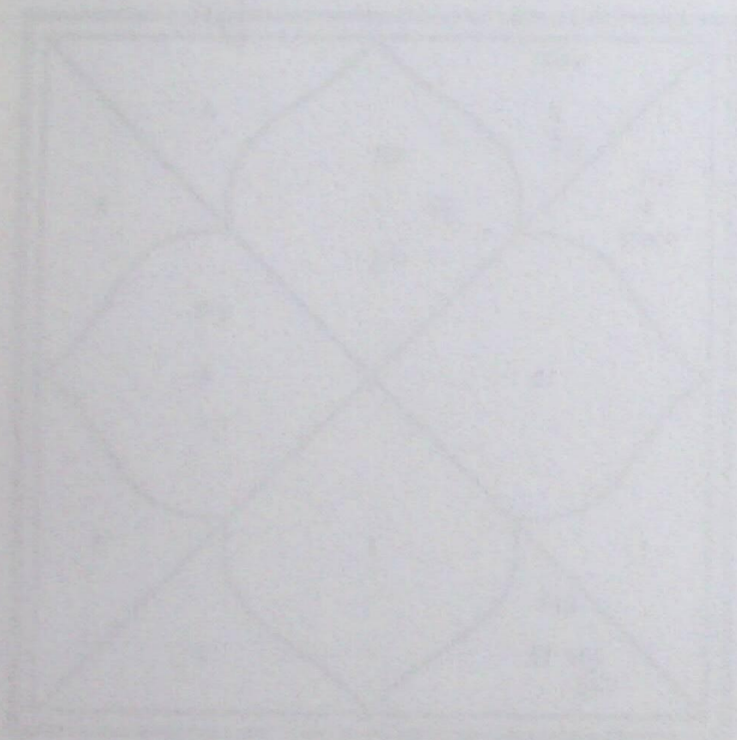
चतुर्विंशांश कुण्डली से विद्या एवं ज्ञान के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।
सप्तविंशांश कुण्डली से बलाबल के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये।

चतुर्विंशांश कुण्डली



सप्तविंशांश कुण्डली





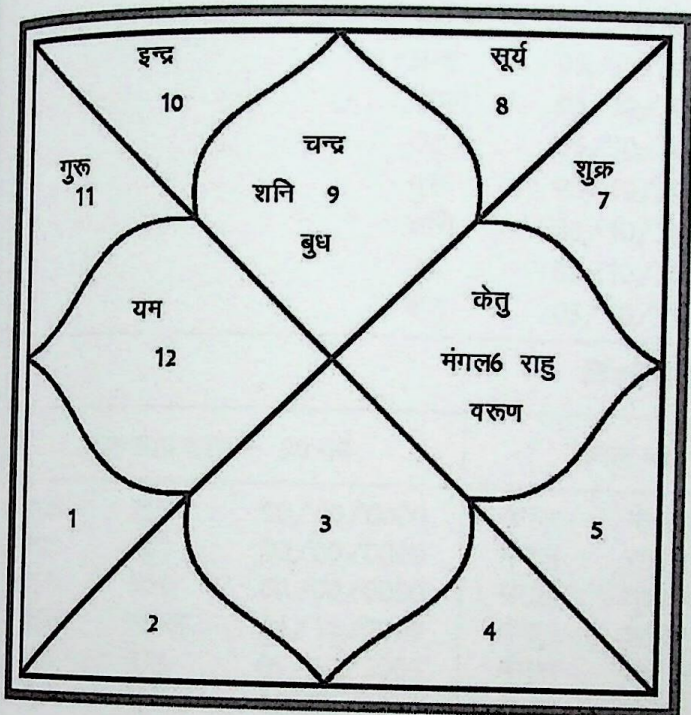
JUHI

॥ त्रिशांशके अरिष्ट फलम् ॥

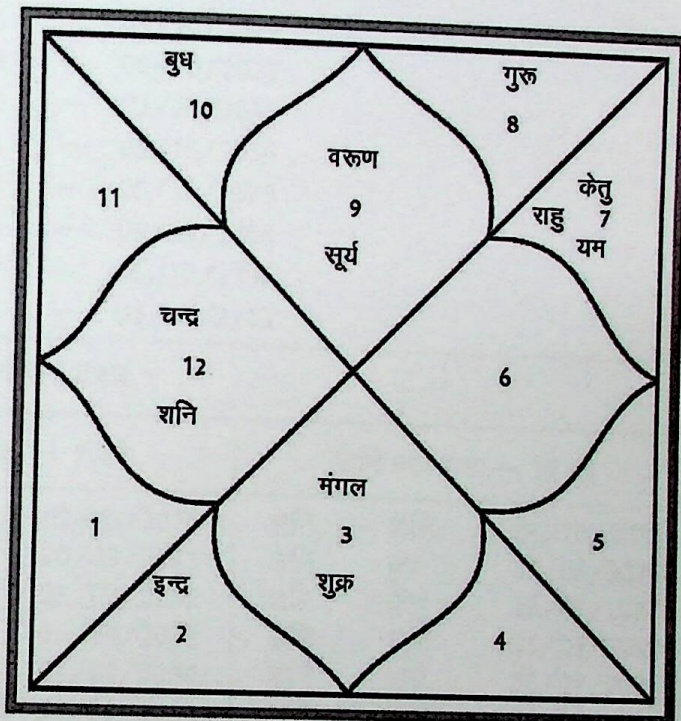
॥ खवेदांशे शुभाशुभम् ॥

त्रिशांश कुण्डली से अरिष्ट एवं दुर्घटना के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।
खवेदांश कुण्डली से शुभाशुभ के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

त्रिशांश कुण्डली



खवेदांश कुण्डली

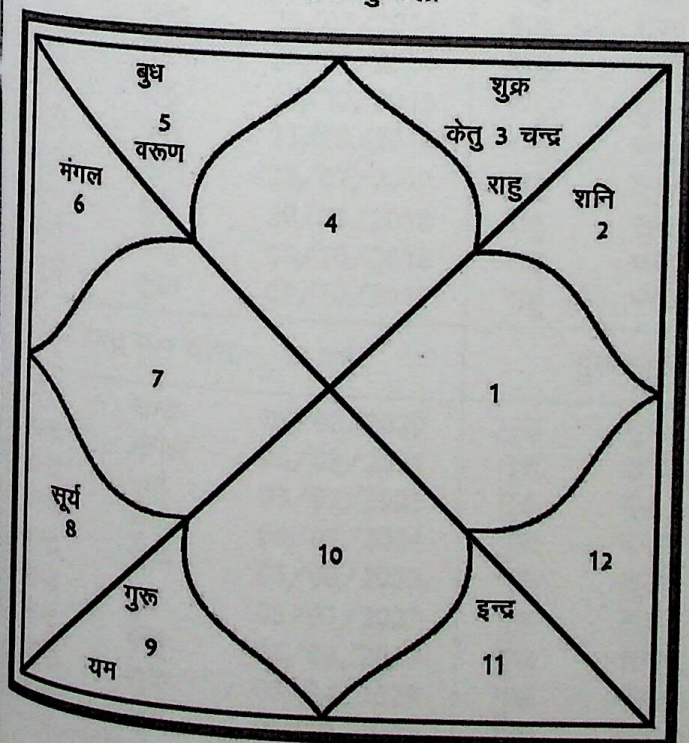


॥ अक्षवेदांशभागे च ॥

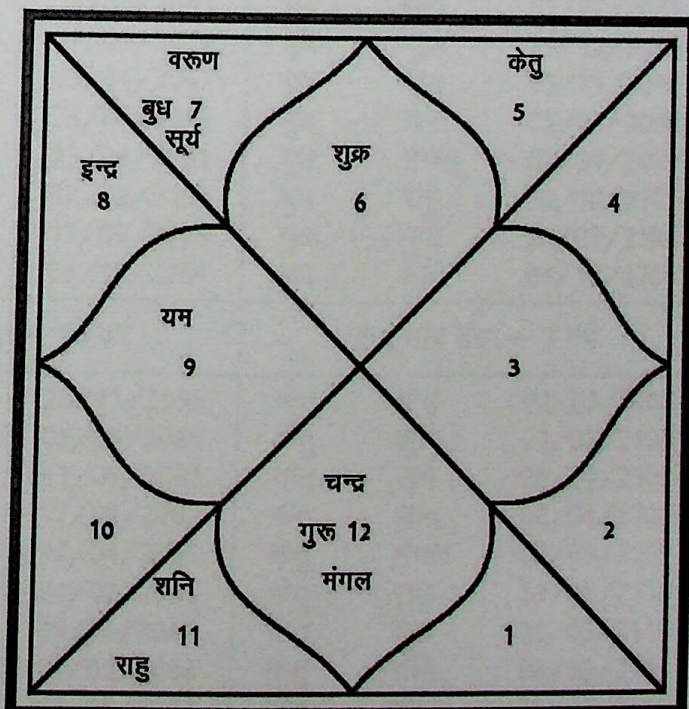
॥ षष्ठ्यंशेऽखिलमीक्षयेत् ॥

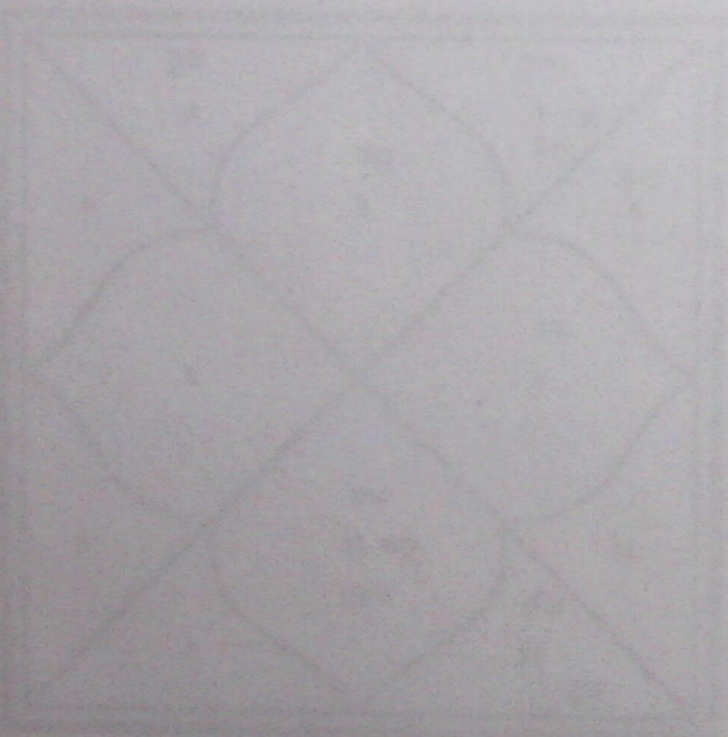
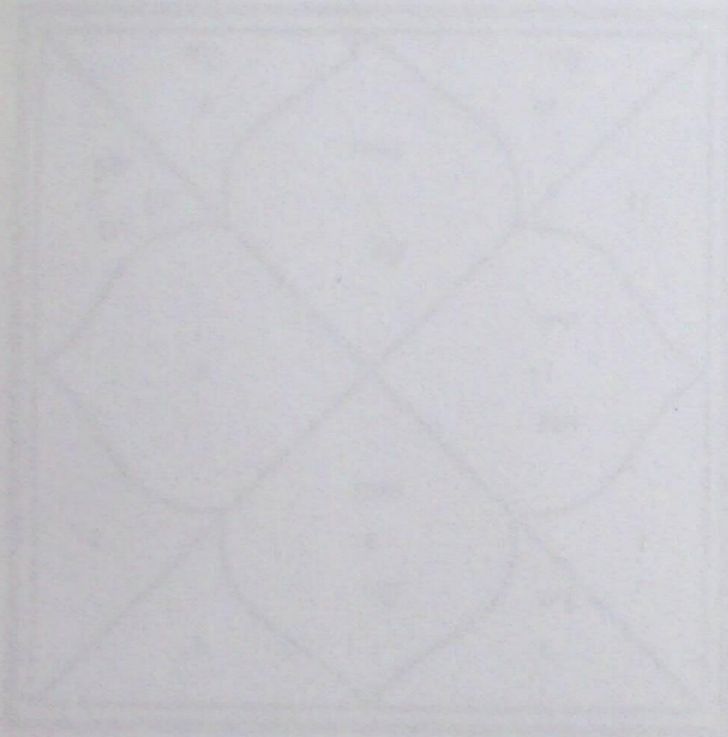
अक्षवेदांश कुण्डली तथा षष्ठ्यंश कुण्डली से सर्वास्थिति अर्थात्
सभी प्रकार की स्थितियों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिये ।

अक्षवेदांश कुण्डली



षष्ठ्यंश कुण्डली





JUHI

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल - शुक्र 13 वर्ष 7 मास 23 दिन

विंशोत्तरी महा दशा

शुक्र	12/02/2000	-	05/10/2013
सूर्य	05/10/2013	-	05/10/2019
चन्द्र	05/10/2019	-	05/10/2029
मंगल	05/10/2029	-	05/10/2036
राहु	05/10/2036	-	05/10/2054
गुरु	05/10/2054	-	05/10/2070
शनि	05/10/2070	-	05/10/2089
बुध	05/10/2089	-	05/10/2106
केतु	05/10/2106	-	05/10/2113

विंशोत्तरी अन्तर दशा

शुक्र महा दशा - 20 वर्ष			मंगल महा दशा - 7 वर्ष			शनि महा दशा - 19 वर्ष		
शुक्र	शुक्र	00/00/0000	मंगल	मंगल	02/03/2030	शनि	शनि	08/10/2073
शुक्र	सूर्य	00/00/0000	मंगल	राहु	20/03/2031	शनि	बुध	17/06/2076
शुक्र	चन्द्र	00/00/0000	मंगल	गुरु	25/02/2032	शनि	केतु	26/07/2077
शुक्र	मंगल	05/12/2000	मंगल	शनि	05/04/2033	शनि	शुक्र	26/09/2080
शुक्र	राहु	05/12/2003	मंगल	बुध	02/04/2034	शनि	सूर्य	08/09/2081
शुक्र	गुरु	05/08/2006	मंगल	केतु	29/08/2034	शनि	चन्द्र	08/04/2083
शुक्र	शनि	05/10/2009	मंगल	शुक्र	29/10/2035	शनि	मंगल	17/05/2084
शुक्र	बुध	05/08/2012	मंगल	सूर्य	05/03/2036	शनि	राहु	23/03/2087
शुक्र	केतु	05/10/2013	मंगल	चन्द्र	05/10/2036	शनि	गुरु	05/10/2089
सूर्य महा दशा - 6 वर्ष			राहु महा दशा - 18 वर्ष			बुध महा दशा - 17 वर्ष		
सूर्य	सूर्य	23/01/2014	राहु	राहु	17/06/2039	बुध	बुध	02/03/2092
सूर्य	चन्द्र	23/07/2014	राहु	गुरु	11/11/2041	बुध	केतु	27/02/2093
सूर्य	मंगल	29/11/2014	राहु	शनि	17/09/2044	बुध	शुक्र	29/12/2095
सूर्य	राहु	23/10/2015	राहु	बुध	05/04/2047	बुध	सूर्य	05/11/2096
सूर्य	गुरु	11/08/2016	राहु	केतु	23/04/2048	बुध	चन्द्र	05/04/2098
सूर्य	शनि	23/07/2017	राहु	शुक्र	23/04/2051	बुध	मंगल	02/04/2099
सूर्य	बुध	29/05/2018	राहु	सूर्य	17/03/2052	बुध	राहु	20/10/2101
सूर्य	केतु	05/10/2018	राहु	चन्द्र	17/09/2053	बुध	गुरु	26/01/2104
सूर्य	शुक्र	05/10/2019	राहु	मंगल	05/10/2054	बुध	शनि	05/10/2106
चन्द्र महा दशा - 10 वर्ष			गुरु महा दशा - 16 वर्ष			केतु महा दशा - 7 वर्ष		
चन्द्र	चन्द्र	05/08/2020	गुरु	गुरु	23/11/2056	केतु	केतु	02/03/2107
चन्द्र	मंगल	05/03/2021	गुरु	शनि	05/06/2059	केतु	शुक्र	02/05/2108
चन्द्र	राहु	05/09/2022	गुरु	बुध	11/09/2061	केतु	सूर्य	08/09/2108
चन्द्र	गुरु	05/01/2024	गुरु	केतु	17/08/2062	केतु	चन्द्र	08/04/2109
चन्द्र	शनि	05/08/2025	गुरु	शुक्र	17/04/2065	केतु	मंगल	05/09/2109
चन्द्र	बुध	05/01/2027	गुरु	सूर्य	04/02/2066	केतु	राहु	23/09/2110
चन्द्र	केतु	05/08/2027	गुरु	चन्द्र	05/06/2067	केतु	गुरु	29/08/2111
चन्द्र	शुक्र	05/04/2029	गुरु	मंगल	11/05/2068	केतु	शनि	08/10/2112
चन्द्र	सूर्य	05/10/2029	गुरु	राहु	05/10/2070	केतु	बुध	05/10/2113



JUHI

लग्न विचार

कुम्भ राशि, राशि चक्र की ग्यारहवीं राशि है। इस राशि में धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय व चतुर्थ चरण, शतभिषा नक्षत्र तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय चरण आते हैं। कुम्भ राशि का स्वामी शनि है। कुम्भ लग्न में जन्म होने से आप लम्बे कद, गेहुँए रंग तथा पतले शरीर वाली स्त्री होंगी। आपका शरीर कृशकाय तथा ललाट भव्य होगा। आपका आकर्षक व्यक्तित्व होगा तथा आप मित्रों की प्रिय पात्र बनेंगी। मित्रों की आपके जीवन में कमी नहीं रहेगी। आप उनके लिये बड़े से बड़ा त्याग करने के लिये भी तैयार रहेंगी। आपको उन्नति के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि आपका भाग्य कुछ अस्थिर रहेगा। कठिनाइयों से आपका सहज ही पीछा नहीं छूटेगा। आप कल्पना प्रिय स्त्री होंगी। यथार्थ के स्थान पर भावनाओं का आपके जीवन में महत्त्व रहेगा। इसी प्रकार भौतिकता तथा व्यावहारिकता के स्थान पर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता का आप पर प्रभाव रहेगा। भीड़ से आप दूर ही रहेंगी। पार्टियों तथा सामाजिक सम्मेलनों में भाग लेना आपको पसन्द नहीं होगा।

आप सफल ज्योतिष का ज्ञान भी रखेंगी। अध्ययन में आपकी रुचि बचपन से रहेगी। इस कारण आप कई प्रकार के विषयों का अध्ययन करेंगी। कला और संस्कृति में आपकी रुचि रहेगी। इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिये आपको पुरस्कार भी प्राप्त हो सकते हैं। आपका आत्मविश्वास बहुत कमजोर रहेगा तथा आपकी निर्णय शक्ति भी सामान्य ही रहेगी। इस कारण नेतृत्व के कार्य में आप कम ही सफल हो पायेंगी। स्वभाव से आप बहमी प्रकृति की स्त्री होंगी तथा किसी पर भी आसानी से विश्वास नहीं करेंगी। आपका पारिवारिक जीवन साधारण रहेगा। आप दोनों पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। आपका सन्तान पक्ष सामान्य होगा। आपके लिये शैक्षिक क्षेत्र सर्वथा उपयुक्त होगा। प्रोफेसर, शिक्षा अधिकारी, दार्शनिक, लेखिका, सम्पादक, डॉक्टर तथा निजी व्यवसाय में आप सफलता से कार्य करेंगी। आपका शरीर कमजोर रहेगा। आप छाती तथा फेफड़े के रोग, सर्दी-जुखाम, ज्वर, गले की बीमारियाँ, अपेन्डिक्स आदि से पीड़ित हो सकती हैं। घुटनों, पीठ में दर्द, चोट, मोच तथा रक्तचाप से भी आपको कष्ट होगा।

आपका जन्म कुम्भ लग्न में 13 अंश 20 कला से 16 अंश 40 कला के बीच में जन्म होने से आप लम्बे कद, गेहुँआ या श्याम वर्णीय तथा कृशकाय शरीर वाली स्त्री होंगी। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण आप लोगों की प्रिय बन जायेंगी। आपके जीवन में मित्रों का अभाव नहीं रहेगा। आप आदर्शवादी तथा कल्पना प्रिय स्त्री होंगी। आप में आत्मविश्वास की कमी रहेगी तथा आप निराशावादी स्त्री भी हो सकती हैं। परिश्रम करने पर भी कई बार आपको उतना फल नहीं मिल पायेगा, जितना मिलना चाहिये। इससे आप हीन भावना की शिकार भी बन सकती हैं। जीवन में आपके शत्रु भी रहेंगे, जो पीठ पीछे आपकी बदनामी करेंगे तथा कुटिल चालें भी चलेंगे, किन्तु

JUHI

लग्न विचार

सामने आकर अहित करने की उनकी हिम्मत नहीं होगी। आप शत्रुओं के प्रति भी दयाशील ही रहेंगी।

आप पर्यटन प्रिय स्त्री होंगी। ऐतिहासिक स्थानों पर घूमने का आपको शौक रहेगा। आपको अपने व्यवसाय के लिये भी कभी-कभी यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं, किन्तु इन यात्राओं से आपको कोई विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको यात्रा में कष्ट सम्भव है। आपके भाग्य में निरन्तर उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। आपको उन्नति के नये मार्ग दिखाई देंगे, किन्तु कई बार मार्गों में बाधाएँ भी आयेंगी। आपका पारिवारिक जीवन साधारण रहेगा। आपका सन्तान सुख भी सामान्य ही रहेगा। आप अध्यापिका, लेखिका, संगीतकार, सम्पादक, पत्रकार, ज्योतिषी तथा निजी व्यवसायी भी बन सकती हैं। आपको सीने तथा फेफड़े की बीमारियाँ, उदर विकार, पेट की बीमारियाँ, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग तथा पित्त सम्बन्धी बीमारियों इत्यादि से कष्ट हो सकता है।

JUHI

ग्रह विचार

सूर्य

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। सूर्य आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में मकर राशि में स्थित है जिसका स्वामी शनि सूर्य का शत्रु है। सूर्य सामान्यतः द्वादश स्थान में अच्छे फल नहीं देता है। अतः यह सूर्य आपके लिये नेष्ट फल कारक सिद्ध होगा।

आपको यह सूर्य आर्थिक रूप से निर्बल बनायेगा। आप यद्यपि कठिन परिश्रमी होंगी किन्तु उचित आय प्राप्त नहीं होने से धन की कमी बनी रहेगी। आप मितव्ययी होंगी धन का खर्च उचित कार्य में ही करेंगी। जीवन में चोरी आदि विभिन्न कारणों से हानि होने के योग भी बनते हैं।

आपको नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ हो सकता है। विशेषतः कपड़े का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। साझेदारी, आयात-निर्यात तथा विदेश व्यापार से लाभ नहीं होगा। आकस्मिक हानि भी हो सकती है। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। नेत्र व कर्ण रोग, पैरों के रोग पीड़ित कर सकते हैं। स्वास्थ्य की खराबी से आपका कारोबार भी प्रभावित हो सकता है। आपके पति क्रोधी तथा धन के लोभी एवं कृपण भी होंगे। वैवाहिक जीवन मतभेदों से युक्त रहेगा। सन्तान सुख सामान्य रहेगा।

यह सूर्य अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से षष्ठ स्थान में कर्क राशि को देखता है। जिसका स्वामी चन्द्र सूर्य का मित्र है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने के प्रयासों में निष्फल रहेंगे। आपको ननिहाल पक्ष से सुख कम ही प्राप्त होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ बनी रहेंगी। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। राज्य पक्ष से दण्ड तथा आर्थिक हानि हो सकती है। सावधानी अपेक्षित है।

कुम्भ लग्न में द्वादश भाव के सूर्य के व्यय-भाव में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको अपने खर्च के कारण कठिनाई उठानी पड़ सकती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ की शक्ति मिलेगी, परन्तु स्थानीय व्यवसाय में नुकसान रहेगा तथा स्त्री के सुख में भी थोड़ी-बहुत कमी आ सकती है। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र दृष्टि से चन्द्रमा की कर्क राशि में षष्ठ भाव को देखता है, अतः आपका शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहेगा तथा झगड़े के मामलों में आप लाभ उठाकर सफलता प्राप्त करेंगे।

चन्द्र

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। चन्द्र आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में, मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से चन्द्र की मित्रता है। सामान्यतः तृतीयस्थ चन्द्र, अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ षष्ठेश चन्द्र तृतीय भाव में, (मित्र राशिस्थ) अच्छे फल देगा। यह चन्द्र आपको समृद्ध तथा सुखी महिला बनाता है। आप राजसी तथा उग्र स्वभाव की होंगी, इस कारण मित्रों तथा स्वजनों से भी आपके मतभेद हो सकते हैं।

भाई-बहनों का सुख आपको प्राप्त होता है, यदा-कदा वैचारिक मतभेदों के अलावा उनसे आपका

JUHI

ग्रह विचार

स्नेह रहेगा। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा ही रहता है। चन्द्रमा के क्षीण अथवा पापाक्रान्त रहने की स्थिति में कफ तथा रक्त दोष सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि उत्तम रहती है। शैक्षणिक जीवन में अच्छी प्रगति हो सकती है। आपकी रुचि विज्ञान तथा अभियान्त्रिकी जैसे विषयों में हो सकती है। पर्यटन में आपकी रुचि रहती है। ननिहाल का सुख भी आपको प्राप्त होता है। शत्रुओं का दमन करने में आप समर्थ होती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहती है। आप सर्विस द्वारा धनार्जन कर सकती हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। प्रवृत्ति मितव्ययी होने से आप धन संचय करने में समर्थ होती हैं।

इस चन्द्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि, नवम् स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से चन्द्र की शत्रुता है। आपमें धार्मिक प्रवृत्ति कम होती है। भाग्य आपका साथ देगा, किन्तु विशेष लाभ मध्य आयु से सम्भावित है। माता से आपको सुख प्राप्त होता है। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा।

कुम्भ लग्न में तृतीय भाव के चन्द्रमा के षष्ठेश होकर भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आपके मनोबल तथा पराक्रम में वृद्धि तो होगी, परन्तु कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहेंगी, साथ ही भाई-बहिनों से भी आपका कुछ मतभेद बना रह सकता है। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में नवम भाव को देखता है, अतः आपकी भाग्योन्नति एवं धर्म के मार्ग में भी कुछ कठिनाइयाँ आ सकती हैं, परन्तु अन्ततः आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा भाग्य की उन्नति भी होगी।

मंगल

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में मीन राशि में स्थित है जिसके स्वामी गुरु से मंगल की मित्रता है। सामान्यतः द्वितीय स्थान में मंगल साधारण फल प्रदान करता है। यहाँ तृतीयेश तथा दशमेश मंगल द्वितीय स्थान में आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह मंगल आपको अधिकार सम्पन्न तथा प्रतिष्ठित स्त्री बनायेगा। आपका स्वभाव अभिमानी तथा गम्भीर रहेगा। आपका व्यवहार स्पष्टवादी रहने से आपके मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा-कदा आपके नेत्र, कर्ण तथा गुदा रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी प्रगति सामान्य रहेगी। ज्योतिष, इतिहास तथा धर्मशास्त्रों में भी आपकी रुचि रहेगी। अपने भाई-बहिनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। आपको कुटुम्ब का सुख भी कम ही प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप सर्विस में उच्च पद प्राप्त कर सकेंगी तथा पद के साथ आपको कुछ अधिकार भी मिलेंगे। आप डॉक्टर,

JUHI

ग्रह विचार

वकील तथा उद्योगपति भी बन सकती हैं। राज्य पक्ष के अनुकूल रहने से आपको धन प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होंगे।

इस मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपका बौद्धिक स्तर मध्यम रहेगा। आपको सन्तान सुख में बाधा अथवा विलम्ब सम्भावित है। इस मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में कन्या राशि में पड़ती है जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा। आपको आकस्मिक धन हानि का योग भी बनता है। इस मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में तुला राशि में पड़ती है जिसके स्वामी शुक्र से मंगल का व्यवहार सम है। आप में धार्मिक भावना कम रहेगी। आपकी भाग्योन्नति में विलम्ब हो सकता है।

कुम्भ लग्न में द्वितीय भाव के मंगल के धन एवं कुटुम्ब के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित होने से आपको कुछ कठिनाइयों के साथ धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होगा, परन्तु आपके भाई-बहिन एवं पिता के सुख में कमी रह सकती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः आपको विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में सफलता मिलेगी। मंगल के अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आपकी आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होगी। मंगल के अपनी आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने के कारण आपके भाग्य एवं धर्म की विशेष उन्नति होगी तथा आपको यश भी प्राप्त होगा।

बुध

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान में, कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि की बुध से मित्रता है। सामान्यतः लग्नस्थ बुध अच्छे फल प्रदान करता है, यहाँ पंचमेश तथा अष्टमेश बुध, लग्न स्थान में आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। यह बुध आपको विदुषी, पुरुषार्थी तथा सुखी महिला बनाता है। आप ऊँचे कद की, गौरवर्ण तथा स्वस्थ शारीरिक गठन वाली कहिला होती हैं। आपका चेहरा लम्बा तथा ललाट विस्तृत होता है। आँखें बड़ी किन्तु तीक्ष्ण तथा हाथ लम्बे होते हैं। स्वभाव से आप तेज रहेंगी। क्रोधी प्रवृत्ति की होने के कारण परिजनों से आपकी कम ही बनती है। मित्रों से भी आपकी घनिष्टता नहीं होगी। आपके मित्र कम रहेंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहेगा। यदा-कदा वात-विकार अथवा नेत्र रोगों से पीड़ित हो सकती हैं।

आपकी बुद्धि तीव्र रहती है। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि साहित्य, विदेशी भाषा, आयुर्वेद, गणित इत्यादि विषयों की ओर रहेगी। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र तथा गूढ़ विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी शौक रहेगा। सन्तान सुख में बाधा अथवा विलम्ब हो सकता है, सन्तान को

JUHI

ग्रह विचार

कष्ट भी सम्भव है। आप दीर्घायु होती हैं। आपको आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। आप साहित्यकार, चिकित्सक, लेखिका, प्रोफेसर, गणितज्ञ आदि बन सकती हैं। आप राजकीय सर्विस भी प्राप्त कर सकती हैं। व्यापार से भी लाभ हो सकता है।

इस बुध की सप्तम पूर्ण दृष्टि, सप्तम स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से बुध की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपके पति सुन्दर, सुशिक्षित लेकिन तेज स्वभाव के रहेंगे। द्वि-विवाह के भी योग हैं।

कुम्भ लग्न में प्रथम भाव के बुध के अष्टमेश होकर केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र शनि की कुम्भ राशि पर स्थित होने से आपके शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रह सकती है, परन्तु आपको आयु, पुरातत्त्व एवं सन्तान-पक्ष की शक्ति प्राप्त होगी। आपके मन में कुछ चिन्तायें भी बनी रह सकती हैं। बुध के पंचमेश होने के कारण आपकी विवेक शक्ति उत्तम रहेगी तथा आपके प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि भी होगी। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको कुछ कठिनाइयों के साथ स्त्री-पक्ष से सुख एवं व्यवसाय से लाभ प्राप्त होगा।

गुरु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में मेष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। सामान्यतः तृतीयस्थ गुरु मिश्रित फल देता है। यहाँ धनेश तथा एकादशेश गुरु तृतीय स्थान में आपको मिश्रित फल ही प्रदान करेगा। यह गुरु आपको पराक्रमी, कार्यकुशल तथा अस्थिर विचारों वाली स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहता है तथा आप शीघ्र ही क्रोधित हो जाती हैं। परिजन आपके व्यवहार से अप्रसन्न रहते हैं। मित्रों के साथ आपका व्यवहार अच्छा रहता है।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा-कदा अग्निमांद्य, शूल रोग आदि से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान भाषा, गणित, तर्कशास्त्र, विधि, विज्ञान आदि विषयों में रहता है। अध्ययन काल में आपको कुछ रुकावटें आ सकती हैं, किन्तु आप परिश्रमी स्त्री होती हैं, अतः कठोर पुरुषार्थ करके अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगी। आप साहसी तथा पुरुषार्थी स्त्री होती हैं। अपने भाई-बहनों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहते हैं। आपको सन्तान सुख सामान्य रहता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप शिक्षिका, गणितज्ञ, वकील, भाषाविद्, वैज्ञानिक आदि बन सकती हैं। व्यापार में आपको लाभ होता है।

इस गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि सप्तम स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से गुरु की

JUHI

ग्रह विचार

मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन सामान्य रहता है। आपके पति सुन्दर, सुशिक्षित, गुणी लेकिन स्वाभिमानी प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। धैर्य व सहनशीलता के द्वारा आप उनके साथ सामंजस्य बना सकती हैं। यह गुरु आपकी सप्तम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में तुला राशि में डालता है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आप में धार्मिक भावना कम रहती है। आपके भाग्योदय में विलम्ब सम्भव है। इस गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जो गुरु की स्वराशि है। आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में आप तीव्र प्रगति करेंगी।

कुम्भ लग्न में तृतीय भाव के गुरु के भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आपको धन एवं कौटुम्बिक सुख का भी यथेष्ट लाभ मिलेगा। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको स्त्री के पक्ष में सौन्दर्य एवं सुख-लाभ की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलेगी। आपको अपने ससुराल से भी कुछ लाभ मिल सकता है। गुरु के अपनी सातवीं दृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में नवम भाव के देखने से कुछ रुकावटों के साथ आपके भाग्य की वृद्धि होगी तथा धर्म में आपकी जिज्ञासा बनी रहेगी। गुरु के अपनी नवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने के कारण आपकी आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होगी।

शुक्र

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में धनु राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु से शुक्र की शत्रुता है। सामान्यतः एकादशस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ चतुर्थेश तथा नवमेश शुक्र एकादश स्थान में आपको उत्तम फलकारक रहेगा। यह शुक्र आपको परोपकारी, दानशील, दीर्घायु, धन-सम्पन्न, यशस्वी तथा स्व-परिश्रम से उन्नति करने वाली स्त्री (सेल्फ मेड वुमेन) बनाता है। आपका स्वभाव गम्भीर रहेगा। आपके मित्र कम रहते हैं किन्तु वे मित्र विश्वसनीय तथा आपके सहायक सिद्ध होते हैं। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा-कदा पेट की बीमारियों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, ललित कला, इतिहास, पुरातत्व, विधि, दर्शन, भाषा आदि विषयों में रहता है। गायन-वादन, नाटक आदि विधाओं में भी आपकी रुचि रहती है। आपकी शैक्षणिक प्रगति सराहनीय रहती है। आप विदेश यात्रा अथवा वहाँ प्रवास भी कर सकती हैं। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि सुख-सुविधायें भी प्राप्त होती हैं। आप धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री होती हैं। आपका भाग्योदय 25वें वर्ष में हो सकता है। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके पति लम्बे कद, गौरवर्ण तथा स्वस्थ

JUHI

ग्रह विचार

शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होते हैं। उनका स्वभाव शान्त रहता है। कला, संगीत, साहित्य आदि में उनकी रुचि होती है। आपके साथ उनके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापिका, साहित्यकार, वकील, लेखिका, संगीतकार, कलाकार, पुरातत्ववेत्ता आदि बन सकती हैं। व्यापार में आपको लाभ उत्तम रहता है। इस शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से शुक्र की मित्रता है। आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहेगा। आपको सन्तान सुख अल्प रहेगा।

कुम्भ लग्न में एकादश भाव के शुक्र के लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आपकी आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होगी। आप न्यायी, चतुर, धनी, धार्मिक एवं यशस्वी व्यक्ति होंगे। आपको माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होगा। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं मित्र-दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में पंचम भाव का देखता है अतः आपको सन्तान-पक्ष से सुख मिलेगा तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में आपकी विशेष उन्नति होगी। आप प्रभावशाली, वक्ता एवं चतुर भी होंगे।

शनि

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो शनि की नीच राशि है। सामान्यतः तृतीय स्थान में स्थित शनि आपको अच्छे फल प्रदान करता है। यहाँ लग्नेश तथा द्वादशेश शनि तृतीय स्थान में आपको शुभ फलप्रद रहेगा। यह शनि आपको पराक्रमी, सम्पन्न, यशस्वी, सुखी तथा सम्पन्न स्त्री बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहेगा किन्तु आप शीघ्र ही अपने क्रोध पर नियन्त्रण कर सकती हैं। समाज में आपके गुणों के कारण आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा ही रहेगा। यदा-कदा चर्म रोग से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहता है। इसके अतिरिक्त, गणित, विधि, पुरातत्व, भाषा आदि विषयों में आपकी रुचि रहती है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आप साहसी तथा पुरुषार्थी स्त्री होती हैं। आपके भाई-बहनों के सुख में कमी हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ, गणितज्ञ, वकील, पुरातत्ववेत्ता, भाषाविद् आदि बन सकती हैं। आपको राजकीय अथवा निजी उद्योगों में भी उच्च पद प्राप्त हो सकता है। व्यापार में आपको लाभ मध्यम होता है। आप मितव्ययी प्रकृति की स्त्री होती हैं। अतः अर्थ संग्रह करने में आपको कठिनाई नहीं होगी।

इस शनि की तीसरी पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। आपका बौद्धिक स्तर अच्छा रहेगा। आपको सन्तान सुख सामान्य रहता है। यह शनि

JUHI

ग्रह विचार

अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से नवम स्थान में तुला राशि को देखता है, जो शनि की उच्च राशि है। आपकी आस्था धर्म में रहती है। आपका भाग्योदय 36वें वर्ष में हो सकता है। इस शनि की दशम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो शनि की स्वराशि है। आप अपने धन को आवश्यकतानुसार ही खर्च करेंगी। आयात-निर्यात के व्यापार में आपको लाभ हो सकता है। कुम्भ लग्न में तृतीय भाव के शनि के भाई-बहिन एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित होने से आपको भाई-बहिनों का कष्ट प्राप्त हो सकता है तथा आपके पराक्रम में भी कमी आ सकती है। आपका शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य भी त्रुटिपूर्ण रह सकता है। यहाँ से शनि अपनी तीसरी मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में आपको सुख एवं सफलता प्राप्त होगी। शनि के अपनी सातवीं उच्च-दृष्टि से नवम भाव को देखने से आपके भाग्य की उन्नति होगी तथा आप धर्म का पालन भी करेंगे। शनि के अपनी दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने के कारण आपको खर्च के सम्बन्ध में कुछ परेशानी रहेगी, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता रहेगा।

राहु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से षष्ठम् स्थान में, कर्क राशि में स्थित है, जिसके स्वामी चन्द्र से राहु की शत्रुता है। सामान्यतः षष्ठम् स्थान में राहु अच्छे फल देता है, यहाँ षष्ठम् स्थान में कर्क राशि का राहु आपको शुभ फल देगा। यह राहु आपको धैर्यवती, उदार हृदय, दीर्घायु तथा सुखी महिला बनाता है। स्वभाव से आप मिलनसार रहेंगी। अपरिचितों को भी मित्र बनाने की कला में आप पारंगत रहेंगी। अपने गुणों के कारण समाज में आप प्रतिष्ठित रहेंगी। समाज सेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में अपना योगदान दे सकती हैं तथा राजनीति में भी जा सकती हैं। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा। यदा-कदा सर्दी से सम्बन्धित बीमारियों से पीड़ित हो सकती हैं। जल से भय रह सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि कला, साहित्य, रसायन, चिकित्सा, विधि, दर्शन आदि विषयों में रहेगी। आपकी रुचि ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विषयों में रहती है। आप पर्यटन प्रिय होती हैं, आप जलीय स्थानों (नदी, झील, समुद्र, तटवर्ती) में भ्रमण करना अधिक पसंद करती हैं। प्रवास से लाभ हो सकता है। खेलों में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। शत्रु आपका अहित करने में विफल रहेंगे, अपनी व्यवहार कुशलता से आप शत्रुओं को भी मित्र बना लेती हैं। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। आप कलाकार, लेखिका, प्राध्यापिका, रसायनज्ञ, चिकित्सक, वकील, भाषाविद्, आदि बन सकती हैं। व्यापार में पर्याप्त लाभ सम्भव है। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में लाभ अधिक हो सकता है। राजनीति में सफलता सम्भव है, आप उच्च पद भी प्राप्त कर

JUHI

ग्रह विचार

सकती हैं।

यह राहु अपनी पंचम पूर्ण दृष्टि से, दशम स्थान में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। राज्य पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। इस राहु की सप्तम पूर्ण दृष्टि, द्वादश स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आपका धन आवश्यक तथा शुभ कार्यों में व्यय हो सकता है। आयात-निर्यात के व्यापार से लाभ हो सकता है। यह राहु अपनी नवम पूर्ण दृष्टि से, द्वितीय स्थान में मीन राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। अर्थ संचय में आप सफल रहेंगी। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

कुम्भ लग्न में षष्ठ भाव के राहु के रोग एवं शत्रु-स्थान में अपने शत्रु चन्द्रमा की कर्क राशि पर स्थित होने से आप शत्रु-पक्ष पर अपना बड़ा भारी प्रभाव रखेंगे तथा गुप्त-युक्तियों, चातुर्य एवं बुद्धि-बल से झगड़े-झंझट के मामलों में सफलता प्राप्त करेंगे। आप भीतरी रूप से परेशानी का अनुभव करने पर भी अपने धैर्य एवं साहस को नहीं खोयेंगे। अपने प्रबल मनोबल एवं बुद्धि-बल से आप अन्त में अपनी सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

केतु

आपका जन्म कुम्भ लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। सामान्यतः द्वादश स्थान (व्यय स्थान) में केतु मिश्रित फलप्रद रहता है, यहाँ द्वादश स्थान में मकर राशि का केतु आपको मध्यम फल प्रदान करेगा। यह केतु आपको व्ययशील, शत्रुनाशक, मानसिक रूप से अशान्त, सम्पन्न तथा सुखी महिला बनाता है। आपका स्वभाव तेज रहेगा किन्तु अपनी चतुराई तथा व्यवहारकुशलता से मित्रों में आपकी लोकप्रियता रहेगी। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपको यश प्राप्त होता है। अपने कार्यों से समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। कार्यपूर्ति में आने वाली बाधाएं कठोर परिश्रम तथा मित्रों के सहयोग से हल हो सकती हैं। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः सामान्य रहेगा। यदा-कदा नेत्र तथा पैरों की बीमारियों से पीड़ित हो सकती हैं। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपकी रुचि गणित, साहित्य, इलेक्ट्रॉनिक्स, विधि, पुरातत्व, चिकित्सा आदि विषयों में रहेगी। ज्योतिष, तंत्र-मंत्र तथा विदेशी साहित्य के अध्ययन में आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी शौक रहेगा, प्रवास से लाभ सम्भव है। आपका धन शुभ कार्यों में खर्च होता है। आयात निर्यात के व्यापार से लाभ हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप वकील, न्यायाधीश, प्राध्यापिका, लेखिका, तकनीकी विशेषज्ञ, पुरातत्ववेत्ता, चिकित्सिका, रेल्वे अधिकारी आदि बन सकती हैं। व्यापार में पर्याप्त लाभ हो सकता है। राजनीति

JUHI

ग्रह विचार

के क्षेत्र में आपको परिश्रम से सफलता प्राप्त हो सकती है। आप सफल कूटनीतिज्ञ बन सकती हैं। यह केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। कठोर परिश्रम से आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है। इस केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि षष्ठम् स्थान में कर्क राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से केतु की शत्रुता है। आपका स्वास्थ्य प्रायः सामान्य रहेगा। आपके पराक्रम से शत्रु भयभीत रहेंगे। यह केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से अष्टम् स्थान में कन्या राशि को देखता है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप दीर्घायु महिला होंगी। आपको विवाह, वसीयत आदि से आर्थिक लाभ भी हो सकता है।

कुम्भ लग्न में द्वादश भाव के केतु के व्यय-स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपका खर्च अधिक रहेगा, जिसके कारण आपको परेशानी का अनुभव हो सकता है, परन्तु आप अपनी गुप्त-युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर खर्च चलाने की शक्ति प्राप्त करेंगे। अनेक बार निराशाओं से जूझने पर भी आप अपने धैर्य को नहीं छोड़ेंगे। आपको बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति भी होगी।

JUHI

रत्न विचार

जन्म कुण्डली जातक के जन्म समय का आकाशीय प्रारूप है, जिससे उस समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति एवं उनकी रश्मियों के जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी होती है। मानव जीवन प्रतिपल ग्रहों द्वारा संचालित होता है। प्रत्येक ग्रह की स्वयं की रश्मियाँ होती हैं, जो उसके परिभ्रमण काल में न्यूनाधिक रूप से पृथ्वी पर पड़ती हैं। जिस ग्रह की रश्मियाँ जातक पर घनीभूत रूप से पड़ती हैं उस ग्रह का उतना ही अधिक प्रभाव जातक पर रहता है। रत्नों में अपूर्व दैवी शक्ति निहित होती है। रत्नों का जो हम पर प्रभाव पड़ता है, वह ग्रहों के रंगों और उनके प्रकाश की किरणों की कम्पन क्षमता के कारण है। प्राचीन महर्षियों और ऋषियों ने अपने अनुभव, प्रयोग एवं दिव्य ज्ञान से जान लिया था कि कौन सा ग्रह किस रंग की रश्मियाँ प्रस्फुटित करता है, और उसी के आधार पर उन्होंने ग्रहों के लिये रत्नों का निर्धारण किया। ग्रह के निर्धारित रत्न द्वारा उस ग्रह के रंग की रश्मियाँ मानव शरीर में प्रविष्ट होकर अपने कम्पन से लाभ अथवा हानि पहुँचाती हैं। प्रभावी ग्रह का उचित रत्न धारण करके उसके निर्दिष्ट मन्त्र का जाप करने से हमारे चारों ओर रश्मियाँ एवं तरंगों के एक ऐसे कवच का निर्माण होता है, जो हमारी सभी प्रकार से रक्षा करके ग्रहों से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में वृद्धि करता है। आपके लिये कौन से रत्न शुभ फलदायी हैं एवं उन्हें कब, किस प्रकार धारण करना है इसका सम्पूर्ण विवरण नीचे दिया जा रहा है।

जीवन रत्न:— नीलम (ब्लू सफायर) उपरत्न:— काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली) नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है। यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य, आयु आदि में वृद्धि करवाने वाला रहेगा।

भाग्य रत्न:— हीरा (डायमण्ड) उपरत्न:— वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाइट एगोट) हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है। यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या-विवेक में वृद्धि तथा धनागम करवाने वाला रहेगा।

कारक रत्न:— मूंगा (कोरल) उपरत्न:— राता(सरनेलिन रोडोनस), लाल हकीक(रेड एगोट) मूंगा (रक्त वर्ण) सवा छः रत्ती का स्वर्ण या रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में मंगलवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके, धूप अगरबत्ती करने के बाद मंगल के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठफल कारक रहता है। यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, वाहन सुख, पदोन्नति, व्यापार में वृद्धि करने वाला रहेगा।

संस्कृत भाषा

संस्कृत भाषा हिन्दु धर्म के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भाषा केवल एक साधन नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। इस भाषा में लिखे गए ग्रंथों में हमें हमारे पूर्वजों की विचारधारा और जीवन शैली का पता चलता है। संस्कृत भाषा के माध्यम से हम अपने धर्म और समाज के मूल्यों को समझ सकते हैं। यह भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमारे बीच एक सांस्कृतिक बंधन बनाती है। संस्कृत भाषा केवल एक साधन नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। इस भाषा में लिखे गए ग्रंथों में हमें हमारे पूर्वजों की विचारधारा और जीवन शैली का पता चलता है। संस्कृत भाषा के माध्यम से हम अपने धर्म और समाज के मूल्यों को समझ सकते हैं। यह भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमारे बीच एक सांस्कृतिक बंधन बनाती है।

संस्कृत भाषा केवल एक साधन नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। इस भाषा में लिखे गए ग्रंथों में हमें हमारे पूर्वजों की विचारधारा और जीवन शैली का पता चलता है। संस्कृत भाषा के माध्यम से हम अपने धर्म और समाज के मूल्यों को समझ सकते हैं। यह भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमारे बीच एक सांस्कृतिक बंधन बनाती है।

संस्कृत भाषा केवल एक साधन नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। इस भाषा में लिखे गए ग्रंथों में हमें हमारे पूर्वजों की विचारधारा और जीवन शैली का पता चलता है। संस्कृत भाषा के माध्यम से हम अपने धर्म और समाज के मूल्यों को समझ सकते हैं। यह भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमारे बीच एक सांस्कृतिक बंधन बनाती है।

संस्कृत भाषा केवल एक साधन नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत है। इस भाषा में लिखे गए ग्रंथों में हमें हमारे पूर्वजों की विचारधारा और जीवन शैली का पता चलता है। संस्कृत भाषा के माध्यम से हम अपने धर्म और समाज के मूल्यों को समझ सकते हैं। यह भाषा हमें एक दूसरे से जोड़ती है और हमारे बीच एक सांस्कृतिक बंधन बनाती है।



